ओ३म्

योगीराज कृष्ण का जन्म

ईराक की यात्रा

अरब की मथुरा में



लेखक—हिन्दुकुलदीपक पं० कन्हैयालाल मिश्र आर्योपदेशक

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

...ते हैं, उन

...क्तिमान,
... अनादि,
...न्तर्यामी,
...र्ता है।

... पढ़ना,
...र्म है।
... सर्वदा

... विचार

...र्य समाज का मुख्योद्देश्य है,
...सामाजिक उन्नति करना
...य वर्तना चाहिये।
...ी चाहिये।
... चाहिये,
...हिए।

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

ते हैं, उन

क्तिमान,
अनादि,
न्तर्यामी,
र्ता है।

पढ़ना,
र्म है।
सर्वदा

विचार

र्य समाज का मुख्योद्देश्य है,
सामाजिक उन्नति करना
वर्तना चाहिये।
चाहिये।
चाहिये,
दिए।

ईराक की यात्रा

जिस में

पसनी बन्दर (बिलोचिस्तान), गवादर बन्दर. मसकत बन्दर, मथुरा नगर, मूसना, सुरपुर या सूर, बेहरिन द्वीप, दवई बन्दर, बसरा बन्दर, बग़दाद नगर, करकुक नगर, मौसलनगर आदि स्थानों अर्थात अरब और ईराक के प्राचीन तथा अर्वाचीन के ऐतिहासिक समाचार और उक्त स्थानोंमें आर्य (हिन्दू) सभ्यता के जो चिह्न अब तक मिलते हैं, उन पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है ।

लेखक

हिन्दुत्व दीपक पण्डित कन्हैयालाल मिश्र,
...ोपदेशक, काशी ।

प्रकाशिका

सुशीला देवी मिश्र,
अर्दली बाज़ार बाँदा, यू० पी०

प्रथम बार १०००] वैशाख शुदी १४ सं० १९६७ वि० [मूल्य २।)

प्रकाशिका

सुशीला देवी मिश्र,

अर्दली बाज़ार बाँदा, यू० पी० ।

पुस्तक मिलने का पता

श्रीयुत बाबूलालजी आर्य मारफत श्रीयुत महावीरप्रसाद ठेकेदार,

अर्दली बाज़ार बाँदा, यू० पी०, भारत वर्ष ।

मुद्रक

लाला सेवाराम चावला,

चन्द्र प्रिण्टिङ्ग प्रेस, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली ।



श्रीमान् पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० पी० ई० एस०
आनरेरी प्रिंसिपल दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज, काशी।

ओ३म्

समर्पण

श्रीमान् परम पूज्य गुरुदेव पण्डित रामनारायण जी मिश्र बी० ए० पी० ई० एस० अवैतनिक, प्रिन्सिपल दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालिज काशी को सादर, श्रद्धा-पूर्वक……

श्रीमान् पण्डित रामनारायण मिश्र जी का जन्म ज्येष्ठ बदी ११ सम्वत् १६३३ विक्रमी में हुआ। आप बचपन से अधिक होनहार और विचार-शील बालक थे। 'शरीर स्वस्थ रहना चाहिए' इसका ध्यान आपको बालपन से था। डा० छन्नूलाल आपके मामा थे। जिनकी बाटिका मासूर-गंज में भैरवनाथ से लगभग ३ मील दूर थी। डाक्टर जी नित्य सन्ध्या समय साइकिल द्वारा वाटिका में जाते, उस समय उनके साथ आप बालपन में साइकिल के पीछे-पीछे दौड़ते हुए जाया करते थे। आज जिसका फल यह है कि इस समय ६४वर्षकी अवस्थामें भी आप प्रातःकाल वायु सेवनार्थ इतनी तीव्रगति से चलते हैं कि नवयुवक भी आपके साथ चलकर लोहा मान जाता है। इस अवस्था में आपका स्वास्थ्य भी आपकी अवस्था वालों से कहीं बढ़चढ़ कर है। आपने सं० १८६८ वि० में स्व० महा महोपाध्याय पं० शिवकुमार शास्त्री जी से जो उस समय सनातन धर्म के स्तम्भ थे, शुद्धी की व्यवस्था लेकर एक ईसाई की शुद्धि स्व० पं० केशवदेव शास्त्री तथा पं० राजाराम शास्त्री भूतपूर्व प्रोफेसर डी० ए० वी० कालिज लाहौर द्वारा कराई

जिस शुद्धि के कारण काशी में बड़ा आन्दोलन हुआ था क्योंकि काशी में यह प्रथम बार ही शुद्धि हुई थी। आप ने एक जन्म के मुसलमान को शुद्ध करा, अपने मित्रों से सहाय्य दिला, उनको एम० ए० बी० टी० कराया है। आज वे सज्जन आर्य्य समाज के लिए आदर्श रत्न प्रमाणित हो रहे हैं। सं० १९०६ ई० में जब आप स्कूलों के डिपुटी इन्सपेक्टर थे, तब आपने युक्त प्रान्त में सब से प्रथम अछूत बालकों को सवर्ण बालकों के साथ बैठकर सरकारी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आज्ञा निकाली थी, जिसके फलस्वरूप में कितने अछूत भाई आज भिन्न-भिन्न विभागों में भिन्न-भिन्न पदों पर कार्य कर रहे हैं, जिनमें से इस समय एक सज्जन स्कूलों के सब डिपुटी इन्सपेक्टर तथा एक सज्जन एक्साइज़ इन्सपेक्टर हैं।

स्व० पं० केशवदेव जी शास्त्री जब कविराज बन चुके। तब उनके गुरू उनको कलकत्ते में वैद्यक करने की सम्मति देने लगे और एक सज्जन अमृतसर में रह कर कार्य करने की सम्मति देते हुए उनको एक वर्ष का व्यय देने को भी तैयार थे। परन्तु जब शास्त्रीजी ने आपसे सम्मति ली तब आपने उनका सारा व्यय-भार सदैव के लिये अपने ऊपर उठा लिया। जिस कारण शास्त्री जी काशी में ही रह गये और वैद्यक करते हुए आर्य समाज का भी अच्छा काम किया। शास्त्री जी को आपने अमेरिका शिक्षा प्राप्त करने जाते समय स्वयं आर्थिक सहायता दी और अपने मित्रों से दिलाई। इसी सहायता से शास्त्री जी अमेरिका से डाक्टर बन

कर आये थे। इसी प्रकार आपने कई और छात्रों को योरोप जाने और शिक्षा प्राप्त करने के लिये धन की सहायता दी है।

आप स्कूलों के इन्सपेक्टर हो जाते, क्योंकि डाइरेक्टर की ऐसी इच्छा थी। परन्तु आप के मन में विद्यार्थियों के सुधार का भाव वेगसे दौड़ रहा था, इस कारण आपने इन्सपेक्टरी की ओर ध्यान न देकर अपनी हठ से हेडमास्टर बन गये। आपने हेडमास्टर होने की अवस्थामें हरिश्चन्द्र हाईस्कूल काशी की काया ही पलट दी थी। इसी प्रकार आपने हिन्दूसेण्ट्रल हाईस्कूल काशी का भी अपने समय में पूर्ण सुधार किया था। जिसके लिये इस समय तक वहाँ के अध्यापक तथा छात्र आपका आदरपूर्वक स्मरण करते हैं।

काशी में आपने यथाशक्ति जनसाधारण की सेवा करने में पूर्ण भाग लिया। देशभक्त बाबू शिवप्रसादजी गुप्त के साथ आपने काशी सेवा समिति का जन्म दिया, जो आज काशी में भली प्रकार जनसाधारण की सेवा कर रही है और समिति में कार्य करने के लिये पर्याप्त धन भी है। रायबहादुर श्यामसुन्दर दास व रायसाहब ठा० शिवकुमारसिंह के साथ सं० १९५० वि० में आप ने काशी नागरी प्रचारिणी सभा का जन्म दिया। जिसके द्वारा नागरी भाषा की जिस प्रकार भारतवर्ष में सेवा की जा रही है वह हिन्दी भाषा भाषियों से छिपा नहीं है। इस समय काशी नागरी प्रचारिणी सभा के पास लाखों रुपयों की सम्पत्ति है और एक बड़ा तथा अपूर्व पुस्तकालय और विचित्र कलाभवन है आपने (१) जापान का इतिहास (२) पार्सियों का इतिहास (३) राणाडे

का जीवन चरित्र (४) योरोप में छः मास (५) हिन्दुस्तानी शिष्टाचार (६) बालोपदेश नामक पुस्तकें लिखी हैं जो इस समय अद्वतीय प्रमाणित हो रही हैं। एक बार आपने एक अच्छी धन-राशि बैङ्क में जमा कर काशी के कतिपय आर्य सामाजिक दूकानदारों से कहा "आप लोग व्यापार में आवश्यकता पड़ने पर इसमें से जितना आवश्यक समझें ले जाया करें और अपने व्यापार में लगाया करें। कार्य हो जाने पर उस रुपये को उसी प्रकार बिना कुछ ब्याज आदि दिये हुए उसी बैंक में जमा कर जाया करें। सब लोग बारी बारी ऐसा किया करें, जिससे धन-राशि भी स्थिर रहे और आप लोग भी अपना आर्थिक सुधार कर सकें।" लोग उस रुपये को ले जाने लगे और सारा रुपया जो जमा था ले जाकर अपने व्यापार में लगा लिया, फिर वे लोग आज तक उस रुपये को लौटा न सके। आप ने आज तक वह धन किसी से नहीं माँगा क्योंकि आपका कथन है कि मैंने तो उनकी आर्थिक उन्नति के लिये यह धन पृथक कर दिया था। अब वे चाहे एकबार में ही उसे अपने पास रख लें और चाहे बार बार उससे लाभ उठावें। आपने स्व० बाबू गौरीशंकरप्रसाद वकील तथा स्व० डाक्टर केशवदेव शास्त्रीके साथ ६ जुलाई १६१२ई० को केवल एक विद्यार्थी से दयानन्द स्कूल का जन्म दिया, जो आज दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालिज के रूप में है। जिसमें इस समय सहस्रों विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं और इस समय इस संस्था के पास लाखों रुपयों के सुन्दर भवन खड़े हैं तथा इस

संस्था में भिन्न भिन्न विभाग के लिये धन भी उपस्थित है। इस समय आप अपने लगाये वृक्ष की जड़ में अवैतनिक रूप से प्रिंसिपल रह निःस्वार्थ सेवा रूपी जल द्वारा सिंचन कर वृक्ष को अमर कर रहे हैं। ये आपके अपूर्व गुण हैं।

पूज्य गुरु देव ! इस समय जो कुछ भी थोड़ी सेवा मैं आर्य समाज की कर रहा हूँ और दो शब्द जनता के समक्ष बोल सकता हूँ, यह सब आपकी शिक्षा का ही प्रभाव है, जिस से मैं आपका ऋणी हूँ। मैं अब तक विचार करता रहा हूँ कि आपके चरणों में गुरु-दक्षिणा स्वरूप में क्या वस्तु उपस्थित करूँ ? सो आपके अपूर्व गुणों से मुग्ध होकर गुरु-दक्षिणा रूप में यह **"ईराक़ की यात्रा"** नामक पुस्तक ही आपके कमल स्वरूपी चरणों में **समर्पण** कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि सेवक की इस तुच्छ भेंट को स्वीकार कर सेवक के उत्साह को द्विगुण कर कृतार्थ करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य—

कन्हैया लाल मिश्र आर्योपदेशक

आर्य विद्या सभा,

काशी।

वैशाख शुदी १४ गुरुवार सम्वत् १९९७ विक्रमी,

तदनुसार ता० २० मई सन् १९४० ई०।

स्थान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्रद्धानन्द बलिदान भवन.

श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

यात्रा सम्बन्धी मानचित्र —:



भूमिका

प्राचीन बौद्ध भिक्षुओं की तरह पं० कन्हैयालाल जी वैदिक मिशनरी कई वर्षों से पृथ्वी के भिन्न-भिन्न भागों में भ्रमण करके वैदिक-धर्म का सन्देश सुना रहे हैं। इस पुस्तक में जिस विदेश-यात्रा का वृत्तान्त उन्होंने लिखा है, वह अपने ढङ्ग की बारहवीं है। ऐसे पुरुषार्थी और धुन के पक्के प्रचारक के अनुभवों से भारत-वासियों को लाभ होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं।

इस संघर्षमय जगत् में कोई देश बिल्कुल अकेला, दुनिया से अलग-थलग जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। विशाल समुद्र, उतुङ्ग पर्वत शृङ्ग और तीव्र वाहिनी नदियें देश को देश से काट कर अलग नहीं कर सकतीं। जो देश अलग रहने की भ्रान्ति में पड़ा हुआ रहे, हजारों मील की दूरी से आये हुए मुसाफिर उसका दरवाजा खटखटा कर और उसके घरबार पर कब्जा करके उसकी भ्रान्ति को तोड़ देते हैं। यदि दिन चढ़ जाने पर हम आँखें खोल कर सूर्य की रोशनी को न देखेंगे, तो सूर्य की किरणें बलात्कार से हमारी आँखों में घुस बैठेंगी और हमारी मोहनिद्रा को तोड़ देंगी। इसी प्रकार यदि हम चारों ओर कृत्रिम दीवारें बांधकर और विदेशों से सम्बन्ध तोड़कर बैठना चाहेंगे तो विदेशी लोग घोड़ों या जहाजों पर सवार होकर उन दीवारों को लांघ आयेंगे और हमारी नींद को तोड़ देंगे। भारत का इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। जब तक हम दूसरे देशों को आबाद करते थे, तब तक अपने देश में भी आबाद थे और जब हमने कूपमण्डूक बन कर समुद्र यात्रा को पाप ठहरा दिया तब अन्य देशों से आकर लोगों ने भारत को आबाद करना आरम्भ कर दिया! इस दृष्टि

से जब कोई भारतवासी अपने देश की सीमाओं का उलङ्घन करके बाहिर की दुनिया में जाता है, तब मैं उसे भारत की स्वाधीनता और कीर्ति का अग्रदूत समझता हूँ।

पं० कन्हैयालाल जी एक सन्देश लेकर विदेश की यात्रा करते रहे हैं; यह स्वयं एक गौरव की बात है, परन्तु साथ ही वह आँखें खोलकर दुनिया को देखने और पहचानने की चेष्टा करते रहे हैं, यह और भी अधिक गौरव की बात है। इस पुस्तक में सब से अच्छी बात यह है कि लेखक ने आँखें खोलकर जो देखा है, उसे जैसा का तैसा लिख दिया है। इससे पुस्तक जानकारी से पूर्ण होने के साथ साथ मनोरञ्जक भी है।

इस पुस्तक के मध्य भाग में लेखक ने इतिहास के पण्डितों के सामने एक नई कल्पना रखी है। वह कल्पना यह है कि कंस की राजधानी मथुरा अरब में थी और श्रीकृष्ण ने वहीं पर कंस का वध किया था। इस कल्पना को बड़े विस्तार से लिखकर लेखक ने अरब और भारतवर्ष के इतिहासों से उसकी पुष्टि की है। मैं यह तो नहीं कह सकता कि पुस्तक के उस भाग को पढ़कर मैं लेखक से सहमत हो गया हूँ, परन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता कि उस कल्पना पर विचार करने के लिये काफी कारण नहीं हैं। लेखक की युक्ति-शृङ्खला में कई कड़ियां काफ़ी मज़बूत मालूम पड़ती हैं; इतिहास के पण्डितों को उन पर विचार अवश्य करना चाहिये। लेखक ने जिस साहस के साथ अपनी कल्पना को पुष्ट करने का यत्न किया है, अवश्य ही वह प्रशंसनीय है।

(प्रोफेसर)—इन्द्र विद्यावाचस्पति.

श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।



पुस्तक लेखक—
हिन्दुत्व दीपक श्री पं० कन्हैयालाल मिश्र, आर्योपदेशक,
आर्य विद्या सभा, काशी।

॥ ओ३म् ॥

निवेदन

मैं जनवरी सन् १६३६ में सिंगापुर से प्रचार करके फिलीपाइन्स द्वीप जाने वाला था, सेठ मोतीलाल जैन कलकत्ता निवासी जो मेरे मित्र हैं, उनके आग्रह से मैं उनके पुत्र के विवाह में सम्मिलित होने कलकत्ते आया, और मैंने अरब में 'सात साल' नामक पुस्तक को पढ़कर पूर्व की यात्रा स्थगित कर पश्चिमीय समुद्र की यात्रा करने का निश्चय किया। इसी निश्चयानुसार मैं बम्बई गया, और २१-३-३६ को सेठ लालचन्द सुपुत्र सेठ धम्मनमल ईश्वरदास से बम्बई में मिला। मैं पसनी का टिकट ले चुका था। सेठ लालचन्द कट्टर पुष्टि मार्गी हैं, इतने पर भी सेठ जी आर्यसमाज की सेवाओं का आदर करते हैं। इस उपलक्ष में सेठ जी ने मुझे बेहरिन के लिए सेठ गोविन्दराम परमानन्द के नाम एक परिचय पत्र मेरे बेहरिन उतरने और ठहरने के लिए दिया। सेठ जी ने यह भी बताया कि कल का जहाज पसनी होते हुए बसरा जायेगा और आप इसी जहाज से पसनी जाने वाले हैं। बेहरिन तथा बसरा आप न जा सकेंगे क्योंकि आपने पासपोर्ट ओफिस से अपने पासपोर्ट में हस्ताक्षर नहीं कराए। पसनी तथा बेहरिन से प्रथम अन्य बन्दरगाहों पर कहीं भी ब्रिटिश कौंसिल नहीं है। "मैंने

कहा "देखा जायेगा, कल के जहाज से मैं पसनी तो चला ही जाऊंगा।" मुझे इस और परिचय पत्र दिलाने में सेठ रणछोड़ जी देसाई मैनेजर सेठ छगनलाल कस्तूरचन्द बम्बई ने अधिक सहायता दी थी। उनको मैं धन्यवाद देता हूँ। इस यात्रा के लिखने में पण्डित चन्द्रगुप्त वेदालङ्कार गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी द्वारा लिखित "वृहत्तर-भारत" नामक पुस्तक से मैंने कुछ अंश उद्धृत किया है जिस से मैं स्नातक जी का आभारी हूँ। पं० मूलराज जी मुलतान निवासी द्वारा लिखित "हिन्दू धर्म दर्पण" नामक पुस्तक से भी मैंने कुछ अंश इस यात्रा में उद्धृत किया है। मैं इनका भी आभारी हूँ। चौधरी धनराजसिंह बी० ए० भूतपूर्व डिपुटीक्लेक्टर जौनपुर के लेख अरब सम्बन्धी 'मनोरमा' नामक मासिक पत्रिका में छपे थे। जिन लेखों के अधिकांश भाग मैंने अपनी इस यात्रा में दिये हैं। इस कारण मैं चौधरी साहब का भी आभारी हूँ।

सेठ अली-बिन-ईसा शूर नगर, जिला मसकत अरब के निवासी हैं। यह सज्जन धीर, गम्भीर तथा मिलनसार व्यक्ति हैं अरबी और अरब के इतिहास का इनको अच्छा ज्ञान है। इनके पास अरब के इतिहास का भिन्न भिन्न लेखकों द्वारा लिखित इतिहासों का उत्तम संग्रह है। शूर अरब के पूर्वी भाग में अरब के भीतर प्राचीन बन्दर है, जिसका इतिहास महाभारत काल के समय से प्राप्त हो रहा है। जब मैं शूर गया था, उस समय महाराज प्राणशंकर के छोटे भाई सेठ अली-बिन-ईसा के पास लेगये थे और उनसे मेरा परिचय कराया था। चूंकि मेरी इच्छा थी कि

मैं अरब का पुराना से पुराना इतिहास जान सकूँ और इसी जान-कारी के लिए मैं सेठ अली-बिन-ईसा के पास गया था। जब सेठ जी को मेरे विचारों का पता चला, तब वे जहाँ तक अरबी इति-हास प्राप्त कर सके निकालकर मुझे सुनाना और अङ्कित कराना प्रारम्भ किया। मैंने अरब सम्बन्धी जो भी नवीन और प्राचीन इतिहास अरबी इतिहासों के आधार पर लिखा है, वह सब सेठ अली-बिन-ईसा के कष्टों का ही फल है। सेठ अली-बिन-ईसा भारत भ्रमण भी कर चुके हैं। उनको आर्य समाज के कार्यों का पूर्ण ज्ञान है। इस कारण उन से मेरा समय समय पर धार्मिक वादा विवाद भी हुआ करता था। परन्तु उनके उदार विचारों को देख मुझे आनन्द हुआ करता था। क्योंकि उन में भारतीय मुसलमानों की भान्ति पक्षपात न था। उन्होंने जिस उदारता के साथ मुझे अरबी इतिहासों से मुख्य मुख्य बातों का ज्ञान कराया है इस के लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

इस प्रकार मैंने अपनी बारहवीं समुद्र यात्रा प्रारम्भ की। मैं पसनी होकर गवादर गया और गवादर से मसकत गया। पसनी और गवादर में मुझे कोई आर्य सामाजिक विचार वाला व्यक्ति नहीं मिला, फिर भी मेरे प्रचार कार्य में मुझे कोई बाधा नहीं पड़ी। इसके पीछे मैं मसकत गया, जहाँ पर सेठ विश्राम भाई पटेल मुझे एक ही सज्जन इस विचार के मिले। चूंकि मैं सनातन धर्मी भाइयों के पास ठहरा था और मेरा प्रवचन गीता जी के दूसरे अध्याय पर होता था, इस कारण भाई पटेल जी मुझे आर्य

सामाजिक विचार का न समझते थे। जिस से लगभग डेढ़ मास के भीतर वे मेरे प्रचार में कभी भी न आये थे। अब मैं मसकत से बेहरिन जाने वाला था। जाने के दो दिन पूर्व भाई पटेल जी से मेरी बातचीत हुई, तब उनको पूर्ण ज्ञान हुआ कि मैं आर्य सामाजिक उपदेशक हूँ। इसी कारण उन्होंने मेरा उस दिन का भाषण अपने निवास स्थान पर रखा, फिर भाषण श्रवण कर उनको अधिक आनन्द हुआ। अब अन्त में मैं उनसे साहाय्य प्राप्त कर सका और उन्हीं के सदुद्योग से मैं मसकत तथा मथुरा में नागरी-प्रचारिणी सभा" स्थापितकर सका। इसके लिये मैं श्रीयुत पटेल जी को धन्यवाद देता हूँ। तत्पश्चात् मैं बेहरिन गया, श्रीयुत पटेल जी ने सेठ धम्मन मल ईश्वर दास की दूकान पर मेरे ठहरने का प्रबन्ध बेहरिन से पत्र लिख कर कराया। बेहरिन में अरब के अन्य स्थानों से "ठट्ठे" के भाटिये व्यापारी तथा अन्य हिन्दू अधिक सख्या में बसे हैं, जो सब के सब पुष्टि मार्गी तथा सनातन धर्मी हैं। परन्तु मैं वहाँ भी अपने प्रचार कार्य में सफ़ल रहा। मेरे कार्य में सेठ मूल जी नृसिंहदास पौत्र सेठ धम्मन मल ईश्वर दास, सेठ गोविन्द राम परमानन्द, पं० कुम्भन दास कस्टम आफ़ीसर, सेठ विष्णुदास, भागीदार सेठ रतनचन्द दीपचन्द और मुखिया ब्रदर्स आदि ने पूर्ण सहयोग दिया था, जिससे मैं बेहरिन में सफल हो सका, इसलिये मैं इन सज्जनों को धन्यवाद देता हूँ। "दबई" में सेठ गिरधारी मल जेठा नन्द रघुवंशी ने मेरे कार्य में पूर्ण सहयोग दिया था। अतः मैं उनको भी धन्यवाद देता हूँ।

बेहरिन से मुझे ईराक जाने का वीजा (Visa) न मिल सका था, जिस कारण मैं करांची लौट रहा था। परन्तु मेरे पूर्व परिचित सेठ विश्राम जी पटेल मुझे मसकत पहुँचने पर उतार ले गये, और उन्होंने ईराक का वीजा (Visa) मुझे मसकत से दिला दिया, जिस कारण मैं ईराक भी पहुँच सका। श्रीयुत पटेल जी की इस कृपा का मैं अत्यन्त आभारी हूँ। रायसाहब दुलीचन्द भूतपूर्व कस्टम आफ़िसर तथा रेवेन्यू आफ़िसर सुल्तान मसकत को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने लाला शङ्करलाल मैनेजर "टाइम्स" प्रेस बसरा को मेरे सम्बन्ध में परिचय पत्र लिखकर मेरे प्रचार आदि के प्रबन्ध ईराक में कराने में सहायक हुए। लाला शङ्करलाल मैनेजर टाइम्स प्रेस बसरा का भी मैं अनुग्रहीत हूँ जिन्होंने मुझे ईराक प्रवेश करा, मेरे कार्य में पूर्ण सहयोग दिया।

मिस्टर एस० बी० रेज़ (एस० बी० राव) एक मद्रासी ब्राह्मण हैं यह गत जर्मन युद्ध के समय ईरान गये थे। तब से वे उन्हीं देशों में कार्य सम्पादन कर रहे हैं। यह सज्जन इस समय बसरा आशार में रहते हैं। इन्होंने एक टर्किश क्रिश्चियन महिला से विवाह कर लिया है। राव साहब सज्जन, उदार और हिन्दू विचारों के व्यक्ति हैं। जिस प्रकार के उदार विचार राव साहब के हैं लगभग उसी प्रकार के विचार उनकी सन्तान के भी हैं। राय साहब के दो लड़के और सबसे छोटी बारह वर्षीया एक कन्या है। इन सब को भारत वर्ष से बहुत प्रेम है। राव साहब ने बसरे का चन्दा कराने में जो डी० ए० बी० कालेज काशी के

लिये किया गया था बहुत यत्न किया था। उनके यत्न से ही मुझे बसरे में सफलता प्राप्त हुई थी। इसके लिये मैं मिस्टर एस० बी० रेज़ (एस० बी० राव) को हृदय से धन्यवाद देता हूँ और उनके इस कार्य की सराहना करता हूँ। परमात्मा उनके और उनकी सन्तान के विचार भारत के प्रेम के प्रति इसी प्रकार बढ़ाता रहे।

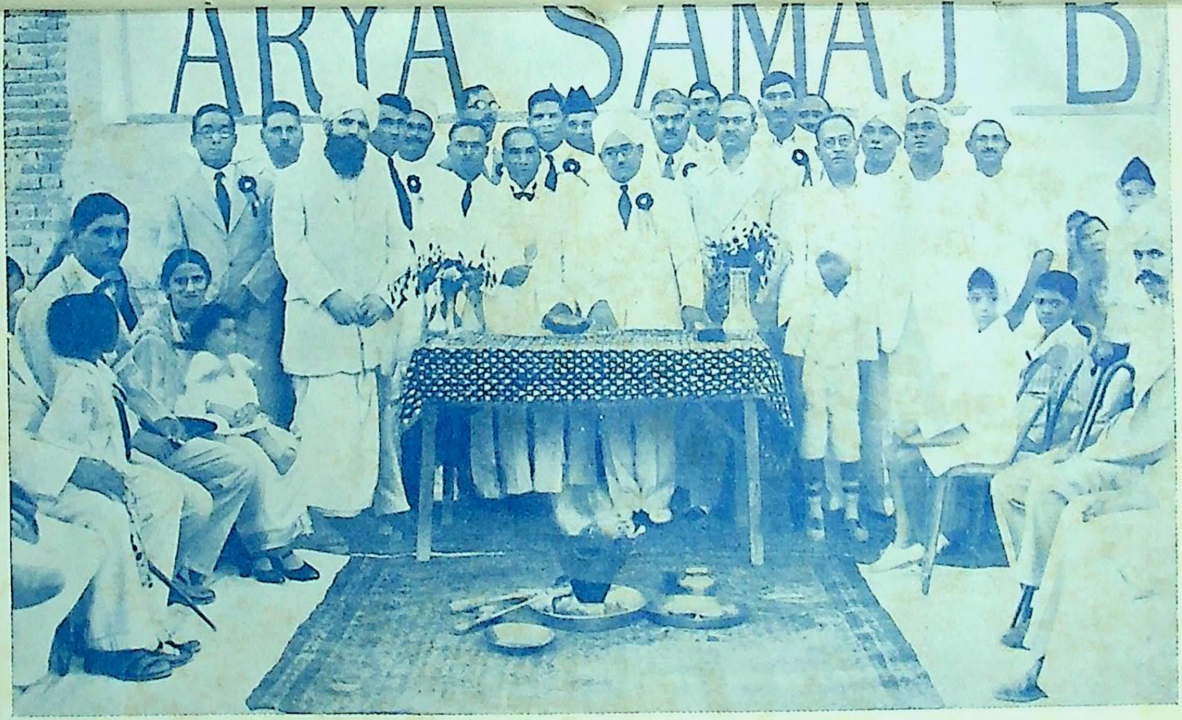
जब मैं ईराक में भ्रमण कर रहा था उस समय मेरे प्रत्येक कार्यों में महाशय ठाकुर कृष्णचन्द्र हब्बानिया, महाशय जे० डी० शर्मा "उपमन्त्री आर्य समाज बगदाद" ने पूर्ण रूप से सहायता दी थी, यहाँ तक कि महाशय कृष्ण चन्द्र जी प्रारम्भ में यदि डी० ए० वी० कालिज काशी के चन्दे के निमित्त स्वयं अच्छी रक़म न देकर चन्दा कराने का यत्न न करते तो चन्दे के कार्य में मुझे सफल होने में कठिनाई प्रतीत हो रही थी। इसलिये महाशय कृष्ण चन्द्र जी अधिक धन्यवाद के पात्र हैं। महाशय जे० डी० शर्मा ने समाज की सेवा करना अपना ध्येय ही बना रखा है और वे इसी आधार पर प्रत्येक भारतवासी की पूर्ण रूप से सहायता करने और कराने में तत्पर रहते हैं। इसलिये उनको भी धन्यवाद देता हूँ। लाला अमरनाथ महेन्द्र प्रधान आर्य समाज बगदाद ने भी मुझे एक कठिन समय पर सहायता दी थी इसलिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। पं० दीनानाथ मन्त्री आर्य समाज बगदाद, मि० मानिक चन्द गुलशन, राय साहब जे० एस० वर्मा, पं० गङ्गा प्रसाद झा, लाला श्याम लाल कोहली आदि

सज्जनों की सर्वदा मेरे प्रति श्रद्धा रहती थी; इन सज्जनों का भी मैं आभारी हूँ।

यह मेरी सारे वर्ष की यात्रा मुसलमानी देशों में रही। मैं अरब और ईराक के मुसलमानों के मनोभावों को भारतीय मुसल्मानों से मिलाकर आश्चर्य में पड़ा करता था। क्योंकि भारतीय मुसल्मान भारत माता को अपनी मातृ भूमि नहीं मानते किन्तु इनकी दृष्टि में अरब और ईराक ही उनकी मातृ-भूमि है और भारतीय मुसल्मान इसी कारण सर्वदा ईराक ही के गीत गाया करते हैं। परन्तु उन देशों के मुसल्मान भारतीय मुसल्मानों को अच्छा नहीं समझते। क्योंकि उनका विचार है कि भारतीय मुसल्मान भारत में जन्म लेकर भारत भूमि में पले हैं, जब वे अपनी मातृ-भूमि की भलाइयों को भूलकर भारत के उद्धार का प्रयत्न न कर अपनी मातृ-भूमि को ही धोखा दे रहे हैं तो वे दूसरों के साथ कैसे अच्छा व्यवहार कर सकते हैं! इन्हीं विचारों से उन देशों के अधिकाँश मुसल्मान भारत से गये हुये मुसल्मानों को आदर की दृष्टि से नहीं देखते। ईराक व अरब में मुसलमान, यहूदी और ईसाई बसे हैं, उनसे यदि कोई प्रश्न करें कि आप कौन हैं तो वे संकुचित नाम न लेकर अपने को ईराकी व अरबी कहते हैं। इसीप्रकार अरब और ईरान के रहने वाले भी भिन्न भिन्न मतावलम्बी अपने आप को उक्त प्रश्न के उत्तर में अरबी और ईरानी ही कहते हैं। ईरान में यदि कोई मुसलमान, यहूदी और ईसाई उक्त प्रश्न के उत्तर में यदि भारतीय मुसल्मानों के सदृश उत्तर दे बैठे, तो उसे

ईरान सरकार की ओर से अधिक कठोर दण्ड मिलता है। मेरे विचार से भारतीय मुसलमानों को भारतीय, हिन्दी अथवा हिन्दू ही कहना अपनी मातृभूमि के किये हुये उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना है क्योंकि अरब, ईराक और ईरान के लोग इन्हीं तीन संज्ञाओं को सुन उक्त शब्दों के कहने वाले व्यक्ति का मान करते हैं। लोगों ने हिन्दू शब्द के अर्थ को संकुचित कर रक्खा है। मैं समझता हूँ जैसे इङ्गलैंड का निवासी इङ्गलिश, फ्रांस का निवासी फ्रेंच, ईरान का निवासी ईरानी, अरब का निवासी अरबी अपने आप को कह कर गौरवान्वित होता है वैसे ही हिन्दुस्थान के रहने वाले प्रत्येक मतावलम्बी को 'हिन्दू' ही कह कर गौरवान्वित होना चाहिये। यह अति उत्तम विचार हैं और ऐसे ही विचारों से देश तथा जाति का कल्याण हो सकता है।

सन् १९१४ में जर्मन युद्ध के समय भारतवासी ईराक में अधिक संख्या में बसे थे। उन्होंने मिलकर आर्य समाज संस्था, बगदाद में स्थापित की थी। उन भारतवासियों में अधिकाँश भारतीय मुसल्मान भी बसे थे। जिनमें से अधिकांश इस समय भी रहते हैं। हिन्दू नामधारी अब बहुत कम रह गये हैं। जैसा भारतवर्षमें भारतीय मुसल्मान व्यर्थ की पक्षपातपूर्ण बातें कह कहीं कहीं उपद्रव करा देते हैं वैसे ही ईराक में बसे हुये भारतीय मुसल्मानों में से कुछेक ने ईराकी सरकार के आगे इधर उधर की बातें कर बग़दाद का आर्य समाज भवन बनना रुकवाना चाहा परन्तु ईराकी सरकार ने किसी सरकारी नियम के आधार पर भवन



आर्य समाज मन्दिर बग़दाद, जो कि सन् १९३४ ई० से अधूरा पड़ा है।
(१) प्रधान महाशय एम० सी० गुलशन (टेबिल के सम्मुख सिर पर साफ़ा पहने हुए। (२) महाशय जे० डी० शर्मा
(जिनकी बड़ी दाढ़ी है सिर पर पगड़ी पहने हुए टेबिल के बाईं ओर खड़े हैं) [पृष्ठ झ]

निर्माण न रुकवाया, किन्तु भारतीय मुसल्मानों के कारण बग़दाद में कोई साम्प्रदायिक दंगा न हो जाय इस प्रश्न को दृष्टि कोण में रखते हुये ईराकी सरकार ने भवन निर्माण रुकवा दिया, जो अब तक रुका पड़ा है। इस प्रकार भारतवर्ष से फूट का बीज अपने साथ भारतवासी ईराक में लेजा कर अपने असङ्गठित होने का प्रमाण दिला कर उस देश के वासियों के सामने हंसी कराने का अवसर दे रहे हैं। ईराकी लोग इस फूट को देखकर हंसते हैं और उपहास करते हैं, क्योंकि ईराकी सरकार और ईराकी लोग ऐसे विचारों को तुच्छ समझते हैं। बग़दाद तथा ईराक में योरोप तथा अमेरिका आदि देशों के ईसाईयों की अपनी मोल ली हुई भूमि पर पर्याप्त संख्या में गिरजे अर्थात् (चर्च) बने हैं इन गिरजों तथा चर्चों के प्रति ईराकी सरकार तथा ईराकी लोग किसी प्रकार की कुभावनायें नहीं रखते क्योंकि योरोप और अमेरिका आदि देशों के वे निवासी जो ईराक में बसे हुये हैं उनमें परस्पर फूट नहीं है। इस कारण ईराकी सरकार तथा ईराकी लोग उन लोगों के प्रति सद् भावनायें ही रखते हैं। परमात्मा ईराक के निवासी भारतवासियों को ऐसी सद्बुद्धि दें कि जिससे कि लोग भी अपना मान स्वयं करना सीखें जिससे वहाँ वालों से भी अपना मान करा सकें।

* ओ३म् *

बम्बई से प्रस्थान

२० जनवरी सन् १६३६ ई० को मुझे सिंगापुर से कलकत्ता आना पड़ा। क्योंकि मेरे मित्र सेठमोतीलाल जैन के पुत्र चिरञ्जीव माणिक चन्द का विवाह था जिसके लिये मुझे उन्होंने आग्रह पूर्वक बुलाया था, जब मैं सिंगापुर से चला था, तब श्रीयुत पं० सकलदेव राय शर्मा उपप्रधान आर्य समाज सिंगापुर तथा और अन्य प्रतिष्ठित आर्य भाइयों से मैं कह आया था कि यथाशक्ति मैं कलकत्ते से पुनः इसी ओर प्रचारार्थ आऊँगा। कलकत्ता आने पर मुझे महाशय तुलसी, सेवक आर्य समाज कलकत्ता से "अरब में सात साल" नामक पुस्तक मिली जिसके लेखक पं० रुचिराम आर्योपदेशक हैं। इस पुस्तक के पढ़ने से पता चला कि उक्त लेखक महोदय कराची से लेकर बैतुलमुक़द्दस तक बिना पासपोर्ट पैदल यात्रा सात वर्ष तक करके ईरान की स्वदेश लौटे हैं। इनको पैदल यात्रा में अरब प्रदेश तथा खात में जहां तहां अनेक कष्टों और आपत्तियों का सामना करना पड़ा है। मैंने यह सब समाचार पढ़ यही निश्चय किया, कि अब पूर्वी द्वीप समूह की यात्रा स्थगित कर ईरान की खात की यात्रा करूं। इसी विचार से बाँदा पहुँच कर सेठ एम० के० रत्नाकर मालिक इन्दौर सोप फैक्ट्री तारदेव बम्बई को पत्र लिख कर

ईरान की खात में जाने वाले जहाज़ों का पता लगाया। उनका उत्तर आने पर मैं बम्बई आया और २२-३-३६ को एस० एस० बारपेटा नामक जहाज से पसनी का टिकट ले प्रस्थान किया। सेठ एम० के० रत्नाकर, सेठ सरस्वती प्रसाद सतना निवासी, सेठ लाल जी मूलजी केनिया तथा कुछ मित्र मुझे बम्बई में जट्टी तक भेजने आये। जहाज ठीक ६ बजे प्रातःकाल के समय चल पड़ा। जहाज में सेठ रतीलाल लोलाधर मैनेजिंग पार्टनर बो० आई० एस० एण्ड को० से पोर बन्दर तक आर्य समाज के सिद्धान्तों पर बात चीत होती आई। सेठ जी जैन सम्प्रदाय के पक्के अनुयायी हैं उनको महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश पर कुछ शङ्काएँ थीं, जिनको उन्होंने क्रमशः किया और मैं उनकी शङ्काओं का यथोचित उत्तर दे उनकी शङ्काएँ निवृत्त करता रहा। जिससे उनको अधिक संतोष हुआ। उन्होंने मुझे अपना छपा कार्ड दिया और यह इच्छा प्रगट की कि कभी मैं अवसर पाकर उनके स्थान पर उनका अतिथि बनूँ। वे पोर बन्दर में उतर गये। इस प्रकार हमारा जहाज २७-३-३६ को पसनी बन्दर के सामने समुद्र देव के गर्भ में ठहर गया। बम्बई से सेठ गिरधारीमल, तुलसीदास पसनी के पास मेरे आने का तार आ चुका था इस कारण उक्त फर्म को मुनीम महाशय पाल वाली नौका लेकर १० बजे दिन में मेरे पास जहाज़ पर आ पहुँचे और मुझे सामान सहित पालवाली नौका में बिठलाकर किनारे की ओर चल पड़े। आज समुद्र में झञ्झावात (तूफान) बहुत अधिक था जिस

कारण नौका बड़ी कठिनाई से ४ वजे सन्ध्या समय किनारे आलगी। पालवाली नौका से मुझे एक चारपाई में उतारा गया जिस चारपाई को चार बिल्लोच अपने अपने कन्धों पर रखे थे और छाती से गहराई में समुद्र के भीतर वे लोग खड़े थे। इस प्रकार मैं इस जीवन में ही चार व्यक्तियों के कन्धोँ पर चारपाई में बैठकर जीवित ही किनारे लाया गया। कितारे पर सारे हिन्दू सेठिये उपस्थित थे। जिनसे मिल मिलाकर सामान लेकर कस्टम आफिसर के पास मुझे आना पड़ा। यह पोर्ट बिलोचिस्तान का प्रथम बन्दरगाह है। इस लिये इस बन्दरगाह में खान क्लात की ओर से एक मुसल्मान कस्टम आफिसर था। उसने मेरी पुस्तकों का ट्रंक देखकर पूछा कि मैं कौन हूँ, जब उसको पता चला कि मैं वैदिक मिश्नरी हूँ तब उसने मेरा सारा सामान बिना देखे ही छोड़ दिया। इस प्रकार संध्या समय ५ बजे के निकट मैं सेठ गिरधारी मल तुलसी दास की फर्म में लाकर ठहराया गया।

मेरा प्रचार

दो तीन दिन वर्षा के कारण मेरा प्रचार न हो सका। सेठ देवामल प्रधान हिन्दू महाजन पसनी ने ३१-३-३६ से स्थानीय देवी जी के मन्दिर में मेरे भाषणों का प्रबन्ध किया। इस प्रकार मेरे भाषण १०-४-३६ तक नित्य रात्रि में होते रहे। मैंने हिन्दू संगठन और आर्य समाज के भिन्न भिन्न सिद्धांतों पर भाषण दिये। इन भाषणों को सुनने के लिये स्थानीय हिन्दू तथा बिल्लोच मुसल्मान भी आते थे।

पसनी बन्दर

पसनी की अवस्था देखने से पता चलता है कि आज से अस्सी वर्ष पूर्व यहां कोई बन्दरगाह न था। पता लगाने से विदित हुआ कि यह बन्दर लगभग अस्सी वर्षों से ही यहाँ बसाया गया है। आज से ७० वर्ष पूर्व पं० चोटीराम सिन्ध के माभ्फण्ड ग्राम निवासी दो चार सिन्धी व्यापारियों के साथ पसनी आये। सिन्धियों ने दूकानें खोलीं और पं० चोटोराम ने देवी के मन्दिर की नींव डाली। इस समय पसनी में ३५ वर्ष से पुरानी कोई भी फर्म नहीं है। पुराने दूकानदार देश चले गये हैं। मुझे सेठ देवामल भावनदास ने बताया। "मैं प्रथम गवादर में खोजा जाफर रहमतुल्ला की फर्म में नौकर हो कर आया था। गवादर में तीन वर्ष रहा। हमारे सेठ की दूकान पसनी में भी थी। जिसमें दैवयोग से अग्नि लग गई। जिस से लगभग दो लाख की हानि हुई। उस समय मेरे सेठ मुझे गवादर से पसनी लाये। मैंने देखा कि जितना माल उधार दिया गया है उसके बहीखाते सब जल गये हैं। उस समय इस देश के लोग अधिक ईमानदार और सच्चे थे। परन्तु अब उस प्रकार की सचाई और ईमानदारी देखने में नहीं आती। मैंने उस समय उन बिल्लोच मुसलमानों को जिनको उधार माल दिया गया था बुलाकर कहा कि 'जिन बहीखातों में आप लोगों को उधार माल दिये जाने की रकमें लिखी थीं वे सब जल गये हैं। अब आप लोग जो कुछ लिखायेंगे वही हम नये बहीखाते में लिख सकेंगे।' उस समय

उन लोगों ने मुझे सत्तर हजार की रक़म लिखाई। जिन रकमों को सेठ स्वयं वसूल करने लगे। मुझे काम से जवाब दे दिया गया, क्योंकि उनकी आर्थिक अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ रही थी। मैंने उस समय अपनी दूकान करली; उस समय सेठ गिरधारीमल तुलसीदास की नई फर्म खुली थी उनको अनुभवी भागीदार की आवश्यकता थी। उन्होंने मुझको चुना और तब से मैं इसी फर्म में अब तक भागीदारी का काम करता चला आ रहा हूँ। पहिले पसनी में व्यापार साधारण था। परन्तु सन् १९२२ ई० में खानक़ातका एक वजीर इस बन्दरगाह में आया और गवादर भी गया। गवादर बन्दरगाह सुलतान मसकत के आधीन है। वजीर ने देखा कि हमारी सारी प्रजा हमारा पसनी बन्दरगाह होते हुए भी गवादर से हर प्रकार के माल लेने जाती है; यह अनुचित है, जहाँ हर प्रकार का माल मिल सकता है। उस समय वजीर ने गवादर और पसनी की सीमा पर चारों ओर पहरा बिठला दिया, जो गवादर से माल लाने वालों से दूना कर वसूल करते थे इस पर व्यापारियों में बड़ी घबराहट उत्पन्न हुई और व्यापारियों ने इसका कारण जानना चाहा। जिसके उत्तर में उनसे कहा गया कि यदि तुम लोग पसनी से माल ख़रीदो तो बहुत कम कर देना पड़ेगा। तब से सारे काफिले ईरान, बिलोचिस्तान और अफ़गानिस्तान तक के गवादर छोड़कर पसनी आने लगे। गत वर्ष हमे थोड़े से दूकानदारों ने खानक़ात को पाँच लाख रुपया माल का कर दिया है।"

बिल्लोच मुसल्मानों के मनोभाव

भारतवर्ष में जो बिल्लोची मुसल्मान छुरा, कैंची बेचते फिरते हैं, वे उपद्रवी, क्रूर और डाकू होते हैं। परन्तु यहां के बिल्लोची इस प्रकार के नहीं हैं। ये लोग सीधे, ईमानदार और सच्चे प्रतीत होते हैं। ये लोग भारतीय मुसल्मानों की भांति भी उपद्रवी नहीं होते। मेरी यहाँ पर कई मुसलमान मौलवियों से धर्म सम्बन्धी बातचीत कई बार हुई। परन्तु ये लोग कितनी शान्ति से उत्तर देते हैं, यह देखकर मुझे आश्चर्य होता था। ये लोग ईद या बकराईद के दिन गाय की कुरबानी नहीं करते सर्वदा बकरे की ही कुरबानी किया करते हैं, हिन्दुओं को बड़ी आदर की दृष्टि से देखते हैं। ये लोग जब यह सुनते हैं कि भारतवर्ष के मुसल्मान गौ की कुरबानी कर अपने पड़ौसी हिन्दुओं का दिल दुखा उनसे झगड़ा करते हैं और मस्जिद के सामने बाजा बजाते जाते देखकर भी हिन्दुओं से झगड़ा करते हैं तो इनको बड़ा आश्चर्य होता है। इन लोगों का कथन है कि—"कुराने शरीफ़ में गायकी ही कुरबानी करो, ऐसा कहीं नहीं लिखा है, जो मुसल्मान अपने पड़ौसी को कष्ट पहुँचाता है उसको बहिश्त नसीब नहीं हो सकता।

पसनी में ज़िकरे वहदत

हाजीदुर्रा विलोचिस्तान में मकरान प्रान्त के बड़े जमीदार हैं जो सीधे हज्ज करके मेरे सामने पसनी आये थे। वे मेरे मित्र बन गये थे। कुरान शरीफ़ उनको भली भांति कण्ठस्थ है और अर्थ भी

समझते हैं। १-४-३६ की रात्रि को मेरा भाषण समाप्त होने के पीछे वे मेरे पास आये। उनसे मेरी हज्ज के सम्बन्ध में बातचीत होने लगी। पश्चात् एकेश्वरवाद पर बातचीत हुई जब मैंने यह समझाया कि परमात्मा के दरबार में किसी की सिफ़ारिश की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह सब के कार्यों को देखता और उसका यथोचित निर्णय कर दण्ड देता है इत्यादि लगभग २॥ घण्टा तक मेरी हाजी साहब से बातचीत होती रही। हाजी साहब धर्म के सम्बन्ध में पक्षपाती न थे इस कारण अन्त में वे बोले—"पण्डत साहब अगर आप मुझे छः मास पूर्व मिले होते तो मैं हज्ज करने में व्यर्थ ५००) न खर्च करता।" फिर वे बोले—'मकरान के मुसल्मानों में एकमज़हब ज़िकरे वहदत निकला है जो हज्ज वग़ैरः कुछ नहीं मानता, मैं कल सुबह आपके पास उनके एक मौलवी को लाऊँगा मैंने कहा—"बेहतर है।" २-४-३६ को हाजी दुर्रा साहब मिस्टर म्यारखाँ को मेरे पास लाये। जिनसे मेरी इस प्रकार बातचीत हुईः—

मैं—कहिये जनाब! आप ज़िकरे वहदत के पैरोकार हैं?

मि० म्या—जी हाँ!

मैं—आप लोग नमाज़ कितनी बार पढ़ते हैं?

उत्तर—नमाज़ पढ़ना और बार बार झुककर सिजदा करना हम लोग पाप समझते हैं।

मैं—क्या नमाज़ पढ़ना और सिजदा करना कुराने शरीफ़ का फरमान नहीं है ?

उ०—नहीं, जो लोग नमाज़ पढ़ते, और सिजदा करते हैं वे दोजख़ में जायेंगे।

मैं—क्या आप लोग रोज़े रखते हैं ?

उ०—हम लोग ३० दिन के रोज़े नहीं रखते बल्कि दस दिन के ही रोज़े रखते हैं और हमारे रोज़े नमाज़ी मुसल्मानों से पहिले ही ख़त्म हो जाते हैं।

मैं—आप लोग जो नमाज़ नहीं पढ़ते तो खुदा की याद कैसे करते हैं ?

उस समय उन्होंने मुझे एक छोटा सा ट्रैक्ट "ज़िकरे वहदत" नामक दिखलाया और कहा "हम इसका मुताला करते हैं। मैंने उस किताब को ले लिया और उलट पलट कर देखा उसमें सारी आयतें कुरान शरीफ़ की ही अरबी लिपि में छपी थीं। केवल एक कल्मा में अन्तर था जिसका विवरण आगे आ जायेगा।

मैं—क्यों जनाब ! इस ज़िकरे वहदत को आप किस ओर मुँह करके पढ़ते हैं ?

उ०—हम लोग चार सिम्त में से किसी सिम्त की ओर जिकरे वहदत कर सकते हैं और पढ़ सकते हैं।

मैं—क्या आप काबा की ओर मुँह करके 'ज़िकरे वहदत' नहीं पढ़ते ?

उ०—आप काबा का मतलब क्या समझते हैं ?

मैं—काबा का मतलब मैं यही समझता हूँ कि जहाँ हजरत मोहम्मद साहब ने जन्म लिया था और सारी दुनिया के मुसल्मान इसी काबा को 'काबा' मानते हैं।

उ०—'ओ आवदर्म बखानये काबा रब्बे जलील' देखिये! यह कुरान शरीफ़ में आया है जिसका मतलब है 'मैं अपने परवर दिगार की तरफ मुंह करके' यहाँ पर काबा का मतलब तरफ से है न कि वह घर जिसको मुल्ला लोंगों ने अपने पेट पालने के लिये अरब में बना रक्खा है।

मैं—क्यों जनाब! कुराने शरीफ़ में यह कहाँ लिखा है कि इन्सान किसी सिम्त में खुदा का ज़िक्र कर सकता है?

उ०—वललिल्लाहिल मशरिक़ुल वल मग़रिब फअाईनमा तवअल्लू फसुम्मा वजुल्लाहे। इसका मतलब यह है 'मशरिक़' और मग़रिब अल्ला ही के वास्ते हैं। पस! जिस तरफ़ मुंह करते हैं अल्ला ही हाज़िर व नाज़िर है।'

मैं—क्या आप हज़रत मोहम्मद साहब को जिनका काबा में जन्म हुआ और मृत्यु के पीछे मदीने में दफनाये गये जिनकी हज्ज करने हमारे दोस्त हाजी दुर्रा साहब गये थे पैग़म्बर नहीं मानते?

उ०—नहीं, हम उस मोहम्मद को पैग़म्बर नहीं मानते, बल्कि हम 'नूरे पाक नूरे मोहम्मद मेहदी' को पैग़म्बर मानते हैं। जो खुदा का नूर है और जिसकी रोशनी सबसे पहिले बैतुल

मुक़द्दस में ज़ाहिर हुई थी। यह नूर बिना माँ बाप का है और इन्सानी जिस्म में न हो कर खुदा के नूर की शकल में है।

मैं—जनाब ! उस नूर का जिक्र कुराने शरीफ़ में है या किसी और आसमानी किताब में है ?

उ०—वह किताब अभी तक दस्ती लिखी है शाया नहीं हुई। बड़ी है मोटी है। मैं उसको लाकर आप को दिखलाऊँगा। तब उस पर बात चीत करियेगा।

मैं—जनाब ! 'ला इलाहा इलल्लिलाः मोहम्मदुल रसूल लिल्लाः' क्या यह कलमा कुराने शरीफ़ का नहीं है ?

उ०—है।

मैं—जब है तब इस में तो 'मोहम्मदुल रसूल लिल्लाः' लिखा है फिर आप हज़रत मोहम्मद को रसूल क्यों नहीं मानते ?

उ०—हम इसको इस तरह पर पढ़ते हैं। आप देखिये 'लाइलाहाइललिल्लाः नूरे पाक नूरे मोहम्मद मेहदी रसूल लिल्लाः'

मैं—क्यों जनाब ! 'नूरे पाक नूरे मोहम्मद मेहदी' यह चार लफ्ज कहां से मिला लिये ? आप कुराने शरीफ़ को कलामे खुदा मानते हो फिर खुदा की भेजी हुई आयत में यह चार लफ्ज कैसे मिल सकते हैं ? यदि आप इस प्रकार खुदा के कलाम में मिलावट कर सकते हैं तो कुराने शरीफ़ खुदा का कलाम नहीं हो सकती ?

उ०—पण्डत साहब ! क्या आप को यह पता नहीं है कि मौजूदा कुराने शरीफ़ जिस तरतीब से लगा कर छापी गई है

वह तरतीब खुदा की दी हुई तरतीब नहीं है। बल्कि यह तरतीब हज़रत मोहम्द साहब के मरने के पीछे अबू बक्र रदीअल्लाहो अनहुम और हज़रत उमर ने लगाई है क्योंकि वे उस वक्त के पेशे इमाम थे। 'ला इलाहा इललिल्लाः मोहम्मदुल रसूल लिल्लाः' ये दोनों कल्मात अलग अलग थे उस वक्त के पेशे इमाम ने इन दोनों कल्मों को दूर से उठाकर एक जगह पर कर दिया था। हमारे पेशे इमाम ने इन दोनों आयतों में सिर्फ यह चार लफ्ज मिलाये हैं। आप फ़ैसला करिये कि जिन इमामों ने खुदा की दी हुई तरतीब को तबदील कर दिया और कल्मात भी अपनी मर्जी से इधर उधर कर दिये फिर भी कुराने शरीफ़ को यह नमाज़ी मुसल्मान खुदा का कलाम मानते हैं। अब हमारे पेशे इमाम के चार लफ्ज़ मिलाने से कुराने शरीफ़ खुदा का कलाम क्यों नहीं हो सकती ?

मैं—मेरे ख्याल से आपकी बात इन्साफ़ ज़रूर चाहती है लेकिन अगर आपका फरमाना दुरुस्त है कि मौजूदा कुराने शरीफ़ की तरतीब खुदा की तरतीब नहीं है बल्कि पेशे इमामों की लगाई हुई है तो कुराने शरीफ कभी भी खुदा का कलाम नहीं हो सकता। क्योंकि खुदा के कलाम की तरतीब में तबदीली वही कर सकेगा जो खुदा से बुद्धि और विद्या में बड़ा हो। इसी से मेरे खयाल से कुराने शरीफ खुदा का कलाम नहीं है। देखिये ! हमारे वेद मुकद्दस आदि सृष्टि में जिस तरतीब से उतरे थे उसी तरतीब से अब तक मौजूद हैं। इसलिये वेद मुकद्दस ही

खुदा का कलाम है और आप भी अब इधर-उधर न भटकिये बल्कि वेदे मुक़द्दस की ओर आइये । इस पर लोग हंस पड़े और हमारे साथी मिस्टर म्यार खां भी उठकर चल दिये, और बोले "आप से फिर कभी मिलेंगे" मैंने कहा "अच्छी बात है।"

कब्र से

यह बिलोचिस्तान का प्रथम बन्दरगाह है जो खान क्लात के आधीन है सन् १७३६ ई० में अरब यात्री अब्दुल अजीज़ जब इधर से आया था तब उसने अपनी यात्रा की पुस्तक में जो अरबी में लिखी है पसनी बन्दर का कुछ भी विवरण नहीं लिखा और न उसने कराची का ही वर्णन किया है। उसने सोनम्यानी बन्दर का अच्छा विवरण दिया है और सोनम्यानी को ही सिन्ध का मुख्य बन्दर बतलाया है। पसनी में इस समय एक सहस्र बिलोचियों की जन संख्या होगी। जो केवल मछली मारने का ही काम करते हैं। यहां से सहस्रों मन मछलियाँ कोलम्बो भेजी जाती हैं और कोलम्बो से अन्य देशों में जाती हैं। इस बन्दर में किसी प्रकार की वस्तु की उपज नहीं है। यहाँ तक कि किसी प्रकार की भाजी तरकारी भी नहीं उपजती। इस कारण यहां के लोगों का मुख्य भोजन मछली ही है। यहां पर अधिक दाम वाली मछलियां भी पाई जाती हैं।

देवी जी का मन्दिर

यहां पर हिन्दुओं की कुल दस दूकानें हैं जिनमें केवल दो

दूकानें बड़ी और शेष छोटी हैं। मैं पीछे लिख आया हूँ कि इस मन्दिर की नींव पं० चोटीरामजी ने रक्खी थी। पं० चोटीराम स्वयं मांस मदिरा का सेवन किया करते थे। इसी कारण देवी जी की स्थापना उन्होंने की थी, जिससे खान-पान में असुविधा न हो। इस समय गिरधारी महाराज पुजारी हैं, जो चोटीराम महाराज की पुत्री के पुत्र हैं। इनको मदिरा पान की भारी लत है इसी कारण इन्होंने देवी जी के सामने भैरव जी की मूर्ति भी स्थापित कर रक्खी है। मछली के बिना इनका भोजन किसी दिन नहीं बनता। जिस दिन मैं पसनी उतरा और फ़र्म में ठहराया गया था उस समय एक सज्जनने मुझसे प्रश्न किया। आप तो सब कुछ खाते होंगे ? मैंने पूछा "सब कुछ का, आपका क्या अर्थ है ?" वे बोले कि आप "मांस मछली आदि भी खाते लेते हैं ?' मैंने कहा "नहीं, मैं नहीं खाता।" वह बोले "आप किसी प्रकार का संकोच न करें। हमारे पुजारी जी भी मांस मछली का देवी जी को भोग लगा कर सब कुछ खा लेते हैं इस कारण आप भी खा सकते हैं।" मैंने कहा "मैं छूता भी नहीं हूँ।" वे बोले "फिर आप रोटी किस के साथ खायेंगे।" मैंने कहा ' आलू कराची से आप लोगों के पास आता है उसी का शाक बन सकता है और दालें भी कराची से आती हैं मैं प्रसन्नता पूर्वक इन सबको बनवा कर रोटी के साथ खा लूंगा। आप इसके लिये चिन्ता न करें।" यह सुनकर वे चुप हो गये। इस मन्दिर में गिरधारी महाराज ने श्री हनुमान जी की मूर्ति और शिवजी का लिङ्ग भी स्थापित किया है। प्रत्येक

पूर्णिमा को गिरधारी महाराज अरबी सिन्धी लिपि में लिखी तथा सिन्धी भाषा में श्री सत्यनारायण की कथा करते हैं। सारे हिन्दू दुकानदार इस दिन व्रत रखकर श्रद्धा-पूर्वक कथा सुनते और इस दिन मांस मछली का सेवन नहीं करते हैं।

शाही मस्जिद

पसनी में खान क्लात की ओर से एक मस्जिद बनी है जिसमें नमाज़ पढ़ाने के लिये काज़ी रहमतुल्ला साहिब नौकर हैं। काज़ी जी अरबी, फारसी, बिलोचि, सिन्धी तथा उर्दू भली प्रकार जानते हैं। एक बार क़ाज़ी साहिब मेरे पास भी आये थे और लगभग १ घण्टा धार्मिक विषय पर मुझ से बात-चीत करते रहे थे। पसनी में खान क्लात की ओर से एक साधारण स्कूल भी है जिसमें प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है, साथ-साथ अँग्रेज़ी भी पढ़ाई जाती है। मेरा विचार क्लात तथा बिलोचिस्तान के भीतरी भाग में भी जाने का था। परन्तु वर्षा ऋतु यहाँ की समाप्त हो रही थी, इस कारण मार्ग पानी से भरे थे। सवारी का उचित प्रबन्ध न हो सकने के कारण फिर मैंने गवादर (Gwadur) जाने का विचार किया।

पसनी से गवादर को प्रस्थान

पसनी से गवादर जाने के लिये बी० आई० कम्पनी के जहाज़ नहीं मिलते। क्योंकि बम्बई से जो जहाज़ पसनी आते हैं वे गवादर नहीं जाते और जो जहाज़ गवादर जाते हैं वे पसनी नहीं

आते। ईरान की खात में गवादर पसनी से आगे है। इस कारण जो लोग पसनी से गवादर जाते हैं उनके लिये दो मार्ग हैं। (१) ऊँट पर बैठकर स्थल मार्ग से पसनी से तीन दिन में यात्री गवादर पहुँच सकता है। (२) यात्री छोटी-छोटी नौकाओं अथवा पालवाली नौकाओं पर बैठकर समुद्र मार्ग से पसनी से गवादर जा सकते हैं। इस मार्ग में यदि नौका को वायु समुद्र में उचित रूप से मिल गई तब तो यात्री पसनी से गवादर बारह घण्टे में पहुँच सकता है और यदि वायु नौका को विपरीत मिल गई तो नौका को इसी मार्ग में बारह दिन भी लग सकते हैं। मुझसे लोगों ने कहा 'पण्डित जी! आप कभी ऊँट पर सवार नहीं हुये इस कारण आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस लिये नौका द्वारा जाइये, यह मार्ग आपको सुविधाजनक होगा" मुझे भी यह मार्ग उचित जँचा। मैंने यह भी सोचा कि नौका से जाने से समुद्र की यात्रा का ज्ञान अच्छा होगा क्योंकि नौका जहाज़ से कम चाल से चलती है और नौका में बैठने से समुद्र का पानी निकट रहने से बहुत सी बातों का ज्ञान हो सकेगा। इन सब बातों को विचार कर मैंने भी जल मार्ग से ही इस यात्रा के लिये उचित समझा।

११-४-३६ को प्रातःकाल आठ बजे मैं समुद्र देव के किनारे आया। मेरे साथ सेठ देवामल, सेठ भागचन्द सेठ धन्नू मल, सेठ पिस्सू मल तथा और भी हिन्दू दुकानदार इनके अतिरिक्त क़ाज़ी अबदुल कादिर और कई मुसलमान सज्जन किनारे तक

आये। सब से मिल कर मुझे एक बिल्लोच ने अपने कन्धे पर बिठला समुद्र के भीतर खड़ी हुई छोटी नौका में बिठला दिया। अब तक मैंने इतनी लम्बी यात्रा बड़े २ जहाज़ों में बैठ कर की थी इतनी छोटी नौका में बैठ कर इतनी लम्बी यात्रा करने के लिये यह मेरे लिये पहिला अवसर था। मल्लाह गुलाम जान ने नौका खोल दी और पाल चढ़ा दिया। मैंने भी गायत्री मन्त्र का जाप करना प्रारम्भ कर दिया। नौका चल पड़ी। आधा घण्टा नौका चली ही थी कि नौका की चाल विपरीत तूफ़ान में आ पड़ी। अब नौका इस तूफ़ान के सहारे से मोटर लाँच की भांति वेग से चलने लगी। मार्ग में नौका वायु के झोंकों और समुद्र की तरंगों के कारण पानी में एक ओर अधिक दब जाती और दूसरी ओर उठ जाती उस समय मल्लाह अपने दो खलासियों सहित उठे भाग की ओर बोझा शीघ्रता से रख कर दबा देता था। ऐसे समय यदि शीघ्रता न की जाये तो नौका के उलटने का भय रहता है। नौका अधिक भारी व बड़ी न थी किन्तु काशी के दशाश्वमेध घाट पर गंगा जी में तैरती हुई नौकाओं के बराबर अथवा उन से कुछ छोटी ही होगी। तरंगों द्वारा पानी पर्याप्त संख्या में नाव में आ जाता था। मैं उस पानी को छाता तान कर रोक रहा था। तिस पर भी मेरे शरीर का अधिक भाग भीग गया था नौका में पानी भर जाता था जिस पानी को खलासी बराबार बाल्टी में भर भर बाहिर फेंकते थे। इस प्रकार तूफान में फंसी नौका को देख कर मुझे चीन

के यात्री फाहियान का स्मरण आ गया। जो सं० ४०५ ई० में चीन से भारतवर्ष इसी प्रकार की नौका द्वारा आया और लौटा था वह भी इसी प्रकार कई बार ऐसे ही तूफ़ान में फंसा था। तात्पर्य यह है कि हमारी नौका इस प्रकार ८॥ बजे प्रभात से चल कर ३॥ बजे सन्ध्या तक पसीने से सैंकड़ों मील दूर तूफान के साथ फुटबाल खेलती, कुलांचे लगाती समुद्र तल पर विचरती रही। अन्त में मल्लाह ने शीघ्रता से पाल को एक ओर से दूसरी ओर को बदल दिया। अब नौका ५ बजे सन्ध्या समय पसनी के सामने वाले पर्वत के निकट आई और खड़ी कर दी गई। मल्लाह ने लंगर डाल दिया। नौका रुक गई। परन्तु समुद्र की तरंगों के कारण नौका झूला के समान झूल रही थी। मैं प्रातःकाल कुछ खाकर नौका में बैठा था। नौका में लघुशंका व दीर्घशंका के लिये कोई स्थान न था। इस कारण मैंने अब तक न कुछ खाया था और न पानी ही पिया था। आज की सारी रात मैंने बिना कुछ खाये पिये बिता दी। १२-४-३६ को नौका ठीक छः बजे प्रातःकाल चल पड़ी। लग भग तीन घण्टा चलने के पीछे नौका फिर वही कलवाले तूफ़ान में आ पड़ी और आज भी कल की ही भाँति दशा हुई।

इस प्रकार हमारी नौका तरङ्गों के साथ अटखेलियाँ करती हुई समुद्रतल पर छुवा छुवव्वल खेलती हुई पाँच बजे सन्ध्या समय "जबल शुमाल" नामक पर्वत के नीचे पहुँची। इस समय मल्लाह ने बड़ी शीघ्रता से पाल का रुख बदला। यदि इस समय मल्लाह

एक मिनट भी पाल का रुख बदलने में देरी करता तो नौका "जबल शुमाल" पर्वत से टकराकर चूरचूर हो जाती। अब नौका का लंगर इसी पर्वत के नीचे डाल दिया गया। मैं दो दिन की निर्जला एकादशी के व्रत के समान व्रत किये बैठा था। अब इस समय भूख और प्यास ने अधिक सताया। इस कारण टिफिन कैरियर खोलकर पूरी, मिठाई, नमकीन भरपेट खाया फिर पानी पिया पश्चात् कुछ फल खाये। नौका तरङ्गों के कारण झूलाके समान झूल ही रही थी, जिस कारण निद्रा न आती थी। १२ बजे रात्रि में मल्लाह ने नौका चला दी परन्तु वायु ठीक न होने के कारण रोक दी। रात को अँधेरे में मैं शौच गया परन्तु नौका हिलने के कारण शौच साफ़ न आया। प्रातःकाल नौका चलाई गई, इस समय वायु बहुत कम थी इस कारण नौका धीरे धीरे मस्तानी चाल से चल रही थी। संयोगवश मेरी दृष्टि नौका के पीछे की ओर गई, उस समय मैंने एक मगरमच्छ को नौका की ओर अति वेग से आते देखा। मैंने मल्लाह को सचेत किया। मल्लाह ने बड़ी लापरवाही से उसकी ओर देखा और हँसने लगा। मैंने विचार किया कि नौका की चाल कम है और पानी भी नौका से लगभग १ या १॥ हाथ की गहराई पर है। एक ओर नौका झुकी हुई है जिधर से पानी और भी निकट है। इस कारण सम्भव है कि मगरमच्छ झुकाव की ओर से नौका में चढ़ने का यत्न करे। यह विचार कर मैं अपना डण्डा सँभालने लगा। इधर मल्लाह के हाथ में भी एक मोटी लकड़ी थी जिसको गुजराती में सुकान (Rudder)

कहते हैं जिसके द्वारा मल्लाह नौका का रुख बदलता है (Rudder) ही के द्वारा सामने व दायें बायें चलाता है। मैं जिस विचार में था वह सत्य निकला। मगरमच्छ नौका के झुके भाग पर अपना मुख और पञ्जा रखकर फ़ू फ़ू करता हुआ शीघ्रतासे चढ़ने लगा। निकट मैं ही था। मैंने अपने डण्डे के मोटे भाग को ऊपर उठाकर बलपूर्वक मगरमच्छ के पञ्जे पर मारा जिससे उसका पञ्जा पिचल गया और नाखून आदि भी कुचल गये। ठीक उसी समय मल्लाह ने भी सुकान (Rudder) से मगरमच्छ के थूथने पर इतने ज़ोर से मारा कि जिससे मगरमच्छ बड़ी भयङ्कर चिङ्घाड़ मारता हुआ समुद्र के भीतर गिर ऐसा भागा कि फिर वह दिखाई न दिया। चोटें उसके शरीर में पूरी लगी थीं इस कारण सम्भव है कि वह मर ही गया हो। इस प्रकार हमारी नौका अपनी मस्तानी चाल से चलती हुई रात को १२ बजे गवादर से लगभग दो मील की दूरी पर 'सूर' के पर्वत के नीचे लंगर डालकर ठहराई गई। मैंने आज भी सारे दिन भोजन न किया था और न पानी ही पिया था। इस समय थोड़ा भोजन कर पानी पी सोने के लिये बिस्तर पर लेट गया। परन्तु नींद न आई क्योंकि मेरी दृष्टि के सामने इस समय भी उस मगरमच्छ का चित्र घूम रहा था और यह विचार होता था कि सो जाने से कोई अन्य जल जन्तु नौका पर चढ़ कर अनिष्ट न करे। इस प्रकार विचार करते करते प्रभात हो गया। धीरे-धीरे भुवन भास्कर ने अपनी देदीप्यमान प्रभा द्वारा रात्रि के तम को नाश कर चारों ओर प्रकाश ही

प्रकाश कर दिया। १४-४-३६ को भी प्रातःकाल से हवा न थी मल्लाह नौका को रोके रहा। १२ बजे दिन में थोड़ी-थोड़ी हवा चली मल्लाह ने नौका चलाई और वह इतनी धीरे-धीरे चली कि २॥ घण्टे के पीछे किनारे पहुँची। मैं बड़ी शीघ्रता से नौका से कूद कर गवादर की भूमि पर आ खड़ा हुआ। कस्टम में सामान लेकर गया जहां पर एक अरबी बैठा था उसने कहा "आज शुक्रवार है जिससे कार्यालय बन्द है। आज सामान यहाँ पर ही रहेगा आप कल सामान की परीक्षा करा करके ले जाइयेगा" मैंने हवनकुण्ड, हवन की सामग्री, पंच पात्र धोती तथा तौलिया उठाली और मल्लाह के साथ बाज़ार आया। जब हिन्दू दुकानदारों को पता चला कि मैं आ गया, तब सब लोग मिलने आने लगे, क्योंकि उनको पसनी के सेठियों ने मेरा समाचार पत्र द्वारा दिया था। दूसरे दिन कस्टम कार्यालय में गया मुझे उपदेशक समझ कस्टम आफिसर ने मेरा सारा सामान बिना देखे छोड़ दिया। मेरे पास सेठ तुलसीदास आये जिनके पास सेठ फग्गण मल दयाराम बम्बई वाले ने मेरे सम्बन्ध में पत्र लिखा था, वे उस पत्र को भी लेकर मेरे पास आये और मुझसे प्रश्न किया "पंडित जी! मेरे पुरोहित जी ने बताया था कि आर्यसमाज ब्राह्मणों का कट्टर शत्रु है इस कारण आर्यसमाज में जन्म के ब्राह्मण नाम के भी नहीं हैं, आर्यसमाज में केवल ढेढ़, चमार ही भरे हैं। क्या यह सत्य है?" मैंने उत्तर दिया, "नहीं, महर्षि दयानन्द स्वयं जन्म के ब्राह्मण औदीच्य परिवार में जन्मे थे। स्व० धर्मवीर पण्डित

लेखराम, स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी, स्व० पं० गणपति शर्मा, स्व० सामवेद भाष्यकार, पं० तुलसी राम स्वामी, वेद भाष्यकार स्व० पं० शिव शंकर शर्मा, काव्यतीर्थ, वर्तमान पण्डित राजाराम शास्त्री प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कालिज लाहौर, बख़शी राम रत्न बी० ए० बी० टी प्रिंसिपिल डी० ए० वी० कालिज लाहौर, पण्डित कालीचरण शर्मा आलिम फ़ाज़िल, पं० शिव शर्मा महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त, पं० रामनारायण जी मिश्र बी० ए० पी० ई० एस० प्रिंसिपिल डी० ए० वी० कालिज काशी, इस प्रकार अनेक जन्म के ब्राह्मण आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र में सम्मिलित थे, और सम्मिलित हैं। सेठ जी आर्यसमाज ब्राह्मणों का शत्रु नहीं है किन्तु ब्राह्मणों का कट्टर हितैषी है परन्तु कैसे ब्राह्मणों का ? जो विद्वान् हैं, त्यागी हैं और जिन्होंने ब्राह्मण धर्म का नियम पूर्वक पालन किया है। हां ! ऐसे ब्राह्मणों की आर्य समाज अवश्य निन्दा करता है जो मांस भक्षण करते, मदिरा पान करते और विद्या से विमुख हैं, जिन ब्राह्मणों को अपना नाम तक लिखना नहीं आता और चतुर्वेदी त्रिवेदी बनने का दावा करते हैं। ऐसे ब्राह्मणों को आर्य समाज सिखलाता है कि आप विद्या पढ़ो। ब्राह्मणों के कर्म करो। तब अपने को ब्राह्मण कहो। ऐसे ही स्वार्थी लोग आर्यसमाज को बदनाम करते हैं। सेठ तुलसीदास को पूरा सन्तोष हो गया। इस कारण वे चुपहो रहे।

गवादर (Gwadur) बन्दर

गवादर बन्दर बिलोचिस्तान और ईरान की सरहद पर

अरब के समक्ष ईरान की खात पर बसा है। अरब के पूर्वी भाग में सुल्तान मसकत का राज है। गवादर इसी सुल्तान के आधीन है। गवादर में जहां पर जहाज ठहरते, पाल वाली नौकाएं ठहरती हैं। यह स्थान एक 'मेहदी, नामक ग्राम के पर्वत उसके सामने दूसरी ओर गवादर पर्वत, तीसरी ओर गवादर नगर चौथी ओर समुद्र देव ने घेर रक्खा है। इनके बीच में पानी तालाव के समान भरा है यदि मेहदी का पर्वत और गवादर के पर्वत के बीच कंकड़ पत्थर भर जट्टी बना दी जावे। तो यह जट्टी गवादर की सुन्दरता को बढ़ा दे और आने जाने वाले जहाज इस जट्टी के सहारे खड़े हो सकें जिससे जहाज में माल चढ़ाने माल उतारने, यात्रियों के चढ़ने और उतरने में भारी सुविधा हो जावे। सुना जाता है कि जब सैयद तैमूर बिन फैसल जापान गया तब जापानियों ने उस से यत्न करके गवादर बन्दर लीज पर यानी पट्टे पर लेना चाहा था यह समाचार जब अँग्रेजों पर प्रकट हुआ तब ये लोग भी गवादर को पट्टे पर लेने का यत्न करने लगे। परन्तु वर्तमान सुल्तान मसकत ने किसी को न दिया। मसकत का राज अरब के पूर्वी भाग में है और गवादर बन्दर ईरान खात पर अरब के ठीक सामने दूसरी ओर बसा है। मेरे मन में यह प्रश्न उठा कि गवादर सुल्तान मसकत के आधीन कैसे और कब आया होगा ? क्योंकि गवादर ईरान और बिलोचिस्तान की सरहद पर है, इसका कारण यह बन्दर इन देशों में से किसी एक देश का हो सकता है । जिसके लिये

मैंने इधर उधर पूछ ताछ प्रारम्भ की मुझे सेठ लोकूमल तन्नूमल ने बतलाया "मैं जो कुछ बतला रहा हूँ यह वर्णन किसी प्रमाणिक पुस्तक में लिखा नहीं है, किन्तु गवादर के वृद्ध जनों से सुनी हुई घटना है जो इस प्रकार है:—शाह ईरान ने सैयद तुर्कीको जो मसकत में राज्य करता था गवादर बखशीश में दिया था। सैयद तुर्की के पीछे सैयद फैसल बिन तुर्की गद्दी पर बैठा, सैयद फैसल की मृत्यु के पीछे सैयद तैमूर बिन फैसल गद्दी पर बैठा। सैयद तैमूर ने कुछ दिन राज किया जब उसका पुत्र सैयद सईद बिन तैमूर युवा हुआ तब उसने अपने पुत्र को मसकत का सुल्तान बनाया और स्वयं भारत वर्ष के देहरादून नगर में जाकर रहने लगा। अब आजकल वह जापान में रहता है। सुल्तान मसकत अपने पिता को पाँच हजार रुपया मासिक खर्च भेजता है। परन्तु वर्तमान सुल्तान मसकत इस ऊपर की घटना को स्वीकार नहीं करता किन्तु उसका ऐसा कथन है 'गवादर बन्दर, चारबार बन्दर, बन्दर अब्बास, लिङ्गा बन्दर, याश्क बन्दर, ताहरी बंदर, मारमोरा बन्दर आदि सर्व स्थानों को हमारे पूर्वजों ने अपने बाहुबल से विजय किया था। वे सब स्थान ईरान के हाथ लग गये हमारे पास केवल गवादर बन्दर ही रह गया।' परन्तु साधारण जनता यही समझती है कि गवादर बन्दर सुल्तान मसकत को बखशीश में मिला था" इस घटना की सचाई का निर्णय किसी इतिहास की खोज के पीछे ही हो सकेगा। जिसको मैं आगे वर्णन करूंगा।

गवादर की प्राचीनता

गवादर की बस्ती और वहाँके चिह्नों को देखनेसे यह अनुमान तो अवश्य होता है कि यह बन्दर अथवा बस्ती पसनी बन्दर की भाँति नवीन नहीं प्रतीत होती, किन्तु यह बस्ती बहुत पुरानी जान पड़ती है। इतिहास मिलने पर इसकी प्राचीनता का पता लग सकेगा। गवादर नगर के दक्षिणी भाग की ओर मुसल्मानों की एक श्मशान भूमि है जो समुद्र तट पर गवादर के पर्वत के नीचे है। इस श्मशान के पूर्व भाग में एक छोटा वर्गाकार मठ बना है, जो अनुमानतः २५ फीट ऊँचा १५ फीट लम्बा और १५ फीट ही चौड़ा है। इस मठ के ऊपर का भाग गोलाकार गुम्बद के समान है। इसके चारों ओर चार द्वार हैं, परन्तु मुख्य द्वार उत्तर की ओर है। ऊपर जो गोलाकार गुम्बद है उसके तीन भाग में से दो भाग विध्वंस हो चुके हैं परन्तु तीसरा भाग उपस्थित है। इसको देखने से पता चलता है कि यह मठ सैकड़ों वर्षों का प्राचीन होना चाहिए। इस मठ के भीतर एक कब्र बनी है, जो देखने से नई जान पड़ती है। मुझे "कावदा अब्दुल्ला अलाबख़्श" जमीन्दार गवादर ने जिसकी आयु इस समय लगभग ८० वर्ष की होनी चाहिए बतलाया। "इस मठ के द्वार पर एक पत्थर लगा था, जिस पर लिखा था, 'हिजरी ८५० में यह गुम्बद बनाया गया है और इसी प्रकार के चार और गुम्बद इस गुम्बद के चारों ओर चारों कोनों पर बनाये गये हैं। यह गुम्बद इन चारों के बीच है। गत वर्ष गवादर में ऐसा दुष्काल पड़ा कि एक मामदी का १८ मन अन्न बिकने लगा (६ मामदी का एक ब्रिटिश रुपया और ८० तोले के सेर के हिसाब से ४ सेर का

एक मन गवादर में अब तक चलता है) ऐसे कठिन समय में भी हम लोगों ने लोगों को भूखों नहीं मरने दिया किन्तु अन्न मोल ले ले कर खिलाया और जीवन की रक्षा की' इन पाँच गुम्बदों में से अब एक ही रह गया है। चार टूट कर समाप्त हो चुके हैं। मेरी बाल्यावस्था में दो गुम्बद थे, एक मेरे देखते देखते समाप्त हो गया है और दूसरे के दो भाग भग्न हो चुके थे, केवल तीसरा भाग शेष है। इसके भीतर जो कब्र बनी है, उसको २५ या ३० वर्ष से मुसल्मानों ने बनाया है। शेष क़ब्रिस्तान मुसल्मानों ने लगभग १५० वर्षों से बना रक्खा है। क्योंकि इस में प्रथम क़ब्रिस्तान न थी।" मैंने पूछा "यह गुम्बदें किसने बनाई थीं ?" क़ावदा अब्दुल्ला अलाबख़्श ने कहा "सीरूक बंगी और अलादाद बंगी दो सगे भाई थे। यह लोग बिलोचिस्तान के पूर्व भाग गन्दावा नगर से अपना काफिला लेकर यहाँ आये थे। क्योंकि गन्दावा में भी एक समय दुष्काल पड़ गया था। इनके यहाँ आने के कई वर्षों के पीछे हिज़री ८४९ में गवादर में भी दुष्काल पड़ा, जिस दुष्काल का इन लोगों ने इस पत्थर में संक्षिप्त वर्णन कर इन गुम्बदों को इन लोगों ने दुष्काल के स्मरणार्थ बनवाया था।" इस गुम्बद या गोलाकार मठ की निर्माण तिथि से पता चलता है कि वर्तमान १३५८ हिज़री में ८५० हिज़री घटाने से ५०८ वर्ष हुए अर्थात् ये गुम्बद पांच सौ वर्ष से ऊपर की निर्मित प्रतीत होती है। जिससे यह अनुमान होता है कि गवादर की बस्ती पाँच सौ वर्षों से अधिक समय की बसी है।

इस गुम्बद के दक्षिण की ओर गवादर पर्वत खड़ा है जो लगभग पांचसौ फीट ऊँचा होगा। यह पर्वत समुद्र तट पर लगभग ३० मील तक बम्बई में फैला होगा। मैं सेठ लोकूमल तन्नूमल के साथ इस पर्वत के ऊपर गया था, पर्वत के ऊपर बड़ा मैदान है और एक तालाब भी भरा है जो लगभग पौन मील लम्बा और आधा मील चौड़ा हो सकता है वर्षा ऋतु के समय इस में वर्षा का पानी एकत्रित हो जाता है। इस तालाब की बनावट प्राकृतिक है जो तीन ओर से पार्वतीय पत्थरों से घिरा हुआ है। समुद्र की ओर एक बहुत बड़ा नाला है जिस नाले द्वारा वर्षा ऋतु का पानी समुद्र में बह जाता है। इसी नाले पर समुद्र की ओर पानी रोकने के लिए एक बाँध बनी है। जो इसी पर्वत के बड़े बड़े पत्थर उठाकर बनाई गई है, देखने से बहुत पुरानी तथा सुदृढ़ जान पड़ती है। इस बाँध की लम्बाई ३०० फीट और चौड़ाई ४० फीट तथा ऊँचाई २५ फीट होगी। इस बाँध के बीच के भाग में ऊँचाई से दो फीट नीचे एक चौड़ा छिद्र बनाया गया है। अधिक पानी भर जाने से इस छिद्र द्वारा पानी बह जाता था। इस समय इस बाँध का आधा भाग टूट गया है। क्योंकि इस बाँध की मरम्मत इस समय कोई नहीं कराता। इस कारण पानी के वेग ने इसका आधा भाग तोड़ कर बहा दिया है। मसकत के सुलतान ने सीमेण्ट के साथ इस पानी के रोकने के लिए एक छोटी सी दीवार इस बांध से दूर और पानी के निकट बनवाई थी परन्तु एक ही वर्ष में पानी ने इस दीवार को ऐसा बहाया

कि उसके अब साधारण चिन्हों द्वारा ही दीवार का पता लगता है। यदि इस बाँध को फिर से मरम्मत कर पूर्ण दीवार खड़ी कर दी जावे तो इस तालाब का पानी एक वर्ष के लिये गवादर की बस्ती को पूरा मिल सकता है। यदि दो वर्ष और भी पानी न बरसे तो दूसरे वर्ष भी पानी पीने को पर्याप्त हो सकता है। इसी स्थान पर पानी के किनारे किनारे बिल्लोच लोग शाक भाजी भी उत्पन्न किया करते हैं। मुझे कावदा अब्दुल्ला अलाबख्श ने बतलाया कि इस बाँध को भी गन्दावर से आये हुये "सीरुकवंगी" और "अल्लादादवंगी" ने बनवाया था जिससे इसका पानी दो वर्ष तक नगर निवासियों के लिये पूरा हो सके। इस समय बाँध टूटने के कारण नगर निवासियों को वर्षा ऋतु के पीछे तीन मास तक ही इसका पानी पीने को पर्याप्त होता है। ऐसा जान पड़ता है कि जिस समय यह बाँध बनवाई गई थी उस समय यह तालाब अधिक गहरा रहा होगा क्योंकि इस समय इसके अन्दर मिट्टी बहुत भर गई है। इसका पानी वर्षा ऋतु का होने से अत्यंत मधुर और बलकारक है। जब इसका पानी समाप्त हो जाता है, तब बस्ती वाले समुद्र के किनारे बालू खोद कर कुआँ बनाते हैं जिसका पानी खारी और अस्वादु होता है जो लोग कुआँ बनाते हैं वे कुएँ पर बैठे रहते हैं जो पानी भरने आता है वह एक घड़ा पानी का एक पैसा कर देता है तब एक घड़ा भर सकता है।

यहाँ पर पानी बिल्लोच मुसलमान अपने गधों पर टीनों में भर कर नगर में लाते हैं। पर्वत पर चढ़ने और उतरने के कष्ट के

कारण अधिकांश स्त्रियाँ मिट्टीके घड़ों द्वारा कुओं से भरकर लोगों के घरोंपर पानी पहुँचाती हैं। यह स्त्रियां मुसल्मान होती हैं हिन्दू भी इन्हीं से पानी लेकर पीते हैं अपने बर्तन भी इन्हीं मुसल्मानों द्वारा मंजवाते हैं इतना होने पर भी यहाँ के हिन्दू अपने को कट्टर सनातनधर्मी समझते हैं। प्रत्येक हिन्दू के घर में मुसल्मान स्त्री या पुरुष सारा काम करने के लिये नौकर हैं। ऊपर की गुम्बदों और पर्वत पर की बांध से पता चलता है कि सीरूक बंगी और अल्लादाद बंगी बिल्लोच मुसल्मान थे उन्होंने गवादर में अपनी राज सत्ता स्थापित की होगी। गवादर बन्दर अवश्य बिलोचिस्तान का दूसरा बन्दर रहा होगा। क्योंकि इसके पश्चिम में ईरान की सरहद पर लगभग ९० मील की दूरी पर एक जीवनी बन्दर भी है जो बिलोचिस्तान का नया बन्दर हैं जो अब तक खान क्लात के आधीन है। इससे सिद्ध होता है कि गवादर बन्दर सुल्तान मसकत का बन्दर नहीं है। इनको कैसे मिला इसका पता इतिहास से लगेगा।

वर्तमान गवादर

गवादर के चिन्हों से पता चलता है कि यह नगर अवश्य पाँच सौ वर्षों से अधिक पुराना है। इस समय इसकी जन-संख्या अठारह हज़ार है। जिसमें बिल्लोची, अरबी, ईरानी और भारत-वासी बसे हैं। इन सब में बिल्लोची मुसल्मानों की संख्या १५००० हो सकती है। भारतवासियों में पाँच सौ आग़ाखानी खोजे और १०० हिन्दू बसे हैं। शेष अरबी और ईरानी हैं। यदि बिल्लोच

सरकार अर्थात् खान क्लात में जागृति और उन्नति का भाव होता तो खान क्लात भी गवादर बन्दर को अपने हस्तगत उसी प्रकार कर सकता था जैसे हर हिटलर ने आस्ट्रिया में जर्मनों की अधिक बस्ती के कारण अधिकार कर लिया।

हिन्दू

गवादर में १०० हिन्दू दुकानदार, जोकि सारे के सारे सिन्ध प्रान्त के निवासी हैं। इनमें दो प्रकार के हिन्दू कहलाते हैं। सिन्धी हिन्दुओं की छः दुकानें है। ये लोग लगभग सब ही सिन्ध प्रान्त के माझण्डु ग्राम के निवासी हैं। इनके बाल-बच्चे माझण्डु में रहते हैं। यह लोग वर्ष में एक या दो बार भारत वर्ष की यात्रा कर आते हैं दूसरे मकरानी हिन्दू हैं जो आज से १५० वर्ष प्रथम सिंध से निकल कर चारबार बन्दर में ईरानी राज में जा बसे थे। वहाँ इन लोगों का बड़ा उत्तम व्यापार था। चार-बार में इन लोगों ने अपने घर बनाये, बाग़, बगीचे लगाये और भूमि भी खरीदीं। परन्तु वर्तमान शाह ईरान ने इन लोगों से कहा "तुम लोग अब ईरान में १५० वर्षों से बसे हो। अब तुम्हारा भारत वर्ष से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कारण तुम को ईरानी प्रजा बनना होगा, तुम ब्रिटिश प्रजा नहीं रह सकते। इस प्रस्ताव को इन लोगों ने स्वीकार न किया जिस कारण ये लोग अपना घर, बाग़, बाग़ीचे और भूमि छोड़ विक्रमी सम्वत् १६८७ में चारबार बन्दर से गवादर में आ बसे। सिन्ध से निकल आने और पुनः सिन्ध न जाने के कारण इनके विवाह

शादियाँ सिन्ध से बन्द हो गईं। इनकी संख्या ६५ है ये लोग विवाह आदि इतने ही आदमियों में करते रहते हैं। इनके मुखिया सेठ तुलसीदास ज्ञानचन्द हैं जिनकी आज्ञा को ये सब हिन्दू प्रतिक्षण सहर्ष स्वीकार करने को तत्पर रहते हैं। घर में यह सिन्धी भाषा बोलते हैं। इसके अतिरिक्त यह लोग फारसी और बिलोची बहुत उत्तम बोलते हैं। यह लोग हिन्दी भाषा भी बोलते हैं। इनके घरों में स्त्रियाँ भी हिन्दी बोलती हैं और समझती हैं। सेठ तुलसीदास ज्ञानचन्द इन सबमें भगत तुलसी दास के नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि भगत जी को बहुधा स्वप्न में कलियुग, यमराज, दुर्गा और विष्णु भगवान दिखाई दिया करते हैं जिस स्वप्न की कथा को उक्त भगत जी बड़ी रोचकता से सुनाते हैं। जिस कारण लोग बहुधा इनसे स्वप्न की बात पूछा करते हैं। भगत जी बकरे का मांस और मछलियां खाना भक्ति भाव के विरुद्ध नहीं समझते। भगत जी मकरानी हिन्दुओं में धनी मानी सज्जन हैं। इन का विश्वास जन्म के ब्राह्मणों पर बहुत है। इन मकरानी हिन्दुओं के गुरु बन्सीराम महाराज हैं, जो शराब, मांस और मछली नित्य पीते और खाते हैं। साधारण सिन्धी अरबीलिपि का इनको ज्ञान है। एक बार इनके बीच किसी मकरानी हिन्दू का देहान्त होगया जिसकी दसवीं कराने के लिये बन्सी राम महाराज ने मृतात्मा के पास पहुँचाने के लिये बहुत सी वस्तुएँ लिखीं, जिन वस्तुओं में डेढ़ पाव अदरख भी लिखा था। अदरख गवादर में उत्पन्न

ही नहीं होता। उस समय भगत तुलसीदास ने आज्ञा निकाली कि "बन्सीराम महाराज ने मृतात्मा के पास पहुँचाने की सामग्री का जो पुरजा बनाया है! उस पुरजे की सारी वस्तु यहाँ मिल सकती है, परन्तु अदरख यहाँ नहीं मिलता। वह जहाँ से मिले उसको प्राप्त करना चाहिए।" इस पर सेठ मूलचन्द पेमनदास उवोरानी माझएड निवासी सिन्धी हिन्दू ने बहुतेरा समझाया कि अदरख कराची के सिवा और कहीं न मिलेगी। परन्तु उनकी बात किसी ने न सुनी और एक आदमी को जहाज से कराची भेज कर डेढ़ पाव अदरख मँगवा कर वन्सीराम महाराज की आज्ञा पूर्ण कर मृतात्मा के पास पहुँचाने के लिये सब सामान के साथ अदरख भी वन्सीराम महाराज को दिया गया। मकरानी हिन्दू देवी के पक्के उपासक हैं। यह लोग प्रत्येक नवरात्रि की अष्टमी को काली के मन्दिर में एकत्रित होते हैं इनके साथ सिन्धी भी सम्मिलित रहते हैं। इस अवसर पर यह लोग चार पांच बकरों की बलि देते हैं और एक बकरे का कच्चा माँस काली के मन्दिर के चारों ओर फेंकते हैं जिससे काली अँधेरे में रात्रि के समय आकर खा जावे। शेष माँस को पका लेते हैं फिर सब लोग काली का भोग लगा मदिरा पान करते और मांस तथा पूड़ियाँ खाते हैं। इस सारे कृत्य के अधिपति वन्सीराम महाराज ही हुआ करते हैं। मुझे सेठ मूलचन्द पेमनदास उवोरानी ने बतलाया था कि गत चैत्र की नवरात्रि पर मैंने इन लोगों को समझा दिया था कि बकरे आदि की बलि चढ़ाकर हिंसा करना अच्छा

नहीं है। इस पर मकरानी हिन्दू मान गये, परन्तु दूसरे दिन सेठ पेमनदास, सेठ तुलसीदास के पास गये और सेठ तुलसीदास से कहा, "आज रात को मैंने काली माता का विकराल रूप स्वप्न में देखा है। काली माता ने हाथ में खड्ग लिये गले में नर मुण्डों की माला पहिने रक्त रंजित जिह्वा निकाले कमर में मनुष्यों की अन्तड़ियों को लपेटे हुए मुझे क्रोध पूर्ण शब्दों द्वारा सूचित किया कि यदि तुम लोग मुझे बकरे की बली न दोगे तो तुम्हारी सबकी भी यही दशा की जायेगी जो इन नर मुण्डों की देखते हो। भगत जी! मैं घबरा गया और भयभीत हो गया। इस कारण इसका शीघ्र प्रबन्ध किया जाये।" बस उसी समय भगत जी का आज्ञा पत्र सारे बनियों के पास घूम गया और बकरा आदि मोल ले उसी दिन काली मन्दिर में बली देकर पूर्व के अनुसार उत्सव मनाया गया।

गवादर पर्वत के नीचे ही यह मन्दिर बना है जहाँ बलि आदि दी जाती है। इसी पर्वत के नीचे मन्शा देवी का मन्दिर है, जो खोह में है। वह मूर्ति उड़ती हुई बालू के ढेर से दब गई है। इस कारण इस समय जब तक देवी जी की रक्षा बालू हटा कर न की जावे तब तक देवी जी का दर्शन दुर्लभ है। मन्शा देवी के मन्दिर के आगे ठीक इसी पंक्ति पर दरियालाल का मन्दिर है। यह मन्दिर सब मन्दिरों से अच्छा बना है। जब कभी हिन्दू लोग समुद्र देव की पूजा करने आते हैं तब इसी मन्दिर में एकत्रित हो बकरों की बलि दे, खान पान का प्रबन्ध

करते हैं। इस पूजन में भी शराब आदि का प्रवन्ध होता है। इसी मन्दिर को खिदिर पीर का मन्दिर कह कर पुकारते हैं। सेठ तुलसीदास ज्ञानचन्द बड़े सज्जन पुरुष और धार्मिक व्यक्ति हैं। इनके हृदय में दया का बहुत भाव है। साधु, ब्राह्मण कोई भी गवादर में आ जाये, यह उसकी सेवा सत्कार अवश्य करते हैं। जब मैं गवादर में था मेरे से पूर्व उस समय एक साधु गवादर में पहुँचा हुआ था, वह दो चार बोतल शराब की एक बार खड़े खड़े पी जाता था, भगत तुलसी दास जी साधु जी की आज्ञा पालनार्थ तुरन्त उसको शराब की बोतल पीने को मोल मँगवा कर दिया करते थे। मैंने जब सुना तब मैंने भगत जी को समझाया कि इस प्रकार शराब में पैसा व्यय करना महा पाप है। साधु लोगों को ईश्वर भक्ति करना है। शराब पीकर क्या कोई साधु बन सकता है? इत्यादि बातें कहने से भगत जी ने उसी दिन से साधु जी को शराब देनी बन्द कर दी थी।

भूतों का घर

दरियालाल के मन्दिर के सामने मिट्टी का एक मकान बना है जिसका नाम मैंने भूतखाना रखा है। इस मकान के बाहर की ओर एक झौंपड़ी बनी है, जिस झौंपड़ी में एक बिल्लोची मुसलमान परिवार सहित रहता है। इस परिवार का प्रधान व्यक्ति इस भूतखाने का मजावर अर्थात् पण्डा है। इसकी झौंपड़ी के साथ एक छोटी-सी वाटिका भी है। वर्षमें एकबार इस भूतखाने में मेला लगता है जिस मेले में मकरान बिलोचिस्तान के मुसलमान स्त्री, पुरुष,

युवा, वृद्ध और बाल एकत्रित होते हैं। जिन स्त्री पुरुषों को अपने ग्राम में भूत लग जाता है वह भूत यहाँ आने से इस मकान में रह जाता है। प्रथम वह स्त्री या पुरुष उस मकान में खूब खेलते हैं क्योंकि भूत उनके सिर पर चढ़ा होता है और मजावर उसको खूब खिलाता है। फिर भूत मकान में बैठ जाता है और उस स्त्री या पुरुष का साथ छोड़ देता है। जिन युवती स्त्रियों की सन्तान नहीं होती उन युवती स्त्रियों को भी इस भूतखाने में मजावर खिलाता है और भूतों की इच्छानुकूल चढ़ावा भी चढ़ाया जाता है। बस! भूत उस युवती स्त्री को आशीर्वाद देता है कि तेरी सन्तान होगी। यह लोग इस आशीर्वाद को पाकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार वर्ष में एक बार सहस्रों स्त्री पुरुष भूतखाने की जियारत करनेको एकत्रित होते हैं। जिससे मजावर के निमित्त एक वर्ष के लिये भोजन की सामग्री तथा और आवश्यक पदार्थ व रुपया भी भूतखाने पर चढ़ावा के रूप में एकत्रित हो जाता है। इस मेलेमें केवल मुसल्मान ही आते हैं हिन्दू लोग इस पर विश्वास नहीं करते जिस कारण वे लोग इसमें सम्मिलित नहीं होते।

"नमक की खेती"

इस भूतखाने के ठीक सामने समुद्र किनारे नमक की खेती है यहाँ पर कुएँ खोद रखे हैं जिसका पानी निकाल कर मिट्टी में कियारी बनाकर भर देते हैं। पानी सूखने के पीछे वह मिट्टी नमक बन जाती है। जो नमक खाने के काम आता है।

आग़ा ख़ानी खोजे

आग़ा खानी खोजे ने अपना खाना बना रखा है जिस में यह लोग नित्य ठीक चार बजे प्रातःकाल स्त्री-पुरुष एकत्रित हो भजन आदि गाते हैं। इनका खाना बाहर से अच्छा और सुदृढ़ जान पड़ता है। इस के अन्दर यह लोग हिन्दू या मुसल्मान आदि किसी को भी नहीं जाने देते। इसी खाने में एक स्कूल भी खोल रखा है जिसमें गुजराती, अरबी और इङ्गलिश खोजों के लड़के लड़कियों को पढ़ाई जाती है। दूसरी किसी जाति के बालक बालिकाओं को यह लोग अपने स्कूल में नहीं जाने देते।

मुसल्मान प्रजा

मुसल्मानों की यहां पर ४० मस्जिदें हैं। मुसलमानों में अधिकांश अनपढ़ हैं परन्तु अपने मजहब में बड़े पक्के हैं। इन में तलाक की प्रथा पचलित है जिस कारण स्त्रियाँ पुरुषों को और पुरुष स्त्रियों को सर्वदा तलाक देते और नवीन निकाह किया करते हैं। इस से व्यभिचार की मात्रा अधिक है। स्त्रियों में पातिव्रत धर्म और पुरुषों में स्त्रीव्रत धर्म का चिह्न भी नहीं दीखता। चौदह चौदह और अठारह अठारह वर्ष की युवती कन्याएं गली गली भिक्षा मांगती फिरती हैं। जिससे व्यभिचार की मात्रा बढ़ी हुई है। कितने स्त्री पुरुष भयंकर रोगों के शिकार बन अपने शेष जीवन को संकटमय समझ अहर्निश चिन्तित और दुखी रहते हैं। आजकल भारतवर्ष में सुधारक हिन्दुओं में तलाक की प्रथा चलाने के लिये एसेम्बली में प्रस्ताव रख उसको स्वीकार करा

कानून बनवाना चाहते हैं। उनको यह ध्यान नहीं है कि इस विष मूलक प्रथा से हिन्दुत्व का सर्वनाश हो जायेगा। आज जिन जिन देशों में यह विष मूलक प्रथा प्रचलित है। वहाँ के स्त्री पुरुषों को गृहस्थ धर्म क्या है? इसका ज्ञान तक नहीं रखते। उनको अधिकांश लोगों का गृहस्थ जीवन कितना शुष्क और नीरस रहता है यह उनका हृदय ही जानता है। यह मैं मानता हूँ कि आजकल भारतवर्ष में अनमेल विवाह अधिक होते हैं। इसके अतिरिक्त विवाह से पूर्व युवक भयङ्कर रोगों में फंस जाते हैं, जिससे विवाह के पश्चात् वधू का जीवन नीरस और शुष्क बीतता है। इस कुप्रथा को दूर करने के निमित्त महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत संस्कार विधि के अनुसार वर वधू की विवाह करने से पूर्व परीक्षा ले लेनी चाहिये। पश्चात् विवाह होने से सदा गृहस्थ जीवन स्त्री और पुरुष का आनन्द के साथ व्यतीत हो सकता है। इस सारे अरब प्रदेश में कोई भी स्त्री अपने पति का विश्वास नहीं करती क्योंकि उसको इस बात का भय लगा रहता है कि पता नहीं कि कब उसका पति उसको उसका मेहर देकर उसे तलाक़ दे बैठे और यही दशा एक पुरुष की भी है वह भी अपनी स्त्री का विश्वास नहीं करता। अब इस प्रकार अविश्वास के साथ इस जीवन रूपी नैया में इन दोनों खेवैयों का जीवन भला कब सुखमय बीत सकता है? यह तो प्रत्येक तार्किक अपने तर्क से अनुमान कर सकता है।

गवादर में मक्खियों की इतनी अधिकता है कि प्रत्येक दूकान

और मकान की प्रत्येक वस्तु सहस्रों मक्खियों से भरी पड़ी हैं। कपड़े की दूकानों पर सारे थानों पर इतनी मक्खियां बैठी रहती हैं कि दूर से उस थान का रंग काला ही दिखाई पड़ता है मक्खियां उड़ाने पर उसके वास्तविक रंग का पता चलता है। मैंने इस पर विचार किया कि इतनी अधिक मक्खियां यहाँ क्यों हैं ? मैंने जब ध्यान दिया तब मेरी समझ में आ गया वह यह कि जिधर देखिये उधर मछलियों की लाशें पड़ी हैं। कहीं शिर कटे पड़े हैं कहीं धड़ पड़ा सड़ रहा है, कहीं मछलियों के काँटे पड़े हैं। यहाँ पर जो पके पदार्थ खाने के खजूर और अन्य सामिग्री विकती है वह सब खुले रहते हैं जिस कारण मक्खियां उन पदार्थों में अधिक बैठी पाई जाती हैं। आप बैठे हैं आपको पीठ में, पैरों में, हाथों में,सिर में अर्थात् सर्वाङ्ग उपाङ्गों में मक्खियां बैठेंगी और भिनभिनाहट मचाये रहेंगी। ऐसी दशा में आदमी का बैठना कठिन हो जाता है। मैं जिनके पास ठहरा था उनको तो इस बात का ध्यान भी न होता था। परन्तु मैं तो इतना व्याकुल था कि सदा अँधेरे में ही बैठा करता था फिर भी वहाँ कोई न कोई भिनभिनाती हुई मक्खी आ ही पहुँचती थी। यहाँ पर म्यूनिसिपैलिटी अवश्य है परन्तु म्यूनिसिपैलिटी का ध्यान स्वच्छता की ओर किञ्चित मात्र भी नहीं है।

ब्रिटिश कौंसिल कार्यालय

इस समय इस कार्यालय में ब्रिटिश कौंसिल हाफ़िज़ मोहम्मद इस्माईल हैं जो भारतवर्ष के पञ्जाब प्रान्त के निवासी हैं। इन

का कार्यालय अत्यन्त स्वच्छ है जिस कारण इस कार्यालय में मक्खियां बहुत कम हैं। हाफ़िज़ साहिब पक्के मुसल्मान हैं। इनके कार्यालय में इनके नीचे कार्य करने वाले क्लर्क से लेकर दरबान तक सब के सब मुसलमान ही हैं। भारतीय होने के नाते इनको भारतीय हिन्दुओं का भी ध्यान रहता है। मैं १८-४-३६ को सेठ लोकूमल तन्नूमल के साथ उक्त ब्रिटिश कौंसिल के पास गया। ब्रिटिश कौंसिल साहब ने उठकर हम लोगों का स्वागत किया। सेठ लोकूमल ने मेरा परिचय दिया। जब ब्रिटिश कौंसिल साहब ने मेरा स्थान बनारस सुना तब वह एक अपनी कहानी बनारस की सुनाने लगे। वे बोले, "मैं एक बार कलकत्ते से मुगल सराय होकर दो घण्टे के लिये बनारस देखने के विचार से उतर पड़ा था। उस दिन चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण का मेला था जिस कारण स्टेशन के द्वार से नगर बनारस तक इतनी भीड़ थी कि मैं उस भीड़ में फँस गया। भीड़ के कारण मुझे अपने पग उठाने को अवसर तक न था परन्तु मैं देखता था कि मैं बिना पग उठाये ही भीड़ के सहारे से आगे को बढ़ता चला जा रहा हूँ और इस प्रकार बढ़ते बढ़ते मैं गंगा जी के किनारे एक घाट पर जा पहुँजा। इस घाट को लोग मणिकर्णिका घाट कहते थे। उस समय मुझे एक पण्डे ने पकड़ लिया और मुझसे पूछा 'तुम कौन हो ?' मैं उसके यह वाक्य सुन कर डर गया क्योंकि कलकत्ते में एक पाण्डे ब्राह्मण पटना निवासी मेरे मित्र थे उनसे मुझे पता लग चुका था कि काशी के घाटों में

विशेष कर मेले के समय यदि कोई मुसलमान पहुँच जाये तो पण्डे लोग उसको मार कर निकाल देते हैं। इस कारण मैंने उस के प्रश्न का उत्तर तुरन्त दिया 'ब्राह्मण' उसने पूछा 'कौन ब्राह्मण ?' मैंने कहा 'पाण्डेय' आज स्नान करने आया हूँ. उसने पूछा 'कहाँ के पण्डे ?' मैंने कहा 'पटना जिला के' उसने कहा 'आपका गोत्र क्या है ?' अब मैं बड़ी कठिनाई में पड़ा क्योंकि आगे क्या कहता मैं कुछ जानता ही न था। फिर मैंने साहस करके कहा 'हमारे पूर्वज बहुत वर्षों से पंजाब जाकर बस गये। इस कारण हम लोग यह सब बातें भूल गये हैं। मैं स्थान देखने आया हूँ। स्थान देख कर फिर मैं माता को और अपनी धर्म पत्नी को साथ लाकर स्नान कराऊँगा।" इस बात को सुन कर उसने कहा 'मैं आपको स्थान उनके ठहराने का अत्यन्त सुन्दर दिखला दूँगा। 'अच्छा ! आप अब स्नान कीजिये' सर्दी के दिन थे शीत भी बहुत पड़ रही थी। मैंने सोचा ऐसी ठण्डक में इस वेग से वायु चलते समय यदि मैंने स्नान किया तो मुझे कोई रोग न लग जाये। इसलिये मैंने उससे कहा 'भाई मुझे बुखार आता है। इससे मैं न नहा सकूंगा।' वह बोला 'अच्छा, जल छिड़क लो जिससे शरीर पवित्र हो जाये।' ऐसा कह कर उसने स्वयं कुछ बुदबुदा कर मेरे ऊपर गङ्गाजल छिड़क दिया। मैं चुपचाप गर्दन नीची किये खड़ा रहा। फिर उसने मुझे कुछ पुष्पों का झुण्ड, पत्तियाँ और मालायें दीं और बोला 'इनको मणिकर्णिका के कुण्ड में फेंक दो' मैंने उसकी आज्ञा पूरी की। फिर वह

बोला 'आपको इस कुण्ड में स्नान करना ही पड़ेगा। क्योंकि इसमें स्नान करने से भारी पुण्य है' मैंने देखा कि कुण्ड छोटा सा है, जिसमें उतर उतर कर सहस्रों स्त्री पुरुष स्नान कर रहे हैं, चारों ओर रस्सियाँ बँधी थीं, जिनको पकड़ कर लोग डुबकी लगाते थे। पानी भी थोड़ा था जिस कारण गदला कीचड़ की भाँति हो रहा था। मुझे साहस न पड़ा कि मैं उस कीचड़ में डुबकी लगाता। बस! मैंने फिर वही बुखार का बहाना किया जिस पर उसको दया आ गई और उसने फिर कुण्ड में स्नान करने के लिये हठ न किया। मुझे भूख भी लगी थी इस कारण मैंने उसे एक रुपया दिया, वह पूड़ी और मिठाई लेकर आया, जिनको मैंने और उसने भर पेट खाया। फिर उसने मुझे एक लुटिया पानी पीने के लिये दी। मैंने उसमें पानी पिया। फिर मैंने सोचा, इसका ईमान न जावे इसलिये उस लुटिया को फेंक कर कहा 'इसको साफ़ कर लेना' इसके पीछे पण्डा जी मुझे अपने घर ले गये जहाँ पर उन्होंने अपनी धर्मपत्नी से मेरा परिचय देते हुए कहा 'यह भी पाण्डेय ब्राह्मण अपनी जाति के हैं हम लोग पाण्डेय ही हैं। अब यह अपने बाल बच्चों को लेने जा रहे हैं, इनके परिवार को अपने पास ठहराया जायेगा। उनकी सब प्रकार की सेवा हम लोग करेंगे।' इतने में मैंने घड़ी देखी तो समय ट्रेन आने का निकट था। मैंने उससे कहा 'अब मुझे स्टेशन पहुँचाओ।' उसने उसी समय मुझे तांगा करके उस पर बिठलाया। मैं उसको १) दक्षिणा देने लगा। परन्तु वह बोला,

'अभी आप ले जाइये फिर जब बाल बच्चों को लेकर आइयेगा तब दक्षिणा ले लूँगा, परन्तु मैंने उसको वह दक्षिणा दे ही दी। पश्चात् स्टेशन पर आया और ट्रेन पर बैठ अपने निश्चित स्थान की ओर चल पड़ा।" सेठ लोकूमल ने कहा "पण्डित जी बेहरिन जा रहे हैं इनको बेहरिन का वीजा (Vissa) बना दीजिये।" ब्रिटिश कौंसिल साहब ने मेरा पासपोर्ट लेकर देखा, फिर मुझसे पूछा "आपने सन् १६३५ में जब पासपोर्ट में ईजिप्ट का बीजा लिया था तब क्या शुल्क दिया था?" मैंने कहा "मुझे स्मरण नहीं है" फिर ब्रिटिश एजेण्ट साहब बोले "आपने जहां से पासपोर्ट बनवाया है वहाँ के लोग आपको जानते थे और इसी कारण आपको पासपोर्ट बना दिया। परन्तु मैं तो आपको जानता ही नहीं हूँ। इसलिये जब तक मैं आपको जान न लूँ तब तक मैं आपको वीजा (Vissa) क्योंकर दे सकता हूँ।" मैंने कहा "मेरे आजकल नित्य रात्रि में सेठ लोकूमल, तन्नूमल के गृह पर भाषण हो रहे हैं। आप अवश्य मेरे विषय में जानकारी प्राप्त कर लीजिये।" पश्चात् वे सेठ लोकूमल से बोले "आप स्वयं फिर किसी समय आ जाइयेगा मैं वीजा (Vissa) बना दूँगा।"

२०-४-३६ को सेठ लोकूमल मेरे पास आये और बोले, "ब्रिटिश कौंसिल ने मुझसे कहा है 'पण्डित जी को हमारे आफिस में ५०) जमा करने पड़ेंगे। तब मैं उनको बेहरिन का वीजा (Vissa) दूँगा', इस पर मैंने उनसे कहा, 'पण्डित जी इस मार्ग से वापस न होंगे। फिर यह रुपया उनको कैसे मिलेगा'

इस पर उन्होंने कहा, 'पण्डित जी को ५०) अपने पास से मुझे दिखलाना होगा। परन्तु स्मरण रहे वह रुपया कहीं आप अपनी ओर से उनको देकर मत दिखलाने का यत्न करियेगा, वह रुपया उनका ही होना चाहिए। जब मुझे विश्वास हो जायेगा कि ५०) उनके पास अपना ही है, तब मैं बेहरिन का वीजा उनको दूँगा।" इस पर मैंने कहा, "मेरे पास रुपया है आप मुझे ले चलियेगा, मैं उनको दिखला दूँगा।"

२७-४-३९ को मैं सेठ लोकूमल के साथ ब्रिटिश कौन्सिल के पास गया। उनको मैंने अपना पास पोट देकर बेहरिन का वीजा मांगा जिसका उन्होंने ने उत्तर दिया "मैं आपके पास आपका ५०) देखना चाहता हूँ" मैंने मनीबेग से उसी समय १००) का नोट निकालकर उनके आगे रख दिया और मैं बोला "आप अपने मन में विश्वास करने के लिये लीजिये मेरा हिसाब भी देख लीजिये कि मैं भारतवर्ष से कितना रुपया लेकर निकला था। पसनी में मुझे कितना और मैं अब तक खर्च कितना कर चुका" वे बोले "मैं हिसाब न देखूँगा क्योंकि मुझे विश्वास हो गया कि आपके पास रुपया है। पण्डित जी! मुझे क्षमा करियेगा मैं अपनी ड्यूटी पर हूँ इसलिये मुझे जैसा आदेश गवर्नमेंट से है मुझे वैसा ही करना पड़ता है" मैंने कहा "कोई हर्ज नहीं, आप अपनी ड्यूटी पूरी कीजिये। मैं आपके इस व्यवहार से व्यथित नहीं हो रहा। आप अच्छा कर रहे हैं जो सेठ जी की बातों का विश्वास न कर स्वयं जान और पूर्णतया समझ कर मेरा

बीज़ा (Vissa) बनाने की कृपा कर रहे हैं" उन्होंने उसी समय बेहरिन और दबई का बीज़ा बना दिया। फिर सेठ लोकूमल ने कहा "आपसे प्रार्थना है कि कल पण्डित जी के भाषण में आप सभापति बनने की कृपा करें" उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया। समय पूछकर डायरी में नोट कर लिया। २८-४-३६ को ब्रिटिश कौन्सिल हाफिज़ मोहम्मद इस्माईल साहिब निश्चित समय पर सेठ लोकूमल तन्नूमल के गृह पर पधारे और मैंने भी ठीक रात्रि ६ बजे से अपना भाषण "आर्य सम्वत्सर" विषय पर देना प्रारम्भ किया और ११॥ बजे तक समाप्त किया। इस भाषण का ब्रिटिश कौन्सिल साहिब पर जैसा प्रभाव पड़ना चाहिये था पड़ा। क्योंकि इस भाषण में मैंने १६७२६४६०३६ वर्ष सृष्टि निर्माण के सिद्ध किये। ब्रिटिश कौन्सिल साहब हाफ़िज़ हैं। जिसका यह अर्थ है कि इनको कुराने शरीफ़ कण्ठस्थ है और कुराने शरीफ़ के सिद्धांतानुसार सृष्टि का निर्माण का समय साढ़े सात या दस हज़ार वर्ष ही होता है। यह वह जानते थे। परन्तु मेरे तर्क और प्रमाणों से सिद्ध किये निमार्ण समय का वे खण्डन न कर सके, किन्तु उनको एक प्रकार से स्वीकार करना ही पड़ा।

कस्टम आफ़िस

गवादर में समुद्र तट पर सुल्तान मसकत की ओर से अच्छा और सुन्दर भवन कस्टम आफ़िस बना है। यहाँ के कस्टम अफ़सर एक अरब सज्जन हैं। इन्हीं ने मुझे उपदेशक समझ कर मेरा सामान बिना देख-भाल किये छोड़ दिया था। परन्तु व्यापारियों

से यहाँ कस्टम विलक्षण रूप से लिया जाता है। जो माल गवादर में उतरता है। उसके मोल लिये बीजक पर कर नहीं लगता किन्तु उस माल का गवादर में बिक्री का क्या भाव है ? उसी भाव पर कर लगाया जाता है। यहाँ के बड़े बड़े व्यापारियों में परस्पर मेल न होने के कारण यह नियम भली प्रकार सफल हो रहा है। इस बाज़ार में कुछ बड़े बड़े व्यापारी हैं। जब कोई माल उतरता है उस समय इन्हीं में से किसी व्यापारी के पास माल का नमूना भेज कर उसका भाव पूछा जाता है। यह उस समय अपने बैर का बदला लेने के लिये कुछ अधिक ही भाव बतलाता है फिर जब कभी इसका माल आता है तब दूसरा भी अपना बदला भली प्रकार चुकाता है। इन्हीं कारणों से इनको किसी किसी माल पर हानि उठानी पड़ती है।

गवादर की उन्नति में रुकावट

मसकत में मैंने कुछ लोगों से यह अफवाह (दन्त-कथा) सुनी। सैयद तैमूर बिन फैसल जो पहिले मसकत का सुल्तान था थोड़े वर्षों से जापान जा बसा है। उस समय जापानी सरकार ने उक्त सुल्तान से गवादर पट्टे में लेने और वहां पर व्यापार बढ़ाने का विचार प्रकट किया उसी समय ब्रिटिश सरकार को भी इस बात का पता लग गया बस ! ब्रिटिश सरकार ने तुरन्त पट्टे में लेने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। साथ ही साथ गवादरमें हवाई जहाजों का अड्डा बनाने का सामान आने लगा और वायरलेस आफिस भी बनाने का सामान आने लगा इतना ही नहीं, बसरा से भारत

और भारत से बसरा जाने और आने वाले हवाई जहाज गवादर में ठहरने लगे। पीछे पट्टे में लेने की रक़म में बात निश्चय न हो सकी। इस कारण ब्रिटिश सरकार ने खान क्लात से भूमि लेकर जीवनी बन्दर गवादर से ६० मील दूर ईरान की सरहद पर बनाना प्रारम्भ कर दिया। यहां पर ब्रिटिश सरकार हवाई जहाजों का अड्डा बेतार के तार का बड़ा स्टेशन बना रही है और जीवनी में जट्टी भी बनाना चाहती है। परन्तु जीवनी की खाड़ी अच्छी न होने के कारण तूफान के दिनों में अत्यन्त विकराल रूप धारण कर लेती है, इसलिए जहाजों का आना जाना भी बन्द हो जाता है। परन्तु गवादर में यह बात नहीं है। यदि गवादर पट्टे में दे दिया गया होता तो उस समय गवादर की अच्छी उन्नति हो गई होती।

गवादर में मेरा प्रचार कार्य और प्रस्थान

ता० १६-४-३६ से ३०-४-३६ तक रात्रि में ८ बजे से १२ बजे तक सेठ लोकूमल तन्नूमल के मकान पर लगातार नित्य गीता की कथा और आर्य्यसमाज के सिद्धान्तों तथा हिन्दू महासभा के उद्देश्यों पर भाषण होते रहे। व्याख्यान के अन्त में हिन्दू लोग आर्य्य समाज के सिद्धान्तों पर शङ्काएं किया करते थे जिनका मैं यथोचित समाधान भी कर देता था जिस से वहाँ के लोगों को पूर्ण सन्तोष हो जाता था। पश्चात् मैंने मसकत जाने का विचार किया। इस प्रकार मैंने एस० एस० बराला से १-५-३६ को गवादर से मसकत के लिए प्रस्थान

प्रस्थान किया। सेठ लोकूमल, सेठ तुलसीदास, सेठ पोमनदास तथा और कई हिन्दू व्यापारी समुद्र के किनारे तक भेजने आये सेठ तुलसीदास जी ने अपने लघु भ्राता रामू ज्ञानचन्द को जहाज तक भेजा था जो जहाज़ के छूटने तक मेरे पास रहे और जहाज में मेरे ठहरने आदि का सारा प्रबन्ध करके किनारे की ओर गये २-५-३६ को रात्रि में ८॥ बजे जहाज मसकत के किनारे पहुँचा। चन्द्रमा के प्रकाश से मसकत सुलतान के महल की शोभा उत्तम दीख रही थी। हमारे जहाज के सामने मसकत नगर और काटम आफिस किनारे पर शोभा बढ़ा रहे थे। जहाज के दाहिने और बायें पर्वत श्रेणियां दोनों ओर समुद्र के भीतर तक चली गई हैं। इन दोनों पर्वतों पर पोर्चगीजों के राज के समय पोर्चगीजों ने किले बनवाये थे जो अब सुल्तान मसकत के आधीन हैं। इन किलों के कारण मसकत की शोभा उत्तम दृष्टिगोचर होती है। यदि ये दोनों पर्वतों को मिला दिया जाय और समुद्र जल में कंकड़ पत्थर भर दिये जायें तो मसकत की जट्टी बहुत अच्छी बन सकती है। सेठ मेग़जीन पनसी मथुरा निवासी ने मेरे उतारने का प्रबन्ध किया। मैं एक बोट में बैठकर किनारे आ रहा था कि मुझे दाहिनी ओर के किले से ढोल बजने का शब्द सुनाई पड़ा मेरी नौका में एक मुसलमान भी बैठा था जिस से मैंने इस ढोल बजने का कारण पूछा। उसने कहा "१५ मिनट ढोल बजने के पीछे दो बार तोप दगती है जिसके तोप दगने का यह अर्थ है कि अब जो व्यक्ति मसकत की सड़क से या गली से चलेगा उसको लाल-

टेन लेकर चलना होगा" मैंने पूछा "यदि किसी के पास लालटेन न होगी तो क्या होगा ?" उसने कहा "ऐसे आदमी को पहरेवाला सिपाही पकड़ कर किले में ले जाता है और उसको सारी रात एक कोठड़ीमें बंदकर दिया जाता है" मुझे यह बात सुनकर अपनी चिंता पड़ गई मेरे क्योंकि पास कोई लालटेन न थी टार्च लाइट जरूर थी मैंने उससे पूछा "यदि किसी के पास लालटेन न हो किन्तु टार्च लाइट ही हो तो काम चल सकता है ? उसने कहा "नहीं, मसकतके सुल्तान का हुक्म है कि लालटेन ही होनी चाहिये। टार्च होने पर भी उसको किलेमें बन्दकर दिया जाता है" मैंने कहा "मेरे पास लालटेन नहीं है और मुझको कस्टम से सेठ धन जी मुरारजी के मकान पर जाना है तो क्या आप मेरे इस कार्य में सहायता करेंगे ?" उसने कहा "किनारे चलकर देखूँगा" हमारी नौका अभी पानी पर ही तैर रही थी कि उस किले से दो बार तोप दगने का शब्द हुआ। थोड़ी देर के पीछे हमारी नौका समुद्र तट पर कस्टम आफ़िस के द्वार पर आलगी मैं किनारे उतरा मेरा सामान सब उतार कर कस्टम आफ़िस में रखाया गया। मेरा साथी तो अपने साथियों के साथ लालटेन लेकर अपने घर की ओर चला गया। मैंने कस्टम वाले से कहा 'मुझे सेठ धन जी मुरार जी के घरपर जाना है। इस लिये आप मुझे लालटेन देकर किसी आदमी द्वारा उनके घर पर भिजवा दीजिये" वह बोला "अभी आपका सामान न मिलेगा क्योंकि इस समय १० बज गया है कल प्रातःकाल आप आइयेगा आपका सामान जाँच करके दिया जायेगा" फिर उसने

एक अपने आदमी को कहा "लालटेन लेकर इन को सेठ धन जी मुरार जी के घर पर भेज आओ।" वह मुझे साथ लेकर सेठ धन जी मुरार जी के कार्यालय में लाया उस समय सेठ धन जी मुरार जी का कोषाध्यक्ष जेठालाल जाग रहा था उसको मैंने त्रिवेदी नवीनचन्द मोहन लाल खोरी गॉर्डन कराचीका पत्र दिया। जिसको उसने पढ़ा और घर भीतर जाकर सेठ के मैनेजर को दिखलाया। मैनेजर साहब ने पत्र पढ़कर कहा "पंडित जी को अभी सुलाओ कल उनके ठहरने का प्रबन्ध करेंगे" जेठू ने मुझे एक चारपाई दे दी जिसमें एक तकिया और एक चटाई दे दी मैं उस पर लेट गया। परन्तु मुझे निद्रा नहीं आतीथी क्योंकि मेरा सामान कस्टम आफ़िस में रख लिया गया था। जिसमें मेरा टिफ़न कैरियर भी था उस टिफ़न कैरियर में भोजन था, वह भी कस्टम वालों ने रख लिया था, इधर मुझे भूख बड़े वेग से लग रही थी, और इसी कारण मुझे निद्रा न आती थी। अन्त में मैंने शंकर लाल जी से कहा जो दूसरे मेहता थे और जिनकी चारपाई मेरे पास बिछी थी। "कृपा करके मुझे पानी ही पिला दीजिये" वे उठे और एक लोटा पानी लाये, मैंने पानी पिया तब मुझे कुछ शान्ति मिली और निद्रा आ गई। मसक़त नगर अरब के पूर्वी भाग का मुख्य स्थान है और इसके साथ साथ मथुरा नामक स्थान भी है। इसका सम्बन्ध हिन्दू इतिहास से अधिक है इस कारण मैं प्रथम अरब का प्राचीन इतिहास जहां तक प्राप्त कर सका हूँ। नीचे लिखता हूँ। निम्नलिखित इतिहास, 'मनोरमा' मासिक

पत्रिका से चौधरी धनराज सिंह बी० ए० द्वारा लिखित मई सन् १६२६ ई० पृष्ठ १४२ से मैं नीचे उद्धृत करता हूँ।

अरब की प्राचीनता

Happy Arabia and Mattrah.

For all references please consult Junas Atlas, Map No. 50, History of Arabia by Andrew Crichton, and History of Persia by Lt. Col. Sykes, and Chambers, Larger English Dictionary और मत्स पुराण के आधार पर पाश्चात्य ऐतिहासिज्ञों का मत है कि अरब स्वाधीनता और स्वतन्त्रता का घर है। ऐतिहासिक ज्ञान काल से संसार में केवल एक अरब ही ऐसा देश है, जहाँ न तो परतन्त्रता की हार है और न नर पिशाच विजेताओं की हाय हाय है। यदि Pastoral Simplicity व प्रारम्भिक मानुपिक सभ्यता का दृश्य देखना हो तो अरब जाइये अरब पूर्व व पश्चिम के वाणिज्य का प्रथम मध्यस्थ था। वाणिज्य की दलाली से अरब कभी माला माल था। प्राचीन काल में अरब के असुर और Phoenicia के फशीज बड़े नाविक थे, मूसा के समय भारत और अरब के मध्य भी बड़ा वाणिज्य था, मिश्र व अरब की श्री भारत से अरब के ही वाणिज्य पर निर्भर थी। यही कारण है कि भारत से अरब व मिश्र के जो थल व जल मार्ग हैं वही इन देशों की आबादी है; शेष भाग इनका जन्म शून्य है। अरब के Petra, Oman, Sabae, Yemand Hadra-

ment Indian वाणिज्य व बनियों के घर ऐतिहासिक ज्ञान के पूर्व से थे। Soloman के समय जो माल भारत से लालसागर के मार्ग से योरोप जाता था उसके मार्ग कर से ३॥ मिलियन (Million) की वार्षिक आय थी। Diodorus इतिहास ने Happy Arabia अर्थात् Yeman प्रदेश को (Universal Mart) सांसारिक वाणिज्य भण्डार बताया है। Book of Ezekiel में भी अरब के Ramah, Kedar, Cannch (रामा, केदार और कान्ह) व अर्बुद (Tyre) के वाणिज्य की विशेष प्रशंसा है, अरब का वाहण (Ormuz) तो भारतीय माल का मुख्य केन्द्र व इसी के बल संसार रूपी अँगूठी का नमूना था। Ptolemy, ने भी अरब के वाणिज्य की प्रशंसा की है, इसी वाणिज्य के बल अरब में प्रथम सुगन्धित, चन्दनादि, ईंधन से भोजन बनाया जाता था, धन-व्यय में अरबी आधुनिक राजाओं को भी मात करते थे। इनके प्रासादों के किवाड़ हाथी दाँत, सुवर्ण व मणि जड़ित थे। Arrian व Strabo ने भी अरबियों के सुवर्ण भूषण वस्त्र व स्वर्ण जड़ित अस्त्रों की प्रशंसा की है। स्वर्ण तो अरब में इतना अधिक था कि उसका मूल्य लोहे से केवल दूना और पीतल से केवल तिगुना था, हाँ, चाँदी का मूल्य स्वर्ण से १० गुना था (क्योंकि इन लोगों को चाँदी का आभूषण अधिक पसन्द था) यही कारण है कि मुसलिम चाँदी के आभूषण व अँगूठी के इतने अब तक प्रेमी हैं। अरब के Saba आदि धर्म-क्षेत्रों की होम व यज्ञों की सुगन्धित वायु मिश्र आदि देशों तक

जाती थी इसीलिये Alexender, Babylonia में अपनी राजधानी बनाना चाहते थे। Milton ने भी अपनी कविता में The Ideal Treasures of Arabia व अरब की सुगन्धित हवा से सागरों के महकने का उल्लेख किया है। Saba व Yemen आदि के Gold की wild Stories, fictions नहीं हैं। परन्तु अरब में तो Gold बहुत ही कम, केवल Oman व Yeman में पाया जाता था। यहाँ के बहुमूल्य पदार्थ सारे के सारे भारतवर्ष से ही जाते थे। सुवर्ण, चाँदी, शीशा, टिन, पीतल, हाथी दाँत, कछुओं की हड्डी, मूर्तियाँ, कुल्हाड़ी, चाकू, अस्त्र, उल्लू, कुर्तियां कपड़ा, मलमल, रेशम, मखमल, रजाई, अँगूठियाँ, व कम्बल आदि भारत से ही अरब जाते थे। वहां से योरोपादि देशों में विस्तृत होते थे। (For refernce see A. Gichton's History of Arabia and Histoy of Persia. Vol. I and Book of Ezekiel)

अरब की प्रख्यात एसेन्स Incense भी भारत से जाती थी। परन्तु हमें ऐसा प्रतीत होता है कि एला (इलायची) इलावृत अरब व एशिया से प्रथम आई। Kane Shahr (कान्हनगर) जिसको ग्रीक Sachalites सची (इन्द्रपुरी कृष्ण व इन्द्र का युद्ध) कहते थे अरब में एक बड़ा वाणिज्य केन्द्र था, इसी प्रकार Aden भी नाविक वाणिज्य का Romanum Emporium अर्थात् भारत से रोम जाने वाले माल का केन्द्र था। (For reference see A. Gichton's History of Arabia) अरबके

निवासी कविता, (Love of Poetry), (Oratory) वाचालता अतिथि सत्कार (Hospitality) और (Horsemanship) अश्वारोहण विद्या के लिए संसार में प्रख्यात थे। फसाहत व बलागत तो कोई अर्बियों से अब भी सीख ले। अरबी में सर्प के लगभग २०० नाम, व्याघ्र के ५०० नाम, तलवार के १००० नाम और मधु के १०० नाम हैं। कविता में अरबी संसार बढ़ा चढ़ा है। अरब सभाएं व व्याख्यान (मजलिसें) संसार में प्रसिद्ध हैं। यहाँ की Panegyrical Meetings, Literary convocations व Compositions or Modhabehat व Moallakat, Tent-life, copious, flexible and expressive language essential to lively fancy of a poetical genious, accumulations of epithets, piquancy of satire and the loftiness of popular Oratory की प्रशंसा हम क्या योरोप के ऐतिहासज्ञों Strabo, Diodorus, Pliny व Potelmy ने की है। तुलसीदास ने भी अरब की वाचालता (मूंक होहिं वाचाल) की विशेष व आश्चर्य जनक प्रशंसा की है। मूक (मृगों) के पूर्वज काव्य शुक्राचार्य और अतिथि सत्कारी वशिष्ट थे। अतएव ये तो उनके पैतृक गुण हैं। (History of Arabia, by A. Crichton) इसी इतिहास के आधार पर ईसाई इतिहासज्ञ कहते हैं कि 'अरब' शब्द एक Hebrew word "Arabia Aroba" से बना है जिसका अर्थ 'A plain' है (as we journeyed from the east

we found a plain, and settled in the land of Shinar Book of Genesis) परशियन मत से The land of Shinars, Samar, on the head of the Persian Gulf. (History of Persia Vol. I. Pg. 53 Sumer on the head of the Persian Gulf or the Land of Shinar of the Book of Genesis) स्वयं अरबी अरब नाम की उत्पत्ति Jokton के पुत्र से बताते हैं, परन्तु ईसाई Scripture कहते हैं कि Yarab Jakton के कोई पुत्र ही न था। बस ! इस के आगे यह अन्वेषण स्थगित है। अब पौराणिक मत ईसाई व अरबियों दोनों की भ्रान्ति का एक साथ संशोधन करता है। अरब का प्राचीन नाम नाभि, भूमि (The Land) व सुमेरू था। यही परशुराम वर्णित व निःक्षत्रित भूमि है (भुज बल भूमि भूप बिनु कीन्हीं। विपुल वार महि देवन दीन्हीं।) प्राचीन काल में भूमि उपनाम सुमेरू वाणिज्य व राजनीतिक केन्द्र होने से देवासुरों का रङ्ग स्थल (Bonu of Contention) था। देवासुर, दोनों के गुरू भार्गवों ने यहां के क्षत्रियों (देवासुरों) को निःक्षत्र करके भूमि को महिदेवों का आश्रम बना दिया और देवासुर दारुण युद्ध इस Diplomacy शुक्र नीति से शान्त हो गये। अरब की किम्बदन्ती है कि Lahsa, अर्थात् Bahrien प्रान्त प्रथम बड़े वीर (Giants) रहते थे और यहां एक Terreotrial Paradise भी था। अरब की आधुनिक Wilderness का कारण प्राचीन देवासुर

संग्राम है पाश्चात्यों का मत है कि यहां कभी Destructive band of conqueror था ही नहीं, असत्य है। १४ दारुण देवासुर संग्रामों में से अधिकांश इसी भूमि के हेतु हुये, भार्गवों ने भी इसे कई वार निःक्षत्र किया था Aruba or guma or Friday—Day of Arura=Friday) इसी लिये अरब में सुमेर (Samara) नाम के कई स्थान हैं अस्तु, अरब का नाम और्व्वः और्व्व मुनि का यह आश्रम (तपोभूमि) है। Aruba (Juma) नाम शुक्र का भी है। शुक्राचार्य और और्व्व दोनों स्वगोत्री और भार्गव थे। इस प्रकार अरब, उपनाम भूमि सुमेरू और्व्व Plain, Arabia कहलाया।

कदाचित् Jakton कश्यप का नाम है, और यारब, (a) Edom (Edom=Red) व Erythrus Ad(Erythros= Red see Erythrite in Dictionary) व Ad इत्यादि नाम सूर्य के हैं। Red sea का नाम प्रथम Edom (Red) था। Persian Gulf का नाम (Erythrian sea (Erythros. Red) सूर्य का रङ्ग ही Red लाल है। The Red सूर्य ही का नाम है। सिरियन व अरबी सूर्य के बड़े उपासक थे। Persia के Desert के निवासी प्राचीन काल में Adites (आदिल कहलाते थे। Aden Ad ही का नगर है। Aden में Ad ही का मन्दिर था। और यह मन्दिर सोने व चांदी की ईंटों का बना था (History of Arabia) इस की छत मोती व हीरे की बनी थी और यहां की वाटिका was an imitation

of the Celestial Paradise - Adites पौराणिक आदित्य हैं, जिनको परशुराम ने निक्षत्र किया था। Ad व Adam सूर्य ही के नाम हैं Rabb व Ra इत्यादि नाम भी सूर्य के हैं, Ra या Rabbi सूर्य व सूर्य के पुरोहित मग थे, जिनकी उपासना Egyptians व Jews व Syrians करते थे। (Syrian Worship of the sun, see Ra and Rabbi in Dictionary.)

Balwal (Yam Ahad) Sunday व Rabiah I व Rabihah II सूर्य के दिन व मास हैं। फरवरी का मास जिसे अब Ramazan कहते हैं। प्रथम Ramadan नाम से प्रख्यात था यह Mohammedan year का 9th month है। और्व सगर के पुरोहित व गुरु थे। सगर ने और्व आश्रम से ही शाक द्वीप को विजय किया था, अरब के निवासी इस प्रकार शुक्राचार्य व वशिष्ट व परशुराम के वंशज व मग उपनाम मिहिर, मूक, मौनी मुनि इत्यादि हैं। मूक (Mocha), Mokha (मूक) Mahra (मिहिरा), Mecca मक्का Makaniyat, Makna, इत्यादि अरबमें इनके स्थानोंके नाम हैं। शुक्राचार्य उपनाम काव्य व वशिष्ठ उपनाम कामधेनु पति, व परशुराम (Orator) के वंशज होते हुए अरबी मग निःसन्देह अपने पैतृक गुण Oratory, Poetry Hospitality के लिए स्वाभवतः संसार में सदैव से प्रख्यात हैं। मग बड़े याज्ञिक अर्थात् पार्थिव श्रेष्ठ हैं, यही कारण है कि इनके यज्ञों के धुएँ से अरब की हवा "Surcharged with

spicy odours" थी और अरब के यमन आदि प्रदेश (Temples) मन्दिरों में भरे पड़े मुनियों के आश्रम व देवालय थे। अरब के निवासी प्रथम Pagan व Pagans में भी Grossly idolatrous थे, इनके प्राचीन धर्म का नाम Sabaism व Sabeanism है। मुस्लिम धर्म Sabaism का रूपान्तर है। Sabaism का मुख्य अङ्ग "गृह-उपासना" है। अरब में प्रथम सात गृहों की उपासना सात प्रख्यात मन्दिरों में होती थी। मक्के का मन्दिर Zohal अर्थात् शनि—Saturn का है। Saana का प्रख्यात मन्दिर Beil-Gharnadan, Venus (शुक्राचार्य) का है। यमन के निकट Hama के Hamyari वंशी अरब सूर्य उपासक थे। उनका प्रख्यात सूर्य मन्दिर Aden अदन में था। Hamyari भाषा Ethiopic से तो मिलती है, परन्तु कुरीशी (कुरान) भाषा से विभिन्न है। अरबियों से अन्य कुल कोई जुपिटर Jupiter (वृहस्पति) कोई मार्स Mars (मङ्गल) और कोई Dog-Star के उपासक थे। संक्रान्ति (Solstice and Equinox) बड़े त्यौहार माने जाते थे। कुरान शरीफ़ की तीन प्रधान देवियों में से Allatrah का मन्दिर Naklah में Faif के निकट था, Aluozza (अल, उज्जा) अर्थात् शुक्राचार्य का मन्दिर कुरिश देश में था और Mannah एक काले पाषाण की चार फुट ऊँची दो फुट चौड़ी शिव की मूर्ति थी। Aluzza Mannah (अलुज्जा) व (मन्ना) काबा की मूर्तियाँ हैं। Mannah was a rude unshapen-block of stone

of a black colour, 4 ft. high and 2 ft. broad, placed on a golden pedestal (जलहरी) कुरान में वर्णित ६ अन्य मूर्तियाँ हैं।

सात मूर्तियों का वर्णन

१—Yank (or horse) यह अश्व की मूर्ति है। कदाचित् उच्चैश्रवा की है। विष्णु व कृष्ण के वाहन।

२—Nasar (Eagle) यह गरुड़ की मूर्ति है।

३—Yaghuth यह (Lion) नृसिंह की मूर्ति है।

४—Hobul यह मूर्ति प्रथम Syria के Belka (बलिक) स्थान में थी। इसका एक हाथ सुवर्ण का है। यह बलि की मूर्ति है और Ishmael व Abraham की मूर्तियों के बराबर काबा में थी कदाचित् बलि का हाथ सोने का था।

५—Wadd- यह एक नरेश की मूर्ति है, जिसकी उपासना Kelb वंशी अरब करते थे।

६—Sawak- यह एक देवी की मूर्ति है, जिसे Hamadon Tribe (सूर्यवंशी अरब) पूजते थे।

७—Hanifites- अपनी मूर्तियाँ (Dough) आटे की बनाते थे। मगधर्म (अग्नि उपासना) भी अरब में बहुत थी। Mannah के उपासक Khozzah खोजा थे और Alluzza (अलुज्जा) कुरैंशियों की प्रधान देवी थी। (The Pagan Arabs were grossly idolatrous. The essential basis of their religion was Sabaism or Star

worship. The supreme Being of Arabs was Allah Taala, but their creed embraced a variety of subordinate divinities. They had seven celebrated temples dedicated to seven stars. The Mecca temple was dedicated to Zohal or Saturn, the Saana temple to Venus, The Hamyarites worshipped the sun at the famous edifice at Aden. Some Arabs worshipped Jupiter, some the Dog-Star, and some Mars (Mercury). Koran mentions three female dieties, Allattah, Aluzza (Venus) and Manah, etc.—History of Arabia 192) पैगम्बर साहब इब्राहीम व हगर के पुत्र Ishmael के भाई, केदार के वंशज बताये जाते हैं। Ishmael काबा के नेता थे। पैगम्बर साहब के पितामह का नाम Col. Sykes ने अपनी पुस्तक में शेबा Sheba व Sheba के भाई का नाम उमा बताया है। २५ रामदान (Ramzzan) को पैगम्बर साहब को Archangel Gaberiel के दर्शन Hara (हर पर्वत) पर हुए। Geberiel गरुड़ारुढ़ और मुकुटधारी थे। अरब और परशिया पारदिया आदि देशों में प्रथम Hercules व Gebelezie की पूजा होती थी। Gebelezie का नाम गोपाल जी था और हरकुलिस ही कुल बलराम बताये जाते हैं। और (Soncara) शंकर प्रदेश परशिया की 7th

kingdom मानी जाती है। ऐसा जान पड़ता है कि Gabriel ही Gebelezie का अपभ्रन्श है। Geberiel व पैगम्बर साहब की स्वर्गयात्रा में Lotus tree (पद्म वृक्ष) (Alsedra) मिला था, पैम्बर साहब Manah अथवा Black-Stone के बड़े भक्त थे। यथा:—On entering the Kaaba the apostle went seven times in procession round the Kaaba, each time touching the (Manah) Black-Stone with the end of his cane in profound reverence. He then struck the wooden pigeon to the ground and gave a signal for the demolition of the Kaaba idols—History of Persia, 251.

इसके पश्चात् Ishmael. Abraham व Hobul इत्यादि की मूर्तियां तोड़ कर फेंक दी गईं, और पैगम्बर साहब ने इनके स्थान में केवल एक वही Black-Stone को काबा मन्दिर के मध्य में समारोह के साथ स्थापित किया (Mohammed and the Black-Stone H. P. by Sykes, Vol. II) इस धार्मिक आन्दोलन का नाम Moslem Monotheism है। इसका प्रति फल यह हुआ कि गृह व अन्य देवों की उपासना बन्द करके पैगम्बर साहब ने काबा में उसी एक Black-Stone की उपासना शेष रक्खी। यह Black-Stone (काला पत्थर) (Semicircular) लिङ्गाकार

है। शाक द्वीप में आदि उपास्य देव शिव ही पौराणिक मत से भी थे। इससे प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में Sabaism विशेषतः शिव की उपासना थी, जिसको पैगम्बर साहब ने पुनः प्रधानता दे कर अन्य देवों की उपासना अर्थात् Idolatory in general को बन्द कर दिया। माना (Manah) 'संग असवद' नाम से अब प्रख्यात है, और काबा में यात्री इसे चूमते हैं। (Mohmmed laying the Black-Stone which is semi-cicular photo in History of Persia Vol II. History of Arabia by A. Crichton.)

Semitic व Assyrian दानवी व आसुरी भाषा हैं? (Assyrian Language and Semittic Langdage) Pehlvi (पहलवी) परशिया के पहलवानों (रुस्तमों) की बोली है—(Pehlvi signifies the language of the contries bordering on Assyria. Pehlvi means Valour. It was the lunguage of the heroes of Persia, the Valiant (पहलवान) History of Rome Milman, Vol. I. 255) Persian या Persic परसा Persaram परशुराम की बोली है। Zend (जिन या जीव) वरुण शास्त्र व मिदियन, मगों की बोली व भाषण है (Zend signifies life, and Avesta means a word. Zenda Vosta signifies the revelations of Ormuzd to Zoroaster. It was the language of Media, the

country of the Magi or Media-Magog. History of Rome 259.) जैनियों के अवतार भी जिन थे। इन्हीं के नाम Genie व जिनात हैं। जिन्नार मगों का जनेऊ है। परशिया में मगों को Destour (देशतार) भी कहते थे। मग वहाँ Tithes (दशाँश धार्मिक कर) लेते थे। The Destour or the Magi, or Priests of Persia, and their tithes or religious taxes:—History of Rome, Vol. I, 260)

इसका नाम दस्तूर व दस्तूरी है। दस्तूर-उल-अमल मगों का प्रचलित नेग या नियम है। बसीह दस्तरख्वान मगों की आव भगत अर्थात् ब्रह्म भोज है, शाक द्वीप के उपास्य देव शिव का नाम 'वर्मा' है। वरुण विधाता भी प्रायः वाम ही थे। परशिया भारत के वायव्य कोण में है इस कोण के देव व नरेश वरुण थे। परशिया के उपास्य देव व नरेश वरुण उपनाम Ormnza महाधाता The Creator of the Universe ब्रह्मा ही थे। (Ormuzd = m = maha + Dhata—History of Persia Vol. 1-) परशियन गल्फ of उरमुज के ऊपर इनका Biremah नामक स्थान ही Ormuz (वरुण) के निकट स्थित है। परशिया में वाम व बामपुरत नाम के अनेकों स्थान हैं। परशिया और भारत का धर्म पहिले एक ही था, परन्तु, दोनों देशों के व्यवहारिक नियमों में 'उपासना क्रम' में पारस्परिक वामता थी एक दूसरे के वाम थे और वाम देव परशिया के गुरु व मग थे।

अरब के प्राचीन धर्म का नाम Sabaism व Sabeanism है-Saba अथवा Sawa इस धर्मका केन्द्र Hadramaut प्रान्त में था इस धर्म का उपनाम Star Worship भी है। सूर्य, शनि, मङ्गल, शुक्र आदिक सप्त ग्रहों की उपासना व कुल पूज्यों की उपासना अरब व पारदिया (परशिया) (पारस) में बहुत प्रचलित थी। (Romulus of Rome invited the people of tha Sabines to witness the Consualia Games to be celebrated in honour of the God Consus. Traditional History attributes the conquest of Rome to a Sabine tribe who bore the name of Sabine. Their religion was Sabine, and most of their institutions were called Sabine. History of Rome, Liddell, 14, 2) यदि अरब के Saracens (शरसेनी) Sabeans (शैव्य) कँस वंशी थे, तो कंस की उपासना व कँस के नाम के चिह्न भी अरब में होने चाहियें। यदि हम H. G. Liddel, D. D. की रचित History of Rome को पढ़ें, तो विदित होगा। Sabines के उपास्य देव का नाम Consus ही था और उनकी पूजा व उनके जन्म तिथि (वार्षिक उत्सव) का नाम Consualia था (विष्णु पुराण वर्णनम्) इस प्रकार सिद्ध है कि Sabines अर्थात् अरब के Saba के निवासी Consus कंस के उपासक थे। कंस के स्थान पर अरब में Kanseh व

Kanseh-Sur के नीचे देखो । यह दोनों स्थान शारसेनी Sarceni प्रदेश ही में हैं। जिनके निकट Mattrah, Sur व Mama नगर भी हैं। भारत में मगध आदि भी मगधाम हैं। मगध के जरासिन्ध कंस के श्वसुर थे। जरासन्ध के मित्र हंस German or Hans थे। हंस यमराज के वंशज अर्थात् यम के पुत्र साध्य (Scythies, fore fathers of Scythians के वंशज हैं। (Marcanda or Samarcand History of Persia, Vol. II Index) वामदेव परशिया के मुनि का नाम था, राम के ब्याह में बामदेव भी थेः—

वसिष्ठो बाम देवश्च जावालिस्थ कश्यपः ।
मार्कण्डेयस्तु दार्घायु कृषिः कात्यायनस्तथा ॥

बालकाण्ड ६६-४

वसिष्ठ, वामदेव, मार्कण्डेय इत्यादि परशिया ही के मुनि थे मार्कण्डेय का आधुनिक नाम समरकन्द है। वामदेव नारद असुर और देव, दोनों के पुरोहित थे। इसी लिये नारद दोनों की वामता के प्रेमी हैं। ये ब्रह्मा ही के पुत्र हैं ब्रह्मा का मुख्य स्थान परशिया का Shusha (शूशा) ही था (Hormodius or Ormuzd of Susa or Shusha—History of Persia Vol I) परशिया के Nardin आदि नारद ही के स्थान हैं।

अरब की जातियां ३—Extinct Arabs, Pure Arabs, (Arab-ul-Arab) व Mixed and Natuaralised Arabs हैं। Exinct Arabs Adites कहलाते हैं। इनके

कुल Adites Phamud, Jadis व Tasm है। Ad वंशी Shem के वंशज कहे जाते हैं। Ad का काल Saturn के समकालीन बताया जाता है, Later Adites के पूर्वज, Lokman, के वंशज कहा जाता है। यह कुरान का मत है अरब किसी प्राचीन बात को As old as King Ad कहते हैं। Apes के स्थान पर Al Ahkaf में Aden इत्यादि स्थान थे, ये Adites पौराणिक आदित्य हैं। लोकमान भी विश्वकर्मा या काशी वँशी एक सूर्य वंशी राजा थे। Jadis व Jasm कदाचित् विश्वामित्र व वसिष्ठ से सम्बन्धित थे Tas के मगतसला मग थे, Medina व Mecca के निकट Tasm अरब रहते हैं Thamud अरब को छोड़ कर अबीसीनियाँ चले गये। कहा जाता है कि ये बड़े Tallgiants थे। Pure Arabs kahtan के वंशज हैं। इनकी दो शाखायें इनके पुत्र, Yarab व Jorha से हुई। Yarab ने Yemen व Jorha ने Hejaz में राज्य स्थापित किया। Mixed Arabia Abraham के पुत्र Ishmael व उनकी स्त्री Modale के वंशज हैं। कुरीश Ishmael वंशी हैं, पैगम्बर साहब का जन्म Ishmael के कनिष्ट पुत्र Kedar के वंश में हुआ (The Pedigree of Mahammad is Traced from Kedar, a younger son of Ishmael) काबा की स्थापना Ishmael व उनके पिता Abraham ने की। इस बात का प्रख्यात Black-

Stone इन्हीं के समय से एक दीवार में जड़ा था। कहा जाता है कि संगे असवद (Black-Stone) प्रथम whiter than milk, था, परन्तु प्राचीन काल से यात्रियों के पाप व स्पर्श (Kisses) से वह काला पड़ गया है।

(१) Diodorus व Maximus of Tyre से विदित है कि—A passage in Diodorus has an obvious reference to it. He speaks of a famous Temple revered as the most sacred by all the Arabians. Maximus of Tyre in the second century attributes to the Arabs the worship of a quadrangular stone. History of Arabia, 92.

इस प्रकार Heber के वंशज Kahtan या Jaktan और Shem के वंशज Noah से अरबी अपना वंश वृत्त बताते हैं। काबा आदि स्थान मुस्लिम मत के पश्चात् के नहीं हैं किन्तु बड़े प्राचीन हैं।

अरब का वह भाग जो Palestine व Egypt से मिला है और Egypt के Ethiopia (Abyssinia) इथौपिया या अबीसीनिया इत्यादि Cush कुश नाम से प्रख्यात थे। कुश हाम Ham के पुत्र बताये जाते हैं: Ham के पिता नाम Noah व नूह के पूर्वज का नाम Sham था, नार्थ अफ्रीका की बोलियाँ Hamitic व यहाँ के निवासी Hamitss कहलाते हैं।

(२) आधुनिक Yemen का नाम Arabia Felix, अर्थात् Happz Arabia, or the Land of Incense or the Land of Temples and Places है। यहाँ की जातियां Sabae (Saba निवासी) Omamitae (उमा निवासी) Maromitae (मरु निवासी), व Atramitae (अत्रि वंशी) हैं। मूक (Mocha) व Taas (तसला) मूक (मगों) के पांच मुख्य स्थान हैं, च्यवनां के ५ ही प्रवर हैं। यहाँ के मन्दिर सुवर्ण-मय और वायु (Surcharged with spicy odours) यज्ञों के धुवें से सुगन्धित थीं। मन्दिरों की संख्या यहाँ बहुत थी।

(३) Petraae (or strong Arabia) Pelestine Red Sea के मध्य भाग का है। यहां के निवासी Edom कहलाते हैं। जिनमें Hittites (कुरुवंशी) व Kedarenes (केदारी) भी हैं।

(४) Hejaz or Holy Land of Islam है यह देश Red Sea के मध्य किनारे पर है। यहां का Meroua (खरूबा) नगर भी एक पवित्र स्थान है।

(५) Hardamant (Hazarmaveth of the Scriptures—Genesis X, 26) कुरु-मुरु Kuria-Muria, Shibasu Saba of the Ancients, (सभा) व Mahra (मिहर-सूर्य मग) व Sakr (शुक्र) सूर्य, बेदा, यश भूमि, हरिअरि व Raidia इसके मुख्य नगर हैं।

(६) Oman प्राचीन (उमाँ), जिसमें Sparkyia (शूरसेनी) भी सम्मिलित हैं।

(७) Lahsa or Bahreen इस प्रान्त में कहा जाता है कि प्रथम (Giants) असुर थे अरबी प्राचीन Terrestrial Paradise मानते हैं और अब Rabaul Khali परशियन इतिहास के अनुसार असुरों का यहीं आदि स्थान था।

(८) Nejd (High Land) इसके प्रान्त Shamar (सुमेरू प्रान्त) Khor (सूर्य) Gebel (गोपाल) Dowaser (देवासुर) Beishe (बीशी) व Haryk (हरिन) व Yemama इत्यादि हैं।

(९) Sanai Peninsula ईसाई व मुसलिम व पौराणिक धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार Sinai Peninsula or the sea of Desolation बड़ा ऐतिहासिक स्थान है। पौराणिक मत से भी यह त्रैपुर युद्ध से सम्बन्धित है यहां के Mounts Hor (हर) व Seir (श्री) Dead Sea व Ailah (इलावृत) Petra (पित्र) Om Shower ओ३म् सुमेरू बड़े पौराणिक स्थान हैं, सुमेरू ही के नाम Mr Crichton के अन्वेषण के अनुसार (कदाचित्) Mount of God, Ras Mohammed Mount Sinai of Scriptures हैं (History of Persia, Pages 42-58).

(१०) अरब की गल्फस १—Baramalachurn or

Bahrel–Melec Royal Lake ब्रह्मा का क्षीर सागर है। केदार के निकट Bida स्थान है।

२—Persian Gulf or the Erythraean sea, Erythrus, (सूर्य) के नाम से प्रसिद्ध है।

३—Ormuz वरुणालय है यही भारत के माल का भण्डार है।

४—Red Sea, or Sea of Edom, or Erythrus Red, सूर्य सागर अर्थात् पौराणिक त्रैपुर युद्ध के रक्त पतन से लाल सागर कहलाया। Dead Sea त्रैपुर युद्ध के विद्युन्माली व तारकासुर आदि दैत्यों के मृत्यु के स्थान हैं।

५—Gulf of Akaba व Suez के मध्य Heroopolis (हरिपुर) या (हरपुर) नगर था। History of Arabia 68.

इसे अरबी Sea of Destruction व Haunt of ghosts of drowned Egyptians मानते हैं। महत्स्य पुराण के त्रैपुर युद्ध वर्णन में असुरों के गृह जल मग्न करने की कथा यह अरबी मत से मिलता है। तारकासुर का त्रिपुर Egypt का Tripoli है, Scripture के अनुसार Israelites Suez से पार होकर अफ्रीका गये थे। हनूमान को लङ्का जाने का स्थान भी यही विदित होता है। त्रैपुर युद्ध में असुर इसी स्थान से मिश्र भगे थे।

(११) अरब के प्राचीन वंशज १—Yemen के प्राचीन नरेशों

की उपाधि Tobbaa थी। ये Ham वंशी हैं-प्रथम Tobbaa का समय सं० ७५ ई० था।

२—Homerites or Great Kings (हाम मंशी) जिनके पुत्र (Cush) बताये जाते हैं। कदाचित हाम Ham Ram राम का नाम है।

३—Kingdom of Hira, जहाँ के राजा प्रायः मन धीर नाम Saracens (शरसेन) थे, Hira को अब Hak कहते हैं अन्तिम मनधीर के पिता का नाम Zadijah (जाडेजा) था।

४—Gassan Kingdom, जिसके नेता Kahtan or Jactan था उनके पुत्र Yarab थे Kahtan की चौथी पीढ़ी में Saba उपनाम अब्दशमश (Ab व Shems) हुए (अब्द शमश, श्री सूर्य) इनके पुत्र Homyar थे। Saba से Sabaism धर्म प्रचलित हुआ। Saba के Royal House के एक कुल का नाम Lakhmians (लक्ष्मी) था, Hira के नरेशों की उपाधि Melec मालिक थी।

(११-अ) अरबी जनता अरबी २ Classesमें विभक्त है-१-Bedouins or Prstoral classes जो विद्युन्माली दैत्य के वंशज हैंऔर Merchants अरब निवासी, कुरान के प्रथम, तीसरे वर्ष लौंद का मास मानते थे। शगुन, ज्योतिष, मूर्तिपूजा, बलिदान, कन्या बध, इत्यादि में भी उनका विश्वाश था। Sabeans व Ethiopian Negroo (नृग) ज्योतिष में बड़े दक्ष थे। कुरीश कन्या

वध गौरव हेतु करते थे। अरबी Grossly idolatrous व याज्ञिक थे।

(१२) Landseer's Sabean Researches व Lucian ने Story of Runauay slaves में Philosoply के विषय में लिखा है कि:–From the Bramins Jupiter rapaired straight to Ethiopia (कुश द्वीप) thence to the Egyptians, whose poets and prophets he instructed, ond then he bc took himself to Babylon to teach the chaldeans. This imaginary journey is perhaps a true delineation, of original route of the Arts and Sciences"–Landseer's Sabaen Reserches.

इसका भाषान्तर यह है कि ब्राह्मणों से (Jupiter) बृहस्पति देवी वेदान्त (Philosophy) लाकर सीधी Ethiopia (Cush) (अरब) कुशद्वीप (Abyssinia, in Africa) ले गई, वहाँ से मिश्र में उन्होंने उसे वहाँ के कवियों व आगन्तुकों को बताया। तब वे उसे बैबीलोनिया ले गई। इस प्रकार ब्राह्मण से Art Science व Philosophy (कला व कौशल वेदान्त) इन देशों में क्रमशः गये। ब्राह्मण कहाँ है ? इस से पाठक Art-Science द Philosophi के जन्म दाता देश का नाम जान लें। यह हमारा मत नहीं, प्रत्युत योरोप के Researches का मत (Saba) अरब में अन्वेषण करने से

स्थिर हुआ है।—Mesopotamia का इतिहास भी साक्षी है कि मत्स्यावतार (Oannes) ने वहाँ कला, कौशल, शासन इत्यादिक का प्रचार Abyss अर्थात् अबीसीनिया (Abyssinia) से आकर किया था। इसको लाखों वर्ष हुये। History of Persia Vol. I. Legend of Oannes.

(१३) अब पाठक अरब के नकशे में प्राचीन उमा आधुनिक Oman प्रान्त को देखें। उरमुज़ (Omrmuz) नाम वरुण का है, Gulf of Ormuz वरुणालय है। उरमुज़ के नीचे Murier मुरू स्थान है। इसके नीचे सोहर व सोहम है इनके नीचे Sile (शिव) व शिव के नीचे मथुरा है और इसके नीचे कुरूयाज (कुरियात) व सूर (Sur) अर्थात् सुरपुर हैं। सुरपुर के नीचे Kanseh (कंस) हैं; दूसरी ओर महादाह (Mhadhah) ब्रह्मा, Birmah मैनाह (Menach) Shaam (श्याम) Aden (आदित्यपुर) उमा (Uma) व Mame व Monah (मौन) है। उरमुज़ के निकट (Lingah) इन्द्रनर (Inderabia) व प्रख्यात केदार व केदार के ऊपर (Sheba) शिव और उसके निकट Bida हैं। केदार के ठीक सन्मुख (Bedr) वह Red Sea पर है। उरमुज़ के निकट Birmah और एशिया के उरमुज़ Bida वरुण ब्राह्मण (The Creator of the Universe) थे। Persian Gulf का नाम Baramalchurn or Bahrul-Malek or The Royal-Lake है। क्या फिर यही ब्रह्मा का स्थान है। उमा के नीचे के भाग का

नाम Sharkiyeh उपनाम Saraceni (शरसेनी) है—भारतीय साम्राज्य का केन्द्र सुमेरू अरब का Om Shomer व परशियन इतिहास का Sumer है। यह अरब के मध्य में है। पौराणिक मध्यभूमि के देश हैं—

श्लोकः—शूर सेना भद्र काराः ब्राह्माः सह पटच्चराः,
मत्स्याः किरातः कुल्याश्च कुन्तला-काशिकौशलः।
आवन्ताश्च कलिङ्गाश्च मूकाश्चैवान्ध कैः सह,
मध्य देशा जनपदाः प्रायशः परिकीर्तितः॥

मत्स्य पुराण अ० ११३ श्लोक ३५

अर्थात् शूरसेन, शरसेन, भद्रकार, ब्राह्मण, पटच्चर, मत्स्य, किरात, कुल्य, कुंतल, काशिकौशल, आवन्त, कलिंग, मूक और अन्धक।

शरसेन अरब के उमा का Saracenia है, बाह्य (Bahrein or Lahsa) हैं; मत्स्य Masopotamia है, भद्रकार कदाचित Bidr है, मूक Mocha, Mecea व Makhas अर्थात् आधुनिक यमन व हिजाज है। इसी प्रकार आवत, किरात, कुल्य (Coel-Syria) व काशि (Kassites of Persia का देश) इत्यादि इसी मध्य भूमि Persia में है।

ग्रीस इतिहासज्ञ Arrian व Diodorus ने शरसेनियों (सूरसेनियों) के दो प्रख्यात नगर मथुरा व सुरपुर बताये हैं। भारत की मथुरा के सन्निकट कोई सुरपुर नहीं है। अरब में Muttrah मथुरा व Sur सूर दोनों सन्निकट हैं। एक शरसेन

तो उग्रसेन के पिता व कंस के पितामह और द्वितीय शरसेन उनसे ६ पीढ़ी प्रथम थे, कंस शरसेनी (सूरसेनी) थे। कृष्ण के कंस मामा थे। मथुरा Muttrah के निकट अरब में Mama नगर भी है कदाचित् इसी का नाम अब मतकत है और मथुरा व सुरपुर के नीचे Kanseh (कंस) नाम के दो नगर हैं। जिनके मध्य में ओ३म् Om द्वीप है। भागवत के अनुसार कृष्ण मुरू देश के असुर को जीत कर **मुरारि** कहलाये। (भागवत पुराण) अरब में उमां प्रान्त में Murier व कुरिया मुरिया इत्यादि मुरू के स्थान हैं। मुरशिद का अर्थ ही मुरु+शिद (राजा) अर्थात् मुरू राजा है। मुराद, मुरूछावर, मुरुगाँव, मुरतजा आदि परशियन व अरबी देश व नाम मुरवंसियों के सूचक हैं। अधिक कहने की आवश्यकता ही क्या Moors व Saracens तो अरब के निवासियों के नाम ही हैं।

यथा:-Moors: an Arab race inhabiting Morocco and Barbary coast of North Africa. Conquerors and occupants of Spain from 711 A.D. to 1492 A.D.—प्रमाण Dictionary.

Moors (मुरूवंशी) का राज्य स्पेन में स० ७११ ई० से स० १४६२ ई० तक था। Morocco के Moors अरब के वाह्य Bahrein द्वीप Persian Gulf से वहाँ गये थे।

The worshippers of Assur, or Bahrein island-

ers of Arbia, fleld and migaiated into Syria and Egypt.—History of Persia Vol. I, 78.

कंस यद्यपि शरसेनी थे, तथापि उनकी गणना राक्षसों में थी। ये राक्षसों के पति (राजा) थे। शरसेनियों का एक कुल (कंस का कुल) राक्षस ही हो गया था। यही मत English Dictionary का है:—

१—Moor: The same as Arab or Saracen, a dark—coloured person generally. See Moor.

२—Moarery = A quarter inhabited by Moors. See Moor.

Moors. See Moorery (मुरारि)

Moorish. See Moorish (मुरीश)

३—Saracena (Sar a Sen) an Arab.

Dictionary.

A name variously employed by the Mediaeval writers to designate the Moslems of Syriaand Pelestine, the Arabs generally, who conquered Spain, Sicily, and invaded France German, Sarakenos Arabic, Sharkeyn, Eastern People, as opposed to Maghribe (मग़रिब) Western People i.e. the people of Morocco. The Moors.

उपरोक्त प्रमाण से विदित होता है कि शरसेनी अरब में शर्की (पूर्वी) कहलाते थे और Moors मग़रिबी अर्थात् पश्चिमी अरब के निवासी। अरब में भी इनको शर्की कहने से और इनके देश का नाम अरब में Sharkiya होने से सिद्ध होता है कि अरब के उमाँ के शरसेनी वहाँ पूर्व भारत से गये अन्यथा अपने देश हो में ये शर्की or Eastern people ये क्यों कहलाये ?

अरबी न अरब ऐतिहासज्ञ स्वयं परेशान हैं कि अरब के Sarcens थे कौन, और Arabs का नाम Saracens क्यों पड़ा ? यथा:—

The Arabs, under the terrible name of Saracens, extended their dominion over more Kingdoms and countries in eight years than the Romans had done in 800 years.

२. The derivation of the name of Saracen has puzzled all etmologists. Some have suggested Sarah, the wife of Abraham, but they forget that the Ishmaelites (मोहम्मद साहब के वंशधर) were descended from Hagar. Saraka, a city of Nabathaeans, Sahara a desert, and a Araic words signifying a thief, have all been adopted as the true etymou of the name.—History of Arabia Page 305.

The appellation has no allusion to any particular city or any trait of national character. It comes from an Eastern people. History of Arabia P. 305.

उपरोक्त प्रमाणों से विदित है कि शरसेन अरब में शर्क़ या East से वहाँ गये, वहाँ भी वे शेर्क़ी कहलाये, उनका स्थान उमाँ (अरब) में शर्किया कहलाया—अरब के शार्क (East) में भारत ही है। बस ! भारत के शरसेनी Sarsens (सूरसेनी) हैं, सूरसेन का शुद्ध नाम शरसेन ही है, जिस साम्राज्य को रोमन ८०० वर्ष में स्थापित न कर सके, उससे बड़े सम्राज्य को केवल ८ ही वर्ष में स्थापित करने वाले (Saracens) मोहम्मद साहब के वंशधर (Ishmaelites) न थे, प्रत्युत अरब के शर्क (भारत) के शरसेनी अर्थात् मध्यकालीन (Madiaeval) कर्मवीर, धुरन्धर कृष्ण और योरोप में प्रख्यात Hercules, अथात् बलराम, जिनकी उपासना अरब, सीरिया, व परशिया (Alexander) सिकन्दरिया में होती थी, उनके वंशज थे और जो अब विदेशों में ईसाई व मुसलिम हो गये। बीच के देशों की कौन कहे धुर पश्चिम Saracens या Saracens उपनाम शर्की (Eartern People) आदि में न तो मुसलिम न ईसाई, प्रत्युत हिन्दू थे।

Ind (इन्द्र) India and Muttra, **(अरब की मथुरा)**

इन्द्र आदि नव द्वीपों को आधुनिक भारत ही में प्रतिबन्धित करने की अब एक प्रथा सी है। एक द्वीप के अन्तर्गत अनेकों

द्वीप, एक ही मण्डल में अनेकों मण्डलाधिप, एक छोटे से पंजाब में सारे राजवंश व जन पद हैं। India ही आर्यवर्त, यहीं अप-वर्त, यहीं तृणवर्त, यहीं इलावृत आदि सारे खण्ड और यहीं महावर्ष है। मत्स्य-पुराण में भारतवर्ष में नव द्वीप बताये गये हैं इनमें से नवें द्वीप का विस्तार जम्बू द्वीप से कहीं अधिक है (जम्बू द्वीप का विस्तार एक योजन है) "जम्बू द्वीपे भारत खण्डे आर्यवर्त्त" प्रसिद्ध ही है अर्थात् जम्बू द्वीप का एक भाग भरत खण्ड व भरत-खण्ड के अन्तर्गत आर्यवर्त है। यह सब उलटा ज्ञान है। बुक आफ इजिकव तथा Paradise Lost, Book II, Line 10 में लिखा है—"High on a throne of royal state, which far out shone the wealth of Ormuz and Ind; or where the gorgeous East; with richest hand, showers on her kings barbaric pearls and gold, Satan exalted Sat. इस साक्षी से सिद्ध हुआ कि भारतवर्ष अर्थात मानव द्वीप का भाग परशिया आदि देशों में था।

पौराणिक मत से इलावृत खण्ड भारतवर्ष (मानव द्वीप) के मध्य में है। मत्स्य पुराण पृष्ठ ३४१ में लिखा है 'तन्मध्यमंतन्मया प्रोक्तं नाम्नावर्ष मिलावृतम्।" इसके दो भाग उत्तर व दक्षिण इलावृत्त हैं अग्नि पुराण अध्याय १०७ श्लोक ६ में लिखा है "इलावृत्तं मेरुमध्ये रम्ये नीचस्तलाश्रितम्।" इसके अतिरिक्त अग्नि-पुराण अध्याय १०७ में लिखा है "इलावृत्तं च तन्मध्ये

सौवर्णो मेरू रिछ्त:" और इसी प्रकार मत्स्य पुराण में भी लिखा है "तर्योमध्येतु विज्ञेयो मेरूर्यत्रत्वला वृतम्" इस प्रकार सिद्ध हुआ कि इलावृत के मध्य में सुमेरू है

"Ayla on the Gulf of Akaba (Red Sea) Elam (Capital, Susa) on the head of the Persian Gulf. History of Persia Vol. II, Index उपर्युक्त ईरानी इतिहास के अनुसार इलावृत के दोनों भाग एल (Ayla) व ईलाम (Elam) अरब व परशिया में है।

The Country of Sumer was on the head of the Persian Gulf. It was also called the Land of Shinar; and before it, simply the Land H. P. Vol. I, 50.

Elam borders on Sumer. H.P. Vol. I, 41.

ऊपर के प्रमाणों से पता चलता है कि इन दोनों के बीच में सुमेरू प्रांत भी है। The Royal Indian World Atlas by Bartholomew Page 15 से पता चलता है कि अरब के मध्य में जो शोमर पहाड़ है वही कदाचित् गिरि है।

Erech, Ur, Larsa, and Umma, formed part of Sumer referred to in the book of Genesis as Babel, Erech, Accad, and Calveh, in Land of Sumer:—H.P. Vol. 1, 50.

सुमेरू देश प्रमाणित रूप से परशिया की खात के ऊपर था

उसके चार भाग उर (बैबिलोनिया) इरिक Erech (सूर्यपुर) लरसा व (Umma) उमा थे। जेनिसिस में इनके नाम Babel (बाबुल मडँब) Erech (सूर्यपुर) अकद (Accad) व Calneh (कालनेह) है। इससे प्रत्यक्ष है कि समस्त अरब व परशिया के कुछ भाग का नाम सुमेरू देश था। पौराणिक मत से इलावृत में दैत्य राज्य बलि का यज्ञ स्थान (राज्य) था। बावन ने बलि को यहाँ पर ही बाँधा था। इसी में प्रथम सुरभूमि थी, परन्तु असुरों ने उसे छीन लिया। इस पर त्रैपुर युद्ध हुआ। शिवजी ने त्रिपुरासुर मय तारकासुर व विद्युन्माली को विजित करके उनके तीनों त्रिपुरों को दग्ध किया। "मत्स्य पुराण त्रैपुर युद्ध में देखिये।"

अरब के उमा प्रदेश (Oman) में उमां की खात पर मथुरा के निकट सुमेरू प्रान्त में सूर नामक नगर है। पारबती का जन्म इसी सुमेरू ही में हुआ था। पार्वती को उमा भी कहते हैं (See Oman in Arabia. The Royal Indian World Atlas, P. 15. Muttra and Suru, near Muscat. See, Arrian and Tod's Rajasthan. 27) ग्रीक इतिहासज्ञों ने सूरसेनियों के दो नगर (Mathuras) मथुरा व (Clisoboras) सुरपुर बताये हैं। परन्तु भारतवर्ष की मथुरा को ही लोग सुरपुर बताते हैं। यह निश्चय है कि गोकुल के निकट जो मथुरा है। उसके समीप सुरपुर नामी कोई स्थान नहीं है। इस मथुरा का प्राचीन नाम मदुरा था। (Tod's Rajasthan 27.)

Memoirs of Mathura, by Mr Growse). कहते हैं कि यहाँ असुराधिष कंस का राज्य था। कनिघंम को मथुरा के कंस के टीले में कोई चिह्न बौद्ध काल के पूर्व के नहीं मिले। (Cunningham.—Vol. I, 237, etc. and Vol. XX)

ह्विनचाङ्ग ने भी अपनी यात्रा में मथुरा में केवल चार ही मन्दिर पाये थे। भागवत पुराण के दशम स्कन्ध में लिखा है "अक्रूर वापवेगी (Air Speed) रथ पर चढ़ कर प्रातःकाल मथुरा से चलकर कहीं सन्ध्या तक कठिनता से गोकुल पहुँचे थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सत्यार्थप्रकाश में यही शंका की है। परन्तु आजकल एक साधारण घोड़ा भी मथुरा से चलकर गोकुल एक घण्टे में पहुँच सकता है। बात भी ठीक है। अरब का उमा प्रान्त राक्षस भूमि त्रणवर्त में है। जहाँ के निवासी त्रणासुर, बकासुर, अघासुर व पूतना आदि कृष्ण के शत्रु थे। कंस के समान शक्तिशाली मनुष्य गोकुल के निकट न थे तब तो कंस राक्षस माने गये। पौराणिक "वायु वेगेन" यात्रा का तथ्य यह है मथुरा से गोकुल कहीं दूर थी।

उमाँ (Oman) प्रान्त में मथुरा व सुरपुर दोनों निकट ही हैं। यह नाम वहां अकारण और अक्समात नहीं आये (Gwadur) ग्वाडर से उमाँ तक उस समय बड़ा चलता जल मार्ग था। (Atlas-"Gwadur to Oman") गोधूरि का भी उल्लेख मथुरा और गोकुल के सम्बन्ध में है। Gwadur ही गोधूरि है। अरब के उमा प्रान्त के निकट (Island of Hor-

muz)वरुण द्वीप (Sea of Hormuz) वरुण सागर, एक दूसरा सुरपुर (Suru) केदार, सुमेरु, लिङ्ग व शङ्कर आदि स्थान हिन्दू नाम किसी राजनैतिक आधिपत्य अथवा संसर्ग के बिना अरब में क्यों है ? यह विषय विचारणीय है।

ध्यान रहे कि कृष्ण के स्वर्गारोहण के पश्चात उनके वंशजों को लूटने वाले और, कदाचित कृष्ण को भी बाण से बेधने वाले "जरा" नामी 'काबा' थे 'काबा' जाति अब भी द्वारका में व्रजनावस्ता में विद्यमान है। अरब का काबा (मक्का) बड़ा प्रख्यात स्थान है। उमाँ प्रान्त के सन्मुख है। इसका काबा नाम काव्य शुक्राचार्य के कारण पड़ा है यह पिछले पन्नों में सिद्ध किया जा चुका है। अब यह समझने की बात है कि क्या द्वारका के काबा और अरब के काबा एक ही हैं ? जिनके पूर्वज तृणासुर, बकासुर, अघासुर व पूतना थे ? क्या अरब के काबाओं ने तो कंस का बदला कृष्ण से मौसल युद्ध के पश्चात् नहीं लिया ? जो दशा व प्रकृति अरब के बद्दुओं की है द्वारका के काबाओं की भी वैसी ही है। इस से यह बात स्वीकार करना ही पड़ेगा कि कृष्ण को बाण द्वारा बेधने वाला अवश्य अरब का बद्दू था क्योंकि हम बद्दुओं में अब तक अपने पूर्वजों के बदला लेने का स्वभाव उपस्थित है। इसलिने यह जान पड़ता हैं कि **योगीराज कृष्ण का जन्म अवश्य अरब के मथुरा नगर में हुआ और कंस का राज अरब में था।** अरब उस समय विस्तृत देश था। अरब के मौसलके मैदानमें कृष्ण ने कंस का संहार किया

होगा जिसका बदला 'जरा' नामक काबा ने कृष्ण से लिया होगा।

इस समय जो पूर्वी अरब में जो (Oman) प्रान्त कहा जाता है वह वास्तव में Umma उमाँ प्रान्त था (Umma, City of Sumer, History of Persia Vol. I, 50-69) इजीकील साक्षी है कि केदार, शिव, रामा, हिरण्य, कान्ह और असुर (Bahrein) अरब व परशिया में के देश हैं "Arabia and all the princes of Kedar, the merchants of Sheba and Ramah, Haran, Canneh and Asshur were the merchants of Tyre of Syria Ezikiel. Ch. 21, 23, 27. H. P., Vol. II, 3.

हद्र मन्त उमाँ प्रान्त के निकट अरब के दक्षिणी भाग का एक प्रदेश है इन दोनों प्रान्तों के बीच महरा प्रान्त है भारतवर्ष के महरा क्षत्रियों ने इसको बसाया था The Suti. - History of Persia. Vol, I, 87.) महरा प्राँत के नीचे मद्रक भी है कहते हैं कि माद्री यहाँ की राजकुमारी थी। मथुरा से उमाँ प्रान्त की ओर जाते समय इस समय भी शिव नगर छोटा रमेश और बड़ा रमेश नगर मिलते हैं। इस प्रकार अरब के प्राचीन इतिहास की छान बीन करने से पता चलता है कि सारे अरब प्रदेश की प्रजा हिन्दू (आर्य) थी।

"हिन्दू धर्म दर्पण" नामक पुस्तक के पृष्ठ १८० पर पं० मूलराज शर्मा मुलतान निवासी लिखते हैं:—

वास्तव में बात यह मालूम होती है कि महाभारत के पूर्वकाल में जो दल भारत से निकल कर पश्चिम की ओर गया, उसकी संतान पारस, रूम रोम (राम) शाम, मिश्रये और यमनादि देशों में फैल गईं, परन्तु अरब स्थान में बालू को अधिकता और जल के अभाव होने के कारण आबाद न हो सकीं। महा भारत के युद्ध के पीछे कौरव वंशी या अन्य लोग जो यहाँ से गये वे दजला और फरात नदियों के मध्य देशों अर्थात मैसोपोटामिया (द्वावे) में जाकर आबाद हो गये। पूर्व और पिछले यह दोनों दल जुदा जुदा दो नसलों के कहलाने लगे। इन लोगों की सन्तान शनैः शनैः देशाटन तथा व्यापार के निमित्त अरब और मिश्र की ओर जाने लगीं कि जैसा तौरेत की यूसफ और यूसफ के भाइयों की कथा बड़ी प्रसिद्ध है। इस पिछले जत्थे के सबसे बड़े बुजुर्ग (पूर्वज) का शुभ नाम जिसने अरब के बालू वाले स्थलों और जंगलों को बसाया इब्राहीम या अबरहाम था। तमद्दने अरब नामी पुस्तक की पृष्ठ ७सात में लिखा है—"मुसल्मानों की प्राचीन से प्राचीन रवायतें हजरत इब्राहीम से आगे नहीं हैं।"

इब्राहीम की विवाहिता स्त्री की सन्तान ईसाई हैं और उसके दासी पुत्र वंश से मुसल्मान हैं। जिस वंश में मुहम्मद साहब पैदा हुए उस वंश का नाम कुरैश प्रसिद्ध है। यह शब्द कुरू + ईश या कौरव वंश से बिगड़ कर हुआ है। महाभारत से पहले जो जत्था पश्चिम गया था वह सूर्य वंशी था और जो जत्था पीछे गया वह चन्द्र वंशी था। चन्द्र वंशी लोगों का जातीय चिह्न

"चन्द्रमा" का आकार होता है। इसी कारण इस समय भी मुसल्मानों की जातीय टोपी और ध्वजा पर चन्द्रमा का ही सुन्दर चिह्न देखने में आता है। इससे यह सिद्ध होता है कि कुरेश लोग कौरवों के ही वंश में से हैं। तौरेत में कई स्थलों पर सरदार काहन का वर्णन पाया जाता है, यह शब्द कान्ह (कृष्ण) का ही अपभ्रन्श जान पड़ता है। इसी प्रकार अवन्त शब्द इस बात का साक्षी है। यह भी सम्भव है कि अरबी लिपि देव नागरी लिपि का ही रूपान्तर हो। इसी पुस्तक हिन्दू धर्म दर्पण के पृष्ठ १६० पर पं० मूलराज शर्मा लिखते हैं—

इब्राहीम का परिवार और भवन

ऊपर वर्णन हो चुका है कि समस्त संसार भारत वासी आर्यों की सन्तान हैं। परन्तु सहस्रों वर्ष भारत से दूर रहने के कारण उनके नाम, भेष और भाषा बिगड़ जा सकती है। इसलिये ज्ञात होता है कि ईसाई और मुसल्मानों के सबसे प्रथम पूर्वज 'इब्राहीम' का यथार्थ नाम 'अभयराम' है। पश्चिमी देशों के जल और वायु के प्रभाव के कारण उन देश वासियों की जिह्वा से 'भय' का शब्द स्पष्ट निकलना अत्यन्त कठिन है, बल्कि 'भय' का शब्द उन लोगों की वाक इन्द्री के उच्चारण के अनुकूल भी नहीं है। इस कारण पाश्चात्य देश वासी इसको अपनी जिह्वा से यथावत् और स्पष्ट रीति से उच्चारण नहीं कर सकते। न यह अक्षर उनको प्रचलित भाषा की वर्णमाला में पाया जाता है, क्योंकि पश्चिमीय भाषा को वर्णमाला में 'ब' और 'ह' इन दो

प्रथक् अक्षरों को मिला कर 'भ' अक्षर लिखा जाता है। हिन्दी वर्णमाला में 'भ' अक्षर स्पष्ट और पृथक् पाया जाता है जिसका यह अर्थ है कि 'भ' अक्षर न पश्चिमी वर्णमाला में पाया जाता है और न वे लोग इसका उच्चारण ही स्पष्ट रूप से कर सकते हैं। जिन लोगों की भाषा की लिपि में 'भ' अक्षर नहीं है वे प्रायः 'भ' के स्थान पर 'ब' का ही उच्चारण करते हैं। इसलिये 'अभय-राम' का 'अबराम' या 'इबरहाम' बोला जाना आश्चर्यजनक नहीं है। इस प्रकार पश्चिम में जिस बुजुर्ग का नाम इबराहीम या अबरहाम लिखने और पढ़ने में आता है, हिन्दी में उसका नाम अभयराम ही बोला जा सकता है। चूंकि 'अभयराम' के स्थान पर 'अबराम' बोलने में 'ह' और 'य' यह दो अक्षर कम हो जाते हैं। इस कारण इनका शुद्ध नाम खण्डित हो जाता है, जिसका संशोधन इस प्रकार हो सकता है। "पैदाइश बाब १७ आयत ५ पर खुदा हुक्म देता है कि तेरा नाम अब 'अबराम' न कहा जायेगा, किन्तु तेरा नाम 'अबरहाम' होगा।" अब 'अबराम' में जिस अक्षर की कमी रह जाती है वह अबरहाम या इबराहीम कहने में पूरी हो जाती है। यद्यपि अक्षरों का क्रम आगे पीछे अवश्य है। तथापि नाम के अक्षर पूर्ण होने में कोई संदेह नहीं रहता। संस्कृत में "अभय" का अर्थ निडर है। इसलिये 'अभयराम' का अर्थ स्वतन्त्र मनुष्य है। इसके अतिरिक्त राम का नाम भी आर्यों और ईरानियों में पाया जाता है। जैसे बहराम के नाम का ईरान में एक

प्रसिद्ध बादशाह हुआ है जिसकी कथा बहुत प्रसिद्ध है। यह बहराम भी वस्तुतः 'अभयराम' का ही अपभ्रन्श जान पड़ता है। क्योंकि अलिफ (अ) का अक्षर लिखने में कभी न्यून और कभी अधिक हो जाता है जैसे आङ्गल भाषा में (Station) स्टेशन लिखते हैं और उर्दू में سٹیشن के स्थान पर अस्टेशन اسٹیشن लिखा जाता है। इसी प्रकार अभयराम से बहराम भी हो सकता है। इस बुजुर्ग की विवाहित स्त्री का नाम "श्री" था परन्तु इस देश की जलवायु के कारण 'श' के स्थान पर 'स' हो जाना और 'श्री' को 'सरी' बोलना बड़ी बात नहीं है। फिर 'सरी' से 'सारह' होना कठिन नहीं है। इसी कारण आजकल शुद्ध नाम 'श्री' के स्थान पर 'सारह' भी लिखा गया है। इस बुज़ुर्ग की दासी का का नाम आजकल हाजरः लिखा है। शकुन्तला नाटक में शकुन्तला अपनी दासी को हंजा कह कर बुलाया करती थी और संस्कृत में दासी का नाम हंजा है भी। बस ! समय के प्रताप से हंजा का हाजरः भी हो सकता है।

इस गड़ बड़ होने का कारण यह हो सकता है कि जिस समय अभयराम जीवित थे, उस समय कोई इतिहास नहीं लिखा गया था, उसकी कई पुश्तों के पीछे इतिहास लिखा गया था, जब कि उसी परिवार में हज़रत मूसा का जन्म हुआ तब उन्होंने सारे इतिहास को लेख बद्ध किया। हज़रत मूसा ने पहिले अभयराम और उनके खानदान के नाम और हालात कण्ठस्थ परम्परा से चले आते थे। इसलिये इतने समय के पीछे नाम के अक्षरों तथा

उच्चारण आदि में परिवर्तन होना सम्भव है।

इस प्रकार 'अभयराम' से 'अवरहाम' या 'इबराहीम', 'श्री' से 'सरी' या 'सारह' और हंजा से हजारह ऊपर के कारणों से हो सकता है। अभयराम की दासी हंजा (हाजरह) से हजरत मसीह से १६१० वर्ष प्रथम इस्माईल नाकक पुत्र उत्पन्न हुआ ऐसा किताब मुक़द्दस बाब दो में लिखा है। अभयराम की विवाहिता स्त्री से वृद्धावस्था में इसहाक नामक पुत्र ने जन्म लिया। इसलिये इसमाईल आयु में बड़े और इसहाक़ आयु में छोटे थे। पैदाइश बाब २१ आयत ६, १०, ११. १४ में लिखा है कि स्त्रियों के वादा विवाद के कारण इबराहीम ने हाजरह को बच्चे समेत घर से निकाल दिया। माता हाजरह बच्चे को लेकर दक्षिण की ओर निकल गईं जब रोटी और पानी समाप्त हो गया, तब विवश होकर एक स्थान पर दुखी हो बैठ गईं और बच्चे को भूमि पर लिटा दिया। बच्चा तृषा से व्याकुल हो पावों की एड़ियाँ बालू पर रगड़ने लगा। जिस स्थान पर यह बालक पड़ा था उस स्थान पर नीचे एक मधुर जल का अकृत्रमी स्रोत बालू के नीचे दबा था। परमात्मा ने बच्चे की पुकार सुन ली, क्योंकि उसकी एड़ियों की रगड़ से पानी के चिह्न प्रकट हुए और ऊपर से रेत हटाने से वह स्रोत बिलकुल नंगा हो गया। बस! माता हाजरह ने पानी का स्रोत पाया इस कारण उसी स्थान पर निवास कर लिया। आजकल वही स्रोत आबे ज़म ज़म के नाम से प्रसिद्ध है। इसके कुछ समय के पीछे इबराहीम अपने बाल बच्चों की खोज

में दक्षिण की ओर आये और उनको सकुशल देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उस स्रोत के निकट अपने हाथों से एक भवन बनाया और उसमें एक काला पत्थर स्थापित किया। जिस प्रकार यह स्रोत आबे ज़म ज़म कहलाने लगा उसी प्रकार यह काला पत्थर संगे हाजरह या संगे असवद कहलाने लगा और जिस भवन को इबराहीम ने अपने हाथों बनाया था वह ख़ानये क़ाबा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके पीछे इबराहीम स्वदेश (मिश्र) को वापिस गये और जब तक जीवित रहे तब तक बराबर इस की ओर आया जाया करते थे। चूंकि इस स्थान पर इस्माईल के चरणों की रगड़ से स्रोत निकल पड़ा था इस कारण इबराहीम की मृत्यु के पीछे भी इनके परिवार के लोग काबा की यात्रा करने आया जाया करते थे, जिससे इस स्थान की शोभा दिन दूनी और रात चौगनी बढ़ती रही। तमद्दुने अरब में पृष्ठ ३५ पर लिखा है कि हजरत मोहम्मद से कई हजार वर्ष पहिले इस पत्थर की पूजा होती थी और लोग इसको तीर्थ स्थान समझते थे।

इसहाक और इस्माईल में भी अभयराम की भाँति संस्कृत शब्द की रंगत आती है। क्योंकि इसहाक और अशोक शब्द में समानता दीखती है थोड़ा बहुत नाम के अक्षरों में हेर फेर हो जाना साधारण बात है। इस प्रकार अब तक कई प्रकार से लिखा पढ़ा जाता है। कोई इसह्हाक लिखता है कोई अज़हाक लिखता है और आङ्गल भाषा में Isac लिखा जाता है। सं० १८५० की छपी लन्दन की इंजील अँग्रेजी भाषा वाली में यही

नाम Issoac लिखा है जो निश्चित अशोक का ही अपभ्रन्श है। इससे सिद्ध हुआ कि माता सारह के गर्भ से जो इसहाक नामक पुत्र उत्पन्न हुआ वह वास्तव में अशोक था। इसी इसहाक के वंश में ईसाई और यहूदियों का जन्म हुआ। इसी प्रकार इस्माईल शब्द भी संस्कृत के शब्द समील का अपभ्रन्श है। समील का अर्थ है "आँख की पलक का झपकना," समील से इस्माईल होना कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि संस्कृत में 'स्त्री' शब्द उर्दू में इसी शब्द को استری अस्त्री लिखा जाता है। ऐसे ही समील से इस्माईल भी हो सकता है। इसी इस्माईल से मुसलमानों का वंश चला। पैदाइश बाब २१ आयत १२, १३ मे लिखा है कि इन दोनों के वंश ने जुदा जुदा दो बड़ी बड़ी जातियां उत्पन्न कीं। ईसाइयों और यहूदियों का गोत्र इसहाक (अशोक) और मुसलमानों का गोत्र इस्माईल (समील) है। इस प्रकार हजरत इबराहीम के पीछे इनके दोनों के पुत्रों द्वारा दो बड़ी बड़ी जातियों का जन्म हुआ।

बाब १२, १३ मुकद्दस किताब का हाल बाब ६ में लिखा है कि मसीह से १६२१ वर्ष प्रथम अभयराम या इब्राहीम का जन्म हुआ। इसी पुस्तक के दसवें अध्याय में लिखा है कि मसीह से १८७१ वर्ष प्रथम इबराहीम ने एक वेदी बनाकर जिस में लकड़ियाँ चुनीं और अपने एकलौते पुत्र को (ईसाई इसहाक का नाम लेते हैं और मुसल्मान इस्माईल का नाम लेते हैं) बांध कर बलिदान के निमित्त लकड़ियों पर रखकर हाथ में खाण्डा

पकड़ बध करना चाहा। उस समय यह आकाश वाणी हुई "मैंने जान लिया कि तू खुदा से डरता है क्योंकि तूने अपने बेटे को बलि देने में भी सँकोच नहीं किया"। तब इबराहीम ने आँखें उठाईं उस समय एक भेड़े को सामने की झाड़ी में फँसा पाया। उस समय इबराहीम ने अपने लड़के को छोड़ उस भेड़े की उस यज्ञ में बली चढ़ा दी। सम्पादकः— अब विचारणीय बात यह है कि १८७१ वर्ष मसीह से पहिले और अब १९४०ई० है इस प्रकार १८७१ + १९४० = ३८११ वर्ष हुये कि जब इबराहीम नें बलि दी थी इसमें सन्देह नहीं कि महाभारत के लगभग ५०० वर्ष पीछे ही लोगो ने वेदों के अर्थ का अनर्थ कर दिया था और इबराहीम के समय पौराणिक मत संसार में बड़े वेग से प्रचलित हो चुका था जिससे ब्राह्मण लोग अजमेध यज्ञ में बकरा की बलि, गोमेध यक में गौ की बलि, नरमेध यज्ञ में मनुष्य की बलि देने लगे थे, इस कारण ऐसा जान पड़ता है कि हजरत इब्राहीम जिनका शुद्ध नाम अभय राम था यह भी पौराणिक मत के अनुयाई हिन्दू ही थे इसी कारण लड़के की बली यज्ञ में दे रहे थे पश्चात् मेढ़ा की दे ही दी अर्थात् अपने विचार से उन्होंने 'अजमेध' यज्ञ किया था, और इन्हीं को अरब लोग अपना पूर्वज मानते हैं। इस से भी सिद्ध हुआ कि अरब की सारी प्रजा हिन्दुओं की सन्तान है।

हज्ज के समय हिन्दुत्व के चिन्ह

हिन्दू धर्म दर्पण भाग दो के पृष्ठ १९४ पर लिखा गया है

"मुसल्मान लोग जिस समय हज्ज करने जाते हैं तो मक्का भवन से ५ कोस दूर अपने पुराने वस्त्र उतार देते हैं एक तहबन्द बांधते और एक चादर गले में डालते हैं यह दोनों वस्त्र श्वेत होते हैं। इसके पोछे न शिर के बाल मुंडवाते और न नख कटवाते हैं। हिंसा से यहाँ तक भीरू हो जाते हैं कि एक चींटी तक नहीं मारते। किन्तु चींटी का मारना पाप समझते हैं। मक्का में पहुँच कर हाथ पैर धोकर काबा धाम की मानता करते, संगे असवद के बोसे लेते फिर काबा के गिर्द सात बार परिक्रमा करते हैं। ये क्रियायें सारी की सारी हिन्दुओं के तीर्थों से मिलती हैं अन्तर यह ही है कि मुसल्मान लोग काले पत्थर को चूमते हैं और हिन्दू लोग अपने मन्दिर में पत्थर को झुककर प्रणाम करते हैं। इन चिन्हों से भी पाया जाता है कि काबा की यात्रा के समय मुसल्मानों को हिन्दुओं के कई अच्छे अच्छे नियमों का पालन करना आवश्यक होता है फिर भी मुसल्मान हिन्दुओं को अपने से पृथक समझते और थोड़ी थोड़ी बातों में भारतवर्ष में रक्त पात प्रारम्भ कर देते हैं।

मोहम्मद से १००० वर्ष पूर्व अरब

अरब में इसलाम प्रारम्भ होने के १००० वर्ष पूर्व यमन देश बहुत सुन्दर तथा धनधान्यपूर्ण था। उस समय वहाँ एक चन्द्रवंशी क्षत्री राजा राज करता था। अरबी इतिहास लेखकों ने उसका शुद्ध नाम नहीं लिखा किन्तु अपने ढँग पर ही उसका नाम लिखा है। यह वृत्तान्त मैं "तौहफितिल अमान" अर्थात् "अमान का

इतिहास" नामक पुस्तक जिसके लेखक 'अब्दुल्ला इब्नेहुमैत अस्तलेमी' नज़वा निवासी हैं जिन्होंने नज़वा के इमामोंकी संरक्षता में इस इतिहास को लिखा है। इसी इतिहास के आधार पर लिख रहा हूँ। उस समय यमन में सात नदियां बहती थीं और पानी को रोकनेके लिए यमन के क्षत्री राजा ने बाँध भी बनाया था, जो किसी कारण टूट गया। इसके टूटने से यमन में दुष्काल पड़ गया। उस समय यमन से दो दल एक शाम की ओर गया और दूसरा अमान की ओर चला। जो जत्था उस समय शास देश की ओर गया था उस जत्थे के लोग यवन काल में मुसल्मान न बने थे उनमें से अब तक कुछ लोग मिश्र में बसे हैं। दूसरा जत्था चालीस हजार आदमियों को साथ लेकर 'मालिक इब्नेफहम' अदन और मकल्ला बन्दरों के किनारे किनारे क्लात नामक नगर में जो प्राचीन शूरपुर के निकट है आया। उस समय सारे अरब में ईरानियों का राज्य था और ईरान सरकार की ओर से प्रत्येक बड़े-बड़े प्रान्तोंमें ईरानी गवर्नर रहते थे जिनका ईरान के शाह से सीधा सम्बन्ध था। उस समय क्लात नगर में एक बलशाली गवर्नर रहता था। स्मरण रहे कि उस समय अरब के पूर्वी भाग की सारी प्रजा महात्मा जरदुश्त की पूजा करती और अग्नि की उपासना करती थी। परन्तु मालिक इब्नेफहमके सम्बन्ध में इतिहास लेखक ने पक्षपात के कारण धर्म के सम्बन्ध में अन्धकार ही रखा है क्योंकि लेखक उसको 'लामज़हब' लिखता है। यद्यपि यह बात अन्य इतिहासों से सिद्ध है कि यमन और अरबके लोग

उस समय मूर्तिपूजक हिन्दू ही थे। परन्तु इतिहास लेखककी दृष्टि में मालिक इब्नेफहम ला मजहब था अच्छा; जो कुछ भी हो, उस समय क्लात नगर के गवर्नर की शक्ति के कारण मालिक इब्नेफहम की नौकाएँ किनारे न ठहर सकीं। उसने उनको उत्तर की ओर खदेड़ दिया। मालिक इब्नेफहम अपना जत्था लिये हुये अमान की खाड़ी (Umma) पार कर नगर 'नज़वा' में जा पहुँचा। नजवा का गवर्नर इस के सामने निर्बल पड़ा, इस कारण मालिक इब्नेफहम के हाथ नजवा आ लगा और इसने नजवा में अपना राज स्थापित किया। उस समय मालिक इब्नेफहम की आयु ४८ वर्ष की थी। वर्तमान मसकत नगर के उत्तर की ओर एक नगर संजार था। उस पर भी मालिक इब्नेफहम ने आक्रमण किया और उसका नाम संजार से सहार रखा और इसने इसी नगर को अपनी राजधानी बनाई। धीरे धीरे सारे अमान (उमां) प्रान्त के ईरानियों को परास्त कर मालिक इब्नेफहम ने प्रत्येक नगर व ग्राम में अपना राज स्थापित किया। ईरानियोंने (उमांप्रांत) अमान को अच्छा उपजाऊ बना रखा था। स्थान स्थान पर नहरें खोद रखी थीं और इन्हीं नहरों के पानी से सींच सींच कर खजूरों की बाटिकाएँ लगा रखी थीं इस प्रकार उत्तम खेती कर रखी थी। मालिक इब्नेफहम ने सारे अमान में अधिकार कर सारे गवर्नरों को अमान छोड़ने की सूचना दी। उस समय अमान के गवर्नरों ने ईरान के वर्तमान शाह दारा बिन दारा से सैनिक सहायता मांगी। शाह ईरान ने सैनिक सहायता भेजी परन्तु मालिक इब्ने-

फहम की सेनाओं के सामने ईरानी सेनाएँ न टिक सकीं। ईरानी सेनाएँ पराजित हुईं और सारे ईरानियों को उस समय अमान से निकलना पड़ा। इस समय अमान प्रान्त में जितनी वाटिकाएँ, और नहरें हैं वे सब इरानियों के हाथ की बनाई हुई हैं, उनकी मरम्मत करके आजकल अरबी लोग अपना उदर पोषण कर रहे हैं। अरबी लोगों ने विशेष उन्नति उस समय से अब तक नहीं की।

मालिक इब्नेफहम के समय एक बड़ा जत्था मालिक इब्ने जुहैर का यमन की ओर से अमान आया। उसके साथ बहुत बड़ी सेना थी इसकी सेनाओं को देखकर मालिक इब्बेफहम डर गया और उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि मालिक इब्नेजुहैर मुझ से अमान का राज छीन ले। इस कारण उसने मालिक इब्ने जुहैर से सुलह करली और मालिक इब्नेजुहैर की युवती कन्या के साथ मालिक इब्नेफहम ने विवाह कर लिया। इस असम्बन्ध के कारण मालिक इब्नेफहम का राज सुरक्षित रह गया। मालिक इब्नेफहम के (१) सलीमा (२) हनात (३) मुअन (४) साअलबा (५) जजैअमा (६) ज्वलन्द नामक पुत्र थे। मालिक इब्नेफहम सर्वदा यमन वालों से भीत रहा करता था कि कभी कोई उसे धोखे से बध न कर दे।

मालिक इब्नेफहम की मृत्यु

एक दिन मालिक इब्नेफहम ने अपने कनिष्ठ पुत्र सलीमा से कहा, "आज रात को तुम मेरी चौकसी करना और भली प्रकार

ध्यान रखना कि रात को कोई आदमी मेरे पास आकर मेरा अनिष्ट न कर सके । ।" सलीमा पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर रात्रि में चौकसी का काम बड़े परिश्रम तथा ध्यान के साथ करने पर उद्यत हुआ । इस समाचार को सुन कर शेष भाइयों ने अपने पिता से कहा । "हमारे कनिष्ठ भाई सलीमा के विचार शुद्ध नहीं हैं । इस कारण हम सब को सन्देह है कि कहीं राज्य के लालच से हमारा भाई हम लोगों के लिये कोई अनिष्ट कार्य न कर बैठे ! इस कारण आप उसको अपनी चौकसी की सेवासे हटा दीजिये । हम लोगों को आज्ञा दीजिये हम लोग भली प्रकार से आपकी चौकसी अपना जीवन रहते रहते कर सकते हैं ।" परन्तु इस पर मालिक इब्नेफहम ने कुछ ध्यान न दिया । रात्रि के समय मालिक इब्नेफहम के शयनागार के चारों ओर सलीमा बड़ी मुस्तैदी से चौकसी कर रहा था कि अर्द्ध रात्रि के समय मालिक इब्नेफहम सोते से उठा और अँधेरे में बाहर निकल कर सलीमा को छिप कर देखने लगा कि सलीमा क्या वास्तव में चौकसी कर रहा है ? अथवा क्या करता है ? उस समय सलीमा अँधेरे में अपने पिता को न पहचान सका । उसने समझा कि कोई शत्रु मेरे पिता का अनिष्ट करने के विचार से आरहा है । बस ! उसने तरकश से तीर निकाला और धनुष पर रख कर उस अँधेरी रात्रि में ही लक्ष्य साधकर मालिक इब्नेफहम के ऐसा मारा कि जहरीला तीर मालिक इब्नेफ़हम के हृदय को छेदता हुआ धँस गया । उस समय मालिक इब्नेफहम हाय करके गिर पड़ा । सलीमा ने दौड़कर देखा

कि वह तो उसका पिता मालिक इब्नेफहम ही है। उस समय सलीमा के हृदय में कैसी वेदना उठी होगी ? उसका अनुमान करना कठिन है। क्योंकि उसको पता था कि उसके भाइयों ने उसकी चौकसी पर विरोध कर नाना प्रकार की शंकाएँ की थी। अब वे सारे अनिष्ट विचार उसके नेत्रों के समक्ष चक्कर काटने लगे। परन्तु अब शोक के सिवाय और हो ही क्या सकता था। मालिक इब्नेफहम रात्रि भर जीवित रहा और उस समय उसने अरबी पद्य में गाना प्रारम्भ किया कि किस प्रकार उसने यमन से आकर अमान में राज स्थापित किया। वह कविता इतनी हृदय विदारक है कि समझने वाले के नेत्रों से स्वयं ही अश्रु धारा प्रवाहित होने लगती है। प्रातःकाल होते होते वह मूर्छित हुआ और इस प्रकार इस असार संसार से मालिक इब्नेफहम ने ११८ वर्ष की आयु में अमान में ७० वर्ष राज करने के पीछे अपने प्राण त्याग दिये। मालिक इब्नेफहम की मृत्यु के पीछे सारे भाइयों ने मिलकर सलीमा पर आक्रमण किया जो स्वाभाविक ही था, क्योंकि उनको इसी प्रकार की प्रथम से ही शंका थी। अन्त में सलीमा अपनी जान बचाकर अमान से भागकर ईरान पहुँचा और ईरान के मुल्क किरमान के शासन कर्ता से युद्ध कर किरमान को अपने हस्तगत कर किरमान में राज करने लगा। उस समय के शाह ईरान ने सलीमा की वीरता देख और उसका हृदय शुद्ध जान किरमान का सलीमा को गवर्नर बना दिया। सलीमा ने ईरान में ही अपना विवाह किया और महात्मा जर-

दुश्त का उपासक बन पक्का ईरानी बन गया। इस समय जो सारे अरब प्रदेश में लाल रंग का झण्डा प्रचलित है वह झण्डा मालिक इब्नेफ़हम यमन से लाया था सम्भवतः उस समय का वह झण्डा महावीरी, झण्डा कहा जाता होगा क्योंकि मालिक इब्नेफ़हम मूर्ति पूजक हिन्दू ही था। सुना जाता है कि उस समय सारे यमन वासी बाल ब्रह्मचारी हनुमान के भक्त थे।

ईरानियों का पुनः सारे अरब में अधिकार

'सेफ़ इब्नेज़ीअज़न' जब बच्चा था तब इथौपिया वालों ने यमन पर चढ़ाई की। उस समय यमन की दशा निर्बल थी जिसका फल यह हुआ कि इथौपिया नरेश ने सेफ़ के पिता का बध कर यमन पर अधिकार जमाया सेफ़ की विधवा माता सेफ़ को छिपाकर यमन से किसी प्रकार निकल कर शाम की ओर भाग गई और शाम में सेफ़ का पालन पोषण होने लगा। जब सेफ़ युवा हुआ और उसको पता चला कि वह यमन के राजा का राजकुमार है। इथौपिया नरेशने उसके पिता का वधकर यमन पर अपना अधिकार जमा लिया है। तब ! अपना राज्य वापिस लेने और पिता का बदला लेने के विचार से सेफ़ शाहईरान के पास गया और सेफ़ने इस प्रकार शाहईरान से प्रार्थना की एक दिन "सारा अरब आपके आधीन था। इस समय वही अरब इथौपिया वालों के हाथमें है इसलिये यदि आप मेरी सहायता करें और मुझे सेना दें तों मैं इथौपियन को यमन ही नहीं सारे अरब प्रदेश से निकाल सकता हूँ" शाहईरान ने सेफ़ की प्रार्थना स्वीकार की

और एक भारी सेना अरब को विजय करने के लिये इथौपियनों को अरब से बाहर निकालने के लिये दी। सेफ़ उस भारी सेना को साथ लेकर यमन पर चढ़ पड़ा। उस समय इथौपियन लोग अचेत थे। उनको यह ज्ञान न था कि कोई उनपर इस प्रकार एका-एक आक्रमण कर बैठेगा। युद्ध हुआ। इस युद्धमें सेफ़ की विजय रही और इथौपियनों को यमन छोड़ इथौपिया का मार्ग पकड़ना पड़ा। इससे पूर्व अमान प्रान्त भी शाह ईरान के आधीन हो चुका था। अब इस समय फिर वह काल आगया कि सारा अरब प्रदेश उत्तरसे दक्षिण और पूर्व से पश्चिम चारों ओर शाहईरान के आधीन हो गया। जब सेफ़ यमन में राज करता था उस समय हजरत मोहम्मद का दादा जिसका अरबी इतिहास में 'अब्दुल मुत्तलिब' लिखा है। परन्तु चौधरी धनराजसिंह ने परशियन इतिहास के आधार पर मोहम्मद साहब के दादा का नाम 'केदार' लिखा है। Col, Sykes ने मोहम्मद साहब के पितामह का नाम Sheba (शिव) लिखा है और शिव (Sheba) के भाई का नाम 'उमा' लिखा है।

अमान में इस्लाम मत का प्रवेश

मोहम्मद साहब ने जिस समय इस्लाम मत का प्रचार प्रारम्भ किया उस समय सारा अरब प्रदेश शाह ईरान के आधीन था और इस प्रकार मोहम्मद साहब शाहईरान की प्रजा थे। उस समय यमन का शासक 'मुरज्बान' था और शाह ईरान का नाम 'अभ्रबीज बिन अणुश्रवान' था। मोहम्मद साहब ने चार पत्र

लिखे, एक पत्र इथौपिया नरेश के पास, दूसरा पत्र शाम के शाह के पास, तीसरा पत्र अमान के शासक के पास और चौथा पत्र शाह ईरान के पास अपने दूतों द्वारा भेजे। पत्रों के भीतर एक ही प्रकार का समाचार था। इथौपिया नरेश ने पत्र पढ़ा और उत्तर दिया "हम इस पर विचार करेंगे" यही उत्तर शाम नरेश ने दिया। शाह ईरान ने उस पत्र को प्राप्त कर समाचार जान बहुत क्रोध प्रकट किया और मोहम्मद साहब के पत्र को शाहईरान ने यह कहते हुए अपनेपैरों तले कुचल दिया "यह व्यक्ति मेरी ही प्रजा है फिर मेरा ही गुलाम है मेरा ही गुरु बन मुझको ही शिक्षा देना चाहता है?" यह दशा देख दूत अपनी जान लेकर ईरान से भाग निकला। चौथा पत्र अमान नरेश जैफ़र के पास दूत लेकर गया। जैफर के छोटे भाई का नाम अब्द था उसको प्रथम मोहम्मद साहब का पत्र मिला उसमें लिखा था "ऐ अमानके शासक! तुम मुसलमान बन जाओ। यदि मुसलमान न बनोगे तो अमान की सारी प्रजा का पाप आपके सिर होगा, अब्द को यह पत्र पसन्द आया वह उस पत्र को लिये हुये अपने बड़े भ्राता जैफ़रके पास गया और उस पत्र को पढ़कर सुनाया और इस्लाम मत स्वीकार करने की अब्द ने जैफ़र को सम्मति दी। जैफ़र ने भी प्रसन्नता पूर्वक मोहम्मद साहब के प्रस्ताव को स्वीकार किया। फिर मोहम्मद साहब को पत्र लिखा जिसमें लिखा गया "हमने आपकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया है अब आप कृपा करके किसी शिक्षक को हमारे प्रान्त में भेजिये, जो हम सबको इस्लामियत की शिक्षा दे। मोहम्मद

साहब ने इस पत्र को पाकर 'अम्र इब्नुल आस' नामक व्यक्ति को अमान में इस्लामियत की शिक्षा देने भेज दिया। उससे शिक्षा प्राप्त कर सारे अमान प्रान्त के निवासी पक्के मुसलमान बन गये।

अमान तथा ईरानी बन्दरों में पोर्चग़ीज़ों की सत्ता

सेफ के समय अर्थात् मोहम्मद साहब के दादा के समय से स० १५११ ई० तक सारे अरब में ईरानियों का राज रहा। इसी समय Alphose अलफ़ोसे नामक पोर्चगीज़ ने अमान में प्रवेश हुआ और अरबों के साथ युद्ध करने लगा। अन्त में सन् १५१७ ई० में जनरल अल्व्यूग्यूर्के (Albuguerke) नामक पोर्चगीज ने सारे अमान और सारे ईरानी बन्दरों में अपनी राज सत्ता जमाई। इस समय पोर्चगीजों ने मसकत में समुद्र तट पर जट्टी के निकट आसने सामने के दोनों पर्वतों पर बड़े बड़े दो सुदृढ़ गढ़ निर्माण कराये जो आज तक बने हुए हैं और पोर्चगीजों का स्मरण करा रहे हैं। इन पर्वतों के पीछे के भाग से बद्दुओं के आक्रमणों का भय रहता था, इस कारण यह लोग सारी रात सुदृढ़ पहरा दिलाते थे। दोनों पर्वतों के बीच समुद्र लहरें मारता है एक ओर मसकत नगर है और मसकत नगर के सामने बड़ा समुद्र लहरा रहा है। पोर्चगीज़ों ने दोनों पर्वतों के बीच मोटी और सुदृढ़ जंजीर लोहे की लटका कर नीचे से ऊपर तक बांध रखी थी। रात को विशेष रूप से उस जंजीर को मज़बूती के साथ बांध दिया जाता था कि जिससे बद्दू लोग किसी नौका द्वारा मसकतमें प्रवेश न कर सकें।

दोनों किलों में बड़ी बड़ी तोपें लगा रखी थीं जो आज भी उसी प्रकार से रखी हैं। इसी प्रकार मथुरा नगर में भी दो गढ़ बनवाये थे और दोनों गढ़ों के बीच उसी प्रकार की जञ्जीर लगा रखी थी कि जैसी मसकत में लगाई थी वह जंजीर मसकत में अब तक पड़ी हैं। इसी प्रकार पोर्चगीजों ने मूसना, बुर्का, सूर, क्लात, दबई, बेहरिन आदि प्रत्येक स्थानों पर अमान और ईरान में अपने गढ़ आवश्यकतानुसार निर्माण कराये, इस प्रकार अपना राज सुदृढ़ करना चाहा। पोर्चगीजों ने मसकत, मथुरा, क्लात, मूसना, सहार नजवा आदि अनेक स्थानों को व्यापार का केन्द्र बनाया जिस कारण स्थानों की सुन्दरता अधिक बढ़ गई और व्यापार भी बढ़ा।

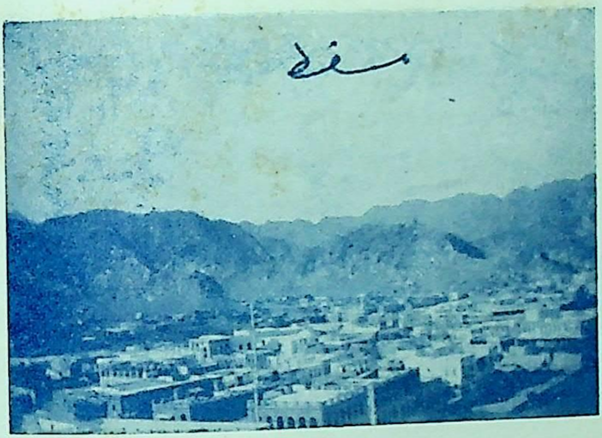
पोर्चगीजों की राज सत्ता समाप्त

ईरानी लोग सर्वदा इस बात की चिन्ता किया करते थे कि पोर्चगीजों को किस प्रकार ईरान से निकाला जाये। सन् १६२२ ई० में ईरान का शासक शाह अब्बास था। जो वीर और विचारवान व्यक्ति था। उसके मन में सर्वदा पोर्चगीज़ों को ईरान से निकालने और ईरानी बन्दरोंको स्वतन्त्र करनेकी अग्नि भड़कती रहती थी। बस! शाह अब्बास ने सन् १६२२ ई० में उर्मुज़ द्वीप तथा सारे बन्दर पोर्चगीजोंके सामने, विशाल सेनायें भेज उनसे युद्ध कर उन स्थानों को स्वतन्त्र किया। इसी समय अरब के लोगों ने भी पोर्चगीज़ों पर आक्रमण किये। सहार, नजवा, मूसना, बुर्का, सूर और क्लात से अरबियों ने पोर्चगीजों को खदेड़ दिया। पोर्चगीजों

ने "नासिर बिन मुरशद बिन सुल्तान' इमाम से सुलह कर ली। इस सुलह नामे में मथुरा और बसकत पोर्चगीजों के पास रहा और शेष स्थान अरबों के हस्तगत हो गये। पोर्चगोजों ने मथुरा और मसकत का बड़ा पक्का प्रबन्ध किया। मथुरा ऐसे इस कारण स्थान पर बसा है जहाँ से सारे अरब प्रदेश में माल जाता है। इन्होंने किले ही न बनवाये किन्तु मथुरा को सुदृढ़ चहार दीवारियों से घिरवा दिया।

हिन्दू बनियों ने मथुरा व मसकत स्वतन्त्र कराया

पोर्चगीजों की राजधानी अब मसकत थी इनके पास दो मन्त्री थे। एक का नाम सेठ नरोत्तम और दूसरे का नाम सेठ सकबीला था। सेठ नरोत्तम की एक युवा कन्या थी जो अत्यन्त सुन्दरी थी। मसकत के पोर्चगीज गवर्नरजनरल ने उसको देखा और उसने मन्त्री नरोत्तम से कहा, "तुम अपनी कन्याका मेरे साथ विवाह कर दो।' इस पर सेठ नरोत्तम ने कहा, "हम लोग हिन्दू हैं। हिन्दू रीति के अनुसार हम अपनी कन्या का विवाह अपनी जाति वाले के अतिरिक्त अन्य के साथ नहीं कर सकते।" इस उत्तर को सुन गवर्नर जनरल मन्त्री के साथ कठोरता का व्यवहार करने लगा था जिसका। उस समय सेठ सकबीला जो दूसरा मन्त्री मसकत से नजवा के इमाम के साथ पत्र-व्यवहार चल रहा था नजवा का इमाम मन्त्री से प्रार्थना कर रहा था कि वह उनकी सहायता करे तो नजवा का इमाम मसकत पर चढ़ाई कर पोर्चगीजों को अरबसे निकालदें। इसलिये मन्त्री सेठ



अरब के मसकत नगर का दृश्य जो तीन ओर पर्वत श्रेणियों से
और एक ओर समुद्र से घिरा हुआ है। [पृष्ठ १०२]

सकबोला ने नजवा के इमाम से निश्चय किया कि वह १० रजब हिजरी १०५६ को मसकत पर आक्रमण करे। नजवा के इमाम को इस कार्य में मन्त्री सकबीला ने पूर्ण रूप से सहायता देने का वचन दिया। इधर मन्त्री सेठ सकबोला ने गवर्नर जनरल से कहा, "आप सेठ नरोत्तम की कन्या से विवाह करना चाहते हैं। इस कार्य में मैं आपकी सहायता करूंगा। मैंने सेठ नरोत्तम को भली प्रकार समझा लिया है और वह आपके साथ अपनी कन्या का विवाह करने को तैयार हो गया है। परन्तु इसके लिए उसको अवकाश दीजिये, जिससे वह सब प्रकार की तैयारी कर ले। क्योंकि हम हिन्दू लोग विवाह के प्रथम कन्या के लिये आभूषण आदि बनाते हैं उसके लिये समय की आवश्यकता है।" अन्त में १०रजब हिजरी १०५६ अंग्रेज़ी तारीख २५ दिसम्बर स० १६४० ई० विवाह के लिये निश्चित हुई। उधर नजवा का इमाम मसकत पर चढ़ाई करने की योजना करने लगा। मसकत के किले में पृथक् पृथक् दो बड़ी बड़ी टंकियां बनीं थीं जिनमें पानी भर लेने पर प्रत्येक टंकी का पानी एक वर्ष के लिए पीने और आवश्यक कार्यों के लिये पर्याप्त होता था। क्योंकि पीने का पानी मसकत में न था पानी लगभग २० मील दूर गल्ला नामक स्थान से ऊँटोंमें लद कर आ सकता था। २४ दिसम्बर स० १६४०ई० को सेठ सकबीला मन्त्री ने गवर्नर जनरल से कहा, "किले की टंकियों के पानी में कीड़े पड़ गये हैं। यदि इस पानी को सैनिक लोग तथा अन्य लोग पियेंगे तो रोगी हो जायेंगे और मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं।

इस कारण आज रात में इन दोनों टंकियों का पानी निकाल देना चाहिये और स्वच्छ पानी मंगाकर कल भर लेना चाहिए। गवर्नर जनरल ने इसकी स्वीकृति दे दी। बस! रात को सारा पानी दोनों किलों का निकाल कर बहा दिया गया जो नीचे के समुद्र में चला गया। दूसरे दिन निश्चित २५ तारीख़ दिसम्बर की थी। अभी गवर्नर जनरल सो ही रही थे कि नजवा का इमाम अपनी सेना लेकर पार्वतीय मार्ग से मसकत में आ धमका। किले के फाटक बन्द कर दिये गये तथा चहार दीवारी के चारों द्वार भी बन्द कर दिये गये। परन्तु वे बन्द कब तक रहते क्योंकि पानी एक बूंद न था और पानी इन्हीं फाटकों के मार्ग से आ सकता था। अब सारे सैनिक प्यास से तड़पने लगे! अन्त में फाटकों के द्वार खोल दिये गये। सैनिक प्यास से अर्द्धजीवित रह गये थे। इधर अरबियों की तलवारें काम करने लगीं और बात की बात में खेती की भाँति पोर्चगीज सैनिक ब्रध कर डाले गये। गवर्नर जनरल किले के पिछले मार्ग से उतरकर नौका में बैठ समुद्र के मार्ग से निकल भागा। इस प्रकार सारा मथुरा और मसकत सेठ सकबीला की सहायता से पुनः अरब लोगोंके हस्तगत हुआ। नजवाके इमाम ने सेठ सकबीला की इस कृपा पर प्रसन्न होकर जज़िया टैक्स दोनों मन्त्रियों का सदैव के लिये क्षमा कर दिया और यह भी आज्ञा पत्र लिख दिया कि उनकी किसी भी सन्तान को कभी भी जज़िया टैक्स न देना पड़ेगा। यही कारण है कि आज तक अरब में हिन्दुओं से किसी प्रकार का जज़िया टैक्स नहीं लिया जाता

यह वर्णन "तारीखे अमान" नामक पुस्तक में जो अरबी भाषा में हस्त लिखित है पृष्ठ १२० पर लिखा गया है। परन्तु "तोहफितिल अमान" नामक पुस्तक के लेखक "अब्दुल्ला इब्न हुमैत अस्सालमी" ने अपनी पुस्तक में इन सेठों का नाम नहीं लिखा केवल इतना लिख दिया है "एक बनिये की सहायता से मसकत और मथुरा पोर्चगीजों के हाथों से स्वतन्त्र किये गये" सम्भवतः उस इतिहास लेखक का पक्षपात है जो इस महत्व पूर्ण घटना का उल्लेख पूर्ण रूप से न कर केवल दो पंक्तियों द्वारा लिख कर समाप्त किया है। "हाजिर-उल-आ-लिमुल इस्लामी" (حاضر العالم الاسلامي) नामक इतिहास में जिसके लेखक 'अल अमीर ख़ीब दूर सलान' हैं जो इस समय मिश्रमें रहते हैं उन्होंने इस इतिहास में केवल इशारा मात्र ही लिखा है क्योंकि इनको विस्तृत इतिहास देने से हिन्दुओं का उपकार अरबों पर, उचित न जँचा होगा। इसलिये इन्होंने भी केवल इतना ही लिखा है "एक बनिये की मदद से मथुरा और मसकत आजाद हुये"।

वर्तमान सुल्तान और मसकत

जब नजवा के इमाम ने मसकत और मथुरा सेठ नरोत्तम और सेठ सकबीला की सहायता से अपने हस्तगत कर लिया तब उसकी कई पीढ़ियों के पीछे सन् १७४१ ई० व ११५४ हिजरी में 'सैफ़' मसकत का इमाम था और मथुरा में 'सुल्तान' इमाम था। यह दोनों सगे भाई थे। इन में परस्पर झगड़ा हो गया। जिस कारण मथुरा के इमाम सुल्तान ने अपने भाई इमाम सेफ को

मसकत से निकाल कर उस पर अधिकार कर लेने का विचार किया। परन्तु मसकत का इमाम बलशाली था, जिस 'सुल्तान' उसको आसानी से न निकाल सकता था। इस कार्य की पूर्ति के लिये मथुरा के इमाम सुल्तान ने शाह ईरान को इस विषय का पत्र लिखा और सहायता की याचना की। इसकी प्रार्थना को शाह ईरान ने सुनकर एक जनरल के आधीन विशाल सेना भेजी, जो सेना मसकत आई और उस सेना ने इमाम सेफ़ को परास्त कर मसकत अपने हस्तगत किया। पीछे मथुरा पर भी आक्रमण कर इमाम सुल्तान को परास्त कर मथुरा पर भी ईरानी सेना ने अधिकार कर लिया। जिस समय इमाम सुल्तान ने शाह ईरान को पत्र लिखा था, उसी समय उसने अपने ताल्लुक़ेदार अहमद को जो दोनों इमामोंकी ओरसे सहारमें बैठाया गया था, उसको पत्र लिखा, "तुम भी अपनी सेना लेकर तुरन्त मसकत पर चढ़ाई करो।" अहमद अत्यन्त चतुर और कूटनीति में पूर्ण निपुण था। उसने विचार किया कि ईरानी सेना मसकत पहुंच उसको अवश्य विजय करेगी इस कारण मैं अन्त में मसकत पहुँचने का प्रयत्न करूँ। बस! उसने ऐसा ही किया। जब ईरानी सेनाओं ने मथुरा तथा मसकत दोनों विजयकर लिये। तब अहमद अपनी सेना लेकर बरकाय नामक स्थान पर पहुँचा जो स्थान मसकत से १२ मील दूर है। अहमद ने अपना एक दूत भेज ईरानियों की विजय का सारा समाचार मसकत व मथुरा से मंगा जानकारी प्राप्त की। उस समय उसने अपनी सारी सेना बरकाय में छिपा दी और

स्वयं मसकत पहुँच ईरानी जनरल को अपना परिचय दिया तथा विश्वास दिलाने वाले वाक्य इस प्रकार कहे। "आपने बड़ा उत्तम कार्य किया जो दोनों इमामों को मथुरा और मसकत से भगा कर अपनी सत्ता स्थापित की। मैं जैसे उनका गुलाम था वैसे ही ईरानी सरकार का भी गुलाम हूँ। अब आप मुझे जैसी आज्ञा देंगे उसको मैं शिर माथे से पूर्ण करने को तत्पर हुँ।" अहमद की कूटनीति पूर्ण बातों का ईरानी जनरल ने विचार न कर उसकी मीठी मीठी बातों में आ फँसा और उसे आज्ञा दी "हम लोगों ने मथुरा और मसकत पालिया क्योंकि यह पहलेसे हमारे थे। अब तुम सहार में जाकर अपना काम सँभालो मैं तुमको तुम्हारे काम पर नियुक्त करता हूँ। वफ़ादारी के साथ अपना कर्त्तव्य पालन करना" अहमद ने इस आज्ञा को स्वीकार करते हुए ईरानी जनरल से इस प्रकार प्रार्थना की "आपने अपूर्व विजय प्राप्त की है। इस विजय पर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। इस कारण इस विजय के उपलक्ष में मैं आपका सारी सेना सहित भोजन द्वारा सत्कार करना चाहता हूँ और मैं आशा करता हूँ कि सेवक की इस प्रार्थना को आप अवश्य स्वीकार कर कृतार्थ करेंगे" जनरल ने उसकी प्रार्थना कुछ विचार न करते हुए स्वीकार कर ली। अहमद ने बरकाय नामक ग्राममें सबके भोजन का प्रबन्ध किया। जहाँ पर उसने अपनी सेना छिपा रखी थी। जब भोजन तैयार हो गया तब अहमद की प्रार्थना पर ईरानी जनरल अपनी सेना सहित निःशस्त्र भोजन करने अहमद के साथ 'बरकाय' गये और

भोजन करने के लिये सब के सब निःशस्त्र बैठ गये। अहमद प्रबन्ध करने लगा। जब अहमद ने देखा कि ईरानी सैनिक भोजन करने में मग्न हैं, बस ! उसी समय अपने निश्चित चिह्न द्वारा अपनी छिपाई हुई सेना को सूचना दी, जिससे सेना उसी समय भोजन करते हुए अचेत वीर ईरानियों पर टूट पड़ी। बेचारे ईरानी सैनिक अपने आप को सँभाल भी न सके कि अहमद की अरबी बद्दू सेना ने सबको एक ओर से बध कर धराशायी किया। जब अहमद ने देखा कि दोनों इमाम भाग गये या मारे गये क्योंकि उनका कुछ पता नहीं था। इधर ईरानी सेना को धोखा देकर बध करवा ही डाला था। तब उसने तुरन्त घोषित किया कि "मैं अब मसकत का सुल्तान हूँ।" इस प्रकार अहमद ने मसकत के सिंहासन को प्राप्त किया और सन् १७४१ ई० से जनवरी सन् १७५७ ई० तक राज किया। पश्चात् अहमद मृत्यु को प्राप्त हुआ।

सईद बिन अहमद

अहमद की मृत्यु के पीछे स० १७५७ ई० में उसका लड़का सईद बिन अहमद सिंहासनारूढ़ हुआ। सईद बिन अहमद एक निर्बल शासक था। इस कारण सईद बिन अहमद का बड़ा पुत्र हामिद बिन सईद ने स्वयं राजकार्य अपने हाथों सँभाला। पश्चात् १८ रज. हिजरी १२०६ में हामिद बिन सईद का देहान्त हो गया। इस बीच सईद बिन अहमद १८०० ई० तक निर्विघ्न राज करता रहा। इसी वर्ष सईद बिन अहमद के छोटे भाई सुल्तान बिन

अहमद ने अपने बड़े भाई सईद बिन अहमद को डाँट डपट कर सिंहासन से उतार दिया और स्वयं राज करने लगा। सुल्तान बिन अहमद बड़ा वीर और साहसी पुरुष था। इसके मन में राज्यकी सीमा बढ़ाने का भाव उत्पन्न हुआ। इस कारण इसने सेना लेकर ईरानी बन्दरों पर चढ़ाई कर दी और इसने गवादर (बिलोचिस्तान का बन्दर) चारबार, बन्दर क्रिशिम, उमुर्ज द्वीप, बन्दर अब्बास, बन्दर याश्क, लिङ्गा बन्दर, कुरूमशाह बन्दर, बेहरिन, तथा दबई आदि स्थानोंको विजय किया और इसी प्रकार विजय प्राप्त करते हुए वह बसरा की ओर जा रहा था कि बसरा के मार्ग में जहाज पर ही सुल्तान बिन अहमद का समुद्र पर ३० नवम्बर सन् १८०४ ई० को देहान्त हो गया। इस मृत्यु का समाचार पाकर सईद बिन अहमद फिर गद्दी पर बैठ गया। सुल्तान बिन अहमद के दो पुत्र सईद बिन सुल्तान और सालिम बिन सुल्तान थे जो अपने पिता के साथ थे। जब इन्होंने सुना कि सईद बिन अहमद फिर गद्दी पर बैठ गया। तब वे दोनों ईरान की ओर गये और ईरान के शाह फतेह अली शाह से मिलकर प्रार्थना की "आप हम लोगोंको ईरानी सेना द्वारा सहायता दीजिये। हम लोग अमान को विजय कर पुनः आप के आधीन कर देंगे।" शाह ईरान ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और उनके साथ तीन हज़ार ईरानी सेना देकर अमान की ओर प्रस्थान किया। यह दोनों ईरानी सेनाओं को साथ लेकर अमान पहुँचे। सईद बिन अहमद की सेना के साथ ईरानी सेनाओं का घमासान युद्ध हुआ।

इस युद्ध में सईद बिन अहमद की सेना की विजय हुई। ईरानी सेंनाएँ बुरी तरह पर परास्त हुईं। सईद बिन-सुल्तान और सालिम बिन-सुल्तान ईरान की ओर भाग गये। इस प्रकार सईद बिन अहमद ने ई० सन् १८२० तक शासन किया। इसी सन् में इसका देहान्त हो गया।

तत्पश्चात

सईद बिन अहमद की मृत्यु के पीछे इसका लड़का तुर्की-बिन-सईद गद्दी पर बैठा। इसके समय किसी विशेष घटना का उल्लेख नहीं मिला। इसकी मृत्यु के पीछे फैसल-बिन-तुर्की गद्दी पर बैठा। इसके पीछे तैमूर-बिन-फैसल गद्दी पर बैठा। इसने अपने जीवन काल में अपने लड़के सईद-बिन-तैमूर को गद्दी पर बिठलाया। जो इस समय तक मसकत का सुल्तान है।

फैसल बिन तुर्की

मसकत में गोविन्दराय की हवेली है। इस हवेलीमें काठियावाड़ जामनगर के एक ब्राह्मण मुखिया हैं। इन्होंने मुझे बतलाया था "फैसल बिन तुर्की के समय एक अरब अदन से सूखे मार्ग से मसकत आ रहा था। मसकत के पास ही फैसल बिन तुर्की को मार्ग में वह अरब ऊँट में सवार आता हुआ मिल गया। मसकत के अरबी और अदन के अरबी लोगों की पोशाक में पृथकता है, इस कारण फैसल बिन तुर्की ने उसको पहचान कर पूँछा "तुम किधर से आते हो?" उसने उत्तर दिया "मैं अदन से आ रहा हूँ" इस पर सुल्तान ने पूछा "इस सूखे मार्ग में तुम भटक नहीं

गये ?" उसने कहा "मार्ग सीधा है और मैं कई बार इस मार्ग से आया और वापिस गया हूँ। इस कारण मैं भूल नहीं सकता। सुल्तान ने कहा "क्या मुझे भी यह मार्ग दिखला सकते हो" वह फैसल-बिन-तुर्की को पहचानता था कि मसकत का सुल्तान है। इस कारण उसने कहा "मैं अवश्य आपको यह मार्ग दिखला सकता हूँ" इतना कह कर फैसल बिन तुर्की की अनुमति पा वह अपने ऊँट को लौटा कर अदन की ओर चल पड़ा। अन्त में कई दिन की यात्रा करके यह दोनों अदन पहुँचे। पीछे मसकत की ओर लौटे। मार्ग में फैसल बिन तुर्की ने उस अरबी से कहा "मुझे मसकत पहुंचा दो मैं मसकत पहुँच कर तुम्हें इनाम दूंगा" वह अरबी इनाम के लालच में मसकत तक आ गया। मसकत में आने पर फैसल बिन तुर्की ने उस अरबी को इनाम का लालच देकर उसका सर तलवार द्वारा तन से पृथक कर दिया। फैसल-बिन-तुर्की को यह शङ्का हो गई थी कि कहीं यह अरब किसी दूसरी शक्तिशाली समूह को कभी अपने साथ न ले आवे और वह समूह हमारा राज छीन ले। इस कारण न यह ही जीवित रहेगा और न कोई मार्ग देख सकेगा।" मुखिया जी ने यह भी कहा "मुझे मेरे पिता जी ने यह कथा बतलाई थी। क्योंकि वे उस समय इस मन्दिरमें मुखिया थे।"

मसकत पर बनियों का ऋण

१६-५-३६ को सेठ अली-बिन-ईसा दुकानदार सूर (सुरपुर) ने मुझे बतलाया (क्योंकि मैं इन दिनों सूर में ही था) "लगभग

१३३८ हिजरी में मसकत के ब्रिटिश कौंसिल के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि किसी नीति से मसकत के सुल्तान पर अपना प्रभुत्व जमा उससे कुछ ऐसी लिखा पढ़ी करा लेनी चाहिये कि जिससे भविष्य में मसकत अपने हस्त गत हो सके। इस प्रकार विचार करते हुये ब्रिटिश कौंसिल ने मसकत तथा मथुरा के बनियों को बुलाया (यह बनिये भारत वर्ष के निवासी है जो यहाँ व्यापार करते हैं) और कहा "आप लोगों का सुल्तान से कितना लेना है ? खाता दिखाओ !" जिन जिन को लेना था उन उन लोगों ने खाता दिखाया। वह रुपया कई लाख निकला। ब्रिटिश कौंसिल ने कहा "इन सब की प्रति लिपि मुझे करके दे दो। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि इस समय तुम लोगों का रुपया सुल्तान से वसूल करा दूं। यदि उसके पास रुपया न हो तो उससे नियमपूर्वक तुम्हारा पावना लेखवद्ध करालूँ" बनियों को यह सब कुछ देना पड़ा। परन्तु उसी रातको सारे बनिये एकत्रित होकर सुल्तान के पास गये और ब्रिटिश कौंसिल से जितनी बातें हुई थीं सब सुल्तान से कह सुनाई, उस समय सुल्तान बड़ा घबराया और चिन्तित हुआ क्योंकि उसके पास उतना रुपया उपस्थित न था कि जितना चुकती करना चाहिये था। उस समय बनियों ने सुल्तान को धीरज बंधा कर कहा "आप चिन्तित न हों ! हम लोगों के पास उतना रुपया उपस्थित है। जितना आप हमको चुकाना चाहते हैं। हम आपको उतना रुपया देते हैं। आप इस को लेकर कौंसिल के सामने हमें चुकती कर दें। हमारा आपका



जहाज़ पर से मसकत नगर का दृश्य। (पृष्ठ ११२)

लेन-देन आगे पीछे होता रहेगा।" सुल्तान उस समय बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा "आप लोग हिन्दू हैं। परन्तु आप लोगों ने इस समय हमारे राज की पूरी रक्षा की है। बनियों से रुपया लेकर सुल्तान ने कौंसिल के सामने कौंसिल के कहने पर वैसा ही किया जैसा रात को बनियों से निश्चय हुआ था। इस समय सुल्तान तैमूर-बिन-फैसल था। इस प्रकार बनियों ने मसकत राज को अंग्रेजों के हाथ से जाने से बचाया।

मसकत

मैं यह बतला चुका हूँ कि मैं गवादर से मसकत कैसे आया मसकत में अब वह उज्ज्वलता (रौनक) नहीं है जो आज से २० वर्ष पूर्व थी। पुरानी बाजारें उजड़ गई हैं। अब व्यापारी भी कम हो गये हैं। एक छोटा सा बाजार है। जिसमें हिन्दू, अरब, अजम और खोजों की दुकानें हैं। बाजार की गली की चौड़ाई ४ फीट होगी और लम्बाई अनुमान से २०० फीट होगी। इस बाजार के ऊपर दोनों ओर के मकानों के ऊपरी भाग को मिलाकर खजूर की डालों से तोप दिया गया है। जिससे तेज धूप बाजार में नहीं आ सकती। मसकतके दो ओर पोर्चगीजों की बनाई हुई सुदृढ़ दीवार खड़ी है और दो द्वार हैं। एक ओर समुद्र लहरें मार रहा है और एक ओर पर्वत श्रेणी है। प्रत्येक द्वार पर रात-दिन अब भी अरबियोंका पहरा रहता है। हिन्दुओंके मसकतके भीतर दो मन्दिर हैं। एक श्री नाथ जी का मन्दिर है जिसका प्रबन्ध महाजन सभा मसकत की ओर से है। महाजन सभा के प्रधान सेठ जय राम

माधव जी हैं। श्रीनाथ जी के कई मकान और गोदाम हैं जिनके भाड़े से श्रीनाथ जी के भोग का प्रबन्ध होता है और एक ब्राह्मण मुखिया है, जो श्री नाथ जी की सेवा करता है। दूसरा मन्दिर गोविन्दराय जी का है। यह मन्दिर महाजन सभा का नहीं है किन्तु जो इस समय उस मन्दिर में हैं उनके पिता ने बनवाया था। इस कारण वह वर्तमान मुखिया जी की सम्पत्ति है। इस मन्दिर के मुखिया जी अत्यन्त चतुर व्यक्ति हैं। जब मैं २-५-३६ को मसकत पहुँचा। प्रातः काल होने पर मुझे जेठालाल मुनीम सेठ धन जी मुरार जी इसी मन्दिर में ले गये। उस समय मुखिया जी ने केशर पड़ा दही का चरणामृत जो मन्दिर के आँगन में रखा था। दर्शन करने के पश्चात् जेठालाल को वही चरणामृत दिया। उसने पी लिया। फिर मेरी ओर हाथ बढ़ाया। परन्तु मैंने न लिया क्योंकि मेरा विचार था कि यह आंगन में खुला रखा है। चारों ओर से मिट्टी आदि पड़ रही थी इसी कारण मैंने न लिया। बस! मुखिया जी को मेरे ऊपर शङ्का हो गई। कि मैं किस विचार का आदमी हूँ।

सेठ धन जी मुरार जी के मैनेजर महता नाथालाल ने मुक्खी सेठ जयराम माधवजी से मिलकर मेरे सन्ध्या समय के भाषण का विज्ञापन निकलवाया जिसमें विषय था "गीता की कथा"। सन्ध्या समय भाषण होने के आधा घण्टा पूर्व मेरे पास जेठालाल मुनीम धनजी मुरारजी का आया और कहने लगा "मुखियाजी पूछते हैं कि आप सनातन धर्मी हैं या आर्य समाजी? क्योंकि मन्दिर

में आप मूर्ति पूजा का खण्डन करेंगे तो सेठ लोग अप्रसन्न होंगे। कारण कि यहाँ के सेठों की मूर्ति पर पूरी आस्था है" मैंने कहा "जेठालाल ! जिस विषय पर मैंने बोलने का विज्ञापन निकलवाया है। वह गीता है। इससे मूर्ति से क्या सम्बन्ध ?" तात्पर्य यह है कि ज्यों त्यों करके मन्दिर में मेरा भाषण हुआ। सारे सेठिये सम्मलित थे उन्होंने नित्य कथा सुनने का निश्चय कर लिया था। मसकत से बाहिर की ओर पर्वतके नीचे हिन्दुओं ने चार दीवारी बना कर उस के भीतर एक शिवालय बना रखा है। कुछ फूल पत्तियों के पौदे लगे हैं। दो कुँए बने हैं। इस स्थान का नाम मोती सर है। प्रातः काल नित्य प्रति सारे बनिये इस स्थान पर आते, अपने हाथों पानी निकाल कर कपड़े धोते और स्नान करते हैं।

पानी का प्रबन्ध

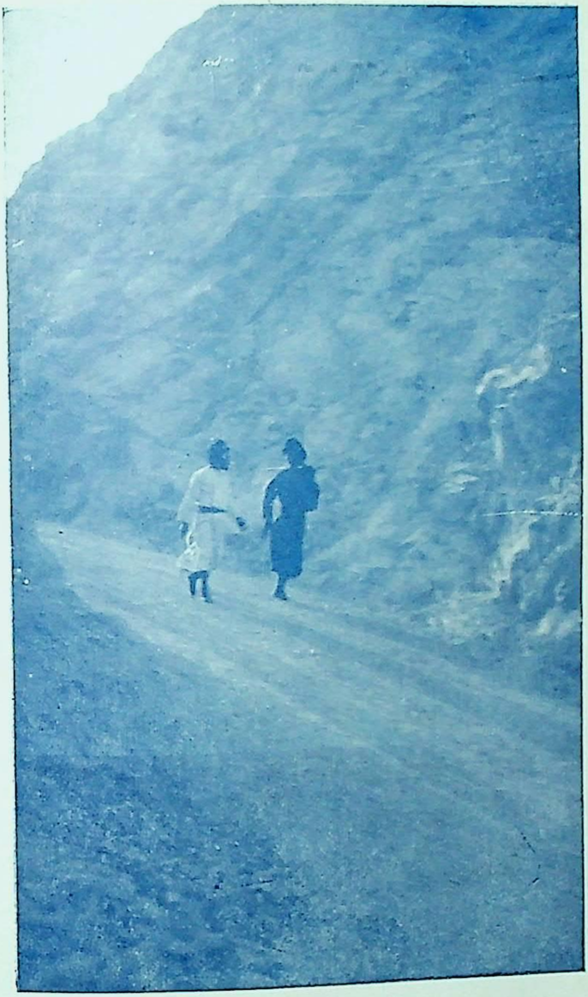
ताम्बे के घड़ों को गोनी (बोरा) में भर कर उसका मुँह हिन्दू बनिए अपने घरों पर ही बांध कर रख देते हैं। प्रातःकाल अरब व बिलोचमुसल्मान आते हैं और उस गोनी को कन्धेपर रख कर मोती सर ले जाते हैं। उस समय सारे बनिए मोती सर में स्नान करते हैं। वह मुसल्मान उस गोनी को कुँए की जगत (फर्श) पर रख देता है। उपस्थित बनिए अपने हाथ से पानी निकाल कर गोनी का मुँह खोल कर ताम्बे के घड़े को भर कर पुनः उसका मुँह उसी प्रकार बाँधकर उस मुसल्मान के कन्धे पर रख देते हैं। यह उसको लेकर उन बनियोंके घरपर रख आता है।

उस पानी को वे लोग पीते और उसी पानी से भोजन बनाते हैं। मसकतमें गर्मी बहुत पड़ती है। लोग ऐसा कहते हैं कि इस कारण जब कभी वह पानी की गोनी ले जानेवाला मार्गमें प्यासा होता है, तब गोनी को नीचे रख बरतन का मुँह खोल कर अपना मुँह लगा कर पानी पी लेता है। क्योंकि इस प्रकार पानी पी लेने को वे लोग बुरा नहीं समझते। कुछ भी हो, मसकत तथा मथुरा के बनिए अपने धार्मिक भावों में इतने पक्के हैं कि मुसल्मान से पानी छू जाने से उनका धर्म भ्रष्ट नहीं हो सकता। क्योंकि वे सच्चे हिन्दू हैं और उन में हिन्दुत्व का पूर्ण भाव है।

मसकत से बाहर सुल्तान एक अच्छा स्कूल का भवन निमार्ण करा रहे हैं। क्योंकि यहाँ शिक्षा क नितान्त अभाव है।

मथुरा

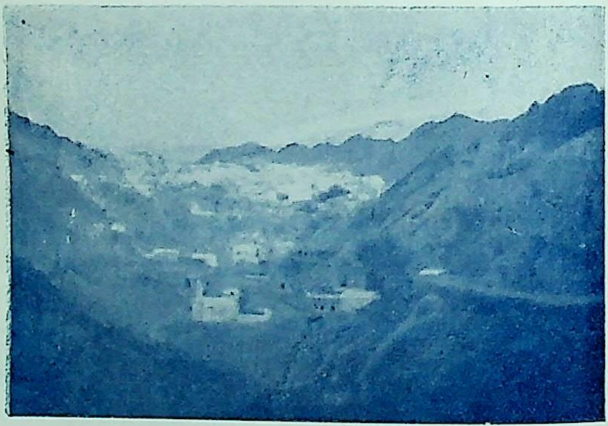
मसकत से मथुरा लगभग ६ मील दूर है। दोनों के बीच एक पर्वत श्रेणी है जिसे काट कर मोटर का मार्ग बनाया गया है। दो आने में एक सवारी मसकत से मथुरा और मथुरा से मसकत आ जा सकती है। मथुरा के एक ओर समुद्र है दो ओर पर्वत श्रेणी है और चौथी ओर मैदान है। इसी ओर पोर्चगीजो ने बड़ी दीवार सुदृढ़ खड़ी कर रखी है और एक पार्क है। पर्वत पर एक सुदृढ़ गढ पोर्चगीजो ने निमार्ण करा रखा है जिसके अन्दर आज कल बन्दी रखे जाते हैं। यहाँ पर भारतवर्ष के खोजे मुसलमान और कच्छ के हिन्दू व्यापार करते हैं। इस स्थान में भी हिन्दुओं ने एक खुले स्थान पर चहार दीवारी



अरब के मसकत और मथुरा के बीच का पार्वतीय मार्ग जिस पर
दो अरबी पैदल जा रहे हैं। [पृष्ठ ११६]



मथुरा के उत्साही आर्य नवयुवक श्री धीरजलाल जी जो मेरे भाषणों को सुनकर आर्य समाजी बने।



अरब के मथुरा नगर का दृश्य तथा पोर्चुगीज़ों द्वारा निर्मित पर्वत पर समुद्र तट पर गढ़ का चित्र। [पृष्ठ १०४]

खींच कर उसके भीतर कुंआ बना रखा है। नित्य प्रातः काल सारे बनिए इस कुँए पर और हैं आते कपड़ों में साबुन लगाते और स्नान करते हैं। यहाँ के हिन्दुओं ने यहां पर कोई मन्दिर नहीं बनाया किन्तु मसकत के मन्दिरों में जाकर दर्शनादि कर आते हैं। जिस स्थान पर यह लोग स्नान करते हैं। यहां पर एक गौशाला भी बना रखी है। इसी प्रकार मसकत में भी मोतीसर के पास हिन्दुओं ने गौशाला बना रखी है। इसी मथुरा को चौधरी धनराज सिंह जी बी० ए० डिपुटी कलेक्टर जौनपुर ने मनोरमा मासिक पत्रिका में योगीराज कृष्ण का जन्म स्थान सिद्ध किया है। मथुरा में इस समय मछलियां करोड़ों मन मार कर और सुखा सुखा कर विदेशों में भेजी जाती हैं। इन मछलियों के कारण मथुरा में बहुत अधिक दुर्गन्ध रहती है। मोटर से जाते ही मथुरा के भीतर प्रवेश होते ही बायें हाथ सूखी मछलियों का गोदाम (बखार) है जिसमें छोटी छोटी और बड़ी बड़ी मछलियां सूप से फटक फटक कर गोनियों में भरी जाती हैं। एक ओर इनको पीस कर इनका आटा भी बनाया जाता है। इस कारण घुसते ही मोटरके अन्दर भारी दुर्गन्ध आने लगती है। इसी प्रकार की दुर्गन्ध सारे नगर में रहती है।

नरगोल

मथुरा से लगभंग २० मील की दूरी पर समुद्रदेव के गर्भ में पर्वत का एक टुकड़ा है जिसका नाम नरगोल है। सेठ कृष्ण भानजी के मैनेजर वेवजी भाई मुझे और मेरे साथ मथुरा के

लगभग सब ही बनियों को साथ लेकर अपने मोटर लाँच में बिठला कर नरगोल ले गये। हमारा मोटर लाँच इस पर्वत के चारों ओर थोड़ी देर तक चक्कर काटता हुआ एक ओर जा लगा। मैं तुरन्त मोटर से कूद कर उस पर्वत की धरातल पर जा खड़ा हुआ। मुझे उतरा हुआ देखकर पीछे सारे बनिये भी उतर आये और हम लोग उस पर घूमने लगे। इसमें एक गुफ़ा बनी है जिसकी धरातल पर अनेकानेक चित्रकारी बनी है। यह नहीं कहा जा सकता कि यह चित्रकारी किसी समय बनाई गई थी। अथवा वर्षा-ऋतु में वर्षा के पानी ने ऊपर से टपक टपक कर इस प्रकार के विभिन्न चित्र बना दिये हैं। बात कुछ भी हो, स्थान अवश्य अद्भुत है। हमारे साथी सेठ रतन सी (उपनाम बङ्गाली) और कई सज्जन इस पर्वत के ऊपर चोटी तक पहुँचे। इस समय यह पर्वत चारों ओर से समुद्रदेव का ग्रास बन रहा है अर्थात् चारों ओर से बराबर कट रहा है। इस पर्वत की अवस्था देखने से ज्ञात होता है कि सम्भव है यह पहिले अधिक बड़ा पर्वत रहा हो। कुछ लोगों का विचार है कि यह वही स्थान है कि जहाँ पर आज से पांच सहस्र वर्ष पूर्व कन्स की आज्ञा से कन्स की भगनी देवकी और वासुदेव बन्दी बना कर रखे गये थे। इस स्थान को खोजा लोग नरकोटा कहते हैं। समुद्र जिस प्रकार इसको काट रहा है उससे अनुमान होता है कि सम्भवतः एक सहस्र वर्ष पीछे यह पर्वत समुद्र के गर्भ में समा जायेगा। इस प्रकार हम लोग नरगोल या नरकोटा को देखकर वापिस मथुरा आये।

सूर या सुरपुर

ता० ११–५–३६ की रात्रि की महता नाथा लाल और सेठ रतन सी खीम जी राम दास ने कहा "कल लाँच सूर जा रहा है यदि आप जाना चाहें तो इसे देख आइये।" मैं तैयार हो गया १२–५–३६ को मैं लाँच में बैठकर सूर की ओर चला। रात को १० बजे मोटर लाँच कुरियात नगर के पास पहुँचा वहाँ तूफान आ गया जिस कारण मोटर लाँच को चार घण्टा रुकना पड़ा। १३-५-३६ को हमारा मोटर लांच सूर या सुरपुर के निकट जा लगा, सूर या सुरपुर मथुरा से ६० मील दूर है। यहाँ पर मैं सेठ धन जी मुरार जी की फर्म में ठहरा। क्योंकि महता नाथा लाल ने मसकत से चलते समय कई बार प्रार्थना की थी कि आप वहां भी हमारी फर्म में ठहरें और पत्र भी इस विषय का वहाँ के मैनेजर जेठालाल को लिखा था।

गधे की सवारी

१७-५-३६ को जेठू सेठ ने कहा "पंडित जी मैं आपको विलायत दिखाना चाहता हूँ। परन्तु इसके लिये आपको गधे पर चढ़ कर चलना होगा। वह गधा आपको दो तीन घण्टे में विलायत पहुँचा देगा। क्या आप गधे पर चढ़ना पसन्द करेंगे ?" मैं यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गया कि यह मुझे विलायत भी दिखाना चाहते हैं और फिर गधे पर! यह कैसे हो सकेगा? ऐसा विचार कर मैंने जेठू सेठ से कहा "गधा की सवारी और विलायत की सैर ? क्या आपके पास कोई ऐसा गधा है जो

हवाई जहाजसे भी अधिक वेग से भागता है ? सेठ जी इसका भेद तो बताइये ," सेठ जेठू ने कहा "वह देखिये ! सामने बड़ा पर्वत दिखाई पड़ता है। इस पर्वत के उस पार एक नगर है उसका नाम विलायत है। वहाँ सुल्तान मसकत की ओर से एक गवर्नर रहता है। इस पर्वत को पार करने के लिये गधे पर ही चढ़ कर हम लोग जाया करते हैं। जो दो तीन घण्टे में विलायत पहुँचा देता है। यदि आप चलें तो मैं कल दो गधे मंगा लूं। वहाँ चल कर आप से वहाँ के गवर्नर से भेंट करा लाऊँगा।" मैंने स्वीकृति दे दी। १८-५-३६ को प्रातः काल उठ कर मैं नित्य कर्म से निवृत होकर जेठू सेठ के साथ बाहिर आया। जहाँ पर दो गधे खड़े थे, जिनको दो अरबी पकड़े थे। एक पर जेठू जी तुरन्त चढ़ गये। दूसरा मेरे हिस्से में आया। भैं देखता हूँ कि पैर रखने को रकाब नहीं है और उस पर लगाम भी न थी। सेठ जेठू भी ऐसे ही गधे पर बैठा था, मैं भी किसी प्रकार यत्न कर उस पर बैठ गया और टिक, टिक, टिक कर गधे को लेकर चल दिया। जेठू सेठ तो मुझसे लगभग आधा मील आगे होगये। क्योंकि वह गधेको दौड़ा दौड़ा कर ले जा रहे थे। परन्तु मुझे भय लगता था कि कहीं यह गधा मुझे गिरा न दे। इस कारण मैं धीरे-धीरे चला रहा था। पर्वत की चढ़ाई आई। मुझे साथ के अरबी नौकर ने कहा "आप गर्दन की ओर बोझ रखियेगा।" मैं उसके आदेशानुसार करता रहा। इस प्रकार राम राम कहते हुए मैं भी पर्वत की शिखर पर पहुँचा। जेठू सेठ मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

अब दूसरा भाग नीचे उतरने का आया; तब हम लोग गधोंसे उतर पड़े और पैदल दौड़ते हुए पर्वतसे सीधे नीचे उतर गये। नीचे आ कर फिर गधों की सवारी की, और टिक टिक करते हुये हम लोग उस गढ़ के द्वार पर पहुँचे, जिसके भीतर गवर्नर साहब निवास करते हैं। यह गढ़ भी पोर्चुगीजों ने अपने समय बनाया था। विलायत के चारों ओर सुदृढ़ चहार दीवारी भी पोर्चगीजों ने बनवाई थी। फाटक पर २० या २५ अरबी सिपाही बैठे थे। सेठजी ने एक सिपाही के द्वारा गवर्नर साहब को अपने आने का समाचार दिया। गवर्नर साहब ने हम लोगों को किले के ऊपर बुलाया। कुछ देर हमारी और गर्वनर साहब की बात चीत होती रही।

गवर्नर का दरबार

इसके पीछे नीचे गवर्नर साहब का दरबार लगाया गया। गवर्नर सा० के साथ साथ मैं भी उनके दरबार में गया। जेठू सेठ भी साथ ही थे। दरबार में गवर्नर साहब के पहुँचते ही सब लोग खड़े हो गये। पश्चात् दो पंक्तियों में बैठ गये बीच का स्थान शून्य रहा। प्रत्येक व्यक्ति की कमर में कारतूस बँधे थे और कटि पर तलवार लटक रही थी तथा जङ्घा पर बन्दूकें रखकर सब के सब सिंह की बैठक बैठे थे। गवर्नर सा० तथा काजी जी भी सब के सब सिंह की बैठक बैठे थे। इस दरबार को देख कर मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मानों मैं किसी क्षत्री राजा के दरबार में बैठा हूँ। सब को सिंह बैठक बैठे हुये देख मैं भी उसी प्रकार

बैठ गया। परन्तु मैं अधिक समय तक नहीं बैठ सका, क्योंकि मुझे इस प्रकार बैठने का अभ्यास न था। इस कारण मुझे अपना आसन परिवर्तन करना पड़ा। इस समय गवर्नर के सामने अभियोग उपस्थित किये गये।

१—टिल्लू सिन्धी ने रशीद्-बिन-मोहम्मद-बिन-बन्दर पर दावा किया "इस व्यक्ति ने मुझसे १६३ रियाल उधार लिये थे। सो अब तक नहीं दिये। मेरे रुपये दिलवा दिये जावें।" गवर्नर ने रशीद से पूछा। उसने उत्तर दिया, "यूसुफ़ बिल्लोच को मैंने १६३ रियाल की मछलियां दी हैं। वह मेरा रुपया नहीं देता। इस कारण मैं इसे कहां से दूँ।" उस समय गवर्नर ने यूसुफ बिल्लोच से पूछा, "क्या तुमने इससे १६३ रियाल की मछलियाँ ली हैं?" यूसुफ बिल्लोच ने कहा, "अवश्य ली हैं। लेते समय मैंने देखा न था। पीछे देखने से पता चला कि मछलियाँ सारी खराब थीं। इस कारण मैं मूल्य कहाँ से दूँ।" इस पर गवर्नर ने पूछा, "तुमने मोल लिया था?" यूसुफ बोला, "जी हाँ।" इस पर गवर्नर ने आज्ञा सुनाई, "तुमने मोल ली थीं, इस कारण तुमको दाम तो देना ही होगा। चूंकि तुम्हारा माल बिगड़ा था, इस कारण तुम्हारे साथ कुछ रियायत कर दी जायेगी।"

२—अरब ने गवर्नर से कहा, "टिल्लू सिन्धी के पास मेरे ६४ रियाल निकलते हैं। आप दिला दीजिये!" इस पर गवर्नर ने टिल्लू से पूछा, "तुम्हारे पास इसके ६४ रियाल हैं?" टिल्लू ने कहा, "मेरे पास इसका कुछ नहीं है।" इस पर काजी ने टिल्लू

से कसम उठवाई, टिल्लू ने कसम उठा ली, बस दावा खारिज हो गया।

३—फिर टिल्लू ने गवर्नर से कहा, "मेरे २४ रियाल इस अरब की ओर निकलते हैं। मेरा दिला दीजिये।" इस पर गवर्नर ने उस अरब से पूछा। उसने कहा, "मेरी ओर एक पैसा नहीं निकलता," इस पर काजी ने उस अरब से कसम उठवाई उसने कसम उठा ली। बस! दावा खारिज हो गया। इसके पीछे गवर्नर दरबार से उठ गया। अब काजी साहब ने जेठू सेठ से मेरा परिचय पूछा, जेठू सेठ ने कहा, "यह हमारे मुल्ला हैं। भारत वर्ष से अभी आये हैं। इन्होंने बहुत से देशों का भ्रमण किया है। काजी साहब ने जेठू सेठ से कहा, "मैं इनसे कुछ प्रश्न करना चाहता हुँ। क्या यह मुझे उसका उत्तर देंगे?" जेठू सेठ ने मुझ से पूछ कर कहा, "अवश्य हमारे मुल्ला जी आपके प्रश्न का उत्तर बड़े प्रेम से देंगे।" पश्चात् काजी से निम्नलिखित मेरी बातचीत हुई। बीच में दोनों ओर से अनुवादक सेठ जी हो गये।

काज़ी—जैसे हमारी कुरान शरीफ़ है। वैसे आपकी आसमानी किताब का क्या नाम है?

मैं—हमारी आसमानी किताब का नाम वेद मुकद्दस है।

काजी—आप इष्टदेव किसको मानते हो?

मैं—एक खुदा को।

काजी—जैसे हमारा रसूल है। वैसे आपका पैगम्बर कौन है?

मैं—पैगम्बर की आवश्यकता उस समय पड़ती है जब कि खुदा हमको न जानता हो। हमारा खुदा हमको जानता है। हमारे प्रत्येक कर्मों से परिचित है। चूंकि पैगम्बर सबके पापों की सूची खुदा के सामने रखने के लिये होता है, और उसकी हमें आवश्यकता नहीं, इस कारण हम लोग पैगम्बर किसी को नहीं मानते।

काजी—सारे मज़हब वाले एक न एक पैगम्बर को मानते हैं। क्या आप किसी पैगम्बर पर विश्वास नहीं करते ?

मैं—हमारा खुदा सब कुछ जानता है। इस कारण हमको पैगम्बर की आवश्यकता ही नहीं।

काजी—आप लोग मुर्दे क्यों जलाते हैं ?

मैं—इस शरीर से जब जीवात्मा निकल जाता है तब यह शरीर अधिक देरी तक रखने से सड़ता है, जिससे संसार की वायु दूषित होती है। इस कारण हम लोग मुर्दे को जला देते हैं, और जलाते समय घी तथा सुगन्ध युक्त पदार्थ डालते हैं जिससे वह शरीर जल जावे और सुगन्ध युक्त पदार्थों के डालने से वायु दूषित न हो और संसार में किसी प्रकार के रोग न फैलें।

काजी—जब आप मुर्दे जला देते हैं तब उनसे खुदा, क़यामत के दिन, हिसाब कैसे लेगा ? क्योंकि जिस्म तो जल चुका है।

मैं—जिस जिस्म को भूमि के भीतर दाब दिया जाता है वह जिस्म भूमि के अन्दर सड़ कर मिट्टी के रूप में हो जाता है। वह जिस्म जिस्म ही नहीं रहता। किन्तु कठिनाई से हड्डियां रह जाती हैं। इसलिये कयामत के दिन आपका दफनाया जिस्म ही न

रहेगा, फिर हिसाब कौन देगा ? हमारे सिद्धान्त के अनुसार जिस समय जीवात्मा इस शरीर को त्यागता है, परमात्मा उसी समय उसके कर्मों का निर्णय कर उसके कर्म के अनुसार उसे वैसी योनी में जन्म देता है। क्योंकि हमारा परमात्मा तत्काल ही न्याय कर देता है। इसलिये हमको क़यामत की प्रतीक्षा करने की कोई आवश्यकता नही। मैं आपसे पूछता हूँ कि इस समय आपने तीन अभियोगों का न्याय तत्काल ही कर दिया। जिस कारण आपको सब लोग अच्छा कार्य कर्ता समझते हैं। यदि आप आज के तीनों अभियोगों का न्याय २५ वर्ष पीछे करते तो यह सब ही लोग आपको आलसी और काम चोर कहना प्रारम्भ कर देते। ऐसे ही यदि हमारा ईश्वर जीवों के कर्मों का न्याय प्रलय के समय करे तो वह भी आलसी और काम चोर कहा जा सकता है। परन्तु हमारा ईश्वर आलसी और काम चोर नहीं है। इस कारण परमात्मा जीवात्मा के शरीर त्याग के साथ ही तुरन्त न्यायकर, कर्म के अनुसार दण्ड देता है।

काजी—आप लोग गऊ को क्यों इतना मानते हो ?

मैं—गऊ बड़ा लाभकारी जीव है। जिसका दूध, घी, मक्खन मलाई और रबड़ीं मनुष्य खाकर पुष्ट और बलकारक बन सकता है। बैल हमारे देश में खेती के कार्य में पूर्ण सहायक है। जिनके द्वारा हमें अन्नादि तथा अनेक पदार्थ प्राप्त होते हैं। फिर ऐसे लाभकारी जीव की रक्षा हम क्यों न करें ? मेरी यह बात समाप्त हो ही रही थी कि गवनर सा०का एक आदमी आया और मुझे तथा

सेठजी को गवर्नर सा०के पास कोठे के ऊपर ले गया। ऊपर जाने पर जेटू सेठ का अभियोग उपस्थित हुआ। शेख मोहम्मद-समास क्लात नगर वाले ने सेठ से एक सहस्र का माल खरीदा था और माल का रुपया न देता था। गवर्नर ने फैसला किया कि शेखजी तुरन्त उस रुपये को दें। इसलिए गवर्नर ने उसके देने का उचित प्रबन्ध उसी समय अपने सामने कर दिया। कार्य समाप्त कर गवर्नर साहब मुझसे बातचीत करने लगे, तथा हम लोगों का फलों द्वारा स्वागत किया। कुछ समय तक हमारी और गवर्नर साहब की बात चीत होती रही। पश्चात् हम लोगों ने गवर्नर साहब से विदाई मांगी। गवर्नर साहब उठकर नीचे के बड़े फाटक तक हम लोगों को भेजने आये। हम लोग उसी प्रकार अपने अपने गधों पर सवार होकर शूर या सुरपुर वापिस आ गये।

साले खजूरी का मकान

शूर या सुरपुर में साले खजूरी नामक एक अरब सज्जन का घर है। यह सज्जन बम्बई में एक वर्ष में दलाली आठ मास किया करते हैं और चार मास यह अपने जन्म स्थान सूर में रहते हैं। जिस दिन मैं मोटर लांच से मथुरा से शूर आया था। उसी दिन उसी मोटर से यह मथुरा से शूर जा रहे थे। १६-५-३६ को मैं सेठ अली-बिन ईसा के पास बैठा अरब का इतिहास लिख रहा था। उसी दिन साले खजूरी वहाँ आये और उन्होंने सेठ अली-बिन-ईसा से सम्मति लेकर मुझसे कहा "आज रातको मेरे मकान पर गाना और आपका उपदेश होगा। यदि आप स्वीकार करें तो

आपकी कृपा होगी" मैंने स्वीकार कर लिया। रात के ठीक ६ बजे मैं मि० साले खजूरी के मकान पर सेठ अली-बिन-ईसा के प्रबन्ध से पहुँच गया। यह मकान पक्का और सुन्दर बना है। उस मकान में २५ या ३० अरब लोग मेरा भाषण सुनने के लिये बैठे थे। ये लोग मेरे उपदेश को समझ सकते थे। मैंने अपना भाषण प्रारम्भ किया। मैंने अपने भाषण में ईश्वर एक ही है सिद्ध किया। इसके पीछे लोगों ने निम्नलिखित प्रश्न किये।

अली-बिन-ईसा—मसलये तनासुख पर आपका विश्वास है?

मैं—अवश्य।

अली—आप इसको सिद्ध कर सकते हैं?

मैं—एक माता के गर्भ से दो बच्चे जन्म लेते हैं। क्या आप इन बच्चों को सर्वांश निर्दोष (मासूम) मानते हैं?

अली—बच्चे सदा मासूम ही हैं यानी निर्दोष।

मैं—एक माता के गर्भ से दो बच्चों में से एक अन्धा और एक बच्चा आँख वाला जन्म लेता है। बच्चे दोनों निर्दोष हैं फिर एक अन्धा क्यों जन्मा? क्या खुदा ने उस अन्धे बच्चे को जन्म देने में भूल की? और दो आँख वाले के साथ पक्षपात किया? आप इसका सन्तोषजनक उत्तर दे सकेंगे?

अली—माता की किसी भूल का कारण हो सकता है।

मैं—माता की भूल से बच्चे को उस भूल का दण्ड भोगना पड़े। तब भी परमात्मा के प्रबन्ध में न्यूनता प्रतीत होती है,

क्योंकि निर्दोष को माता की भूल का फल भोगना क्यों पड़े? क्या आप इसमें परमात्मा का कुप्रबन्ध नहीं समझ रहे!

अली—पण्डित साहब! हम लोग परमात्मा के प्रबन्ध में दख़ल देना कुफ़र समझते हैं। उसने क्यों अन्धा पैदा किया। इस प्रश्न का उत्तर वही दे सकता हैं। हम इस पर ग़ौर भी नहीं कर सकते।

मैं—देखिये! खुदा की कुदरत को बुद्धिपूर्वक सोचना कुफ़र नहीं है। उसने अन्धा क्यों पैदा किया? इसका उत्तर वह नहीं देगा। किन्तु इसका उत्तर हमें और आपको ही सोच कर निकालना पड़ेगा और वह इस प्रकार कि एक माता के दो बच्चों में से एक अन्धा इसलिए पैदा होता है कि उसने पहिले जन्ममें कोई ऐसे काम किये होंगे कि जिनके फल भोगने के लिए उसको इस जन्म में अन्धा जन्मना पड़ा। इसलिए बच्चा निर्दोष नहीं है। उसके पिछले किए हुए कर्मों का पाप इस समय साथ हैं। जिनको वह भोग रहा है। दूसरे बच्चे के कर्म ऐसे न थे, जिनसे वह अन्धा होकर जन्म लेता। इसी का नाम मसला तनासुख है और इन प्रमाणों के कारण हमें मानना पड़ता है कि मसला तनासुख सत्य है। अब आप इस विषय को न समझे हों तो और शंका करिये।

अली—हमने पूर्वजन्म में क्या क्या किया है? यह हमको स्मरण क्यों नहीं है!

मैं—मैं आपसे पूछता हूँ कि आज १६–५–३६ है आज दिन में ११ बजे मैं आपके पास बैठा था आप मुझे इतिहास लिख

रहे थे। आप बतलाइए कि १६-५-३८ को आप इसी ११ बजे क्या कर रहे थे ? क्या आप को स्मरण है ?

अली—मुझे स्मरण नहीं है कि मैं क्या करता था।

मैं—अब आपही विचारिए! कि जब आपको एक वर्ष और एक सप्ताह की बात इस जन्म की ही स्मरण नहीं है तब उस जन्म की बात आपकी कब स्मरण रह सकती है और यदि स्मरण भी हो जाये तो आपका अपने कुटुम्बियों से द्वेष तथा कलह हो सकता है। क्योंकि पता नहीं कि आपके कुटुम्ब में किसने उस जन्म में आपके साथ दुर्व्यवहार किया हो जिसके स्मरण हो जाने से आप उससे द्वेष करने लगेंगे।

अली-बिन-ईसा ने गौ के प्रति वैसा ही प्रश्न किया जैसा काजीजी ने किया था। मैंने उसका उत्तर भी वैसा ही दिया।

साला खजूरी—आप लोग गौ को माता कहते हैं तब बैल को बाप क्यों नहीं कहते ?

मैं—आप लोग प्रत्येक वृद्धा स्त्री को माता कह सकते हो ? या कुछ और ?

साला—हाँ! हम हर एक वृद्धा स्त्री को उसकी इज्जत अफ़जाई (सत्कार करने के लिये) करने के लिये माता कहते हैं।

मैं—फिर इस हिसाब से जितनी वृद्धाएँ आपकी माताएँ हुईं तो उन सब के पति आपके पिता हुये ? या कुछ और ? यदि वे सब आपके पिता हुये, तो आप एक पिता के पुत्र नहीं

कहे जा सकते। आपको कहना पड़ेगा कि हमारे अनगणित पिता हैं।

इतने में सेठ अली-बिन-ईसा ने कहा—"अरे मियाँ! जिसका दूध पिया जाता है उसको माता कहने में कोई हर्ज नहीं है। छोड़िये यह विषय, कुछ और बात हो। पश्चात् अली-बिन-ईसा ने वही प्रश्न किये जो काजी सा० ने पैगम्बर और कयामत के सम्बन्ध में किये थे, और मैंने उसी प्रकार के उत्तर दिये जैसे काजी जी को दे आया था।

इस प्रकार मैसूर में १३-५-३९ से २२-५-३९ तक रहा। पश्चात् मोटर लांच में बैठकर मसकत २४-५-३९ को पहुँचा।

अमान का बातना प्रान्त

५-६-३९ को मैं महता नाथालाल के साथ मोटर द्वारा बातना की ओर चला। यह वही उमाँ प्रान्त है जहाँ पर उमां (पारवती) का जन्म हुआ था। इसी में सुमेरु गिरि भी है। इस विषय को मैं चौधरी धनराजसिंहजी के लेखों द्वारा पहिले सिद्ध कर चुका हूँ। हम लोग मसकत से मोटर द्वारा मथुरा होकर पार्वतीय मार्ग पार करते हुये समुद्र तट पर पहुँचे। यहाँ से भी नरगोल या नर-कोटा समुद्र के बीच द्वीप के समान दृष्टिगोचर हो रहा था। यहाँ पर हम लोगों का मोटर रेत में फँस गया। दोपहर का समय था १२ बज चुके थे। मोटर ड्राइवर ने सबको मोटर से उतार दिया। इस मैदान में कहीं वृक्ष नाम को भी न था। आकाश-मण्डल से धूप बड़े वेग से अपना भयंकर रूप दिखला रही थी। यद्यपि मैं

छाता खोले था। परन्तु छाते को पार कर धूप इतनी तीव्रता से आ रही थी कि ऐसा जान पड़ता था मानो सर के ऊपर अग्नि की तीव्र आँच लग रही हो। नीचे बालू (रेत) इतनी गर्म थी कि चमड़े के जूतों के भीतर ऐसा प्रतीत होता था कि मानो पैर अग्नि के अन्दर पड़ा है। कुछ देर खड़े रहने के पीछे ड्राइवर ने कहा—"आप लोग भी मोटर के निकलवाने में सहायता करिये।" मैंने छाता बन्द किया। महता नाथालाल, दौलत दलाल और मैं मोटर से चिमट गये। इस प्रकार धक्का दे देकर एक घण्टे में मोटर को ऊपर चढ़ाया। आज की गर्मी का अनुभव कर मुझे पता लग रहा था कि अरब में किस प्रकार की गर्मी और धूप पड़ती है। इस प्रकार हम लोग मोटर में बैठ आगे बढ़े। मार्ग में कई गाँव मिले। दो ग्राम विशेष नामरूपी मिले। इनका नाम **छोटा रमेश** और **बड़ा रमेश** है। यह नाम सहस्रों वर्षों से एक ही रूप में चले आ रहे हैं। अरब लोग इन नामों को परिवर्तन करना भूल गये होंगे। नहीं जैसे और नाम परिवर्तित कर दिये हैं वैसे यह नाम भी परिवर्तित कर सकते थे। इस प्रकार हमारा मोटर बढ़ा चला जा रहा था।

बुर्का

३ बजे हम लोग बुर्का पहुंचे। यहाँ पर भी पोर्चगीजों के समय का बनवाया हुआ गढ़ वर्तमान है और नगर की चहार दीवारी भी टूटी फूटी अवस्था में पोर्चगीजों की बनवाई खड़ी है। यहाँ पर हम लोग बाबा सेठ के पास पहुँचे। बाबा सेठ ने समुद्र

तट पर अपने लिये बड़ा सुन्दर और रमणीक बङ्गला बना रखा है। इस बङ्गले में चारों ओर से शुद्ध वायु आती है। बाबा सेठ बड़े सज्जन तथा श्रद्धालू पुरुष हैं। इनका पूजा गृह अत्यन्त सुन्दर और मनमोहक है। बाबा सेठ की इच्छा थी कि हम लोग वहाँ पर एक दो दिवस के लिये ठहरें। परन्तु महता नाथा लाल ने कार्य वश अधिक समय तक ठहरना उचित न समझा। इस नगर के निकट खजूरों को बाटिकाऐं लगी हैं। सारा स्थान देखने योग्य है।

बुर्का से प्रस्थान

हम लोग मोटर पर सवार होकर चल पड़े दोनों ओर खजूरों की हरयाली थी जहाँ तहां कुएँ बने थे। अरब स्त्रियें जहाँ तहाँ पानी भरतीं और चलती फिरती दिखलाई पड़ती थीं। मसकत, मथुरा और सूर की स्त्रियाँ एक प्रकार का बुर्का पहिनती हैं। उस की बनावट इस प्रकार है कि नासिका के दाँई ओर कान तक एक पतली लकड़ी लगभग चौथाई इँच चौड़ी लगाई जाती है और इसीप्रकार की लकड़ी नासिका के बाँई ओर कान तक लगाई जाती है। दोनों लकड़ियों का जोड़ नासिका के दोनों छिद्रों के ऊपर होता है। दोनों कानों से मिलाकर एक धागा इन लकड़ियों को शीश के पिछले भाग को बाँधता है। इन लकड़ियों पर काला कपड़ा लगा रहता है। तोसरी लकड़ी उतनी ही चौड़ी नासिका के छिद्रों के ऊपर से उन दोनों लकड़ियों को मिलाती हुई ऊपर जाती है और मस्तक पर पहुँच दो धागों द्वारा बाँध,



मसकत की एक अरबी महिला जो मुँह पर
अरबी नक़ाब लगाये हुए है।

[पृष्ठ १३२]

कानों की ओर धागे पहुँचा दिये जाते हैं। इसका नाम बुर्का है। इनके सारे वस्त्र नीचे से ऊपर तक काले रहते हैं और शरीर इनका इतना काला होता है कि कोयला की कालक इन स्त्रियों के काले रङ्ग के सामने लज्जित हो सकती है। मथुरा और मसकत की औरतें इस प्रकार का बुर्का पहनती हैं। हाथ और पैरों को मोजो से ढांपे रहती हैं। चाँदनी रात में दूर से और अँधेरी रात में निकट से देखने में वे चलती हुई ऐसा जान पड़ती हैं जैसे कोई काला भूत गठड़ी के रूप में लपकता जा रहा हो, जिसको इनका ज्ञान न हो और भूतों पर विश्वास रखने वाला हो तो वह अवश्य डर सकता है। परन्तु अमान (उमा) प्रान्त की स्त्रियां किसी प्रकार का बुर्का नहीं रखतीं। यह भारतीय स्त्रियों की भांति एक पाजामा पहिने और लम्बा कुर्ता तथा सिर पर एक ओढ़नी डाले मुँह खोले अपने सारे काम काज करते दिखाई पड़ती हैं। ईश्वर ने इन्हें सुन्दरता भी प्रदान कर रखी है। इनका चेहरा लाल, शरीर सुडौल और प्रसन्न बदन दीखने में आता है। एक स्थान पर मोटर ड्राइवर ने मोटर रोक दिया, सामने के कुएँ पर औरतें पानी भर रही थीं। मोटर ड्राइवर ने उनका पानी का भरा घड़ा उठा लिया और मुँह लगा कर पानी पी लिया। फिर अन्य लोगों ने भी पिया। उन्होंने बड़ी सभ्यता से पानी पिलाया। मैं उस समय यह विचार कर रहा था कि काली कूबड़ी स्त्रियों ने तो मथुरा और मसकत में अपने को गठड़ी बना रखा है। परन्तु इन सुन्दरी स्त्रियों ने किसी प्रकार का पर्दा ही नहीं रखा। मैंने इस

पर शंका की तो पता चला कि उमा प्रान्त में प्राचीन काल से कहीं भी न किसी प्रकार का बुर्का है और न पर्दा। मुझे उस समय ऐसा प्रतीत होता था मानो यह सारी स्त्रियां उमा (पार्वती) की सखियाँ ही रही हों। इस प्रकार हम लोग मोटर द्वारा भ्रमण करते हुए मूसना पहुँचे।

मूसना

यह नगर तीन ओर सुदृढ़ दीवारों से घिरा है। इन दीवारों को पोर्चगीजों ने बनवाया था। साथ ही एक बड़ा और सुदृढ़ गढ़ भी पोर्चगीज़ों के समय का बना पोर्चगीजों का स्मरण करा रहा है। इसी गढ़ में यहां का गवर्नर सुल्तान मसकत की ओर से रहता है। यहाँ पर कुल छै दूकानें हिन्दुओं की हैं। इसके निकट भी खजूरों के खेत दिखाई पड़ते हैं। यहाँ पर भी स्त्रियाँ बिना पर्दा और बिना बुर्का के इधर उधर चलती फिरती और काम-काज करतो दिखाई देती हैं। इस स्थान में छुहारा, खजूर और मछलियों का बड़ा व्यापार होता है। यहाँ से सीधा मार्ग नजवा और सहार नगरों की ओर जाता है। यह नगर पुराना जान पड़ता है। इसके निकट १० मील की दूरी पर उत्तर की ओर जमा नदी है जो पर्याप्त लम्बी और चौड़ी है यहां जमा नाम का प्रान्त भी है जहां के पर्वतों से इसका निकास है। कहते हैं कि चाचीन काल में इस नदी का नाम **जमुना** था।

पीछे इसका नाम जमना फिर जमा होगया। उर्दू جمنا इस इस प्रकार लिखते हैं। इस लिये समय बीतने पर جمنا से جما हो



श्रीयुत विश्राम भाई पटेल

प्रधान मन्त्री नागरी प्रचारिणी सभा

मसकत (अरब) [पृष्ठ २०६]

तथा

प्रधान मन्त्री आर्य केलौणी मण्डल मसकत, (अरब)

जाना आश्चर्यजनक बात नहीं है । यह नदी वर्षा ऋतु में बढ़ा करती है । वर्षा ऋतु के पश्चात् इस नदी में पानी नहीं रहता । सम्भव है कि वासुदेव जी इसी जमुना को मोटर लाँच या नौका द्वारा पार कर पश्चात् वायुवेगी (Aero Plane) वायुयान द्वारा भगवान कृष्ण को नगर गोकुल जो भारतवर्ष में है ,पहुँचाने गये हों और फिर उसी प्रकार वापिस आये हों ।

८–६–३६ को महता नाथालाल के साथ मोटर द्वारा मैं मूसना से मसकत आया ।

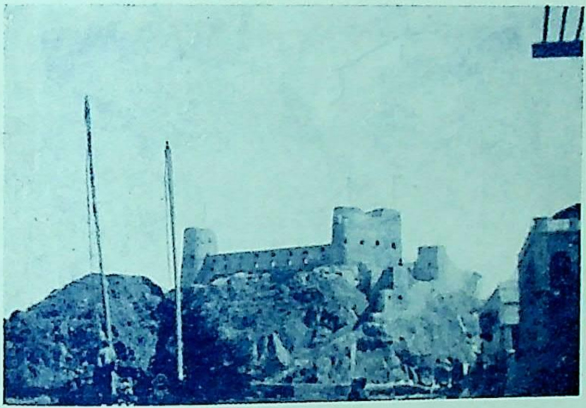
श्रीयुत विश्राम जी का प्रस्ताव

१०–६–३६ को रात्रि के समय मैं भोजन करके श्रीयुत विश्राम जी पटेल के पास बैठा था । विश्राम जी ने कहा "पण्डित जी आपने मसकत और मथुरा में इस डेढ़ मास के बीच वैदिक धर्म का ऐसा प्रचार किया है कि यहाँ के सेठिये सब आपके प्रभाव में आ गये हैं । इस कारण अरब प्रदेश में आप ही प्रथम आर्योपदेशक हैं कि इन सबको आपने ही आर्य सिद्धान्तों का सन्देशा सुनाया है । आपके प्रचार और व्यवहार से यहाँ के लोग आर्यसमाज के महत्व को समझने लगे हैं । इस कारण मेरी सम्मति यह है कि आप यहां किसी सभा का जन्म दे कर जावें, कि जिसके द्वारा यहाँ सदा वैदिक धर्म की चर्चा होती रहे ।" मैंने कहा "यहाँ आर्य समाज खुल न सकेगी क्योंकि यहां इस सिद्धान्त के लोग नहीं हैं । मेरे विचार से हिन्दी प्रचार का कोई प्रबन्ध इन सब में होना चाहिये" इस प्रकार विश्राम जी से यह ही निश्चय हुआ कि नागरी

प्रचारिणी सभा काशी की शाखा यहाँ खोलनी चाहिये। विश्राम जी ने कहा "इसके लिये कल आप मेरे साथ मथुरा चलकर सेठ रतन सी परसोत्तम के मैनेजर सेठदेवसी भाई से निश्चय कराइये। वहाँ से ठीक हो जाने पर मथुरा के लोग तत्पर हो जावेंगे। पश्चात् मसकत वालों के पास भी आप चलिये" मैंने स्वीकार कर लिया।

मसकत के किले

११-६-३६ को श्रीयुत विश्राम जी ने सुल्तान के कार्यालय से किले देखने की स्वीकृत मँगा ली थी। इस कारण प्रातःकाल ८ बजे मैं, विश्राम जी तथा उनके एक साथी किले में गये। जिस गढ़ में रात्रि को ६॥ बजे ढोल पीटा जाता है, जिसका वर्णन मैं पीछे कर आया हूँ। यह वही गढ़ था जो बहुत सुदृढ़ और बड़े बड़े पत्थरों को जमा कर बनाया गया है। इसका फाटक अब तक इतना सुदृढ़ है कि हिलाने से नहीं हिलता। भीतर से उसको बन्द करने के कई ताले और कई विधियाँ हैं। इस फाटक से गढ़ से बाहिर जाने के लिये ही और सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियों का एक सिलसिला भूमी की ओर गया है और दूसरा सिलसिला पानी में समुद्र की ओर गया है। स० १५८८ ई० में इस गढ़ को पोर्चगीजों ने निर्माण कराया था और लगभग इसी सन् व कुछ इससे आगे पीछे पोर्चगीजों ने सारे अमान प्रान्त में अपने गढ़ आवश्यक स्थानों पर निर्माण कराये थे। जिनका मैं पिछले पन्नों में उन उन नगरों के साथ वर्णन कर चुका हूँ। इस गढ़ में बीस सहस्र सिपाही सुख पूर्वक रह सकते हैं। इसके फाटक से



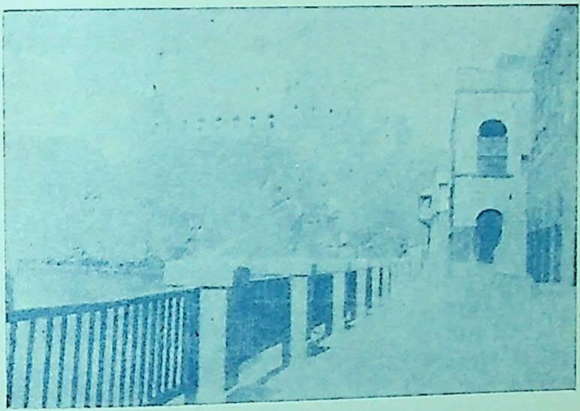
मसकत नगर की बांईं ओर पर्वत के ऊपर, समुद्र तट पर पोर्चगीजों द्वारा निर्मित गढ़। (पृष्ठ १३७)

सीढ़ियों द्वारा हम लोग चढ़ कर ऊपर गये। स्मरण रहे कि यह गढ़ पर्वत के ऊपर बनाया गया है। ऊपर जाने पर एक ओर पोर्चगीज कैथोलिक चर्च मिला। जिसके भीतर माता मरियम तथा महात्मा मसीह की पत्थर की मूर्तियाँ रखी थीं। इन मूर्तियों के सामने मुख्य द्वार पर (Holywater) पवित्र पानी का एक कुण्ड बना है, जिस जल द्वारा ईसाई पादरी उन लोगों को बपतिस्मा दिया करता था जो नवीन व्यक्ति ईसाई होता था। एक ओर बड़ा कमरा बना है। उसके अग्र भाग में कुर्सी व बेंचें रखने का स्थान है जिन पर बैठकर वे लोग हज़रत मसीह से प्रार्थना किया करते थे। अरबों ने जब इस गढ़ को सेठ नरोत्तम और सेठ सकबीला की सहायता से विजय किया था, उस समय इस चर्च की सारी मूर्तियां तोड़ डाली थीं जिस कारण आज उन मूर्तियों के चिह्न भी दृष्टिगोचर नहीं होते। गढ़ में स्थान स्थान पर ऐसे छिद्र बना रखे हैं जिन में अब तक पोर्चगीज़ों की बीसियों बड़ी बड़ी तोपें रखी हैं। एक तोप पर लिखा है "Presented Imaum of Muscat by American Council—May 1830." इस के ऊपर जाने से वहां एक बड़ा हौज़ बना दिखाई दिया जिस में वर्षा ऋतु का पानी भर जाता था और यह पानी पच्चीस हजार आदमियों को एक वर्ष के पीने के लिए पर्याप्त होता था। इस गढ़ को अरबी लोग "मिरानी का किला" कहते हैं। इसी हौज का पानी सेठ नरोत्तम ने पोर्चगीज गवर्नर से निकलवा दिया था। ठीक इसी गढ़ के सामने दूसरे पर्वत पर इसी प्रकार

का दूसरा किला बना है उसकी बनावट ठीक इसी के समान है, उसमें ऊपर पानी के लिये हौज (कुण्ड) बना है जिसमें भी पच्चीस हज़ार सिपाहियों को एक वर्षके लिये पानी पर्याप्त रह सकता है। इस समय इस गढ़ में बन्दी जन रहते हैं और इस गढ़ का नाम अरब लोगों ने "जलानी" रखा है। इस में जो सीमेण्ट लगा है उसको गैस व गच कहते हैं, जो आज साढ़े तीन सौ वर्ष के पीछे भी अपनी मजबूती के कारण वैसा ही लगा है जैसा आरम्भ में लगाया गया था। इस प्रकार हम लोग उस गढ़ को देखकर ११ बजे दिन में नीचे उतरे।

नागरी प्रचारिणी सभा

गढ़को देख कर हम लोग नीचे उतर मोटर पर बैठे सीधे मथुरा पहुंचे। मथुरा में सेठ मेग जी सुन्दरदास, सेठ गोविन्द जी उपनाम बड्डा, सेठ विश्राम जी, सेठ देवसी, सेठ रतनसी देवसी आदि सज्जन सेठ रतनसी परसोतम के कार्यालय में एकत्रित हुये। मैंने सबको हिन्दी के प्रचार की आवश्यकता समझाई। जिसको सुनकर सब ने निश्चय किया कि आज ही रात को मेरे भाषण के पीछे मसकत में नागरी प्रचारिणी सभा का निर्वाचन कर लिया जाये। यह निश्चय करा. इन सबसे एक पत्र पर हस्ताक्षर करा, मथुरा के सारे हिन्दू दूकानदारों से हस्ताक्षर कराये। वहां से मोटर में बैठ, मैं तथा विश्राम जी मसकत आये और मसकत वालों से भी हस्ताक्षर करवाये। रात्रि को श्रीयुत विश्राम जी पटेल के गृह पर मेरा भाषण था। ढाई घण्टे तक मेरा भाषण



मस्कत नगर के दाहिनी ओर पर्वत के ऊपर समुद्र तट पर
पुर्तुगीज़ों द्वारा निर्मित गढ़, पूर्व की ओर। [पृष्ठ १३८]

होता रहा। इसके पीछे सर्व सम्मति से नागरी प्रचारिणी सभा मसकत व मथुरा खोलना निश्चय हुआ और उस समय निम्न-लिखित अधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए:—

प्रधान —सेठ गोकुलदास खीम जी रामदास (मसकत)।

उपप्रधान—सेठ रतन जी देवसी (मथुरा)।

प्रधान मन्त्री—सेठ विश्राम जी (मसकत)।

उपमन्त्री—सेठ मेग जी सुन्दरदास नपनसी (मथुरा)।

उपमन्त्री—सेठ जयराम नारायण जी (मसकत)।

कोषाध्यक्ष—सेठ नपनसी माधव जी (मसकत)।

आय व्यय निरीक्षक—सेठ दामोदरलाल (मसकत)।

पाठशालाओं के लिये बीजारोपण

१२-६-३६ को श्रीयुत विश्राम जी के गृह पर नागरी प्रचारिणी सभा मसकत और मथुरा की ओर से पहिली सभा एकत्रित हुई। जिसमें सभा की ओर से प्रधान मन्त्री सेठ विश्राम जी ने नागरी प्रचारिणी सभा मसकत तथा मथुरा की ओर से मुझे मान पत्र दिया। पश्चात् मैंने "हिन्दी की आवश्यकता" पर लगभग ढाई घण्टे तक भाषण दिया। मेरे भाषण के पीछे यह बातचीत होने लगी कि मसकत व मथुरा में हिन्दी के दो पुस्तकालय खोले जावें, जिनमें विश्वमित्र कलकत्ता, आज काशी, भारत इलाहाबाद, आर्य मित्र आगरा, हिन्दू दिल्ली, साप्ताहिक पत्र तथा चाँद, सरस्वती और विश्वमित्र, पाखण्ड खण्डिनीपताका मासिक-पत्रिकायें मँगाई जावें। साथ ही साथ यह भी निश्चय हुआ कि मथुरा और

मसकत में दो गुजराती पाठशालाएँ खोली जावें और १४-६-३६ को श्रीयुत विश्राम जी मथुरा जाकर इस विषय को निश्चय कर लें और पाठशालाएँ शीघ्र खुलनी चाहिए। जिससे बच्चों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध हो जावे।

मसकत से प्रस्थान

मैंने १३-६-३६ को एस० एस० बांदरा नामक जहाज द्वारा मसकत से बेहरीन के लिये प्रस्थान किया। जहाज तक पहुँचाने के लिये सेठ विश्राम जी पटेल, सेठ जेठा लाल कोषाध्यक्ष सेठ धन जी मुरार जी, सेठ मेगजी सुन्दर दास नयनसी मथुरा, सेठ रतन सी उपनाम बङ्गाली, सेठ नन्दी तथा और अन्य सेठ महाशय आये थे ठीक आठ बजे रात को जहाज चल पड़ा।

उम्म ग़नम

हमारा जहाज ईरान की खात पर समुद्र के ऊपर दौड़ता चला जा रहा था। बन्दर अब्बास से प्रातः काल आठ बजे जहाज चल पड़ा और तीसरे प्रहर तीन बजे जहाज "उम्म ग़नम" नामक द्वीप के सामनें पहुँचा। यह द्वीप भी एक प्रकार से पर्वत ही है। इस पर्वत में हरी हरी कटीली घास अधिकता से लगी है अरब के लगभग सारे पर्वत निर्जन और जले खड़े हैं जिनमें घास नाम मात्र को भी नहीं दिखाई देती। परन्तु इस पर्वत पर घास होने के कारण ही इसको उम्म-ग़नम कहा जाता है। क्यों कि अरबी में उम्म का अर्थ माता ग़नम का अर्थ बकरी है।

तात्पर्य यह हुआ कि यह पर्वत बकरी की माता है। क्योंकि इस पर्वत से बकरियों को भोजन मिलता है। इस पर्वत पर ब्रिटिश सरकार ने (Tlying Boat Base) हवाई जहाजों का अड्डा बना रखा है। चारों ओर वायर लेस (हवाई तार) लगे हैं। गोरे सैनिकों के रहने के भवन बने हैं। परन्तु दृष्टि गोचर नहीं होते। क्योंकि ऐसा सुना है कि इस पर्वत के नीचे अर्थात् भूमि के अन्दर ब्रिटिश सरकार ने किले निर्माण करा रखे हैं। सम्भवतः इस स्थान पर सारे योरोपियन सैनिक ही रहते हैं। क्योंकि इसी जहाज से उनके लिये सैकड़ों टोकरी फल उतरे थे। इस पर्वत के सामने "खोर ख्वाय" नामक पर्वत है। उस पर्वत के उस पार अरब प्रदेश है। उम्म-ग़नम और 'खोर ख्वाह' पर्वतों के बीच समुद्र लहरा रहा है। इन दोनों पर्वतों की लम्बाई आधी मील और चौड़ाई नहर स्वेज़ के बराबर ही होगी। कहा जाता है कि इस स्थान पर बीसियों (Man of War) मैन आफ वार रहते हैं। यह स्थान दोनों ओर से ईरान की खात की रक्षा कर सकता है। अर्थात् पूर्व अथवा पश्चिम की ओर से पूरा सुरक्षित रखने के लिये इस स्थान पर बेस बनाया गया है। स्थान अत्यन्त रमणीक और देखने योग्य है।

जहाज में मुसल्मान दूकानदारों का प्रचार

जिस जहाज पर मैं बैठ कर जा रहा था। उसमें एक भंगी झाड़ू आदि देता दिखाई पड़ा। मैंने कई बार उसको देखकर विचार किया कि यह तो हिन्दू जान पड़ता है। परन्तु इसकी चोटी

नहीं दीखती। अन्त में उम्मे ग़नम को देखते समय मैं ने उस से बात चीत प्रारम्भ की। वह मेरे पास आने जाने लगा। मैं ने उस से निम्नलिखित प्रश्न किये:—

मैं - तुम्हारा क्या नाम है ?

वह—मेरा नाम माँगे बाप का नाम तोता ग्राम बड़ा सरूरपुर डा० खास मैं जिला मेरठ का हूँ। मैं भंगी हूँ।

मैं—मांगे तुम तो हिन्दू हो। फिर तुम्हारी चोटी किधर है ?

माँगे—मैं हिन्दू अवश्य हूँ। परन्तु मैंने चोटी कटवा दी है।

मैं—तुमने चोटी क्यों कटवा दी है ? क्योंकि तुम तो फैशनेबुल भी नहीं प्रतीत हो रहे हो। अधिकांश लोग फैशन के जाल में फंस चोटी कटवा दिया करते हैं।

मांगे—सेठ जी (यह मुझे सेठ जी समझा था) चोटी रखाने में मुझे कोई लाभ दिखाई नहीं देता। क्योंकि चोटी रखाये रहने पर उच्च कोटि के हिन्दू हमको पतित दृष्टि से देखते और छूने से परहेज करते हैं। गालियां देते ओर डांटते हैं। हमारा स्पर्श किया हुआ पानी भी नहीं पीते। परन्तु मैंने जब से चोटी कटाई है तब से मैं अच्छा समझा जाता हूँ। देखिये सामने मुसलमानों का होटल है। मैं अपना कार्य समाप्त कर उस होटल में जाता हूँ। अपने हाथ से भोजन निकाल कर खाने वाले मुसल्मानों को भोजन देता हूँ। वे लोग मुझ से परहेज नहीं करते। चोटी कटाने से वे मुझे मुसल्मान समझते हैं। चोटी रखाने से वे लोग मुझे हिन्दू समझ मुझ से घृणा कर सकते हैं।

मैं—तुमको यह किसने सम्मति दी कि चोटी कटाओ ?

मांगे—इसी होटल के मैनेजर ने जो मुसल्मान है; देखिये ! वह सामने बैठा है।

मैं—तो क्या तुम मुसल्मान हो गये हो ?

मांगे—नहीं, मुसल्मान तो अभी नहीं हुआ हूँ।

मैं—जब तुम मुसल्मान नहीं हुये, तब तुम अपनी आत्मा को धोखा दे रहे हो। क्योंकि वह मैनेजर तुमको अवश्य कुछ मासिक देता होगा, उसके लालच में तुमने चोटी कटा रखी है। केवल पैसे के लालच में फँस चोटी कटा बैठे ! बताओ। तुम ईश्वर के सामने क्या उत्तर दोगे ? रहा यह, कि ऊँचे वर्ण वाले हिन्दू तुम से परहेज करते हैं। यह ठीक है, तो क्या इन लोगों के ऐसा व्यवहार करने से तुम अपना धर्म परिवर्तन कर दोगे ? अगर वे ऐसा करते हैं तो उनको ईश्वर के सामने क्या उत्तर देना होगा ? वे इस बात का विचार नहीं कर सकते। परन्तु उन लोगों के दुर्व्यवहार के कारण तुमको अपना धर्म त्यागने का विचार भूलकर भी मन में न लाना चाहिये। मैं समझता हूँ कि तुमको मैनेजर ने बहकाया भी होगा। बोलो ! क्या कहते हो ?

मांगे—आपका कहना ठीक है कि मैनेजर मुझे मासिक कुछ देता है और वह मुझे बहकाया भी करता है। अब मैं आप से प्रण करता हूँ कि मैं अपने हिन्दू धर्म को कदापि नहीं छोड़ूँगा और चोटी भी रखवा लूँगा। यदि आप दूसरे बार इस जहाज

पर आयेंगे तो देखेंगे कि मैंने चोटी भी रखा ली है। सचमुच मुझे इस मैनेजर ने ही बुरी तरह हिन्दुओं के विरुद्ध किया था।

बेहरिन

इस प्रकार मैं १८-६-३६ को ८ बजे रात को बेहरिन पहुँचा। रात को दस बजे मैं सेठ धम्मनमल ईश्वरदास की आढ़त पर जा पहुँचा।

सेठ विष्णुदास और मैं

आज मुझे सेठ धम्मनमल ईश्वरदास के पौत्र सेठ मूलजी ने अपने मुनीम मगन के साथ बाजार के हिन्दुओं से मिलने भेजा। मैं मगन के साथ सब लोगों से मिलता हुआ सेठ विष्णुदास भागीदार सेठ रतनचन्द दीपचन्द के पास पहुँचा। सेठ विष्णुदास यहां की महाजन सभा के मुक्खी (प्रधान) हैं। यहाँ के सेठों में बड़े दूकानदार हैं सेठ विष्णुदास से मगन ने कहा, "मूलजी ने पण्डित जी को आपके पास भेजा है, आप सन्ध्या समय इन के भाषण का प्रबन्ध हवेली में कर दीजिये और सब महाजनों को समाचार भी भिजवा दीजिये "बेहरिन के सारे दूकानदार सिन्ध प्रान्त ठट्टा नगर के भाटिया हैं और सब के सब पुष्टि मार्गी हैं। परन्तु सेठ विष्णुदास सबसे अधिक कट्टर पुष्टि मार्गी हैं। सेठ विष्णुदास ने उठकर मेरा स्वागत किया। उनको यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि मैं काशी से आया हूँ। उन्होंने मुझे गीता की कथा सन्ध्या समय हवेली में सुनाने की प्रार्थना की। मैंने

स्वीकार कर लिया। अब वे मुझ से कहने लगे, "पण्डित जी! आजकल हमारे भाटिये लोग अरबों की दुकानों में चाय पीते और उन्हीं की दूकानों में सोडा लेमूनेड आदि पी लेते हैं जिससे हिन्दू-धर्म की विशेष हानि होती है। आप कृपा करके इस विषय के सम्बन्ध में सबको समझाइयेगा कि ऐसा कार्य हिन्दू होने के नाते किसी को न करना चाहिये इत्यादि, "मैं चुपचाप सुनता रहा और मैंने कुछ उत्तर न दिया। सम्भवतः इसपर उन्हें कुछ सन्देह हुआ और उन्होंने मुझ से प्रश्न किया।

सेठ विष्णुदास—आप किस धर्म को मानते हैं?

मैं—आर्य समाज का उपदेशक हूँ।

मेरे इन शब्दों को सुन कर सेठ विष्णुदास आश्चर्य में पड़ गये और दो मिनट तक मेरी ओर ताकते रहे। फिर बोले।

सेठ—आप आर्य समाजी हैं। इस कारण हम लोगों में से कोई भी आपका भाषण नहीं सुन सकता और न हम आपको हवेली में भाषण देने को स्थान ही दे सकते हैं। आप क्षमा करें।

मैं उनके विचारों को सुन कर आश्चर्य में नहीं पड़ा क्योंकि ऐसी घटनाएँ मेरे साथ कई बार हो चुकी थीं।

मैं—सेठ जी! आर्य समाजियों ने कौन सा ऐसा पाप किया है, जिस कारण आप लोग भाषण तक नहीं सुन सकते? कारण बताने की कृपा करिये।

सेठ—आप हवेली में बैठ कर मूर्ति का खण्डन करेंगे। आप

मूर्ति खण्डन करने वाले हैं, इस कारण आपका भाषण सुनना पाप है।

मैं—आपने मुझ से गीता की कथा सुनने की इच्छा प्रकट की है। क्या गीता में मूर्ति खण्डन विषय किसी अध्याय में है? जो आप इतने भयभीत हो गये, कि मैं हवेली में बैठ कर मूर्ति का खण्डन करूँगा? दूसरी बात—क्या हमारे पास केवल यही एक विषय है कि हम लोग मूर्ति खण्डन पर ही बोलें! क्या हमारे पास कोई और विषय ही नहीं है?

सेठ—यह ठीक है कि आप गीता की ही कथा सुनायेंगे, परन्तु वह आप अपनी (Point of View) विचार रेखा से ही तो सुनायेंगे और अपने ही सिद्धान्तों का प्रचार करेंगे।

मैं—सेठ जी! मैं आपके सामने गीता के श्लोकों का अर्थ शब्दों को समझा समझा कर व्याख्या करूँगा और यथोचित उदाहरण आदि दूँगा। (मैंने हँस कर कहा) यदि गीता में आर्य समाज के सिद्धान्त सिद्ध हो गये, तब तो आप लोगों को आर्य समाजी बनना चाहिए। क्योंकि गीता भगवान् कृष्ण का सच्चा उपदेश है। यदि आप लोग आर्य समाजी न बनियेगा तो गीता आर्य समाजियों के हवाले कर दीजियेगा।

मेरे इन वाक्यों को सुन कर सेठ जी भी हँस पड़े और बोले।

सेठ—अच्छा! आज आप संन्ध्या समय हवेली में आ जाइये। गीता सुनाइये। यदि आपकी कथा हम लोगों को रुचि कर हुई तो जब तक आप रहेंगे। हम लोग सुनेंगे यदि

आपकी कथा हम लोगों को रुचि कर न हुई तो आज ही आपको प्रणाम कर लेंगे।

मैं—अच्छा ! आप दूकानदारों को महाजन सभा की ओर से सूचना दे दीजिये। जिससे लोग अच्छी संख्या में संध्या समय हवेली में उपस्थित हो जावें।

सेठ—यह नहीं हो सकता। मैं नोटिस न निकालूँगा। आप हवेली में आ जाइये।

सेठ विष्णुदास ने विज्ञापन न निकाला। परन्तु मेरी और सेठजी की बात चीत सारे दूकानदारों में फैल गई। इस कारण लोगों को उत्सुकता हुई। बस ! सन्ध्या समय सारे दूकानदार इस कारण एकत्रित हो गये कि मैं क्या उपदेश करता हूँ।

मैं ठीक ६ बजे सन्ध्या समय हवेली में जा पहुँचा। आज बिछावन आदि का भी प्रबन्ध कम था। मैंने इस पर ध्यान ही न दिया और एक ओर भूमि पर ही बैठकर मैंने अपनी कथा प्रारम्भ कर दी। ठीक ढाई घण्टे तक मैंने गीता के दूसरे अध्याय के केवल तीन श्लोकों की व्याख्या की। पश्चात् मैंने यह भी कहा "आज से छठवें दिन फिर जहाज़ आयेगा तब तक मुझे रहना ही पड़ेगा। यदि आप लोग उपदेश सुनना चाहेंगे तो छः दिन और आप लोगों को उपदेश सुना दूँगा। यदि आप लोग न सुनेंगे तो चुप चाप सेठ धम्मनमल ईश्वरदास के यहाँ बैठा बैठा अपना स्वाध्याय करता रहूँगा फिर आनेवाले जहाज से मैं बसरा की ओर चला जाऊँगा।" इसके पीछे सेठ विष्णुदास जी ने कहा।

सेठ—श्रीयुत पण्डितजी ने जिस प्रकार गीता के इन तीन श्लोकों की व्याख्या २॥ घण्टे तक की है वह अत्यन्त मनोरंजक और शिक्षाप्रद है। इस कारण मैं पण्डितजी से महाजन सभा की ओर से प्रार्थना करता हूँ कि आप मसकत जैसे छोटे स्थान में १॥ मास तक उपदेश करके इधर पधारे हैं। बेहरिन मसकत से बड़ा है और यहाँ हिन्दू भी अधिक हैं इस कारण आपको यहाँ तीन मास तक हम लोगों को उपदेश करना चाहिए। आशा है कि आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

मैं—जैसी आप लोगों की इच्छा होगी वैसा करूँगा। इसके पश्चात् मेरा उपदेश नित्य हवेली में होने लगा।

बेहरिन की प्राचीनता

इस द्वीप का नाम महाभारत काल में असुर द्वीप था। यह प्रसिद्ध है कि ईरानी भाषा में असुर देवता को कहते हैं। इस कारण यहाँ पर बलवानों का निवास था। धीरे धीरे जरदुश्त उपासकों ने इस स्थान पर 'आवाल' नामक देव की स्थापना की और इसी नाम पर इस टापू का नाम आवाल पड़ गया। इस समय अहसा प्रान्त जो साऊदी अरेबिया में है। वहाँ से इसकी सीमा लम्बाई में प्रारम्भ हो अमान तक जाती थी और चौड़ाई कतर से लेकर क्वेट तक थी। इसके पास ही कतर का पेनिनशुला है। बसरा की खाड़ी से लेकर अमान तक जितने द्वीप थे अरबों ने उनका नाम बहरीन रखा था। इन टापुओं के निवासी सब के सब हिन्दू थे। पीछे जरदुश्त उपासक बने। तत्पश्चात्

मुसल्मान बन गये। जेहरान जहाँ साऊदी अरेबिया वालों ने मिट्टी का तेल निकाला है, वह बेहरीन से १२ मील दूर है। इसके पास महर्रक नामक द्वीप है। महर्रक और बेहरिन के बीच लगभग आधा मील समुद्र का पानी भरा है। इस समय बेहरिन गवर्नमेण्ट दोनों के बीच पत्थरों द्वारा पाट कर सड़क बना रही है। सड़क आधी बन चुकी है। महर्रक का डायामीटर ८० मील है। मनामा द्वीप २५ मील लम्बा उत्तर से दक्षिण और चौड़ाई ६ मील है। महर्रक और मनामा एक सतह पर हैं। विशेषकर मनामा से रफा, सखीर और जौ ऊँचाई पर हैं। इनके इर्द गिर्द बालू ही बालू है। जौ अधिक गर्म स्थान है। यहाँ कड़ी गर्मी पड़ती है। इस कारण गर्मियों में जौ निवासी पानी के पास जाकर ठहरते हैं।

बेहरिन में मोती

बेहरिन प्राचीन काल से इस समय तक अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। क्योंकि यहाँ मोती संसार में सब स्थानों से उत्तम पाये जाते हैं। ऊपर के टापुओं के निवासियों की आय का प्रबन्ध ग़ोताख़ोरी पर ही निर्भर है। मोती निकालने का काम जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर और १० अक्तूबर तक रहता है। पहिले इसकी वार्षिक आय मोतियों द्वारा तीस करोड़ रुपये थी। परन्तु इस समय मोती का भाव गिर गया है। इस कारण इस समय आय में बहुत अन्तर पड़ गया है। कतर में एक करोड़ दस लाख की मोतियों द्वारा वार्षिक आय है। जुबेल की ६ लाख है। क्वेट की ८० लाख है। सारे अमान की वार्षिक आय एक

करोड़ पचास लाख रुपया है। कैस की चार लाख रुपया वार्षिक है। इससे कभी अधिक और कभी कम भी होती है। आय न्यून हो जाने के दो कारण हैं। प्रथम कारण यह है कि जब से सीप योरोप जाने लगे तब से योरोप वालों ने उन सीपों को समुद्र में फेंक फेंक कर मोती उपजाने आरम्भ किये। यद्यपि वे मोती इधर के मोतियों से हल्के होते हैं तथापि आय में अन्तर तो अवश्य पड़ गया। दूसरा कारण आय न्यून हो जाने का यह है कि जापान ने कलचर्ड (नकली) मोती बना डाले; जिनका रूप रंग ऐसा है कि वास्तविक मोती और बनावटी मोती में साधारण दृष्टि से कोई अन्तर नहीं जान पड़ता। जब तक कि इनको जाँच करने वाले यन्त्र में रखकर न देखा जावे। यह यन्त्र सबके पास नहीं है, किन्तु बड़े बड़े व्यापारियों के ही पास है। जापानी मोती का मूल्य भी बहुत कम है। इस कारण वास्तविक मोती का भी दाम गिर गया है। मोती की गोलाई, चमक, पानी और उसके रंग पर दाम कूता जाता है। वास्तविक मोती का रंग, चमक और पानी कभी नहीं जा सकता और इसी कारण मोती का मूल्य अधिक दिया जाता है। परन्तु बनावटी मोती के ऊपर बताये गुण दस बारह वर्ष से आगे नहीं चलते। सुना है कि जापान अब इस यत्न में लगा है कि बनावटी मोती में भी ऊपर के बताये गुण उत्पन्न करदे। ऐसी अवस्था में इस समय जो मूल्य वास्तविक मोती का मिलता है वह भी कम हो जावेगा। सम्भव है फिर इसका व्यापार ही समाप्त हो जावे।



समुद्र तट पर अरबी लोग नौका की तैयारी, मोती निकालने जाने के लिए कर रहे हैं।

[पृष्ठ १५१]

मोती निकालने की विधि

मोती बेहरिन से ३० मील दूर समुद्र में जाने पर मिलता है। पहिले बगला और बकारा नामक नौकाओं पर बैठकर ग़व्वास लोग मोती निकालने जाया करते थे। परन्तु अब इन नौकाओं में माल लाद कर दूर देशों में ले जाते हैं। इस समय सम्बक, जाली बोट, बित्तोल और बोम नामक नौकाओं पर बैठकर मोती निकालने जाया करते हैं। इस प्रकार की नौकाएँ इस समय चार हज़ार हैं। ग़व्वास का प्रारम्भिक नाम रकबा (जब गव्वास मोती निकालने समुद्र जल में डुबकी लगाता है) और समाप्त करने पर (तब गव्वास मोती निकालने का कार्य समाप्त कर बाहर आ जाता है) उसका नाम गुफ्फाल है। मोती को कुमाश कहते हैं। बड़े मोती को दानाक कहते हैं। मोती १३ व १४ बाम की गहराई में पाया जाता है। अमान प्रान्तमें २० बास तक की गहराई में पाया जाता है। एक ग़ोताख़ोर के साथ दो सहायक रहते हैं। इन सहायकों का नाम रजीफ़ है। ग़ोताख़ोर शरीर पर एक लबादा पहिन रस्सी पकड़ पानी के भीतर धरातल तक जाता है। इस समय ग़ोताखोर श्वास साधे रहता है। जब उसको श्वास लेने की इच्छा होती है तब वह पानी के भीतर रस्सी को हिलाता है, जिस इशारे को पाकर रजीफ़ लोग रस्सी को ऊपर खींचते हैं। बस! गव्वास ऊपर आ जाता है। वह कमर में एक चौड़े मुँह की थैली बाँधे रहता है नीचे जाकर सीपों को छोटे छोटे पौदों से तोड़ तोड़ उस थैले में डालता जाता है। जिन सीपों को पानी से बाहर आकर थैले से निकाल कर रख देता है।

दोल जन्तु

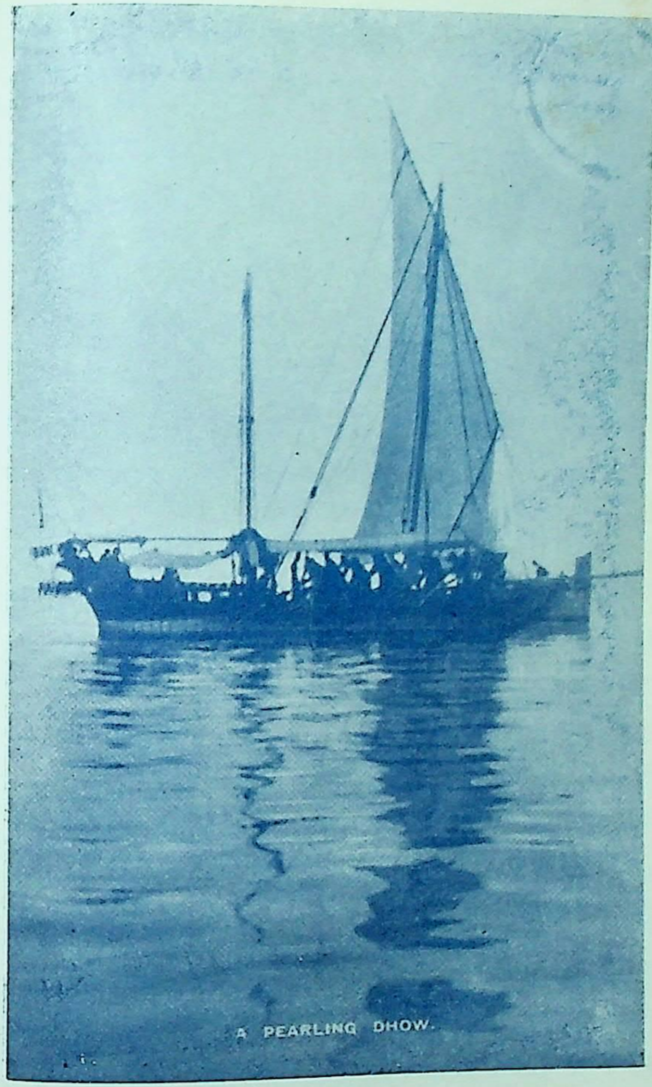
यह दोल नामक जन्तु लगभग तौल में डेढ़ पाव होता है, यह गोलाकार रहता है। इसके शरीर में रेशम के समान नर्म बालों के लच्छे लिपटे रहते हैं। यह जन्तु जल के भीतर हो सीपों के निकट ही रहता है। यदि इस जन्तु के बाल किसी गौव्वास के लग जावें तो उसके शरीर का वह भाग लुंज हो जाता है, अथवा शरीर में अग्नि सी प्रज्वलित हो जाती है। ऐसी अवस्था में गौवास लोग इसके बालों के आघात से बचने के लिये एक ऐसा वस्त्र पहिनते हैं कि जिससे शरीर के सारे अंग प्रत्यंग ढँके रहें और इस जन्तु के बालों का आघात न हो सके। यदि इस जन्तु को किसी प्रकार पानी से निकाल पानी से एक गज की दूरी पर डाल दिया जावे तो यह जन्तु गल कर पानी हो जाता है।

लोपसी जन्तु

यह दूसरा लोपसी नामक भी दोल के समान आकृति का होता है। इसका रंग लाल होता है। यदि यह किसी गौव्वास के शरीर को स्पर्श कर ले तो गौव्वास का शरीर दो घन्टे के लिये फूल जाता है! परन्तु अग्नि में सेकने से फिर सूजन चली जाती है और मनुष्य का शरीर ठीक हो जाता है।

फ़ग़लूल जन्तु

फ़ग़लूल जन्तु भी दोल तथा लोपसी जन्तुओं के समान होता है। परन्तु इसके शरीर में बाल नहीं होते। मुँह इसका बीच में



मोती निकालने के लिये अरबी लोग नौका पर चढ़कर जा रहे हैं। [पृष्ठ १५०]

होता है और यह जन्तु एक बीता लम्बा होता है। यह जन्तु दोल और लोपसी जन्तुओं को खाजाता है। इस जन्तु का पँजा आदमी के पंजे के समान होता है।

किलैपान जन्तु

किलैपान जन्तु कलम के समान होता है। इसकी भी लम्बाई एक बीता ही होती है। इस जन्तु के भी शरीर में बाल नहीं होते। यह जन्तु भी दोल तथा लोपसी को खा जाता है। इस प्रकार दोल और लोपसी जन्तुओं से गोवासों की रक्षा होती है।

सीप का जन्म और मोती की पैदाइश

ईरान की खात में नवम्बर मास से फरवरी मास तक भारी तूफान होता है। इन दिनों में ईरान की खात के बन्दरों तथा उसके इधर उधर शीत भी पड़ती है। इसी शीत काल के समय सीप के भीतर से खशखश के दाने के बराबर पीला दाना निकलता है। जो पानी के भीतर धीरे धीरे बढ़कर चने की दाल के बराबर हो जाता है। इस समय यह पीला दाना समुद्र की धरातल में कड़ी और पथरीली भूमि पाकर उसके भीतर धँस जाता है। पश्चात् वह कड़ी भूमि स्वमेव फट जाती है। इस फटे भाग के भीतर एक जड़ बाल के बराबर पतली और तीन इँच लम्बी उसी दाने से बन जाती है और ऊपर दो सीप इस जड़ के साथ निकल आते हैं। इन दोनों सीपों के द्वारा जड़ को भोजन मिलता है क्योंकि वह सीपें इधर उधर के छोटे छोटे जल

जन्तुओं को खाती हैं। यह भोजन जड़ को भी पर्याप्त होता है। यह जड़ समुद्र के भीतर १३ व १४ बाम गहराई पर होती है। इस जड़ का रङ्ग हरा और नीला होता है। इन दो सीपों के अतिरिक्त इस जड़ के ऊपर कई सीप बन जाते हैं। इस सीप के भीतर एक जन्तु रहता है जो दोनों सीपों के गर्भ में निवास करता है जिस प्रकार कछुआ कड़ी हड्डियों के भीतर निवास करता है। दोनों सीपों के गर्भ में जहां जीव व मांस रहता है। उसी मांस के भीतर और बीच में जो मोती बनता है, वह अधिक मूल्यवान होता है। जो अत्यन्त सुन्दर, गोल तथा चमकीला और तेज पूर्ण होता है। परन्तु इस मांस के इधर उधर जो मोती होते हैं उनमें से कोई कम मूल्य वाले तथा कोई निकम्मे ही होते हैं। इस सीप का तौल खशखश के दाने से लेकर छे रतल तक होता है। यह सीप छोटे छोटे जल जन्तु तथा निकट की मिट्टी खाता है अर्थात् यही इसका भोजन है। प्रारम्भ में यह बनस्पति बनता है फिर जल जन्तु बन जाता है और जल जन्तु के गर्भसे मोती जैसा अमूल्य रत्न प्राप्त होता है। यह परमात्मा की विचित्र लीला है कि यदि इन सीपों को तोड़कर मोती न निकाले जावें तो थोड़े दिनों में सीप में एक छिद्र हो जावेगा और इसी छिद्र से मोती निकल कर नीचे गिर कर नष्ट हो जायेगा। इस प्रकार सीप और मोती का जन्म समुद्र के गर्भ में होता है।

ईरान की खात में इस समय वेहरिन टापू अच्छी उन्नति पर है। नगर सुन्दर और सुडौल वसा है। यहाँ के मार्गों पर अल-



समुद्र के भीतर नौका के नीचे दो रस्सियों द्वारा समुद्र तल पर पहुँच कर मोती निकालने वाला एक अरबी । [पृष्ठ १५४]

कतरा डालकर चिकने और अच्छे मार्ग बनाये गये हैं। समुद्र तट पर बेहरिन सरकार की ओर से कस्टम आफ़िस का भवन बड़ा सुन्दर बनाया गया है। इस कस्टम आफ़िस का बड़ा अफ़सर एक योरोपियन है। परन्तु सारे आफिस का कार भार श्री पंडित कुम्भनदास जी के ऊपर है। यह सज्जन सिन्ध प्रान्त नगर ठट्ठा के निवासी हैं। इनकी ईमानदारी भली प्रकार से प्रसिद्ध है; आप स्पष्ट वक्ता और अपनी बात के धनी हैं।

इन्हीं के आफिस के पास ही पासपोर्ट आफिस है, जिसके पासपोर्ट अफीसर मिस्टर जलालुदीन हैं। आप यू० पी० के रहने वाले हैं। मैं जब दबई से बेहरिन आया, उस समय मेरे पासपोर्ट में बेहरिन का वीजा (Visa) न था। इन्होंने आर्य सामाजिक उपदेशक समझ, दो दिन के लिये बेहरिन में ठहरने की आज्ञा दी थी। पश्चात् पोलीटीकल एजेण्ट से (जो कि एक अंग्रेज सज्जन हैं) मिला उन्होंने मुझे १५ दिन बेहरिन में ठहरने की आज्ञा दे दी। इसी कस्टम आफिस के सामने से एक पक्की सड़क समुद्र के किनारे किनारे जाती है। इस सड़क पर अस्पताल, डाकखाना, पोलीटिकल एजेण्ट के आफ़िस आदि सुन्दर तथा सुदृढ़ भवन निर्मित हैं। यह सारी सड़क अलकतरा डाल कर बनाई गई है और बहुत स्वच्छ है। कस्टम आफिस के सामने एक बाटिका भी लगाई गई है जिसमें संन्ध्या समय लोग भ्रमणार्थ आते और बैठते हैं। बेहरिन का बाजार बड़ा रमणीक है

और अच्छा चलता है क्योंकि यहाँ से अरब के भीतरी भाग में माल अधिक जाता है।

सेठ धम्मनमल ईश्वरदास

सेठ धम्मनमल ईश्वरदास ठट्टा नगर सिन्ध प्रान्त के निवासी हैं। इस समय सेठ जी संसार में नहीं हैं किन्तु उनके लड़के सेठ टीकमदास, सेठ लालचन्द और सेठ घनश्यामदास बड़ी योग्यता से अपना व्यापार चलाते हैं। जब मैं बेहरिन गया था, उस समय सेठ टीकमदास बम्बई की आढ़त में थे और सेठ लालचन्द अपने परिवार सहित श्रावण का अधिक मास बिताने के लिये श्रीनाथ जी चले गये थे। सेठ लालचन्द जी ने मुझे बम्बई से सेठ गोविन्दराम परमानन्द के नाम परिचय पत्र दिया था। मसकत के सेठ विश्राम भाई पटेल ने बेहरिन के सेठ धम्मनमल ईश्वरदास के नाम पत्र दिया था। इन पत्रों को प्राप्त कर सेठ मूल जी पौत्र सेठ धम्मनमल ईश्वरदास ने मुझे अपने पास ठहराया और मेरे प्रचार का सारा प्रबन्ध किया तथा डी० ए० वी० कालिज काशी को जो कुछ भी सहायता बेहरिन से हुई, उस सबका श्रेय सेठ मूलजी नवयुवक को ही है। सर्व प्रकार से सेठ मूल जी ने मेरी सेवा सुश्रूषा की, जिसके लिये मैं इस फर्म के संचालकों और विशेष कर सेठ मूल जी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

यहाँ पर सेठ रतनचन्द दीपचन्द, सेठ हरीदास ज्ञानीमल आदि के भागीदारों ने भी मेरी अच्छी सहायता की थी। इस स्थान पर सारे व्यापारी सिन्ध प्रांत, नगर ठट्ठे के भाटिया हैं।

यह सब धर्म के काम में अच्छा भाग लेते हैं। यह सबके सब पुष्टिमार्गी हैं, तिस पर भी इन सबने मेरे काम में पूरी तरह से सहानुभूति दिखलाई। इस बात को जानते हुए कि मैं एक आर्य समाज का उपदेशक हूँ।

सेठ गोविन्दराम परमानन्द

सेठ गोविन्दराम परमानन्द नवयुवक भाटिया सज्जन नसर-पुर सिन्ध के निवासी हैं। इनका स्वभाव सरल है, सौम्य प्रकृति तथा विचारवान व्यक्ति हैं। हिन्दू जाति को किस प्रकार गाढ़ निद्रा से जगाकर सचेत किया जाए इन विचारों में यह सदा तन्मय रहते हैं। सेठ लालचन्द धम्मनमल ने मुझे बम्बई से इन्हीं के नाम परिचय पत्र दिया था जिस पत्र को पाकर इन्होंने मेरी सेवा करने में पूर्ण शक्ति लगा दी थी।

बेहरिन में जल स्रोत

सेठ गोविन्दराम परमानन्द मुझे २३-६-३६ को अपने सेठ की बाटिका में ले गये। इनके सेठ एक अरब सज्जन हैं। उस समय बाटिका में अरब सेठ अपने इष्ट मित्रों सहित स्वयं उपस्थित थे। हम लोगों के पहुँचने पर अरब सेठ ने मेरा उठकर स्वागत किया। पश्चात् अंगूर खजूर और तरबूज़ के टुकड़े मेरे सामने खाने को रखे। मेरे आने से उन्होंने बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और अपनी सुहावनी बाटिका भी दिखलाई। इस बाटिका की एक ओर एक सुन्दर कुण्ड सीमेण्ट और ईंटों से

निर्मित लगभग ७ फुट गहरा, २० फीट लम्बा और २० फीट चौड़ा बना था। इस कुण्ड के चारों ओर खजूरों के वृक्ष झकोरे ले रहे थे। अरब देश के लिए इतनी हरियाली बहुत बड़ी हरियाली है। इस हौज़ का सम्बन्ध एक कुएँ से था जिस कुएँ का पानी निकाल कर नल द्वारा इस कुण्ड तक पहुँचाया जाता है। हम लोगों के लिये कुण्ड साफ़ करके पानी से ४ फ़ीट तक भर दिया गया। जिसमें मैं, सेठ गोविन्दराम और मिस्टर नन्दा घुस कर दो घण्टे तक स्नान करते रहे। यह कुण्ड हम लोगों को काशी के दुर्गा कुण्ड की भांति आनन्द दे रहा था। क्योंकि अरब देश में पानी की न्यूनता के कारण ऐसे ऐसे कुण्ड बड़े धनियों की वाटिकाओं में ही देखने में आते हैं।

बुजेदान स्रोत

इस प्रकार हम लोग स्नान कर अरब सेठ के मोटर में बैठ जंगल की ओर चले। नगर से दो मील की दूरी पर एक पानी का स्रोत मिला। इस स्रोत में पानी भूमि के गर्भ से आता है। इस स्रोत का नाम "चश्मै बुज़ेदान" है। यह भी एक कुण्ड के सदृश है। इसके किनारे एक ओर घाट बना है जिसमें उतर कर लोग स्नान करते और वस्त्र धोते हैं। इस घाट के साथ एक पक्का बराम्दा बना है, जिस बरामदे में बैठकर लोग धूप से बचते हैं। इस कुण्ड के बराबर तथा इससे लगभग तीन फ़ीट की ऊँचाई पर एक साधारण गृह बना है। इसके भीतर कुण्ड है और उस गृह के भीतर कुण्ड के गिर्द कुछ कमरे की भाँति स्था नबनाये गये हैं।

जहाँ पर स्त्रियां स्नान किया करती हैं। यहां पर शुक्र के दिन अधिक भीड़ रहती है। सुना है कि शेष और दिनों में कामी लोग अपनी कामिनियों के साथ इस स्थान पर आकर जल क्रीड़ा किया करते हैं। क्योंकि बाहर के लोगों को पता नहीं लग सकता कि भीतर कैसे कैसे पुष्प खिल रहे हैं।

अदारी स्रोत

इस स्रोत को देख हम लोग आगे मोटर में बैठ कर चल पड़े। मार्ग के दोनों ओर स्वाभाविक स्रोत की नहर बह रही थी और दोनों ओर खजूरों के वृक्ष वायु के साथ मिलन करते दिखाई पड़ते थे। इस नहर में अरब लोग बिल्कुल नग्न स्नान कर रहे थे। इस प्रकार हम लोग दोनों ओर का दृश्य देखते हुए 'अदारी स्रोत' पर जा पहुँचे। इन नहरों में इसी स्रोत से पानी जाता है। यह स्रोत वृत्ताकार है जिसका अर्द्धव्यास १४ फ़ीट होना चाहिये। चारों ओर सीमेण्ट तथा ईंटों द्वारा घेरा गया है। इसकी गहराई ५० फीट है। इसमें उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हैं। कूद कर स्नान करने के लिए लकड़ी के तख्ते रखे हैं जिन पर खड़े होकर तैराक लोग धमाधम कूदते हैं। इस के एक ओर एक बरामदा कुण्ड के ऊपर बना है और बैंचें पड़ी हैं जिनमें लोग स्नान के पूर्व तथा उसके पीछे बैठते और कड़ी धूप से बचते हैं। इस बरामदे के सामने थोड़ी सी गच बनी है, उस गच के नीचे स्रोत का भाग है। जहाँ पर लोग अधिक धूप से बचकर छाए में बैठकर स्नान करते हैं। इसके चारों ओर पुष्प वाटिका भी लगाई

गई है। यहाँ पर भी शुक्रवार के दिन स्नान करने वालों की भारी भीड़ होती है। इसको देखकर हम लोग मोटर पर बैठकर पीछे लौट पड़े। इस बार दूसरे मार्ग से लौटे।

पोर्चगीजों के खण्डहर और स्तम्भ

हम लोग मोटर से आ रहे थे कि मार्ग में कुछ खण्डरात दिखाई पड़े। हम लोग मोटर से उतर कर उस खण्डर में घुसे। जहां तहां दीवारें जीर्ण शीर्ण दशा में खड़ी खड़ी पोर्चगीजों की स्मृति दिला रही हैं। क्योंकि एक समय इस द्वीप में पोर्चगीजों का राज था। इन खण्डरात के केन्द्र स्थान पर दो स्तम्भ खड़े हैं। जो काशी के माधोराव के धौरहरा के समान थे। जब इस स्थान को अरबों ने जीता था, तब इन स्तम्भों के द्वार पर एक एक पत्थर अरबी लिपि में अंकित कर गाड़ दिया है। जिन पत्थरों पर आयतें अंकित हैं। परन्तु इसके अक्षर अरबी की प्राचीन लिपि से सम्बन्धित जान पड़ते हैं। क्योंकि नवीन अरबी लिपि में और उसमें कुछ अन्तर प्रतीत होता है। प्रत्येक मीनार (स्तम्भ) पृथ्वी-तल से ६० फीट ऊँची बनाई गई है। एक मीनार (स्तम्भ) के द्वार से होकर मैं उसके ऊपर चढ़ा था। इसमें ८६ सीढ़ियां बनी हैं और चढ़ते समय स्तम्भ का परिक्रमा करते हुए ऊपर जाना पड़ता है। सीढ़ियां चौड़ी कम हैं इस कारण चढ़ते समय सँभाल सँभाल कर चढ़ना पड़ता है। यदि चढ़ते या उतरते समय पैर फिसल पड़े तो मनुष्य बिना परिश्रम के नीचे दिखाई पड़े और खण्ड खण्ड हो जावे। ऊपर के भाग में एक आदमी के बैठने के

लिए पर्याप्त स्थान है। ऐसा कहा जाता है कि पोर्चगीजों ने इन स्तम्भों को इस कारण बनवाया था कि जिस से वे लोग दूर से देख सकें कि बद्दू लोग आक्रमण करने तो नहीं आ रहे। यदि वे ऐसा देख पाते थे तो पोर्चगीज आगे ही बढ़कर उनका सामना करते थे। मैंने ऊपर बैठकर उस छिद्र से देखा। वहाँ से सैकड़ों मील दूरी की वस्तुएँ दिखाई पड़ती थीं। इसी प्रकार इससे दूर पोर्चगीजों का एक क़िला भी बना है जो इस समय भग्नावस्था में है और चिमगादड़ों का निवासस्थान बन रहा है। यह सब देख कर हम लोग वापिस नगर में आ गये।

बाजार के भीतर स्रोत

सेठ पुरुषोत्तमदास धरमदास भी ठट्टा निवासी हैं। यहाँ पर इनके लाखों रुपयों के मकान बने हैं। इनके घर के नीचे खुले स्थान पर इनकी सीमा के भीतर पानी का एक स्रोत है। यह स्रोत बेहरिन के अन्य स्रोतों से विचित्र है। विचित्रता यह है कि भूमि से नीचे स्थान खोदकर एक मण्डप बनाया गया है और इस मण्डपके भीतर बीच में एक मोटा पाइप लगभग तीन हाथ लम्बा और १॥ हाथ ऊँचा लगाया गया है। इस पाइप के दोनों ओर तीन मोटी मोटी टोटियाँ लगाई गई हैं। इन टोटियों के ऊपर का कान आप घुमाइये बस ! एक इञ्च मोटा पानी बड़े वेग से गिरना प्रारम्भ हो जायेगा। आप स्नान करिये। पानी भरिये। स्मरण रहे कि जितने पाइप पानी देनेवाले होते हैं उनमें पानी किसी टंकीसे जो उन पाइपों से अधिक ऊँची होती है आता है परन्तु इन पाइपों से

अधिक नीचाईसे पानी बड़े वेगसे आता है यही विचित्रता इसी स्रोत मेंहै। सारे बनिया दुकानदार प्रातः नित्य इसी स्थानपर स्नान करने आते हैं। स्नान करते समय संसार के नवीन से नवीन समाचार जो रेडियो से भी मिलना कठिन है, इस स्थान पर नित्य प्रातः आप स्नान करने वालों के मुँह से सुन सकते हैं। बात करने वाले सज्जन इस बात के जिम्मेदार नहीं हैं कि यह उनकी बात कहाँ तक सचाई रखती है।

प्रमाण

मैं जिन दिनों में बेहरिन में प्रचार भी कर रहा था और डी० ए० वी० कालिज काशी के लिये चन्दा भी कर रहा था। कहा जाता है कि इस स्रोत में एक दिन स्नान करने वालों में यह भ्रम मूलक बात निकली "पं० कन्हैयालाल जी कहते हैं कि काशी में आर्य विद्या सभा है जिसके आधीन डी०ए०वी० हाईस्कूल, डी०ए०वी० कालिज, आर्य कन्या पाठशाला, नित्यानन्द वेद विद्यालय और १३ अछूत पाठशालाएँ हैं। पण्डितजी के पास उस भूमि का मान, और स्कूल व कालिज के चित्र तथा रिपोर्ट भी है, और चिट्ठियाँ भी सभा के मन्त्री की वे दिखलाते हैं। परन्तु यह सब असत्य है। पण्डितजी सभा के नाम से रुपया अपने पास ले जा रहे हैं और हम लोग महा मूर्ख हैं जो इस प्रकार एक आर्य-समाजी ठग से ठगे जा रहे हैं इत्यादि।" इस पर तर्क वितर्क भी चला। फल यह निकला कि यह बात सेठ रतनचन्द दीपचन्द के भागीदार सेठ विशुनदास जी के पास पहुँचाई गई, और उनको

यह सम्मति दी गई कि बनारस के सिटी मैजिस्ट्रेट और पुलिस सुपरिन्टेण्डेन्ट को पण्डितजी की काल्पनिक सभा की सूचना दी जाये। यह सूचना वहाँ पहुँचते ही पण्डितजी को धोखा देने का फल ब्रिटिश न्यायालय से दिया जायेगा और इस चन्दे के रुपये को हम लोग उचित समझ कर व्यय करेंगे। सेठ विशुनदासजी बड़े गम्भीर और विचारवान पुरुष हैं। परन्तु वे भी इन गप्पियों की गप्प पर विश्वास कर बैठे, और उसी समय जाँच करने के लिये पत्र (१) प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालिज बनारस (२) मन्त्री आर्य विद्यासभा बनारस (३) मैजिस्ट्रेट बनारस (४) पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट बनारस के पास अँग्रेजी में टाइप करा कर भेज दिये।

जो मैंने चन्दा एकत्रित किया था उसको मैं सेठ धम्मनमल ईश्वर दास की आढ़त में जहाँ मैं ठहरा था रखता जाता था। वह इस विचार से कि चलते समय इनसे मैं हुण्डी लेकर काशी आर्य विद्या-सभा में भेज दूँगा। सेठ विशुनदास जी की ओर से सेठ धम्मन मल ईश्वरदास को आदेश किया गया कि वह रुपया अभी कहीं न भेजा जाये। ऊपर के पत्रों के उत्तर आने पर रुपयों का उचित प्रबन्ध किया जायगा। इस विषय की मूलजी सेठ ने मुझे सूचना दे सारी घटना समझाई। इस बीच, मैं दबई गया और वहाँ से वापिस बेहरिन आया। उन पत्रों के उत्तर अब तक न आये थे। इस कारण सारे नगर के हिन्दू मुझे छद्मवेषी, ढोंगी और धोखा देने वाला ही समझने लगे। यद्यपि मुँह से मुझे कोई ऐसी

बात न कहते थे, तथापि उनके व्यवहार से ऐसी बातें टपकती थीं; परन्तु यह कहावत प्रसिद्ध है:—

"सत्यमेव जयते नानृतम्"

एक एक करके चारों पत्रों के उत्तर आने प्रारम्भ हो गये।

उत्तरों के आने पर सेठ विशुनदासजी को हमारी संस्था की वास्तविकता का ज्ञान हुआ तब मैंने उनसे रुपया लेकर मन्त्री आर्य विद्या सभा काशो के पास भेज दिया।

दबई बन्दर

मैं १८-७-३६ को बो० आई० कम्पनी के जहाज़ से दबई पहुँचा। सेठ धम्मनमल ईश्वरदास के मुनीम महाशय जहाज पर आ पहुँचे, मेरा सारा सामान उतरवाकर मोटर लाँच में रखा दबई नगर की ओर चल पड़े। लगभग दो घण्टे के पीछे हम लोग दबई की भूमि पर जा उतरे।

दबई नगर

नगर के बीच में समुद्र का पानी एक बड़ी नदी के रूप में प्रवेश कर गया है। जिस कारण नगर की शोभा अधिक बढ़ गई है। इस पानी के दोनों ओर दबई नगर बसा है। दबई में कोई विशेष रूप से सड़कें नहीं बनवाई गईं। किन्तु साधारण ग्राम के सदृश रेत तथा मिट्टी से परिपूर्ण मार्ग हैं। ठट्टा नगर सिन्ध प्रान्त के भाटिये यहाँ पर मोती मोल ले लेकर बम्बई भेजा करते हैं। ये लोग जून मास में ठट्टा नगर से दबई आते हैं और अक्टूबर के

अन्त तक दबई से लौट जाते हैं, क्योंकि इन्हीं दिनों में यहां मोती निकाला जाता है। सारा खाद्य पदार्थ भारतवर्ष से यहाँ आता है। इस नगर में पोर्चगीज भी राज कर चुके हैं। उनका किला अब तक बना है जो उन पोर्चगीजों के राज का स्मरण कराता है। यह नगर और उसके इर्द गिर्द एक अरबी शेख के आधीन है। गत अप्रैल मास में इन दो भाइयों में परस्पर झगड़ा हो गया था जिस कारण सैकड़ों अरब यमलोक को पहुँचाये गये। अँग्रेजों के प्रबन्ध से कुछ शान्ति हो गई थी। परन्तु जिस समय मैं दबई में था उस समय भी सदा लोग भीत रहते थे कि न जाने कभी झगड़ा हो जावे।

सेठ गिरधारीमल जेठानन्द रघुवंशी

सेठ गिरधारीमल जेठानन्द रघुवंशी को लोग सेठ पन्नामल के नाम से भी पुकारते हैं। यह सज्जन ठट्टा नगर के निवासी लोहाना वंश में से हैं। यह सज्जन व्यापारी होते हुये सचाई की मूर्ति हैं। वैदिक-धर्म पर इनका अगाध प्रेम है और सच्चे क्षत्री हैं। इन्होंने बाल्यकाल से अबतक अनेक बार व्यापारमें भारी हानि उठाई, परन्तु कभी किसी समय भी देवाला नहीं निकाला और महाजनों का ऋण समय समय पर पाई पाई चुकाते रहे। जिस का सारांश यह है कि ईमानदारी इनमें कूट कूट कर भरी हुई है। इनका चेहरा सर्वदा प्रसन्न रहता है। वैश्यों की वृत्ति करते हुये भी इनकी आकृति से क्षात्र तेज टपकता है। रघुवंशी जी का

परमात्मा पर पूर्ण विश्वास है और सच्चे आस्तिक हैं। मेरे भाषण नित्य रात्रि में इनके ही बँगले में हुआ करते थे।

सेठ जेठानन्द

सेठ जेठानन्द इस समय सेठ दामोदरदास हेमनदास के भागीदार हैं और ये भी मोतियों का काम करते हैं। उनके कथनानुसार उनकी अवस्था ७० वर्ष की है। इन सज्जनों को संसार में किसी का भी विश्वास नहीं है। इनका कहना था कि उन्होंने अपने जीवन काल में कभी भी अपने हाथ से दान नहीं किया और न कभी इन की दान करने की ओर रुचि ही होती है। सेठ रतनचन्द दीपचन्द के भागीदार सेठ विष्णुदास बेहरिन वाले ने १०१) डी० ए० वी० कालिज काशी को दान दिया था। सेठ जेठानन्द को इस बात का विश्वास अन्त तक न हुआ कि सेठ विष्णुदास ने १०१) दान दिया होगा। क्योंकि सेठ जेठानन्द का कथन था कि सेठ विष्णुदास ने मेरे ही समान अपने जीवन काल में कभी दान नहीं दिया फिर वह १०१) कैसे दे सकते हैं? यद्यपि उनको सेठ विष्णुदास के हस्ताक्षर दिखलाये गये और कालिज की रसीद भी १०१) की दिखलाई गई। परन्तु उन्होंने इस पर थोड़ा भी विश्वास नहीं किया। सेठ घनश्यामदास धम्मनमल ने सेठ पन्नामल के बँगले में २६-७-३६ को सभा के मध्य में भली प्रकार सिद्ध किया कि सेठ विष्णुदास ने निश्चयपूर्वक दिया है क्योंकि उनके पास उनके भतीजे सेठ मूलजी का पत्र भी इस विषय में आया था जिस पर उपस्थित जनता ने विश्वास कर

लिया। सेठ जेठानन्द वहाँ उपस्थित न थे। मैंने सुना कि उनको इस पर विश्वास ही नहीं हुआ। कारण कि इनकी प्रवृत्ति किसी व्यक्ति पर विश्वास नहीं करती है।

इस प्रकार मैं दबई में दस दिन ठहर कर फिर बेहरिन की ओर एस० एस० चकदीना नामक जहाज से चलपड़ा। २६-७-३६ को रात्रि के १२ बजे जहाज बेहरिन पहुँचा।

जहाज से नहीं उतर सकते

हमारा जहाज रात्रि को १२ बजे बेहरिन पोर्ट के पास खड़ा हो गया। मैं अपना पास पोर्ट लेकर मि० जलालुद्दीन पासपोर्ट आफिसर के पास गया। उन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा और कहने लगे, "आपने दबई के पास शारजा से अपने पासपोर्ट में बेहरिन के लिये वीजा क्यों नहीं लिया?" मैंने कहा "इसमें पहिले का वीजा गवादर से लिया हुआ उपस्थित है, जिसके द्वारा मैं बेहरिन एक बार हो आया हूँ। मैं उसी Visa पर अब फिर बेहरिन उतर सकता हूँ।" मेरे इन शब्दों को सुन कर पासपोर्ट आफीसर साहब के नेत्र लाल हो गये और बोले, "आप कदापि नहीं उतर सकते। क्योंकि आपने वीजा नहीं लिया। अब आप इसी जहाज से बसरा जा सकते हैं," मैंने कहा, "बसरा का वीजा आप दे दीजिये। मैं बसरे चला जाऊँ।" इस पर वे चिढ़ कर बोले, "हम बसरे का वीजा क्यों दें?" उस समय मुझे एक विशेष बात का ध्यान आया और वह यह कि जब मैं बेहरिन में था उस समय मुझसे एक सज्जन ने कहा था कि पासपोर्ट आफीसर मि०

जलालुद्दीन खान बहादुर बनने के लिये अधिक इच्छुक हैं। यदि कोई उनको खान साहब कह दे तो वे उस पर बहुत प्रसन्न हो जाते हैं। मुझे इस बात का ध्यान आते ही मैंने फिर कहा, "जनाब खान साहिब ! थोड़ा आप विचार करिये। कि मैं यू० पी० का और आप भी यू० पी० के जान पड़ते हैं। यदि मैं बिना बीज़ा Visa के बसरे चला गया तो वहाँ के पासपोर्ट अफसर मेरे साथ क्या व्यवहार करेंगे ? यदि मेरे साथ कोई अनुचित व्यवहार किया गया तो इसमें आपका नाम बदनाम न होगा ? मुझे आपने एक इण्डियन होने के नाते मेरे साथ थोड़ी भी कृपा न की और बसरा भेज मुझे कष्ट में डाल देना चाहते हैं तो आप बताइये कि मेरा क्या हाल होगा ?" इस बात पर खान साहिब मुस्करा पड़े, और बोले, चूंकि आप आर्य समाजी उपदेशक हैं और आप दुनियाँ में घूमते रहते हैं। इसलिये यदि इस समय मैं आपको उतरने न दूंगा तो आप प्रत्येक स्थान पर मेरी बदनामी करते फिरोगे। इस कारण मैं आपको उतरने की आज्ञा देता हूँ। आप उतर जावें कल शनिश्चर है और परसों रविवार को फास्ट मेल करांची जायेगा, आप उससे करांची चले जावें।" मैंने कहा, अच्छी बात है," मैं जहाज से उतर कर मोटर लांच में बैठ कर बेहरिन की भूमि पर आ पहुँचा।

पोलीटिकल एजेण्ट और मैं

३०-७-३६ को मगन मल मुनोम सेठ धम्मन मल ईश्वर दास ने मुझ से कहा "आप को पोलीटिकल एजेण्ट ने मिलने के लिये

फोन किया है। इसलिये मेरे साथ चलिये" मैं उनके साथ मि० जलालुद्दीन पासपोर्ट आफीसर के पास गया। उन्होंने आफिस में बैठे हुए उठ कर मुझ से हाथ मिलाया, बैठने को कुर्सी दी और बोले "आप एक रुपया लेकर पोलीटिकल एजेण्ट के आफिस में अभी चले जावें। क्योंकि आपके पासपोर्ट में वीज़ा दिया जायेगा। वहां से मेरे पास अभी फोन आया है" मैंने कहा "बहुत ठीक" मैंने हाथ मिलाया और उठकर मोटर में बैठ मगन मल के साथ पोलीटिकल एजेण्ट के आफ़िस में गया, वहाँ पर एक पंजाबी मुसल्मान क्लर्क थे। मगन मल जी मुझे वहाँ ले गये। उन्होंने एक रुपया माँगा। मैंने तुरन्त जेब से निकाल कर एक रुपया उन को दे दिया। वे रुपया लेकर कहने लगे "आप ११ बजे यहाँ आकर अपना पास पोर्ट ले जावें और आज ही आप सँध्या समय कराची चले जावें। मैंने कहा "आपने रुपया भी लिया और आज ही जाने की आज्ञा दे रहे हैं। इसका क्या अर्थ है ?" क्लर्क महोदय ने कहा "यह रुपया आपसे भूमि पर उतरने का टैक्स लिया गया है" मैंने कहा "जब आप टैक्स ही ले रहे हैं तो मुझे १५ दिन और ठहरने दीजिये।" उसने कहा "पी० ए० आपके लिये लिख चुका है 'He must go by this mail' अर्थात् (इन को इस मेल से अवश्य चला जाना चाहिये) इस कारण अब आप न ठहर सकेंगे" मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मुझे एक दूसरे क्लर्क बैठे दिखलाई पड़े। जिनका नाम लाला गिरधारी लाल था, और मसकत के सेठ विश्राम जी के मित्र थे।

उनके पास मेरे सम्बन्ध में विश्राम जी ने कभी पत्र लिखा था। मैं उन से मिला और मैंने कहा "आप कुछ कोशिश कीजिये न" वे बोले "व्यर्थ है क्योंकि आप रुक नहीं सकते" मैंने कहा एक काम कीजिये कृपा करके मुझे पी० ए० से मिला दीजिये" वह बोले "अच्छी बात है मैं इसके लिये यत्न करता हूँ।" वे उठे और हेड क्लर्क से मिलकर मेरा समाचार कहा। उसने मिलाने का प्रबन्ध किया और आधा घण्टा पीछे मुझे हेड क्लर्क महोदय जी जो एक ईसाई सज्जन थे पोलीटिकल एजेण्ट के पास ले गये।

पोलीटिकल एजेण्ट—आप क्या काम करते हैं ?

मैं—मैंने अपनी "परिचय पत्रिका" उनके हाथ में दी। उसको पढ़कर वे कहने लगे "अच्छा ! आप वैदिक मिश्नरी हैं। कहिये ! आप मुझ से क्यों मिलना चाहते थे ?

मैं—आज सन्ध्या समय फास्ट मेल करांची जायेगा, आपकी ओर से मुझे यह आज्ञा हुई है कि मैं आज के ही मेल से करांची चला जाऊँ। मुझे आपकी आज्ञा पालन करने में सन्देह नहीं। परन्तु मैं वेहरिन में १५ दिन और ठहरना चाहता हूँ।

पी० ए०—आपको यहाँ क्या काम है ?

मैं—मैंने वेहरीन के चन्दे की लिस्ट और डी० ए० वी० कालिज काशी का चित्र और रिपोर्ट दिखलाई और कहा, मुझे इस लिस्ट में से कुछ चन्दा वसूल करना है। केवल इसीलिये कि

जो चन्दा वसूल करना शेष है। मुझे इसी वसूली के लिये ठहरना पड़ेगा।

पो० ए०—आप और क्या काम करते हैं ?

मैं—मैं आर्यसमाज के सिद्धान्तों का धार्मिक प्रचार व्याख्यान द्वारा करता हूँ।

(पोलीटिकल एजेन्ट एक अंग्रेज़ सज्जन हैं जो पहिले सरहदी सूबे भारत में रह चुके थे। उनको आर्यसमाज के कामों का ज्ञान था। इस कारण फिर बोले)

पी० ए०—आप तो बहुत अच्छा काम करते हैं। भारतवर्ष में एजुकेशन की अत्यन्त आवश्यकता है और आर्यसमाज इस काम को भली प्रकार कार्य रूप में परिणत कर रहा है। आप भाषण भी देते हैं। यह और भी उत्तम काम है। बेहरिन के व्यापारियों ने किसी को कभी भी इस प्रकार से पैसा नहीं दिया जैसा आपको दिया है। यह आपके भाषणों का ही प्रभाव हो सकता है। (हेडक्लर्क की ओर देखकर) इनका काम बहुत अच्छा है। क्या इनको ठहरने की आज्ञा दे दी जाये ?

हेडक्लर्क—हुजूर ! काम इनका विद्या प्रचार का है जो बहुत अच्छा है इस कारण इनको अवश्य कुछ समय देना चाहिये।

पी० ए०—फिर इनको एक सप्ताह का समय क्यों न दे दिया जाये ?

मैं – मेरा काम एक सप्ताह में पूर्ण न हो सकेगा। इस कारण आप मुझे १५ दिन तक ठहरने की आज्ञा दीजिये।

पी० ए०—अच्छा ! हेडक्लर्क ! इनके पासपोर्ट में १५ दिन के ठहरने का वीजा लिख दीजिये। देखो मिश्नरी साहब ! आपको इससे अधिक समय की आवश्यकता हो तो फिर मुझसे मिलना।

मैंने कहा "बहुत अच्छा" नमस्ते करके मैं हेडक्लर्क के साथ बाहर आया। बाहर आकर क्या देखता हूँ कि सेठ कुन्दनमल अपनेहाथ में एक अंग्रेज़ी की अर्ज़ी लिखकर लिये खड़े हैं। मुझे देखकर मेरी ओर बढ़े और बोले "मगनमल से पता चला कि पी० ए० के पास आपके पिछले व्याख्यानों की भ्रममूलक सूचना आई है जिस कारण पी० ए० ने आपको आज्ञा दी है कि आप अभी अभी मोटर लांच में बैठकर समुद्र के ऊपर जाकर जहाज की प्रतीक्षा कीजिए और आज ही जहाज से कराची चले जाइये। इस समाचार को पाकर सेठ विष्णुदास आदि घबरा गए हैं। परन्तु मैंने यह अर्जी लिखाई है। इसमें सेठ हरिदास, जानीमल के तथा और कुछ सेठियों के हस्ताक्षर करा कर अब पी० ए० को मैं स्वयं देने जा रहा हूँ" मैंने कहा "आपकी इस कृपा का मैं अत्यन्त आभारी हूँ। मैं पी० ए० से मिल रहा हूँ। उसने मुझे १५ दिन और ठहरने की आज्ञा दे दी है। अब आप कष्ट न करें।"

जो उन्होंने अर्जी लिखी थी वह निम्नलिखित है:—

Behrain. 30th July 1939.

H. B. M's Political Agent,
Bahrain.

Sir,

We respectfully submit that one Kanhya Lal Misra, our priest has come from Dubai by the last slow mail. His Passport bears a visa from Gwadur which shows no time limit hence he did not get any visa from Dubai on his second trip to Behrain. Being a new man unaware of the existing rules he was under the impression that he had a visa from Gwadur and no further visa was required.

He has been allowed to land by the Passport Officer on an undertaking that he would return to India by to-day's down steamer.

We respectfully submit that the present month is very sacred month which falls every third year. We shall be highly obliged if your Honor is pleased to grant him an extention for a fortnight to remain in Behrain as his sermons to the Hindu Community will be of much religious benefit specially during the sacred month.

For this act of kindness we shall remain ever grateful.

We beg to remain,

Sir,

Yours loyal subject

Haridas Janimnl & Co

Tulsidas Asanmal

Tikamdas Chelleram

Hirjimal Dhamaomal & Co.

Budhanmal Tulsidas

Goverdhandas Dharamdas & Co.

Parsotamdas Vasumal

Ishwardas Vasundmal

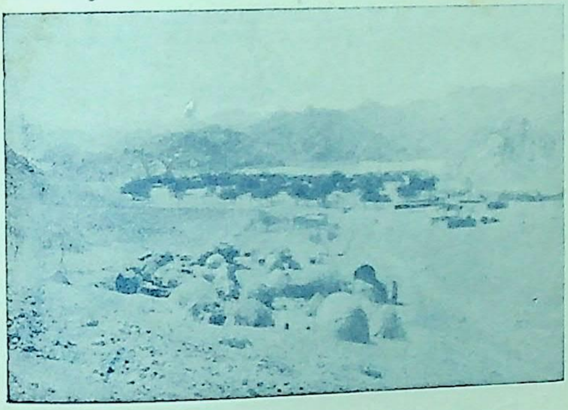
Maghanmal

Gokuldas Asanmal

Atamaram

Panamal Fatehnand.

मैंने अपना काम एक सप्ताह में ही समाप्त कर दिया और ८-८-३९ को एस० एस० चकदीना नामक जहाज से बेहरिन से करांची के लिये प्रस्थान किया। जहाज ११-८-३९ को मसकत पहुँचा। मसकतमें श्रीयुत विश्राम भाई पटेल जहाज पर पधारे थे। उन्होंने मुझे उसी समय आग्रह पूर्वक मसकत में ही उतार लिया।



मसकत नगर की दूसरी ओर समुद्र तट पर
शिताब नगर का दृश्य। (पृष्ठ १७५)

मसकत में आर्य किलौणी मण्डल

अर्थात्

(आर्य विद्या सभा)

मैं जब पहिले मसकत से गया था, उस समय यहाँ के लोगों में उक्त सभा के खोलने के लिये आन्दोलन कर गया था, जिस आन्दोलन के फल स्वरूप में वहाँ पर "आर्य किलौणी मण्डल" स्थापित हो गया और इस मण्डल की ओर से मैंने ७-८-३९ को प्रातः काल ६ बजे मसकत में हवन कराकर सेठोंके आग्रह से एक पाठशाला का उद्घाटन किया। इसी प्रकार आज ही मैंने मथुरा में पाँच बजे सन्ध्या समय हवन करा कर दूसरी पाठशाला का उद्घाटन संस्कार किया, और शिक्षाकी आवश्यकता के विषय पर भाषण दिया।

यज्ञोपवीत परिवर्तन

और

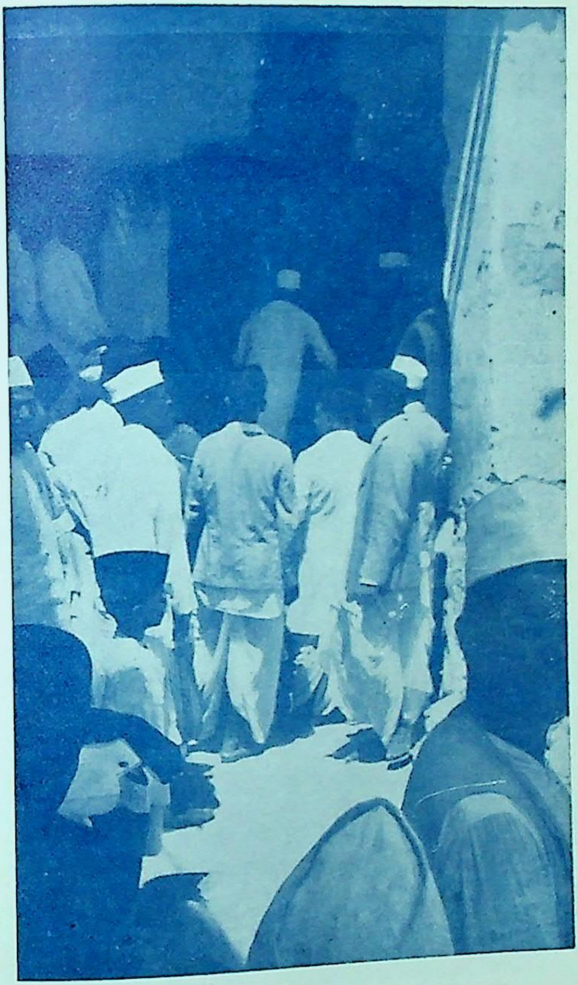
श्रावणी उत्सव

२८-८-३९ को मथुरा तथा मसकत के सेठिये और आर्य किलौणी मण्डल के सदस्य गण मोटर लांच में बैठ कर समुद्र पर भ्रमण करते हुए "शिताब बन्दर" पर पहुँचे। जहाँ बादाम बाग में एक बहुत बड़े यज्ञ कराने का आयोजन किया गया था। इस यज्ञ में हवन की सामिग्री पर्याप्त संख्या में थी और जलाने के

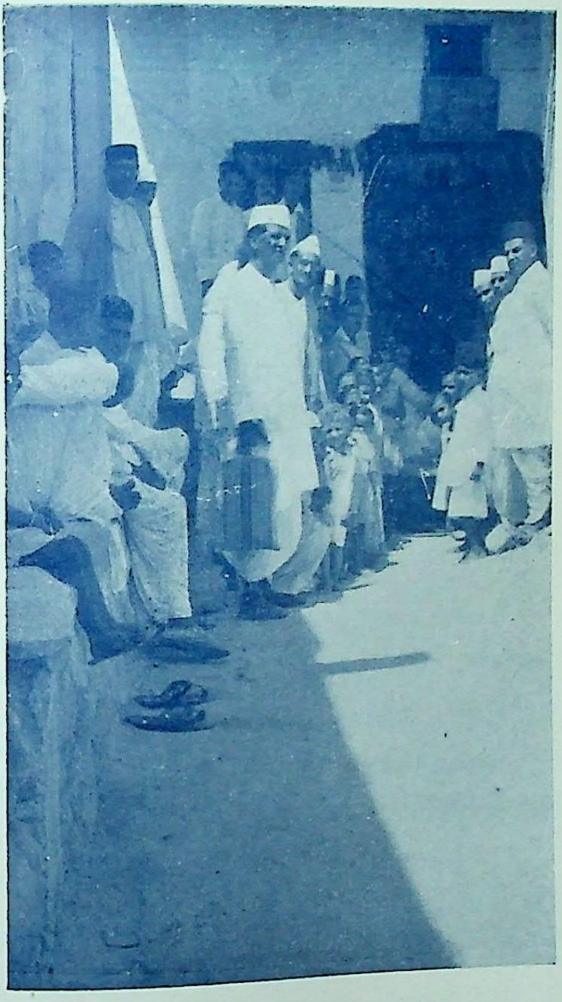
निमित्त सारी समिधा के लिये चन्दन की लकड़ी लाई गई थी। लगभग चार घण्टे तक मैंने यज्ञ कराया। इस यज्ञ में ही मैंने सारे सेठियों के यज्ञोपवीत परिवर्तन कराये, तथा मैंने उसी समय श्रीयुत विश्राम भाई पटेल का नियमानुकूल यज्ञोपवीत संस्कार कराया। पश्चात सबको यज्ञोपवीत की महिमा समझाई। इस क्रिया के पश्चात् सेठ रतनसी पुरुषोत्तम की बाटिका में प्रीति-भोज हुआ। भोजनान्त समय एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य किलौणी मण्डल की ओर से श्रीयुत विश्राम भाई पटेल प्रधान मन्त्री आर्य किलौणी मण्डल ने गुजराती भाषा में एक मान पत्र पढ़ कर मुझे भेंट किया। जिसके उत्तर में मैंने लगभग २॥ घण्टे तक "हमारा कर्तव्य" विषय पर भाषण दिया. आगन्तुक अभ्यागतों को धन्यवाद देकर सभा बिसर्जित की गई।

बसरा के लिये प्रस्थान

३०-८-३६ को श्रीयुत विश्राम भाई व श्रीयुत ब्रह्मचारी जगदीशचन्द स्नातक गुरुकुल आनन्द गुजरात, सेठ मेग जी सुन्दर दास तथा और सज्जन मुझे जहाज पर बिठलाने आये। श्रीयुत विश्राम भाई ने जहाज में मेरे लिये सर्व प्रकार के आराम का प्रबन्ध कर दिया और जहाज के मुख्य मुख्य कार्य कर्ताओं से कह दिया कि वे लोग बसरा तक मेरे आराम का विशेष ध्यान रक्खें। इस प्रकार मैं एस० एस० बान्दरा नामक जहाज पर बैठ कर बसरा की ओर चल पड़ा।



आर्य किलौणी मण्डल
मसकत की पाठशाला का उद्घाटन समारम्भ श्री पं० कन्हैया लाल जी मिश्र काशी द्वारा हो रहा है। [पृष्ठ १७६]



यज्ञ-शाला का दृश्य

अरब के मथुरा नगर में कच्छी सेठिया गए पं० कन्हैयालाल जी मिश्र काशी द्वारा यज्ञ करा रहे हैं। [पृष्ठ १८६]

रात्रि को जहाज में अन्धकार

दिन की यात्रा समाप्त करने पर रात्रि के प्रवेश होते ही पता चला कि जहाज में किसी प्रकार का प्रकाश नहीं किया जा सकता। क्योंकि योरोप में ब्रिटिश सरकार के साथ जर्मन से युद्ध छिड़ गया है। इसलिये रात्रि के समय जहाज के प्रकाश के कारण शत्रु केउड़ते हुए वायुयानों को ज्ञान हो जाने से कभी उसपर ब्रम आदि गिराकर नष्ट करने का भय है। इस कारण जहाज के कप्तान की आज्ञा से सब प्रकार का प्रकाश बन्द कर दिया गया था, इस प्रकार रात को जहाज में अँधेरे में ही रहना पड़ता था। लघुशंका तथा दीर्घशंका के लिये अँधेरे में ही टटोल टटोल कर जाना पड़ता था।

मिस्टर स्याम (saam)

इस प्रकार हमारा जहाज दिन और रात्रि की यात्रा करता हुआ २-६-३६ को बूशहर बन्दर में आ लगा। यह बन्दर ईरान सरकार का है। यहाँ से बहुत से ईरानी स्त्री पुरुष जहाज पर सवार हुए। ईरान देश मुसल्मानी देश है। परन्तु आजकल ईरान सरकार ने गृहस्थ स्त्रियों का पर्दा राजाज्ञा द्वारा उठा दिया है। इसके विपरीत वेश्याओं को आज्ञा है कि वे बाहर बिना बुर्का के नहीं निकल सकतीं। परन्तु वेश्या वृत्ति भी धीरे धीरे ईरान से हटाई जा रही है। सारे स्त्री पुरुषों को राज की ओर से कड़ी आज्ञा है कि वे लोग योरोपकी ही वेषभूषा रखें। ऐसा न करनेवालों

को राजदण्ड दिया जाता है। ईरान देश में सुन्दरता ईश्वर की देन मानी जाती है। इसलिए जिस समय ईरानी सुन्दरियोंका जहाज़ पर पदार्पण हुआ उस समय पर्दा के पक्षपाती भारतीय लोगों के नेत्रों में उन सुन्दरियों को देखकर चकाचौंध छा गया और मुँह से राल टपकने लगी। वे इधर उधर घूम घूम कर नाना प्रकार की परस्पर कल्पनाएँ करने लगे। क्योंकि उनके लिये यह विचित्र बात थी। इसी दल के साथ एक ईरानी सज्जन मिस्टर स्याम नामक नवयुवक योरोपीय वेषभूषा से सुसज्जित जहाज पर चढ़कर मेरे पास आ बैठे। मैं उस समय इसी पुस्तक को लिख रहा था। मुझे लिखते देख उनके मन में गुदगुदी उत्पन्न हो गई क्योंकि यह नवयुवक विद्या प्रेमी थे। उन्होंने स्वयं मुझसे वार्तालाप प्रारम्भ की। यह सज्जन ईरान में ए० आई० ओ० सी० ट्राफ़िक रेलवे में क्लर्क का काम करते हैं। मैंने उनसे ईरान की उन्नति के विषय में प्रश्न किये। उन्होंने मुझसे इस प्रकार उत्तर देना प्रारम्भ किया। "महोदय! ईरान देश को शाह रजाअलीशाह ने बहुत अच्छे मार्ग पर चलाया है। हम लोगों की महिलाओंसे पर्दा जैसी विषैली प्रथा को राजाज्ञा द्वारा बन्द कराया। आप देख सकते हैं कि इस समय हमारी देवियां किस प्रकार प्राकृतिक आनन्द को लेती हुई अपने जीवन को सुखमय जीवन बना रही हैं।

पर्दे के कारण मन में बुराई

जिस समय हमारे देश में स्त्रियों में बुर्का डालकर चलने की प्रथा थी उस समय प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह बुरा भाव उत्पन्न



आर्य किल्लौणी मण्डल

मथुरा (अरब) की पाठशाला का उद्घाटन समारम्भ श्री पं० कन्हैया लाल जी मिश्र काशी द्वारा हो रहा है। [पृष्ठ १९८]

होता था कि बुर्का वाली स्त्री के मुख को देखने का यत्न करना चाहिये कि कैसा है ? परन्तु जब से इस विषमूलक प्रथा को हम लोगों ने समूल नष्ट किया, तब से हम लोगों के मन में स्त्रियों का मुख देखने के लिये बुरा भाव उत्पन्न ही नहीं होता। क्योंकि जो वस्तु ढाँप कर रखी जाती है, उसके देखने की सब को ही इच्छा होती है। परन्तु जो वस्तु खुली है उसको देखने का भाव किसी को नहीं होता। इस राजाज्ञा से हमारे देशवासियों के मन में शुद्ध भाव उत्पन्न हो गये जिस कारण हम लोगों का आचार ऊँचा हो गया।"

देवियाँ खुले मैदान में

मैंने कहा "महोदय ! यह विषमूलक प्रथा आपके देश में कब से चली और कहाँ से चली !" इसका उत्तर श्रीयुत स्याम ने इस प्रकार दिया—"हम ईरानी लोग पहिले अपने को आर्य कहा करते थे, जिस प्रकार भारतवर्ष में आप हिन्दू हैं। हम लोग आप लोगों के समान हिन्दू थे। इसके पीछे हम लोग जरदोस्थी बने। जरदुस्थ का मार्ग भी हिन्दू धर्म की एक शाखा ही थी। क्योंकि जरदुश्थ उपासक आग में चन्दन जलाकर वायु शुद्ध करते थे, और उनकी प्रार्थना आदि सब कुछ हिन्दुओं की प्रार्थना के तुल्य है। परन्तु उमर नामक खलीफ़ा ने ईरान पर चढ़ाई कर युद्ध द्वारा ईरानियों को परास्त किया और उस समय के हमारे पूर्वजों को खड्ग का भय दिखा कर मुसल्मानियत की दीक्षा दी। जिन लोगों ने यवनीय दीक्षा लेना स्वीकार न किया, वे खड्ग के घाट

उतारे गये और जिन्होंने खड्ग के भय से यवनीय दीक्षा ले ली, वे सब यवन बनाये गए। हमारे कुछ भाई जो अपने जीवन की रक्षा कर सके वे ईरान देश से भागकर भारतवर्ष जा बसे। जो इस समय भी भारतवर्ष में पारसियों के नाम से पुकारे जाते हैं। इस प्रकार जिस समय हमारे देश में यवनीय मत का प्रचार हुआ उस समय खलीफ़ाओं की आज्ञा से हम लोग अपनी स्त्रियों को बुर्क़ा में ढाँप कर रखने लगे। यवनीय मत के प्रसार के प्रथम हमारे देश में पर्दा रूपी विषमूलक प्रथा न थी। उस समय हमारे देश की देवियाँ खुले मैदान में आज की भाँति प्राकृतिक आनन्द लिया करती थीं।"

धर्म की क्षति समझा करें

मैंने कहा "मुझे गवादर और मसकत तथा सूर में कुछ ऐसे यवन सुन्नी मिले हैं जो ईरानी प्रजा हैं। वे ईरान छोड़कर उन स्थानों में आठ दस वर्षों से बस गये हैं। उनसे मैंने ईरान छोड़ने और उधर आ बसने का कारण पूछा था। उन्होंने शाह रजा अलीशाह की कड़ी आलोचना करते हुए कहा था "यवन महिलाओं में बुर्क़ा रखना और उनको पर्दे में रहना यवन मत के सिद्धान्त का पालन करना है। परन्तु शाह रजा अलीशाह ने बुर्क़ा उठवा कर यवन मत के इस सिद्धान्त पर पानी फेर दिया और कुफ्र का कार्य प्रारम्भ कराया। इसी कारण हम लोग ईरान छोड़ कर इन स्थानों पर आ बसे हैं।" इसलिये मैं आप से जानना चाहता हूँ कि क्या इस प्रकार स्त्रियों को बुर्के में रखना आपके

धर्म का सिद्धान्त नहीं है ?" इसका उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया। "महोदय ! जब से हमारे देश का शासक शाह रजाअली-शाह हुआ है तब से उसने हमारी आँखों के सामने से मूर्खता का पर्दा हटा दिया है। जब हमारे देशमें बुर्का की प्रथा थी, तब कितने विदेशी लोग बुर्का डाल कर स्त्री रूप में हमारे देश में आते और स्त्रियों में घुसकर हमारे देश का भेद लेते थे। बुर्का डालकर बुर्के के अन्दर कैमरा छुपाये रहते थे और घूमते फिरते थे, अवसर पाते ही हमारे देश के आवश्यक स्थानों का चित्र खींच लेते थे। जिन चित्रों से वे सर्व प्रकार के मार्गों का ज्ञान कर हमारे देश को कभी क्षति पहुँचा सकते थे। इसके अतिरिक्त बुर्के के कारण आचार भी शुद्ध नहीं रह सकता। इसलिये धर्म के जिस नियम से हमारे देश को क्षति पहुँचने का भय हो, हम उस नियम को कदापि मानने के लिये सहमत नहीं हैं। लोगों की इच्छा ! वह इससे धर्म की क्षति समझा करें।"

प्रबन्ध की सुन्दरता है

मैंने फिर पूछा "माननीय महोदय ! हमारे भारतवर्ष में यदि कोई मुसल्मान इस प्रकार धर्म विरुद्ध कार्य करे तो भारत के मुल्ला और मौलवी गण उसे तुरन्त कुफ्र का फतवा दे देंगे। तो क्या ईरान में मुल्ला और मौलवी साहबान इस बात पर विचार नहीं करते और इस राजाज्ञा का विरोध उन लोगों ने नहीं किया ?" मिस्टर श्याम ने कहा "महोदय ! भारतवर्ष के मुसल्मान मजहब पहिले और देश पीछे समझते हैं, क्षमा कीजियेगा, इसी

कारण आप लोग गुलाम हैं। यह मज़हब कैसा ? कि जिसके नियमों से देश को क्षति पहुँचे। यदि कोई नियम किसी कारण किसी ने चला भी दिया हो, सम्भव है कि उस समय के लिये वह नियम लाभदायक रहा हो, अब यदि उस समय के उस नियम से इस वर्तमान युग में देश को क्षति पहुँचने का भय हो तो देशकी रक्षा के लिये उस नियम को समूल नष्ट करना चाहिये। कारण यह है कि यदि हमारा देश हमारे पास रहेगा तो हमारा धर्म भी हमारे पास सुरक्षित रह सकता है। रहा मुल्ला मौलवियों का फतवा ! सो इस विषयमें मुल्ला मौलवियों ने अवश्य आन्दोलन किया था और यह आन्दोलन राजाज्ञा के विरुद्ध था, इस कारण यह आन्दोलन देशद्रोहियों का समझा गया, जिससे आन्दोलन कारियों को समुचित दण्ड दिया गया। बस ! तबसे सारा आन्दोलन समाप्त हो गया। मैंने सुना है कि भारतवर्ष में मुल्ला और मौलवी गण कोई परिश्रम न कर मुफ्त का माल उड़ाते हैं और यही कारण है कि उनको समय कुसमय का विचार नहीं रहता और अपनी इच्छानुसार फतवे आदि देते रहते हैं। क्योंकि उनको दूसरा काम ही नहीं है। हमारे देश में जितते मुल्ला और मौलवी पहिले से मुफ्त का माल उड़ा रहे थे, उनके मुफ्त के माल का मार्ग सरकार द्वारा बन्द किया गया। उनको राज नियमानुसार श्रम करके रोटी कमाने को विवश किया गया। जिस मकान में सारे लोग मुल्ला की पदवी को प्राप्त थे। उनमें केवल एक ही मुल्ला रखा गया। शेष लोगों की मुल्ला की पदवी छीन ली गई। जो

मुल्ला की पदवी को प्राप्त हुआ उसे भी मेहनत करके खाना होगा ऐसा नियम बना दिया गया। जिन मुहल्लों में अधिक मस्जिदें थीं उनमें केवल एक एक मस्जिद रखी गई और शेषों को मकतब बना दिया गया। मस्जिदों के न्यून होने से मुल्लाओं में भी कमी स्वाभाविक हो गई। इस प्रकार मुल्ला कम हो गये। उनको अपने काम से अबसर ही नहीं मिलता, क्योंकि मेहनत करके रोटी खानी पड़ती है फिर उनको इतना समय कहाँ कि वे बैठ कर फतवा ही देते रहा करें। यह हमारे बादशाह के प्रबन्ध की सुन्दरता है जो मुफ़्त का माल उड़ा रहे थे उनको परिश्रम करके भोजन करना सिखलाया।"

ईरानी प्रजा बनाना चाहती है

मैंने पूछा "मैंने सुना है कि ईरान में जो भारतीय बसे हैं, उनको आपकी हुकूमत की ओर से विवश किया जाता है कि वे ब्रिटिश प्रजा न रहें किन्तु वे नियमानुकूल ईरानी प्रजा बन जावें मुझे गवादर में लगभग एक सौ हिन्दू और मुसल्मान भी ऐसे मिले जो ईरान का बन्दर चारबार छोड़कर गवादर में आ बसे हैं। उनका यह भी कहना है कि ईरान सरकार हमको अपनी प्रजा बनाने को विवश करती थी इस कारण हम लोगों ने ईरान छोड़ दिया। क्या यह सत्य है? यदि सत्य है तो ऐसा क्यों किया जाता है?" उन्होंने इस प्रश्न को बड़ो गम्भीरता से सुना। फिर उसका उत्तर इस प्रकार दिया। "मेरे प्यारे दोस्त! यह आपने बड़ा टेढ़ा प्रश्न किया है परन्तु मैं भी आपको यथा शक्ति अपनी

जानकारी के अनुसार ही उत्तर दूँगा। सुनिये! भारतीय लोग जिस देश व टापू में अधिक संख्या में बस जाते हैं। उस टापू व देश में ब्रिटिश सरकार की ओर से उनकी रक्षा के लिये ब्रिटिश सरकार का एक प्रतिनिधि भी आ पहुँचता है क्योंकि भारतीय उनकी प्रजा हैं। इस बात से संसार को इन्कार नहीं है कि ब्रिटिश लोग संसार में कूटनीति में निपुण हैं और अपनी कूट-नीति के बल से अफ्रीका का जंजीवार टापू मसकत सुल्तान के हाथ से निकाल लिया। अब यदि भारतीय ब्रिटिश प्रजा हमारे देश में अधिक बसेगी तो आवश्यक है कि ब्रिटिश प्रतिनिधियों की संख्या भी बढ़ती जायेगी। फिर हम नहीं कह सकते कि कब और कैसे इनकी नीति हमारे देश में प्रबल हो जावे जिससे हमारे देश को क्षति पहुँचे। इस कारण इन बातों को विचार कर हमारी सरकार भारतीयों को ईरानी प्रजा बनने की सम्मति देती है। भारतीयों का व्यवसाय भी हमारी सरकार नहीं उठाना चाहती। अब आप ने समझ लिया होगा कि क्यों हमारी सरकार भारतीय ब्रिटिश प्रजा को ईरानी प्रजा बनाना चाहती है।"

देश की रक्षा होना असम्भव है!

मैंने उनसे फिर पूछा, "ईरान के चारबार बन्दरमें सेठ रेलूमल उत्तमचन्द की बड़ी दूकान हैं। उनकी एक दूकान गवादर में भी है। इन दूकानों के मालिक सेठ मूलचन्द ने मुझे गवादर में बतलाया था। "चार बार में उनकी एक बहुत बड़ी वाटिका है उनको ईरान सरकार की ओर से आज्ञा मिली है कि वह अपनी वाटिका

किसी ईरानी प्रजा के हाथ उचित दामों पर बिक्री कर दें" ऐसी आज्ञाएँ आपकी हुकूमत से क्यों निकाली जाती हैं ? इसका उन्हों ने इस प्रकार उत्तर दिया, "महोदय ! ईरान सरकार ने एक नियम पास किया है "ईरान की भूमि ईरानी प्रजाके अतिरिक्त अन्य लोग मोल नहीं ले सकते" आप सोचिये ! आजकल देशकी रक्षा के लिये ऐसे कानून की कितनी आवश्यकता है। इसी कारण हमारी सरकार नहीं चाहती कि ईरान की भूमि ईरानी प्रजा के अतिरिक्त अन्य के पास रहे। आप मुझे घृणा की दृष्टि से मत देखिये क्योंकि मैं आपको अपनी देश की रक्षा के मार्ग बतला रहा हूँ। मेरा बिचार है कि यदि कभी आप भारतवर्ष को स्वतन्त्र कर सके तो आपको भी यही नियम अवश्य बनाना पड़ेगा। क्यों कि आज कल इसके बिना देश की रक्षा होना असम्भव है।

हम और आप लोग किसी दिन एक रूप में होंगे

फिर उन्होंने मुझसे कहा, "आप अपना पता मुझे दीजिये क्योंकि मेरा विवाह इस वर्ष शीराज़ में होनेवाला है। मैं आपको अपने बिवाहमें सम्मिलित होनेके लिये आमन्त्रण भेजूँगा" मैंने अपने पते का छपा कार्ड उनको दे दिया। उन्होंने कार्ड पढ़कर मुझ से पूछा, "कन्हैयालाल" आपका नाम है ? मैंने कहा, "जी !" उन्होंने कहा, "इसका क्या अर्थ है ?" मैंने कहा, "आपका नाम श्याम है और मेरा नाम कन्हैया ! दोनों नाम हमारे पूर्वजों में भगवान् कृष्ण जो पाँच हजार वर्ष पूर्व हुये हैं; उनके ही थे। इसलिये आपका और

मेरा नाम एक ही अर्थ रखता है। आप अभी मुझसे कह रहे थे कि हम लोग आर्य (हिन्दू) थे सो आपका नाम इस समय भी आर्यत्व प्रकट करता है" मेरे इन वाक्यों को सुन उनके चेहरे में प्रसन्नता की आभा झलकने लगी और इस प्रकार कहने लगे, "महोदय ! निस्सन्देह हम ईरानियों की मुखाकृति आप लोगों से अवश्य मिलती है। हमारे हाथ पैरों की बनावट भी आप लोगों के समान है। हमारे देश के बाल वृद्ध, स्त्री पुरुष सब भली प्रकार जानते हैं कि हम आर्य (हिन्दू) थे। हमारी प्राचीन भाषा ज़रदोस्थी भाषा थी, अब आजकल ज़रदोस्थी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाये जाने का यत्न हो रहा है। हम लोग फ़ारसी से प्रेम नहीं करते किन्तु अपनी प्राचीन भाषा से प्रेम बढ़ा रहे हैं। हमारे यहाँ से हिजरी सम्बत् भी हटाया जा रहा है किन्तु ज़रदोस्थी सम्बत् लिखने का प्रचार हो रहा है। प्यारे मित्र ! हमारा आपका रक्त एकही है। परमात्मा वह दिन अवश्य लायेगा कि **"हम और आप लोग किसी दिन एक रूप में होंगे।"**

बसरा पहुँचा

इस प्रकार मेरी और मि० श्याम की बात चीत होती रही। मामरा बन्दर आया और मि० श्याम वहाँ उतर गये। अब मैं अपने कार्य में पुनः लग गया। ता० ५-६-३६ को हमारा जहाज बसरा की जट्टी पर पहुँचा। जट्टी पर लाला शङ्करलाल मुझे उतारने आये थे, क्योंकि उनको श्रीयुत विश्राम भाई ने मसकत से

मेरे सम्बन्ध में तार दिया था। लाला शंकरलाल जी मुझ से मिले और सामान कस्टम आफिस से जँचा कर मुझे अपने मकान पर ले गये। मैंने लाला शंकरलाल से कहा, "मुझे मसकत में श्रीयुत विश्राम जी रोक रहे थे और कहते थे कि आप मसकत में जन्माष्टमी उत्सव मना कर बसरा जाइये। परन्तु मेरी इच्छा ईराक में जन्माष्टमी उत्सव मनाने की थी। कल जन्माष्टमी है। मैंने पूछा यहां कुछ उत्सव का प्रबन्ध है या नहीं ?" इस पर लाला शंकरलाल ने कहा, "बसरा में हिन्दुओं की कोई सभा नहीं है। इस कारण यहाँ तो उत्सव कहीं भी नहीं होगा। बग़दाद में आर्य समाज है और हब्बानियाँ में भी आर्य समाज है। वहां कल कृष्ण जन्मोत्सव अवश्य मनाया जायेगा। मेरे पास भी निमन्त्रण आया है।" मैंने कहा "इस समय ६ बज चुके हैं ट्रेन बग़दाद कब जाती है ?" लाला जी ने कहा "सवा सात बजे मेल जाती है," मैंने पूछा "बग़दाद कब पहुँचेगी ?" लाला जी ने कहा "कल प्रातःकाल आठ बजे, केवल १५ घण्टे में" मैंने कहा, "आप वहाँ वालों को अभी तार दे दीजिये और मुझे स्टेशन पर पहुँचाइये।" मेरी इन बातों को सुन कर लाला शंकरलाल तथा उनकी धर्म पत्नी जी मुझसे कहने लगीं, "पण्डित जी ! ऐसा तो न हो सकेगा कि आप इतनी लम्बी यात्रा जहाज द्वारा करके अभी उतरे हैं और अभी ही हम लोग आपको ट्रेन पर बिठला आवें। आप अतिथि हैं, हमारे उपदेशक हैं, आप चार छै दिन तो कम से कम हमारे पास ठहरिये जिससे हम लोग आपकी

सेवा का कुछ लाभ उठा सकें।" मैंने उनको उत्तर दिया, "देवी जी! मैं वापिस इसी मार्ग से आऊँगा, उस समय आपके पास ठहर जाऊँगा। कल आर्य समाज में उत्सव है। इस कारण मुझे जाने की ही आज्ञा दीजिये।" मेरे अधिक आग्रह करने पर लाला शङ्करलाल ने बड़ी कठिनाई से मुझे बग़दाद जाने की अनुमति दी।

हब्बानिया के लिये प्रस्थान

उसी समय लालाजी ने मोटर मँगवाई और मेरा सामान मोटर पर रखवा मुझे मार्गिल स्टेशन पर लाये। ट्रेन जाने के लिए केवल पाँच मिनट शेष थे। तुरन्त टिकट लिया और मैं ट्रेन पर बैठ गया। ट्रेन चल पड़ी। यह डिब्बा सैकण्ड क्लास का था। इसमें भारतवर्ष के ट्रेन के सैकण्ड क्लास के बराबर आराम नहीं था तथापि सीट पर गद्दा पड़ा था और बिजली का पंखा भी लगा था। खिड़कियों को बन्द करने के लिये शीशा, जाली और काठ के तख्ते थे। इस प्रकार खिड़कियों को तीन वस्तुओं से ढांपा जाता था। बाहर की ओर खिड़कियों के नीचे भी आने जाने का मार्ग था और उस मार्ग के साथ द्वार से मिली हुई पृथक् खिड़कियाँ थीं वह भी इसी प्रकार तीन वस्तुओं से ढाँपी गई थीं। परन्तु जब ट्रेन चली तब इतनी गर्द उड़ती थी कि डिब्बे के भीतर गद्दे पर, सामान पर एक एक इंच गर्द जम गई। सवारियों की आँखों के ऊपर, बालों के ऊपर, कपड़ों पर धूल जम गई। मुझे तो रात को धूल के कारण खाँसी आने लगी। इस गर्द के कारण सारी

रात नींद न आई। दूसरे दिन मैं बगदाद पहुँचा। महाशय जयदेव शर्मा मुझे लाला जगन्नाथ जी के गृह पर ले गये जहाँ मैंने स्नान सन्ध्या की और भोजन करके लाला अमरनाथ प्रधान आर्य-समाज हब्बानिया के साथ मैं मोटर द्वारा हब्बानिया चला। बग-दाद से हब्बानिया लगभग पचास मील दूर है। हब्बानिया में ब्रिटिश सरकार की ओर से रायल एयर फोर्स छावनी बनी है। इसके फाटक पर हमारा मोटर सन्ध्या समय पांच बजे पहुँचा। लाला अमरनाथ जी ने फाटक के पहरेदार गोरे को अपना पास दिखलाया और मेरे लिये कहा, "यह हमारे अतिथि हैं। कल जहाज से उतरे हैं। इनका पास हम कल बनवा लेंगे आप इनको भीतर जाने की आज्ञा दीजिये।" परन्तु उसने कहा, "मैं विना किसी अफसर की आज्ञाके भीतर जानेकी आज्ञा नहीं दे सकता। क्योंकि ऐसा मुझे अधिकार नहीं है।" मैं मोटरसे उतर पड़ा। मुझे उस गोरे सिपाही ने कुर्सी दी, मैं उस पर बैठ गया। लाला अमर नाथ मोटर लेकर भीतर गये, पूरे एक घण्टे अफ़सरों से मिलने का यत्न करते रहे। परन्तु कोई भी अफ़सर न मिल सका। क्योंकि सारे अफ़सर सन्ध्या के कारण इधर उधर घूमने चले गये थे। लाला अमरनाथ फाटक पर वापिस आये। उस गोरे को बहुत समझाया तब उसने मेरा पासपोर्ट अपने पास रखकर केवल ढाई घण्टे का समय सभा में सम्मिलित होने को दिया। इस प्रकार मैं बड़ी कठिनाई से भीतर गया। पण्डित दीनानाथ मन्त्री आर्यसमाज हब्बानिया के गृह पर कृष्णोत्सव मनाने की आयोजना कीगई

थी। लाला अमरनाथ जी की अध्यक्षता में मैंने "भगवान कृष्ण की जीवनी पर" सवा दो घण्टे भाषण दिया। भाषण लोगों को रुचि कर जान पड़ा। इस कारण सबने कहा, "कल पं० जी के लिये कम से कम एक सप्ताह के लिये पास बनवा लेना चाहिये जिससे इनके भाषणों से हम लोग कुछ लाभ उठा सकें।" पश्चात् लाला अमरनाथ मुझे अपने मोटर में बिठलाकर उसी फाटक से बाहर लाकर कुली कैम्प में ठाकुर कृष्णचन्द्र के गृह पर ठहरा गये। जहाँ पर मैं ६-६-३६ से १३-६-३६ तक ठहरा। क्योंकि इस बीच पास लेने का प्रबन्ध मन्त्री महोदय करते रहे और पास भी मिल गया।

हब्बानिया के भीतर

ता० १३-६-३६ को पं० दीनानाथ जी ने मेरे पास २०-६-३६ तक का पास भेजा। ठाकुर कृष्णचन्द्र जी मेरा सामान साथ लेकर मुझे पं० दीनानाथ के गृह पर पहुँचा गये। यह स्थान चारों ओर काँटेदार तारों से घेरा गया है। इसका रूप वर्गाकार है। चारों ओर की तार की दीवार दो दो मील लम्बी हैं। यहां पर ब्रिटिश सरकार ने हवाई जहाजों का अड्डा बना रखा है। सैकड़ों हवाई जहाज रखे हैं और नियमानुकूल गोरों को हवाई जहाज बनाना और उनको उड़ाना सिखाया जाता है। डाकखाना, तार घर, हवाई तारघर तथा बड़े बड़े कारखाने इस स्थान पर सीमा के भीतर ही बने हैं। सहस्रों पुरुष यहाँ काम करते हैं। लगभग दस बारह पंजाबी हिन्दू भी इसी स्थान पर क्लर्क का काम करते

हैं। इन लोगों ने मिलकर यहाँ एक आर्य समाज नामक संस्था बना रखी है। फोर्स के अफसरों ने बड़ी कृपा कर इनको अपने धार्मिक कर्तव्य पूर्ण करने के लिये अपनी सीमा के भीतर भूमि भी बिना दाम के दे दी है।

इस समय योरोप में युद्ध छिड़ने के कारण ब्रिटिश सरकार का व्यय अधिक बढ़ गया है इस कारण आर्यसमाज भवन बनाने को ब्रिटिश सरकार से रुपया नहीं मिल सका। परन्तु फोर्स के अफसरों ने आर्य समाज के अधिकारियों को वचन दिया है "अभी आप लोग अपने रुपयों से भवन निर्माण कर लीजिये पीछे सरकार की ओर से आप लोगों को भवन निर्माण का रुपया वापिस मिल जायेगा"

ब्रिटिश सरकार ने इसी प्रकार सिक्खों को भी भूमि दे रखी है जिस पर सिक्खों ने भी गुरुद्वारा बना रखा है। मुसल्मानों को भी सरकार ने मुफ्त में स्थान देकर अपने खर्च से मसजिद बनवा दी है। लोगों की रुचि अनुसार मंत्री आर्य समाज ने अर्जी देकर मेरा पास २० ६-३६ से ५-१०-३६ तक बढ़वा लिया। पं० दीनानाथ जी के मकान पर मैं नित्य रात्रि में दो घण्टा आर्य समाज के भिन्न भिन्न सिद्धान्तों पर भाषण देता रहा। भाषणों में सिक्ख महानुभाव भी आते थे। उपस्थितिमें सेठी राजासिंह जी का नाम उल्लेखनीय है। यह सज्जन बराबर आते थे और शंका भी किया करते थे। जिनका मैं यथोचित उत्तर दिया करता था। यहाँ के आर्य समाजी अपना भवन बनाना चाहते थे।

जिस कारण उन्हें भवन निर्माणार्थ चन्दा संग्रह करना था। मेरे साथ डी० ए० वी० कालिज काशी की भी अपील थी। जिसके लिये इन लोगों ने बड़ी सहिष्णुता के साथ मुझे सम्मति दी कि आप अतिथि हैं आप पहिले अपना चन्दा कर लीजिये। पीछे हम लोग चन्दा करते रहेंगे। उनकी इस सम्मति से मैंने चन्दा प्रारम्भ किया। चन्दा कराने और उसको सफल बनाने में ठाकुर कृष्णचन्द्र ठेकेदार हब्बानिया और महाशय जयदेव शर्मा उपमंत्री आर्यसमाज बगदाद ने विशेष यत्न किया था। जिसके लिये उक्त दोनों सज्जन धन्यवाद के पात्र हैं। इस प्रकार मैं उधर का कार्य समाप्त कर बगदाद आया। बगदाद में लाला जगन्नाथ प्रधान आर्य समाज बगदाद तथा अन्य आर्य सज्जनों की यह सम्मति हुई कि यहाँ प्रथम हब्बानिया भवन निर्माणार्थ चन्दा किया जाये, पश्चात् काशी के लिये चन्दा किया जाथे। मैं महाशय गुलशन जी से सम्मति लेकर बसरा जाने को प्रस्तुत हुआ जिससे बगदाद में व्यर्थ बैठकर समय व्यर्थ न जाये।

बसरा के लिये प्रस्थान

महाशय जयदेव शर्मा ने मुझे सम्मति दि कि मैं बसरा में लाला चरणदास के पास ठहरूँ। क्योंकि वे सज्जन आर्यसमाज के अच्छे प्रेमी, वीर तथा साहसी पुरुष हैं। महाशय जयदेव शर्मा जी ने लालाजी के नाम पत्र स्वयं लिख कर दिया, और महाशय गुलशनजी से भी लिखवा कर दिया। इतना ही नहीं

महाशय जयदेव शर्मा ने लाला चरणदास के पास अर्जेण्ट तार भी मेरे सम्बन्ध में दिया। मैं इस प्रकार ६-१०-३६ को ट्रेन पर बैठकर बसरा की ओर चल पड़ा। १०-१०-३६ को प्रातःकाल मैं मार्गिल स्टेशन पर पहुँचा। स्टेशन पर कोई न आया था। सामान कुली से उठवा मोटर पर रखवा कर लाला चरणदास जी की दूकान पर पहुँचा। लाला जी ने मुझे मोटर में देख मोटर में झुक कर मुझ से पूछा "आप तो आशार में ठहरेंगे?" मैंने कहा "नहीं, मैं आपके पास ही ठहरूँगा।" इस पर उन्होंने मेरा सामान उतरवाया और मुझे अपने घर भेजवा दिया।

कार्य क्रम

११-१०-३६ को लाला चरणदास जी मुझे लाला शङ्कर लाल जी के पास ले गये। वहां मिस्टर बैंकी मदरासी सज्जन के गृह पर निश्चय हुआ कि यहां प्रचार तो हो नहीं सकता। परन्तु कल से हम लोग डी० ए० वी० कालिज काशी के निमित्त चन्दा करके पण्डित जी को दे देंगे। मिस्टर नवाब दीन एक पंजाबी मुसल्मान हैं, जिनकी लाला चरण दास से विशेष प्रीति है। मि० नवाब दीन कट्टर मुसलिम हैं और इसी नाते मि० नवाब दीन ने लाला चरण दास आदि को यह बतलाया "इस चन्दे के कराने में एराकी सरकार के कानून के भङ्ग होने का भय है। इस कारण चन्दा सोच समझ कर कराना चाहिये" इन बातों को सुन कर चन्दे का डेप्यूटेशन छिन्न भिन्न हो गया।

इण्डियन क्लब

बसरा में एक इण्डियन क्लब है जिसका वार्षिक चुनाव १५ अक्टूबर सन् १६३६ को हुआ। चुनाव में सेठ कासिम अली प्रधान चुने गये। इस चुनाव की दशा को देखकर मुझे प्रतीत होता था कि इन लोगों ने क्लब तो बना रखा है परन्तु इनका परस्पर विरोध बहुत है। इस क्लब के भीतर ही दो तीन पार्टियाँ हैं जो सर्वदा एक दूसरे के विरोध में आन्दोलन किया करती हैं। इस विदेश में भी फूट इनके साथ भारत वर्ष से आई है। किसी प्रकार चुनाव का कार्य समाप्त हुआ। पश्चात् सेठ कासिम अली ने मुझ से इच्छा प्रकट की कि मैं कुछ उपदेश सुना दूँ। मैं ने "सङ्गठन की आवश्यकता" पर एक घण्टा भाषण दिया जिस भाषण की सेठ कासिम अली प्रधान क्लब ने प्रशंसा की और लोगों से अपील की कि "जब पण्डित जी डी० ए० वी० कालिज काशी की अपील लेकर किसी के पास जावें तो हम सब को भारतीय के नाते पण्डित जी की सहायता समुचित रूप से करनी चाहिये।" मि० नवाब दीन ने भी कुछ इधर उधर की बातें सुनाईं। सभा समाप्त हुई।

मि० नवाब दीन का जादू काम कर गया

लाला चरण दास मुझ से रात्रि में १८-१०-३६ को कहने लगे "आज मेरे पास एराकी सी० आई० डी० आया था। उसको किसी ने आपके आने की रिपोर्ट दे दी है। उसने बहुत से प्रश्न

आपके सम्बन्ध में किये, जिनका उत्तर मैं ने स्वयं दे दिया" मैंने कहा "लाला जी यह कोई नवीन समाचार नहीं है, क्योंकि मैं एराकी नहीं हूँ। सी० आई० डी० का मेरे विषय में पूछ ताछ करना उनका अपना कर्तव्य है। परन्तु आपने उनको सीधे क्यों उत्तर दे दिया ? आप उनको मेरे पास ले आते मैं उन को उनके प्रश्नों का 'उत्तर स्वयं दे देता '। लाला जी ! प्रत्येक देश में सी० आई० डी० रहती है और इस प्रकार आने जाने वालों का पता लगाना उनका अपना कर्तव्य है।" यह सुनकर लाला जी चुप हो गये। १६-१०-३६ को लाला चरण दास ने अत्यन्त घबराहट के साथ कहा "क्या आज बगदाद न जायेंगे ? क्योंकि आप के पीछे सी० आई० डी० लगी है। मुझे आपके कारण पुलिस में बुलाया जायगा। मैं परिवार वाला आदमी हूँ। मैं बड़ी कठिनाई में पड़ूँगा। मैं इन बातों से बहुत डरता हूँ। आप चले जावेंगे तो मैं बच जाऊंगा।" मैं ने कहा "मेरे पास ब्रिटिश सरकार का पास पोर्ट है और एराकी सरकार की ओर से वीजा मिला है। मैं खूनी नहीं हूँ, डाकू नहीं हूँ, चोर नहीं हूँ, किसी गवर्नमेण्ट के राज को उलटने वाला नहीं हूँ। आप क्यों डरते हैं ? सी० आई० डी० के आने पर आप मुझे उसके समक्ष उपस्थित कर दीजिये, मैं उसके प्रश्नों का यथोचित उत्तर दूँगा।" लाला जी ने कहा 'मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप इसी ट्रेन से बगदाद चले जाइये, नहीं तो मैं फंस जाऊँगा" मैं ने कहा "कोई बात नहीं, आपको यदि भय है तो मैं आपको भय रूपी कष्ट नहीं

देना चाहता। मैं इसी ट्रेन से चला जाता हूँ। अन्त में लाला जी शीघ्रता के साथ मेरा सामान उठवा कर मोटर पर रखवा कर गाड़ी छूटने से डेढ़ घण्टा प्रथम मुझे स्टेशन पर ले आये। मैंने बहुतेरा पूछा कि सी० आई० डी० से आपकी क्या बात चीत हुई थी ? आप क्यों इतना डर गये ? जिसका उत्तर लाला जी ने यह दिया "मैं आपको कल सब समाचार लिखूँगा आप पढ़ लीजियेगा।" इस प्रकार कह कर लाला जी ट्रेन छूटने पर प्रसन्नता पूर्वक स्टेशन से वापिस लौट पड़े। मैं ने सोचा कि लाला चरण दास पर मि० नवाब दीन का जादू काम कर गया।

बगदाद

बगदाद नगर ईराक का प्राचीन नगर है। यह नगर मुसल्मानों के खलीफाओं की राजधानी रहा है। यह नगर दजला नदी के किनारे वसा है। आज से दस वर्ष पूर्व जहाँ जी चाहता था लोग शौचादि क्रिया किया करते थे। इस कारण इस नगर के प्रत्येक स्थान गन्दगी से परिपूर्ण थे। जब ईराक में ब्रिटिश सरकार ने किंग फैसल को मक्के से लाकर सन् १९२१ ई० में गद्दी पर बिठलाया तब से किंग फैसल ने बगदाद का रूप ही बदल दिया। जिस नगर में पहिले झोंपड़ियाँ दिखाई पड़ती थी आज वहाँ पर दो महले गृह निर्मित हो चुके हैं। जिस नगर में गन्दी और संकड़ी गलियाँ थीं, आज उनके स्थान पर बड़ी बड़ी चौड़ी सड़कें बनी हुई हैं। जिस नगर में लोग पहिले साधारण देशी ढङ्ग से अलंकृत दीखते थे, आज ये कोट पतलून पहिने योरोप के ढँग से

अलंकृत दिखाई पड़ते हैं। जिस नगर में पहिले स्त्रियाँ बुर्का पहिने देशी वस्त्रों से देशी ढंग से अलंकृत दिखती थीं। आज वे स्त्रियाँ योरोपीय स्त्रियों के समान वस्त्रों से अलंकृत खुली सड़कों पर घूमती फिरती, बाज़ारों में दूकानदारों से वस्तु मोल लेती, बाग बाटिकाओं की सैर करती हुई, खुले मुंह घूमती दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि बुर्के ने अभी तक यहाँ की यवनीय महिलाओं का सर्वान्श त्याग नहीं किया। तथापि बुर्के के भीतर समस्त महिलाएँ योरोपीय महिलाओं के सदृश ही वस्त्रों से अलंकृत रहती हैं। जिस शीघ्रता के साथ बगदाद में फैशन बढ़ रहा है उसको देखकर यह अनुमान हो सकता है कि लगभग दस वर्ष व्यतीत होने पर यहाँ की महिलाएँ बुर्के से अन्तिम प्रणाम कर लेंगी। उस समय बगदाद नगर की महिलाएँ फ्रांस के मुख्य नगर पेरिस की महिलाओं से भी फैशन में अपना नम्बर अधिक ले जायेंगी। इस नगर में सीरियन, आरमीनियन, टरकिश, यहूदी, नसारा और अरबों की बस्ती है। अरब स्त्री पुरुषों से, नसारा और यहूदियों को, परमात्मा ने अधिक सुन्दरता प्रदान कर रक्खी है। अधिकांश भारतीय हिन्दू तथा मुसलमानों ने इस सुन्दरता के चकाचौंध में पड़ सुन्दरता रूपी जादू में फँस यहां की सुन्दरियों को अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है। इस सुन्दरता रूपी जादू में फँसने के कारण अब वे भारतवर्ष तीस-तीस चालीस-चालीस वर्षों से नहीं आये और न आने का नाम लेते हैं। कितने तो इनमें से भारतीयता को तिलांजलि दे ईराकी बन गये हैं। जिन भारतीयों ने यहाँ की

महिलाओं से सम्बन्ध कर रखा है। उनमें से अधिकांश उन महिलाओं के व्यवहारों से प्रसन्न नहीं हैं और न उनको उन महिलाओं से सुख ही मिलता है। ऐसे व्यक्ति मुझे कई मिले जिन्होंने अपने कर्मों पर दो दो आँसू बहाते हुए कहा "भारतवर्ष की हिन्दू या मुसल्मान स्त्री भली प्रकार पतिव्रत धर्म के महत्व को समझती हैं, इस कारण भारतीय निर्धन होने पर भी भारतवर्ष में उन भारतीय महिलाओं के साथ स्वर्ग का आनन्द प्राप्त करते हैं। परन्तु हम लोग अधिक धन कमाने पर भी इस आनन्द से विमुख हो नर्क के द्वार पर खड़े हैं। यहाँ की स्त्रियाँ भोजन नहीं बनातीं। हम लोगों को रोटियां बाज़ार से लानी पड़ती हैं। प्रातः काल उठ कर चाय बना कर पहिले हमें श्रीमती जी की सेवा में भेंट करनी पड़ती है। इत्यादि बातों से हम लोगों का गृहस्थ जीवन बड़ा संकटमय बन रहा है। इनको छोड़ भी नहीं सकते क्योंकि जो धन हमने उनको छोड़ते समय देने की प्रतिज्ञा की है वह हमको देना ही पड़ेगा। अब उतना धन हमारे पास है नहीं, और व्यय इतना बढ़ा हुआ है कि बचत करके उतना धन संग्रह कर इस आपत्ति को भी नहीं टाल सकते। इस कारण अब भोग ही भोगना पड़ रहा है।" मुझे उनके हृदय विदारक वाक्यों को सुनकर उन पर बहुत दया आई। परन्तु इसकी औषध नहीं है क्योंकि यह रोग अब असाध्य हो गया है। भारतीय महिलाओं के प्रति ऐसे उच्चतम विचार सुनकर मेरा मस्तक ऊँचा होगया क्योंकि लोगों ने अपने अनुभव से यह बातें बतलाईं जिससे मैं



Domes & Tomb of H. M. Late King Faisal, Baghdad

बग़दाद में, ईराक के बादशाह फैसल तथा उसके पुत्र बादशाह ग़ाज़ी का मकबरा।

(पृष्ठ १६६)

गौर्वान्वित भी हुआ। मेरा विचार है कि प्रत्येक भारतवासी भारतीय देवियों के प्रति विदेशों में ऐसे गौरवपूर्ण विचारों को सुन अवश्य गौरवान्वित होगा।

कब्रें

किंग फैसल की मृत्यु होने पर नगर के साथ एक ओर एक सुन्दर भवन निर्माण कर उस भवन के विचले भाग में मृतक दफनाया गया है। इस भवन को सुन्दर तथा सुदृढ़ निर्माण किया गया है। इसके चारों ओर सुन्दर पुष्प पूर्ण वाटिका भी बनाई गई है। यहाँ पर सिपाहियों का पहरा है। किंग ग़ाज़ी की कब्र इसी भवन में किंग फैसल के साथ बनाई गई है। जब से किंग ग़ाज़ी की क़ब्र बनी, तब से कोई व्यक्ति इन कबरों को भीतर देखने नहीं जाने पाता। अहर्निशि पहरा रहता है। किंग ग़ाज़ी स० १६३६ मार्च में मोटर दुर्घटना से मरा था क्योंकि वह शराब बहुत पीता था, जिससे मोटर चलाते समय मोटर वृक्ष से टकरा गई, इस प्रकार किंग ग़ाज़ी की मृत्यु हुई थी।

इमाम अब्बू हनीफा की कबर

अजमा एक मुहल्ला है जो अब तक प्राचीन बग़दाद का चित्र चित्रित करता है। यहाँ पर एक छोटा सा बाज़ार है, जहाँ सड़क के दोनों ओर मोरियों के निकट बड़ी बड़ी रोटियाँ तन्दूर में पकी हुई अरब स्त्रियाँ टोकरियों में रखे बिक्री करती हैं। इन रोटियों को यहाँ "खुबस" के नाम से पुकारते हैं। खाने वाले उनको मोल लेकर हाथों में लटकाये चल देते हैं। यदि उनको

किसी कार्य वश भूमि पर बैठना पड़ा, तो उस खुबस को वह व्यक्ति चलती सड़क पर ही रख देता है। क्योंकि उनका ध्यान इस बात की ओर थोड़ा भी नहीं जाता कि ऐसे भोज्य पदार्थ को किसी शुद्ध स्थान पर ही रखना चाहिए। इस प्रकार इस बाजार को देखते हुए मैं इमाम अब्बू हनीफा की दरगाह के सामने पहुँचा। यह बहुत बड़ा भवन है। इसके बीच में एक बड़ा कमरा है, जहाँ पर सहस्रों व्यक्ति निमाज़ पढ़ सकते हैं और अपने मौलवी का भाषण सुन सकते हैं। किसी प्रकार की गुप्त योजना गढ़ना चाहें तो एकत्रित यवन गढ़ सकते हैं। क्योंकि इसके भीतर यवनों के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बी को जाने नहीं देते। इनके विश्वास से अन्य धर्मावलम्बी सब के सब काफिर हैं और यदि काफिर इसके भीतर आ जावें तो सारा मकान नापाक हो जावेगा। इस कमरे के सामने एक बड़ी कब्र बनी है जिस कब्र को सोने के पत्रों से मढ़ रखा है। दीवारों पर जहाँ तहाँ चाँदी के पत्रे और कुछ चमकीले पत्थर जड़े हैं। कमरे में लोग बैठे हुए कुरान शरीफ़ का पाठ करते हुए दिखाई देते हैं। यही कब्र इमाम अब्बू हनीफा की है। यह कब्र सुन्नी यवनों के विश्वासानुसार है। इस कब्र में लाखों रुपया भारतीय यवनों द्वारा भेंट (वक़्फ़) किया गया है और इस समय भी आता है। इसकी आय भी बहुत पर्याप्त संख्या में है। इसकी आय से इस दरगाह के महन्त ने कुरान शरीफ़ पढ़ाने आदि के लिये पाठ-शालाएँ भी खोल रखी हैं।

क़ाज़मान की क़ब्र

मैं अपने मित्र मि० सैय्यद अमीन साहब दिहलवी के साथ साथ ऊपर का सारा दृश्य देखता हुआ काज़मान की ओर चला। काज़मान भी एक बड़ा मोहल्ला है, जहाँ से यह मोहल्ला प्रारम्भ होता है, वहाँ पर एक बड़ा अहाता है। इस अहाते में शिया यवनों की अत्याधिक कबरें बनी हैं। मुझसे मि० सैय्यद अमीन साहब ने बतलाया "पण्डित जी! शियों का यह विश्वास है कि जब क़यामत आवेगी, उस समय परमात्मा न्यायालय खोल न्याय प्रारम्भ करेगा तब सबसे प्रथम इस अहाते की गड़ी हुई रूहों का ही न्याय करेगा। इस विश्वासानुसार मृतकों की अधिकाँश लाशें इसी अहाते में ही दफनाई जाती हैं। मैं उस अहाते को देखता हुआ आगे चला, जहाँ पर उस अहाते का केन्द्र स्थान है उसके साथ ही आजकल एक बड़ी सड़क निकाली गई है और उसके किनारे पर ही ईराकी सरकार का एक नवीन भवन बना है। जो डाकखाना है। मैंने मिस्टर सैय्यद अमीन साहब से पूछा, क्यों साहब! यह भवन तो नवीन जान पड़ता है। और ऐसा जान पड़ता है कि कबरों के ऊपर ही यह भवन खड़ा किया गया है। क्या ठीक है? मि० सैय्यद अमीन साहब ने कहा, "आप का विचार सर्वान्श सत्य है। यह भवन अभी चार पाँच वर्षों से ही ईराकी सरकार ने निर्माण कराया था। जिस समय इस स्थान पर भवन निर्माणार्थ खोदाई प्रारम्भ हुई उस समय सहस्रों शिया इसके चारों ओर एकत्र हो इसका विरोध करने लगे और कहने लगे

यहाँ पर भवन निर्माण न होना चाहिये। क्योंकि कयामत के दिन खुदा इसी स्थान की गड़ी रूहों का न्याय प्रारम्भ करेगा। उस एकत्र जनता में मैं भी था। देखिये ! सामने जो चौक है। ईराकी सरकार ने प्रथम जनता को समझाया कि वे लोग इस कल्पित बात पर विश्वास न करें। परन्तु जनता अपने ही विचारों पर दृढ़ रही, देखिये सामने जो चौक है, इसी चौक में मशीन गन लघवाकर गोली चलवानी प्रारम्भ करदी। उस समय मैं तो अपनी जान लेकर नौ-दो-ग्यारह हुआ। मेरे साथ ही भगदड़ मच गई। लगभग एकसौ व्यक्ति शहीद हो गये, और अधिकांश घायल हो गये जो अस्पताल पहुँचाये गये। सारा मैदान निर्जन हो गया फिर किसी ने चूँ न की और सरकार ने यह भवन डाकखाने के लिये निर्माण करा दिया। इस समय यहाँ पर डाकखाना है।" इस इस प्रकार मैं सय्यद साहब के साथ काजमान की कब्र के सामने पहुँचा। इसके चारों ओर लगभग ४८ फीट ऊँची और तीन फिट चौड़ी चहार दीवारी अत्यन्त सुदृढ़ बनाई गई है। इस चहार दीवारी को शाहईरान ने आज से सत्तर वर्ष पूर्व बनवाया था। इसमें चार बड़े बड़े और तीन छोटे छोटे दरवाजे हैं। जो बड़े बड़े द्वारों पर किवाड़े लगाये गये हैं वे भारत वर्ष के हैं, और यह भी कहा जाता है कि स० ७१२ ई० में जब मोहम्मद-बिन-कासिम ने सिन्ध पर चढ़ाई की थी, उस समय मुल्तान में सूर्य का मन्दिर बहुत विशाल बना था, जिसमें अतुल सम्पत्ति थी। मोहम्मद-बिन-कासिम ने सिन्ध विजय कर मुल्तान पर

चढ़ाई कर इस मन्दिर को विध्वंस किया था और सारी सम्पत्ति लूटी थी। जिस सम्पत्ति के साथ साथ उसने उस मन्दिर के चार मुख्य द्वार भी निकलवा कर ऊँटों में लदवा कर ईरान भिजवाया था, जो ईरान के मशहद नगर में रखे थे। जिस समय आज से सत्तर वर्ष पूर्व शाह ईरान ने काज़मान की चहार दीवारी को बनवाया। उस समय वही चारों द्वार किवाड़ों सहित काज़मान लाये गये और यहाँ द्वारों पर लगाये गये। वे द्वार और किवाड़े इस समय भी बड़े सुदृढ़ हैं और भारतीय कारीगरी का प्रमाण दिखला रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो यह फाटक अभी अभी बनाकर लगाये गये हों। इन द्वारों के अन्दर जाने पर एक बड़ा मैदान मिलता है। इस मैदानके केन्द्र में एक बड़ा भवन निर्मित है। गर्मियों में शिया यवन इसी मैदान में खड़े होकर निमाज पढ़ते हैं। यह मैदान केन्द्रित भवन के चारों ओर है। इस भवन की दीवारों पर चाँदी के पत्ते और चमकीले पत्थर लगाये गये हैं। चाँदी के पत्ते इस प्रकार लगाये गये हैं कि जिनको देखने से प्रतीत होता है कि यह समस्त भवन चाँदी की ईंटों से बैठाकर बनाया गया है। इस भवन के केन्द्र स्थान में इमाम मूसा काजिम और इमाम मोहम्मद नबी की कबरें बनी हैं। यह कबरें भी सोने के पत्तों से मढ़ी हुई हैं। इन कबरों के एक ओर बहुत बड़ा कमरा है, जिस कमरे में लगभग दस सहस्र मनुष्य बैठ कर निमाज़ पढ़ सकते हैं। इन कबरों के चारों ओर जहाँ तहाँ शिया यवन बैठ कर रोते, चीखते और हाय हाय करते दिखाई देते

तात्पर्य यह है कि इस प्रकार हम बाहर यह सब विलक्षणता देखते हुये एक ओर आ निकले। यहाँ दो घोड़ों से जोती हुई एक ऊँची और लम्बी गाड़ी मिली जिसके नीचे और ऊपर आदमी बैठते हैं, इसके पहिये रेल पर चलते हैं, परन्तु दो घोड़े ही इसको खींचते हैं। इस को दो घोड़े वाली ट्राम कहते हैं। मैं इस में बैठ कर नगर की ओर चला आया।

जबीदा खातून की क़ब्र

बगदाद में नगर के एक ओर एक ऊँचे स्थान पर एक छोटा भवन वृत्ताकार बना है। यह भवन साधारण पत्थरों द्वारा निर्मित है। इस भवन के भीतर जबीदा खातून की कब्र बनी है। ज़बीदा खातून खलीफा हारूँ रशीद की बीबी थीं। इनके समय से प्रथम ईराक तथा अरब प्रदेश में चिट्ठी पत्री एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का कोई प्रबन्ध न था। जब तक कोई व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान तक न जावे, तब तक एक-दूसरे का समाचार किसी प्रकार न मिलता था। जबीदा खातून ने अपने समय ऊँटों द्वारा चिट्ठी पत्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का प्रबन्ध किया, इस कारण जबीदा खातून का नाम ईराक के इतिहास में विशेष रूपसे लिखा गया है। क्योंकि उस समयकी प्रजाका विचार था कि जबीदा खातून ने डाकके प्रबन्ध को ऊँटों द्वारा प्रचलित कर अपनी तीव्र बुद्धि का प्रमाण दिया था। उस समय के लिये वह कार्य अवश्य आदर्श था। इनके कब्र के भवन के चारों ओर बहुत-सी और कबरें बनी हैं।



सितसबीदा मकबरा, बग़दाद

जिन्होंने अरब और ईराक के बीच ऊँटों के द्वारा डाक संचालित की थी, यह ख़लीफा हारूँ रशीद की बेगम थीं। (पृष्ठ २०६)

गुरु नानकदेव की बैठक

मैं दाना बहलूल जो खलीफा हारूँ रशीद का बड़ा भाई था, उसकी कब्र देखने गया। यह कब्र एक छोटे से मन्दिर के भीतर बनी है। इस कब्र पर एक लोहे का पिंजड़ा रखा है जिस पिंजड़ेके चारों ओर फटे पुराने अनेक रंगदार कपड़ों के चीथड़े बँधे थे। उस कब्र के महन्त से मैंने इन चीथड़ों के बँधे रहने का कारण पूछा। उसने कहा, "जिन महिलाओं के सन्तान न होती हो वह इसमें एक चीथड़ा बाँध दाना बहलूल से मन्नत मानती है। बस! दाना बहलूल उसको सन्तान प्रदान कर उसकी गोद भर देते हैं। इस लिये ये चीथड़े बांधे गये हैं" दाना बहलूल की कब्र का छोटा मन्दिर एक चहार दीवारी के भीतर बना है। इस मन्दिर के साथ इसी चहार दीवारी के भीतर एक दूसरा मन्दिर बना है। इस मन्दिरमें दरवाजे के सामने एक स्थान बना है जिस पर एक पत्थर लगा है। उस पत्थर पर अरबी लिपि में लिखा है:– "हिन्द के फ़कीर गुरु नानक मक्का जाते समय इसी स्थान पर बैठे थे और उन्होंने अपना श्रम इसी स्थान पर दूर किया था।" यह मन्दिर और चहार दीवारी सिक्खों ने बनवा रखी है। गुरु द्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर को उचित है कि इस पवित्र स्थान पर किसी अपने सिक्ख सेवक को नियुक्त कर दे। जिससे वह सर्वदा उस स्थान की सेवा कर गुरु नानक के नाम को वहाँ सजीव रखे। यह मेरा गुरु द्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर से विशेष आग्रह है।

नबी योशा

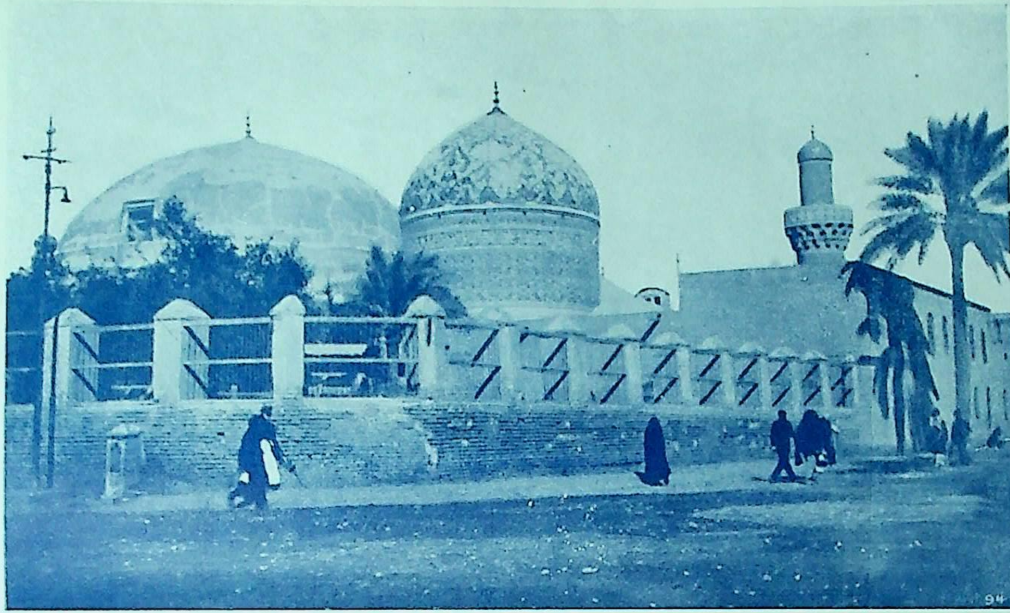
इसी मन्दिर के निकट एक और भवन निर्मित है। इस भवन के भीतर भी एक बड़ी कब्र है जो नबी योशा की है। नबी योशा हज़रत मूसा के मित्र थे और यहूदी थे।

शेख अब्दुल कादिर गिलानी

शेख अब्दुल कादिर गिलानी को भारतीय मुसल्मान पीर मानते हैं। इनकी दरगाह के चारों ओर काज़मान के समान चहार दीवारी बनी है। एक बहुत बड़ा मुख्य द्वार है जिसके सामने बहुत लम्बा चौड़ा मैदान पड़ा है। गर्मियों में सहस्रों यवन इस मैदान पर नमाज़ पढ़ते हैं। इस मैदान के साथ एक भवन बना है जिस की दीवारों पर चाँदी के पत्र लगे हैं। और इसका द्वार भी चाँदी के पत्रों से बना है। इसके भीतर शेख अब्दुल कादिर गिलानी की कब्र बनी है जिस कब्र के ऊपर सोने के पत्र मढ़े हैं। इस कब्र के सामने बहुत बड़ा कमरा है जिस पर सहस्रों यवन बैठकर नमाज़ पढ़ सकते हैं। इसकी चहार दीवारी के अन्दर सराय बनी है जिसमें यात्री ठहराये जाते हैं। इनको यहां से भोजन मिल जाता है। इस दरगाह में भी भारतीय यवनों द्वारा भेंट स्वरूप में लक्षों रुपया आता है। इस स्थान पर भी पण्डों की अच्छी भीड़ लगी रहती है। यह दरगाह सुन्नी यवनों की ज़ियारतगाह है।

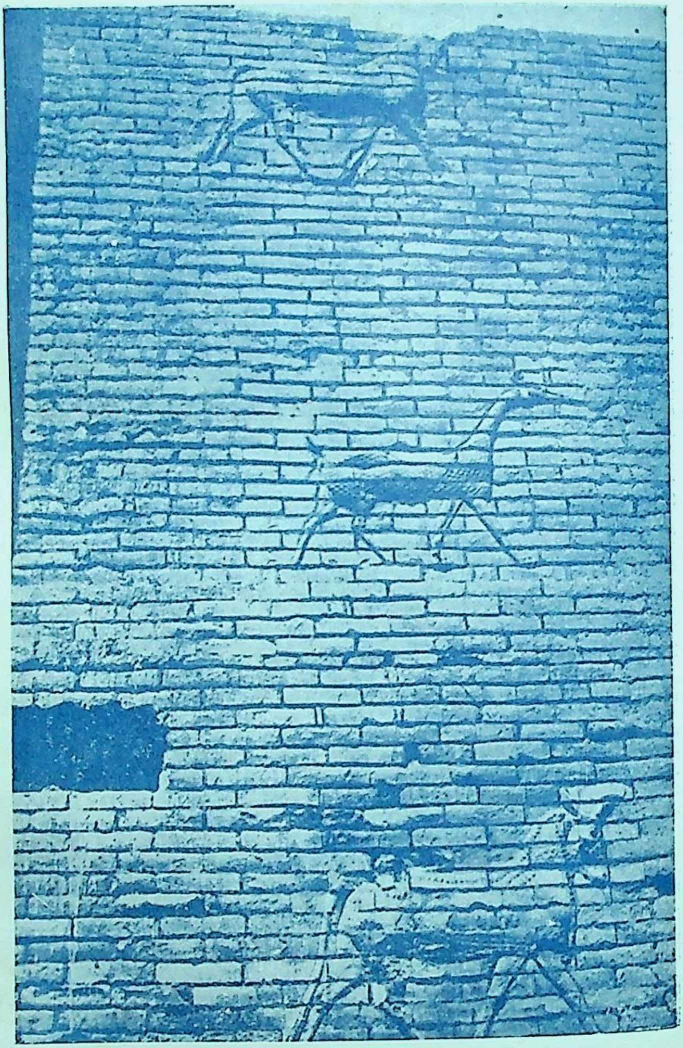
शाही अजायबघर

बगदाद नगर के केन्द्र स्थान पर एक अजायबघर है जिसको



बग़दाद में शेख़ अब्दुलक़ादिर गिलानी का मक़बरा।

जिसमें हिन्दुस्तान के मुसलमानों का लाखों रुपया वार्षिक चढ़ावा चढ़ता है। [पृष्ठ १०८]



बेबोलेनियन के समय ईराक निवासियों के इष्ट देवों की मूर्तियाँ। (पृष्ठ २०६)

शाही अजायबघर कहते हैं। यह मलिक फैसल के समय का निर्मित भवन है। यह दोमहला है । इसके भीतर ईराकियों के प्राचीन काल के मिट्टी के बर्तन, सोने तथा चाँदी के आभूषण रखे गये हैं। ईराक में जितने प्रकार का पत्थर निकलता है उतने प्रकार के पत्थरों के छोटे छोटे टुकड़े रखे गये हैं। बैबोलोनियन के समय की मूर्तियाँ जो बारह बारह फुट की ऊँची हैं देखने योग्य हैं रखी गई हैं। बैबोलोनियन के समय का मूर्तियों द्वारा एक दरबार लगा हुआ उसी प्रकार उठाकर नीचे के भाग में रख दिया गया है। सुन्दरी युवतियाँ तश्तरियोंमें सेव आदिक फल रखे दरबार की ओर बढ़ती जा रही हैं। इनके समय के देवता की भी पत्थर की बहुत बड़ो मूर्ति है। जिसके मुखपर लम्बी दाढ़ी और लम्बी मूछ है । परन्तु शेष भाग बाल वाले और बड़ी दुम वाले चार पैर के पशु का है। इस मूर्ति को मैंने बगदाद के और स्थानों पर भी रखे हुए देखा है।

शिक्षा प्रचार

बगदाद में बड़े वेग से लड़की लड़कों में शिक्षा का प्रचार किया जा रहा है। कितने हाईस्कूल और कालिज इस प्रकार के खुले हैं, जहाँ पर विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र, पुस्तकें आदि सब कुछ वक़्फ़ संस्थाओं अथवा कहीं कहीं ईराकी सरकार की ओर से भी विना मूल्य दिया जाता है। विद्यार्थियों के आश्रम निःशुल्क हैं। स्थान स्थान पर रात्रि पाठशालाएँ चल रही हैं, जिनमें लड़की और लड़के शिक्षा पाते हैं। इतना शिक्षा का प्रबन्ध होते हुए भी

अभी अशिक्षितों की संख्या न्यून नहीं है। जहाँ पर मलिक फैसल की कब्र बनी है उसके निकट एक टीचर्स ट्रेनिङ्ग स्कूल है। मुझे उसके देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसमें मैंने देखा कि विद्यार्थियों के रहने, खाने, सोने आदि के स्थान बहुत सुन्दर और स्वच्छ बनाये गए हैं। बीच में एक बड़ा कमरा है जिसमें विद्यार्थी बहुधा नाटक आदि करते, गाते बजाते और सर्व प्रकार से मन बहलाव करते हैं क्योंकि उनके निमित्त सर्व प्रकार की सामिग्री वहाँ पर रखी गई है। मैंने विद्यार्थियों से वार्तालाप किया। इतिहास का ज्ञान उनको इस्लाम काल के पूर्व का किंचिन्मात्र भी नहीं है। वे लोग ईराक का इतिहास इस्लाम के समय से ही जानते हैं। इसके सामने एक दूसरा ट्रेनिङ्ग स्कूल है जिस में केवल अरबी में हीं विद्यार्थी ट्रेण्ड किये जाते हैं। यहाँ पर भारतवर्ष, लंका और जावा टापू के भी विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। यह विद्यार्थी यहाँ से यवनीय शिक्षा प्राप्त कर अपने अपने देशों में जाकर इसी शिक्षा के प्रचार में अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इस देश में शिक्षा विभाग की ओर से यह आज्ञा निकाली गई है कि विद्यार्थियों की पोशाक खाकी वर्दी सैनिक के रूप में होगी। इस कारण सारे विद्यार्थी सैनिक वस्त्रों से विभूषित शिक्षा स्थानों में झुण्ड के झुण्ड जाते दिखाई पड़ते हैं, यह वेषभूषा अत्यन्त आकर्षक दीखता है।

वीरों का स्मशान

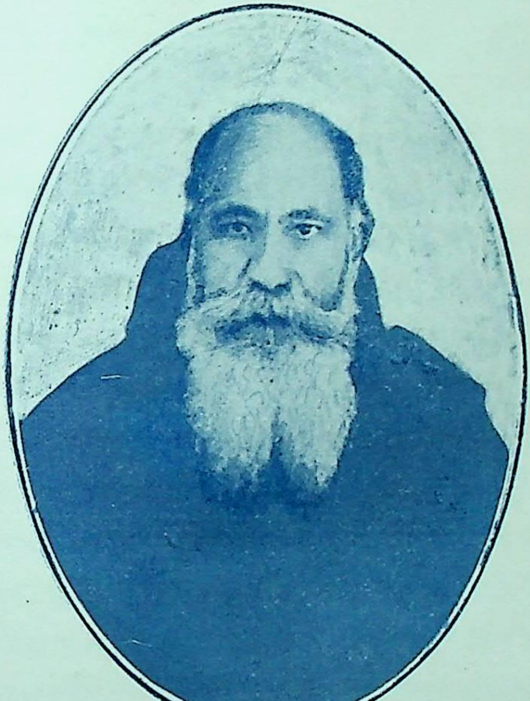
स० १६१४ के पूर्व सारा ईराक टर्की के खलीफ़ा के आधीन

था उस समय जो युद्ध जर्मन और अंग्रेज़ों के बीच हुआ था उस युद्ध के समय टर्की ने जर्मनी से समझौता कर अंग्रेज़ों के विरुद्ध खड्ग उठाई थी। अंग्रेजों ने इंग्लैण्ड से गोरी सेना और भारत से भारतीय सेना लेकर ईराक, मैसोपोटामिया, सीरिया आदि पर चढ़ाई की थी। उस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने जिस प्रकार अपनी वीरता का परिचय दिया था वह आश्चर्यजनक था। भारतीय सैनिकों के अपूर्व बलिदान और साहस पर ही अंग्रेजों ने ईराक भी विजय किया था। उस समय जो अंग्रेज और भारतीय वीरगति को प्राप्त हुए थे। उनके स्मरणार्थ अंग्रेजों ने बगदाद में एक स्थान पर "वीरों का स्मशान" नामक स्थान बना रखा है। यह बहुत बड़ा मैदान है जो दो हिस्सों में बाँटा गया है। एक भाग अंग्रेज़ोंके स्मरणार्थ है जिसमें सुन्दर वाटिका बनी है। चारों ओर मालीगण फूल पत्तों को सुव्यवस्थित करते देख पड़ते हैं। यह मैदान बहुत साफ़ है और सेना के बड़े से बड़े अफ़सरों को ले कर साधारण सिपाही तक के नाम का पत्थर लगाया गया है। जो उस समय वीरगति को प्राप्त हुए थे, उनमें से अब तक जो नाम हुतात्माओं के मिल रहे हैं उन हुतात्माओं के नाम पत्थरों पर अब तक स्मरणार्थ खोदकर लगाये जा रहे हैं। इस स्थान को देखने से पता चलता है कि इसकी देख रेख और बनावट व सजावट प्रतिक्षण की जाती है। इसी मैदान के साथ साथ एक दूसरा भाग है जो भारतीय सैनिक हुतात्माओं के स्मरणार्थ है। इस मैदान में चारों ओर काँटे वाली बबूलें लगी हैं। मैदान

अत्यन्त गन्दा और अव्यवस्थित है। एक ओर पत्थर की एक लाट खड़ी कर दी है जिस पर लिख दिया है "भारतीय सिपाही अपने बादशाह और अपने देश की रक्षा के लिए बलि हुए थे इनमें हिन्दू और सिक्ख थे" इसी प्रकार दूसरी लाट खड़ी है जो भारतीय मुसल्मानों की वीरगति का स्मरण कराती है। जो भारतवासी अथवा अन्य देश वाला इन दोनों स्थानों को आकर देखता होगा वह इन्हें देखकर मन में अवश्य निश्चय करेगा कि भारतीय गुलाम हैं, इस कारण इनके वीरों का स्मशान भी गुलामी के ही चिह्न प्रदर्शित कर रहा है। इससे अधिक मैं और इस स्थान के सम्बन्ध में अपनी सम्मति क्या दे सकता हूँ।

ईसाइयों का प्रचार

वैसे बगदाद में योरोप के ईसाइयों के सारे मिशन अपना अपना प्रचार कर रहे हैं और सब के गिर्जे भी अपने अपने धर्म के कर्तव्य के पालनार्थ बने हैं। जिनमें पादरी लोग नियमित प्रचार कार्य कर रहे हैं। परन्तु फ्रेंच चर्च के पादरी अच्छे कार्य कर कर रहे हैं। मैं इनके बड़े विशप से मिला था। यह सज्जन ८८ वर्ष की आयु के हैं। शान्ति तथा गम्भीर, देखने में जान पड़ते थे। यह कैथोलिक ईसाई हैं। इन से मैंने पूछा "आपका चर्च ईराक में कब से प्रचार कार्य कर रहा है?" इसका उन्होंने उत्तर दिया, "ईसा की प्रथम शताब्दी से हमारा चर्च यहाँ पर प्रचार कार्य कर रहा है। इस समय ईराक में हमारे पाँच



रोमन कैथोलिक ईसाई सज्जन जिनको ईराक के इतिहास का लगभग तीन हज़ार वर्ष का ज्ञान है।

[पृष्ठ २१२]

अनाथालय. एक हाई स्कूल और एक प्रेमी स्कूल है। जिसके द्वारा हम शिक्षा प्रचार के साथ साथ विद्यार्थियों में ईसाइयत का भी प्रचार करते हैं। इस देश के लोग बड़े कट्टर हैं, तथापि अब नवीन सन्तति के विचार टर्की और ईरान की उन्नति देख देख परिवर्तित हो रहे हैं। जिससे आशा की जाती है कि इनकी अवस्था उन्नतिशील होने पर इनकी कट्टरता अवश्य दूर हो जायेगी।" इसी प्रकार की उनसे मेरी और भी बात-चीत हुई। मेरे साथ जो सज्जन मुझे वहाँ ले गये थे, उन्होंने विशप साहब से कहा, 'इनका व्याख्यान आज इण्डियन एसोशियेशन में 'सृष्टि की उत्पत्ति' पर है। यदि आप चल सकें तो चल कर सुन सकते हैं" इस पर उन्होंने वृद्धावस्था के कारण वहाँ जाने में असमर्थता प्रकट की। मैंने उनसे पूछा, "आप सृष्टि की उत्पत्ति कितने समय से मानते हैं?" विशप साहब ने कहा, "हम पांच हजार वर्ष से कुछ ऊपर समय मानते हैं। इस विषय में आपका क्या मत है?" इस पर मैंने कहा, "१९७२९४९०३९ वर्ष से हम मानते हैं।" इस पर विशप साहब ने कहा, "ठीक ठीक तिथि का ज्ञान करना व कराना कठिन है।" मैंने कहा, "मैं योरोप और अमेरिका के भूतत्व विशारदों के विचारों के आधार से और अपने शास्त्रों के आधार पर ऊपर का बतलाया समय सप्रमाण सिद्ध करता हूँ। आप चाहें तो शान्ति पूर्वक सुन सकते हैं।" इस पर विशप साहब ने कहा, "आपका समय ठीक हो सकता है। क्योंकि हमारी बाइबिल में भी लिखा है From the beginning अर्थात्

'प्रारम्भ से' इस कारण हम आपके हिसाब को भी ठीक मान सकते हैं। यदि आप मोसल जावें तो वहाँ हमारा अनाथालय और उपदेशक विद्यालय आदि सब कुछ देख सकते हैं।" इस प्रकार मैं उनसे बातचीत कर वापिस स्थान पर आया।

करकुक

मैंने आर्य समाज बगदाद में १०-११-३६ को दीपावली के अवसर पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के आदर्श जीवन पर लगभग १। सवा घण्टा भाषण दिया। पश्चात् शीघ्रता से आर्य समाज वालों से विदा हो शर्मा जी के साथ स्टेशन पर आया। रात्रि को ६ बजे नित्य ट्रेन बगदाद से करकुक को चलती है। मैं शर्मा जी सहित ट्रेन पर बैठा और ११-११-३६ को प्रातःकाल करकुक जा पहुँचा। करकुक प्राचीन नगर प्रतीत होता है, क्योंकि यहाँ पर टर्की के समय का एक गढ़ अत्यन्त सुदृढ़ और सुन्दर बना है, जिसमें इस समय ईराक की सरकार की ओर से सेना रहती है। बाज़ार अत्यन्त सुन्दर है। यहाँ पर लाला देवराज की ईराक स्पोर्टस्डिपो नामक एक अच्छी और बड़ी दूकान है। मैं इन्हीं के पास ठहरा था।

ईराक पेटरोलिङ्ग कम्पनी

मैं शर्मा जी के साथ घोड़ा गाड़ी पर बैठ कर आई०पी० सी० की ओर गया। यह स्थान करकुक से लगभग एक मील दूर है। यहाँ पर मिट्टी का तेल और पेटरोल निकालने के कुएँ हैं। यहाँ

पर नित्य प्रति दस हजार टन पेटरौल साफ होकर बैरूत और हायफा की ओर नलकों द्वारा भेजा जाता है। बैरूत और हायफा सीरिया प्रदेश के मुख्य नगर हैं, यहाँ करकुक से मोटे मोटे लोहे के नलकों द्वारा पेटरौल पहुँचाया जाता है। करकुक से हायफा और बैरूत लगभग आठ आठ सौ मील दूर बसे हैं। दजला नदी का पानी नल के द्वारा इस अहाते में एक टंकी में आता है। इस टंकी से भिन्न भिन्न स्थानों में नलों द्वारा पहुँचाया जाता है। इस पानी द्वारा एक से पवन (हवा) बनाई जाती है। जो रबर के नलों में भरती रहती है। इस पवन भरे नल के साथ एक लोहे का बर्मा लगा रहता है। इस अहाते के भीतर जिस स्थान के पत्थर को तोड़ना हो इस रबर लगे बर्मा को उस पत्थर पर रख दीजिये और उस बर्मा के ऊपर के बटन को दबाइये। वह बर्मा नीचे के पत्थर को तोड़ता, फाड़ता धँसता जायेगा। इसी प्रकार मकान, छतें, दीवारें आदि सुदृढ़ से सुदृढ़ स्थान तोड़ कर छिन्न-भिन्न किये जाते हैं। एक ऐसा यन्त्र वहाँ रखा था कि जिसके द्वारा लोहे के नल तथा और अन्य लोहे के सामान टूट जाने पर जोड़ दिये जाते हैं तथा टांका लगाने योग्य सामान में टाँका भी लगाया जाता है। इस यन्त्र की अग्नि व विद्युत आदि की सहायता की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। उसमें बटन लगे हैं। जिनको दबा देने से यह मिनटों के भीतर अपना कार्य समाप्त कर देते हैं। एक स्थान में पेटरौल एकत्रित होता है, फिर वह अपने आप साफ़ हो दूसरे स्थान पर जाता है। इसी प्रकार वह कई

स्थानों में प्रवेश करता हुआ उस स्थान पर आता है, जहाँ पर वह एकत्रित हो हायफा और बैरूत की नलों द्वारा जाता है। इस कारखाने में सारा कार्य यन्त्र स्वयं करते हैं। कई कई यन्त्रों पर एक एक व्यक्ति नियुक्त है, जो देखता है कि कार्य ठीक रूप से होता जा रहा है। इस कारखाने में यदि यन्त्रों द्वारा कार्य न लिया जाता तो कम से कम पचास हजार व्यक्ति काम करते हुए दिखाई पड़ते, परन्तु वहाँ इस समय केवल छै सौ आदमी काम कर रहे हैं।

इस प्रकार हम इस कारखाने को देखकर करकुक की ओर घोड़ा गाड़ी द्वारा लौटे। जो पक्का मार्ग करकुक नगर से आई० पी० सी० की ओर जाता है। उस मार्ग पर जहाँ पर नगर समाप्त होता है, उस स्थान पर सड़क बनने के पूर्व एक मसजिद बनी थी। इस सड़क को आई० पी० सी० तक सीधा ले जाने पर मध्य में यह मसजिद पड़ती थी। इस मसजिद के कारण मार्ग सीधा नहीं जा सकता था। इस कारण ईराकी सरकार ने उस मसजिद को भस्मसात कर दिया और वहाँ से करकुक नगर से ईराक पटरोलिङ्ग कम्पनी तक सीधा मार्ग बना दिया ईराकी सरकार ने इस मार्ग के एक ओर उस मसजिद की पूर्ति के लिये दूसरी मसजिद पक्की और सुदृढ़ बनवा दी। जो इस समय विद्यमान है। जिसमें उसके इर्द गिर्द के लोग नमाज पढ़ते हैं। भारतवर्ष के मुसलमानों को ईराकी मुसलिम सरकार से यह शिक्षा लेनी चाहिये कि जहाँ भारतवर्ष में किसी मार्ग के बनते समय



कुर्दिस्तान का एक कुर्दी

इन लोगों की रीति-रिवाज भारत के प्राचीन क्षत्रियों से मिलती-जुलती हैं। [पृष्ठ २१७]

कोई कब्र तक पड़ जाने से भारतीय मुसलमान उस कब्र की एक ईंट भी नहीं उखाड़ने देते, चाहे मार्ग बेढंगा ही क्यों न बन जावे। परन्तु ईराकी मुसलिम सरकार ने सहस्रों कब्रें खुदवाकर मकानात, बाज़ार और मार्ग बनवा डाले, वहाँ कोई इसको किसी प्रकार से बुरा नहीं समझता। इसी प्रकार कितनी मस्जिदों को तोड़कर मार्ग बना दिया। करकुक के इसी मार्ग के निकालते समय सैकड़ों कबरें भी खोद-खोदकर साफ़ करदी गईं और उन पर मार्ग बनाया गया है।

करकुक से हमाम अलील

१२–११–३६ को मैं शर्माजी के साथ मोटर से चला। मार्ग में ईराकी ग्रामों का दृश्य था और ईराकी ग्रामीण जिनमें अभी तक वही प्राचीन फ़ैशन की छाप थी दिखाई पड़ रहे थे। एक ग्राम अलतम कुफरी मिला। पश्चात् बैरहमान मिला। इसके पीछे अरबिल नगर मिला। यह नगर ऊँचे स्थान पर बसाया गया है। यहाँ के निवासी सब कुर्दी कहलाते हैं। यह स्थान कुर्दिस्तान का केन्द्र स्थान है। मुझे एक कुर्दी सैनिक अफसर ने बतलाया "अरबिल निवासी आज से १३०० वर्ष पूर्व आर्य थे। उसके पीछे यहाँ के निवासी जरदोस्थी बने। अब नौ सौ वर्षों से मुसलमान हो गये हैं। यह जो ऊँचाई पर किला है वह १३०० वर्षों से भी अधिक समय का है। सामने मैदान में एक स्तम्भ खड़ा है। वह भी उसी समय निर्माण हुआ था कि जब यह किला

बनाया गया था" इस किले के ऊपर चढ़ने के लिये एक सौ पत्थर की बड़ी बड़ी सीढ़ियाँ लगी हैं प्रत्येक सीढ़ी की ऊँचाई दो फीट है। इस किले के दो द्वार हैं। इन सीढ़ियों द्वारा चढ़ने उतरने वाला द्वार बहुत बड़ा और पूरा चौड़ा है। दूसरा द्वार छोटा है जो दूसरी ओर है। इस गढ़ की दीवारें डेढ़ डेढ़ गज चौड़ाई से बनाई गई हैं। दीवारों की ऊँचाई तीस फीट फाटक की सतह से हो सकती है। इस किले के भीतर अरबिल नगर बसा है। टर्कियों के समय भी इस नगर की यही दशा थी। सर्वदा रात्रि में इसके द्वार बन्द कर दिये जाते थे, जिससे बाहर का कोई व्यक्ति भीतर प्रवेश न कर सके। परन्तु जब से ईराकी सरकार के हाथ यह नगर आया है तब से इस गढ़ के नीचे भी अच्छे अच्छे गृह निर्माण हो चुके हैं और सुन्दर बाजार भी बस गया है। कुर्दी लोग देखने में वीर और योधा दिखाई पड़ते हैं। इनकी स्त्रियाँ प्रारम्भ से ही बुर्का नहीं ओढ़तीं। वीर क्षत्राणियों की भाँति कछोटा बांधे गृह कार्य में तन्मय दिखाई पड़ती हैं। समय आने पर यह स्त्रियाँ युद्ध करने से पीछे नहीं हटतीं। कुर्दी लोग भी बहुत चुस्त वस्त्र पहिनते हैं। जिससे युद्ध के समय इनको चलने व दौड़ने में किसी प्रकार की रुकावट न पड़े। अरबिल गढ़ के सामने जो स्तम्भ खड़ा है वह अब जर जर हो रहा है। कुर्दिस्तान के दो भाग हैं एक भाग ईराक में है और दूसरा भाग ईरान में है। कुर्दी लोग ईरान में भी इसी स्वभाव के पाये जाते हैं। कजराबाद

के पास से टर्की और ईरान की सीमा प्रारम्भ होती है। कुर्दिस्तान की भूमि अधिक उपजाऊ है। यहां मिट्टीका तेल, तम्बाकू, गेहूँ, चावल, जौ, मूग, चना, बीन, मसूर, पत्थर का कोयला, के अतिरिक्त नाक, किशमिश, मुनक्का, अखरोट, पिस्ता, सफरजल, नारङ्गी, मालटा आदि खाने योग्य फल उत्पन्न होते हैं। रीछ, चीता, हिरन, तीतर, लकड़ दीब और जङ्गली सुअर जङ्गलों में पाये जाते हैं। इस प्रकार अरबिल बड़ा ऐतिहासिक स्थान है। अरबिल के पीछे बरतल्ला और नमराती स्थान मिले। वैसे तो मार्ग में ईराकी सरकार स्थान स्थान पर पुल बनवा चुकी है कि जिससे मोटरादि बाहन आराम से निकल जावें। परन्तु अरबिल और नमराती के बीच एक बहुत लम्बा पुल ईराकी सरकार ने बनवाया है। इसके दोनों ओर सिपाही पहरा देते हैं। यह पुल अत्यन्त सुन्दर सुदृढ़ तथा देखने योग्य है। यहाँ से लगभग १०० मील की दूरी पर ताऊस शेखादी है जहाँ पर अज़ीद जाति के लोग बसते हैं। यह लोग मुसल्मान नहीं हैं। यह लोग शेखादी ताऊस को अपना नबी मानते हैं और शैतान की पूजा करते हैं। जहाँ से हम चले वहाँ से मार्ग के दोनों ओर दूर तक दृष्टि पात करने से एक वृक्ष का पत्ता तक न दिखाई पड़ता था। इस प्रकार ऊसर व बन्जर की यात्रा करते हुये हम लोग रात में मोसल पहुँचे। शर्मा जी उसी समय दूसरा मोटर लाये। जिस पर बैठकर हम लोग रातों रात हमाम अलील नामक ग्राम में पहुँच गये।

हमाम अलील

इसका नाम हमाम अलील क्यों पड़ा ? मैं ने यह जानना चाहा । सन्ध्या समय शर्मा जी के साथ मैं हमाम अलील की ओर गया । वह एक बस्ती है । इस बस्ती के बीच भूमि के भीतर से गर्म पानी का स्रोत है । इस पानी के साथ गन्धक और सलफर भूमि के भीतर से निकलता है । हम लोग सन्ध्या समय साढ़े चार बजे एक चाय खाना (होटल) में पहुँचे । ईराक में ५ बजे सूर्य अस्त हो जाता है, और पांच बजे के पीछे अन्धेरा होने लगता है । चायखाने वाले से पता चला कि "यह चश्मा साढ़े चार बजे बन्द कर दिया जाता है क्योंकि ईराकी सरकार ने उस पर एक भवन बना रखा है और ठेकेदार ने ठेका ले रखा है । परन्तु अभी ठेकेदार आवेगा चूँकि आप यात्री हैं वह खोलकर आपको दिखा देगा ।" चायखाने में रेडियो लगा था । मैंने उसकी सूई दिल्ली के बिन्दु पर लगा दी । उस समय दिल्ली में गाना हो रहा था । मैं बैठकर सुनता रहा । लगभग छः बजे हम्माम का ठेकेदार आया । उससे शर्माजी ने बातचीत की, उसने मुझे यात्री समझ चलकर हमाम खोल दिया वहाँ स्नान करने वालों के लिए लुङ्गियाँ और तौलिया रखी थीं । जो दो मूल्य की थीं । एक भाग की लुंगी और तौलिया काम में लाने से पांच फिल्स, जो भारत के पांच पैसे के बराबर थे देना पड़ता है और दूसरी लुङ्गियाँ और तौलिया उनसे साफ़ और बड़ी थीं उनके पहिरने में दस फिल्स देने पड़ते थे । हम लोगों ने दस

दस फिल्स वाली लुङ्गी व तौलिया ले लीं और गर्म पानी में उतर कर लगभग एक घण्टे तक स्नान किया। ठण्डी के दिन थे! पानी गर्म था। इस कारण स्नान करते समय निकलने को जी न चाहता था। स्नान कर करा कर बाहर आये। ठेकेदार को पैसे अधिक दिये क्योंकि उसने कुसमय हमाम खुलवाया था। चूंकि इस समय रात हो गई थी लगभग आठ बज चुके थे, और रात्रि भी अन्धेरी थी। बादल भी घिरे थे। इस स्थान से जहां हम लोग ठहरे थे लगभग आधा मील का अन्तर था। हम लोग जब उस चायखाना को पार करके आगे बढ़े तो मार्ग में कुछ ईराकी अन्धेरे में जाते जान पड़े। शर्माजी ने कहा "टार्च लाइट आपकी बड़ी है इस कारण सम्भाल कर पकड़ियेगा।" शर्माजी के पास एक बड़ी लाठी थी जिसको उन्होंने दृढ़ता से पकड़ा। मैंने पूछा "क्यों! क्या कोई भय है?" शर्माजी ने कहा "ऐसे अन्धेरे में और मैदान के कारण कभी अनिष्ट होने का भय रहता है।" मेरे पास उस समय लगभग पांच सौ रुपये थे। मैं उनके भाव को समझ गया। मैंने शर्माजी से कहा "जब आपको ऐसा ज्ञान था कि यह देश ऐसा है तो आपको सन्ध्या समय इधर न आना चाहिये था" शर्माजी ने कहा "मेरा विचार है कि हम लोग पुलिस स्टेशनमें पुलिसवालों से कहदें कि हम रेलवे कन्सट्रक्शन्स में जारहे हैं, मार्गमें कोई भय तो नहीं है?" मैंने कहा "महाराज! पुलिसके पास जाकर इस प्रकार अपना भण्डाफोड़ कर अपने लिए अनिष्ट का मार्ग न बनाइये। इसलिये साहस करके चले चलिये। जैसी

बीतेगी देखी जायेगी" शर्मा जी को यह ध्यान था कि मेरे पास काफ़ी रुपये हैं, और ईराकी लोग थोड़े पैसों के लिए रक्तपात कर देते हैं, इस कारण उनका पग आगे न बढ़ा और उसी चायखाने में फिर लौट पड़े। एक अरब को ज़ालटेन लेकर साथ ले लिया। मैंने शर्मा जी से कहा "यहाँ के लोग उपद्रव के समय सब मिल जाते हैं। कहीं ऐसा न हो कि किसी घटना घटते समय यह अरब स्वयं डाकुओं के साथ मिलकर हम लोगों की जान का ग्राहक बन जावे इस कारण इसका लाना ठीक नहीं हुआ। हम लोग स्वयं चले चलते तो ठीक था। इस प्रकार हम लोग ग्राम के बाहर आ गये। सामने देखा कि एक मोटर आ रही है और वह घूम कर हमारी ओर आ खड़ी हुई। उसके अन्दर मि० कजला बैठे थे। जिनके हम लोग अतिथि थे। उन्होंने हमें मोटर में बैठा लिया और बोले "महाशय जी ! आप इस देशके पुराने वाशिन्दे हैं, और आप सब कुछ जानते हैं फिर भी आप पण्डितजी को साथ लेकर इधर रात के समय तक रह गये ? मैं डेढ़ घण्टे से इधर उधर मोटर लेकर ढूँढ़ता फिर रहा हूँ। सब लोग परेशान हैं। मैं बड़े विचार में था कि यदि अतिथियों के साथ कहीं अनिष्ट हो जावे तो मेरे ऊपर कलंक लगे" इस प्रकार वार्तालाप करते हुए हम लोग उनके स्थान पर आ पहुँचे। हमाम अलील इस बस्ती का इस कारण नाम पड़ा है कि चर्म रोगी इस हम्माम में स्नान कर चँगे हो जाते हैं।



मोसल का पुल और पुल पार मोसल नगर का दृश्य। यह नगर टर्की और ईराक की सीमा पर है। [पृष्ठ २२३]

हमाम अलील से मोसल

हम लोग मोटर द्वारा मोसल आये और मन्सूर होटल में ठहरे। शर्माजी ने भोजन किया परन्तु मैंने केवल फल खा लिये। मोसल नगर बहुत प्राचीन नगर है। टर्की राज के समय यह चारों ओर किले से घिरा था। इस किले के ९ दरवाज़े थे। (१) बाबल शर (२) बाबल जीसर (३) बाबल तोब (४) बाबल सराय (५) बाबल लीगेश (६) बाबल जदीद (७) बाबल सजांर (८) बाबल अमादिया (९) बाबल बेज। यह सारे द्वार टर्की राज के समय सूर्य अस्त होने के एक घण्टा प्रथम बन्द कर दिये जाते थे जिससे नगर में किसी प्रकार का डाका न पड़े। स० १९१४ ई० के युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार ने सारा ईराक भारतीय सैनिकों की वीरता के फलस्वरूप में विजय किया था। परन्तु जब समझौते की शर्तें निश्चय हो रही थीं, तब अँग्रेजों ने मोसल भी हस्तगत कर लिया था। कहते हैं कि इसी कारण टर्की बराबर कहता रहा कि मोसल अंग्रेज़ों ने नियम भंग कर अपने अधिकार में कर रखा है।

इस समय मोसल के उन द्वारों का पता नहीं है क्योंकि जितना भीतर बसा था उससे कहीं अधिक अब बाहर बस गया है। यहाँ की अधिकांश सड़कें ईराकी मुसलिम सरकार ने कबरें खोद खोद कर बनाई हैं। स्थान स्थान पर पुष्प बाटिकाएँ लगा दी हैं। नगर सुन्दर और रमणीक प्रतीत होता

है। यहां से रेलवे ट्रेन सीरिया, टर्की और बलगेरिया हो कर सीधे पेरिस जाती है और पेरिस से लन्दन मनुष्य सहज रीति से पहुँच सकता है। बसरा से रेलवे ट्रेन बैजी आ गई है और बैजी से सीधे मोसल तक लाई जा रही है आशा है कि मार्च सन् १९४० तक बैजी से मोसल तक रेलवे लाइन तैयार हो जायेगी क्योंकि काम बड़े वेग से किया जा रहा है। इसका यह अर्थ है कि जो लोग भारत वर्ष से विलायत जाते हैं वे बम्बई से अदन, सूडान, पोर्ट सैय्यद, जिबराल्टर होकर लन्दन पहुँचते हैं। इसमें अधिक समय लग जाता है और जहाज का भाड़ा भी अधिक पड़ जाता है। परन्तु बैजी से मोसल तक लाइन बन जाने से भारत के यात्री करांची से जहाज द्वारा बसरा और बसरा से रेलवे ट्रेन द्वारा बैजी और मोसल होते हुए पेरिस पहुँच सकेंगे। योरोप में युद्ध होने के कारण मैं मोसल से भारत के लिये लौट पड़ा हूँ, नहीं तो मैं मोसलसे योरोप की ओर अवश्य चला जाता। मोसल में स्टेशन मास्टर मि० मुरीद हुसैन भारतीय यवन हैं, सज्जन हैं, भारत वासियों से उनको प्रेम जान पड़ता है। यह आने जाने वाले भारतीय यात्रियों का विशेष ध्यान रखते हैं। मोसल में पिस्तों के बड़े बड़े बाग़ हैं, जहाँ अधिक से अधिक पिस्ता पैदा होता है।

मोसल में टर्की, अरबी, ईसाई; यहूदी और कुर्दी सबकी बस्ती हैं, और अरबी, टर्की, कुर्दी, फारसी चारों भाषाएँ बोली जाती हैं। मोसलमें ईसाइयों का अच्छा प्रचार है। मुझे बग़दाद के बिशप ने

कहा था, "मोसलमें हमारी संस्थाएँ देखियेगा" इस कारण शर्माजी के साथ साथ मैं नगर का दृश्य देखते हुए लैटिन चर्च में पहुँचा। यहाँ के अधिष्ठाता फादर ट्यूमर (Fathr Tummer) हैं। यह सज्जन अभी नवयुवक हैं। कैथोलिक ईसाई हैं। मैं इन से मिला, वह मुझे अपना अनाथालय दिखलाने ले गये। अनाथालय में कुल पचास बालक थे जिनके निवास के निमित्त बहुत बड़ा गृह बनवा रखा है। मुझे पहिले उन्होंने वस्त्र दिखलाये जो सूती और ऊनी दोनों प्रकार के थे। सुव्यवस्थित अलमारियों में रखे थे यह कार्य एक बूढ़ी सिस्टर के सुपुर्द था। फिर उनके शयनागार को देखा। यह एक बड़ा कमरा था। प्रत्येक चारपाई पर गद्दा और चद्दर बिछी थी। एक एक तकिया रखी थी। ओढ़ने के लिये दो दो कम्बल रखे थे आवश्यकता पड़ने पर अधिक दिये जाते हैं। क्योंकि मोसल में बग़दाद से ठण्ड अधिक पड़ती है। क्योंकि इसके निकट ही बर्फानी पर्वत हैं। कमरा स्वच्छ था। कूड़ा करकट कहीं नाम को न था। मुँह धोने का कमरा भी स्वच्छ था। जितने बालक थे उतने बुर्श दांत साफ करने को तथा मंजन पृथक् पृथक् रखा था और पाइप भी पृथक् पृथक् लगे थे। गर्मियों में इन पाइपों से ठण्डा पानी मिलता है और शीत काल में गर्म पानी मिलता है। एक बालक दूसरे बालक के बुर्श व मंजन से दांत स्वच्छ नहीं कर सकता। वह अपने से ही करेगा। ऐसी डाक्टर की सम्मति है। पश्चात् हमने भोजन करने का गृह देखा। मेज के साथ साथ बेंच लगी

थीं। जिन पर बैठ कर बालक भोजन करते हैं। रसोई गृह इतना साफ न था। जितना भारतीय हिन्दुओं का रहता है। क्योंकि नाना प्रकार के मांस और मछलियां सूखी और ताज़ी रखी थीं जिनसे दुर्गन्ध आती थी। भोजन पकाने के बर्तनों के नीचे का भाग कभी मला नहीं जाता इस कारण नीचे का भाग काला पड़ गया था। पश्चात् जहाँ वे बालक पढ़ रहे थे उस कमरे में मुझे ले जाया गया। अध्यापक समेत सारे बालक उठ कर खड़े हो गये। मैंने उन बालकों से कुछ प्रश्न किये। पश्चात् उन्होंने हज़रत ईसा की वन्दना जो नित्य स्कूल प्रारम्भ होने पर गाते हैं, गाकर सुनाया। यह प्रार्थना लैटिन भाषा में थी। इसके पीछे मुझे वे दूसरे कमरे में ले गये। जहाँ पर हजरत मसीह और माता मरियम की मूर्ति रखी थी, जिसमें बालक दोनों समय प्रार्थना करते हैं।

उपदेशक विद्यालय

अनाथालय देखने के पीछे मैं उपदेशक विद्यालय देखने गया फादर ट्यूमर मेरे साथ ही थे जो मुझे सब कुछ बतलाते जाते थे। उपदेशक विद्यालय में भी सारा प्रबन्ध उसी प्रकार था जैसा अनाथालय में था। इनके प्रार्थना का कमरा अच्छा, बड़ा और सुसज्जित था। यहाँ पर मूर्तियां भी बड़ी बड़ी रखी थीं। उस समय उपदेशक विद्यालय के छात्र प्रार्थना कर रहे थे। थोड़ी देर पीछे उनकी प्रार्थना समाप्त हुई। उस समय मैंने एक विद्यार्थी से बात-चीत करनी प्रारम्भ की।

मैं—तुम्हारे विद्यालय की पूर्ण शिक्षा कितने वर्षों में समाप्त होती है ?

उत्तर—बारह वर्ष में।

मैं—जब तुम शिक्षित होकर पादरी बनोगे तब अपना विवाह करोगे, या नहीं ?

उत्तर—विद्यालय में प्रविष्ट होने के प्रथम हम यह प्रतिज्ञा कर चुकते हैं कि हम आजन्म विवाह न करेंगे। किन्तु अपना जीवन धर्म प्रचार में ही लगायेंगे।

मैं—तुम कितने दिनों से पढ़ रहे हो ?

उत्तर—ग्यारह वर्षों से पढ़ रहा हूँ।

मैं—तुम ने बाइबिल सम्पूर्ण समाप्त कर दी है ?

उ०—जी हाँ।

मैं—जीवात्मा के क्या लक्षण बाइबिल में दर्शाये हैं। क्या बतला सकोगे ?

इसका उत्तर वह कुछ न दे सका।

मैं—ईश्वर क्या है और उसको कैसे जान सकते हैं आप अपनी बाइबिल के अनुसार बतलाइये ?

इसका उत्तर भी वह कुछ न दे सका।

फिर मैं फ़ादर ट्यूमर के साथ उनके गृह पर चला आया। उन्होंने जो लगभग ढाई घण्टे तक मुझे यह सब दिखलाया था उसके लिये मैं ने उनको धन्यवाद दिया।

मोसल से प्रस्थान

प्रातःकाल मैं तथा शर्माजी मोटर गैरिज पर आये। मोटर जाने में देर थी। गैरिज के साथ एक चाय खाना था। जिसमें मैं और शर्माजी बैठ गये। शर्माजी ने चाय मँगाकर पी, मैं चुपचाप बैठा रहा। फिर शर्माजी को प्यास लगी वह होटल के भीतर जा कर स्वयं पानी पी आये। इस चाय ख़ाने का मालिक एक अरब था। वह तीस वर्षों तक भारतवर्ष के बम्बई और मदरास नगरों में रह चुका था। ईराकी घोड़े वहाँ ले जाकर बेचा करता था। वह टूटी फूटी हिन्दी बोलता था और समझता था, क्योंकि दस वर्षों से उसका भारतवर्ष जाना बन्द था। इस कारण अब उसको हिन्दी बोलने का अभ्यास न रह गया था। मेरे सिर पर चोटी देखकर वह बोला, "आप हिन्दू हैं ?" मैंने कहा हाँ, हाजी शीतः "इसी कारण आप हमारे चाय खाने की चाय नहीं पी सकते।" मैंने कहा, "मैं चाय पीता ही नही" हाजी शीत—"हमारे होटल का पानी आप पी सकेंगे ? और रोटी खा सकेंगे ?" मैंने कहा, "नहीं, मैं नहीं खा सकता" हाजी शीत—"ठीक, तब तो आप ठीक हिंदू ही हैं। शर्मा जी की दाढ़ी लम्बी थी और मूँछें नाक के पास कटी थीं। शर्माजी की मुखाकृति इस कारण मुसलमान होना प्रकट करती थी। फिर हाजीशीत ने पूछा, "आपके साथी तो मुसलमान ही होंगे ?" मैंने कहा, "नहीं, वह भी हिन्दू हैं और जन्म के ब्राह्मण हैं ?" हाजीशीत—मुखाकृति तो इनकी मुसल

मानों के सदृश है। क्योंकि हिन्दू लोग अपनी मूँछ इस प्रकार नहीं कतराते और न ऐसी दाढ़ी ही बढ़ाते हैं। आप ठीक बतलाइये क्या यह बोहरा मुसलमान तो नहीं है? मैंने कहा, "इनको दाढ़ी रखाने का शौक़ है। इस कारण रखली।" यदि मूंछ न कतरावें तो दाढ़ी और मूँछ के कारण इनका मुँह ढँप जायेगा। इस मूँछ कतरा दिया करते हैं। हाजीशीत—"आप ईराक में देखिये दाढ़ी रखाने वाले अब न्यून होते जाते हैं। मेरी आयु साठ वर्ष की होगई मैंने तो अब तक दाढ़ी कभी नहीं रखाई। परन्तु यह तो बतलाइये कि यदि आपके साथी हिन्दू हैं और ब्राह्मण हैं तो हमारे चाय खाने की चाय, पानी कैसे पीते हैं? और हमारी रोटियाँ कैसे खाते हैं?" इतने में शर्माजी स्वयं आगये। मैंने शर्माजी को हाजीशीत की शंका बतलाई। जिसका उत्तर शर्मा जी ने हाजीशीत को यह दिया "हम यहाँ बहुत दिनों से रहते हैं। इस कारण हम आप लोगों के हाथ का खा-पी लेते हैं।" इस बात को सुन वह हँस पड़ा। इतने में हमें मोटर मिल गई और हम उस पर बैठकर चल दिये।

नेनवा

मार्ग में नेनवा नामक स्थान मिला। इस स्थान पर बैबोलोनियन के समय बहुत बड़ा पुस्तकालय था। इतिहास वेत्ताओं का विचार है कि यह पुस्तकालय अपने समय में अद्वितीय था। इस स्थान पर इस समय मिट्टी के ढेर पड़े हैं कोई खण्डर भी

चिह्न रूप में नहीं रहा। परन्तु इस मिट्टी के ढेर को देखकर ही प्राचीन पुस्तकालय की स्मृति आ जाती है।

नबी यूनिस की क़ब्र

हमारे साथ एक ईराकी मुसल्मान सिपाही था जो नबी यूनस के ग्राम का निवासी था। वह उस मोटर को इस ग्राम में लाया। मैं तथा शर्मा जी उस सिपाही के साथ नबी यूनस की कब्र देखने गये। ऊँचे टीले पर एक बड़ा भवन बना है। एक बड़ा लम्बा चौड़ा आँगन था और आँगन के साथ लगभग पचास फीट ऊँची एक मीनार बनी है और मीनार के साथ साथ एक भवन बना है जिसमें भीतर कई कमरों को पार कर जाने के पीछे एक विशेष कमरा मिला जिस को लोहे की छड़ों वाले किवाड़ों से बन्द कर रखा था इस कमरे के भीतर एक बड़ी कब्र बनी थो, जिसके ऊपर रङ्ग बिरङ्गा चादर पड़ा था। पण्डे ने बतलाया कि यही नबीयूनस की कब्र है। पूछने पर पता चला कि नवी यूनस एक यहूदी नबी था, जो हज़रत मूसा के पीछे नबी हुआ है। यहूदी लोग इसकी यात्रा करने आते हैं। परन्तु इस क़ब्र का भी पण्डा सुन्नी यवन ही है। जो उस कब्र का चढ़ावा स्वयं लेता है। जब हम देखकर चलने लगे तव उस सिपाही ने कहा "इस पण्डे को कुछ भेंट देनो चाहिये" मैं ने सोचा कि इसने सब स्थान दिखलाया है। इस कारण इस को कुछ तो दे दिया जावे। मैं ने उसको बीस फिल्स जो चार आने के बराबर थे देना चाहा। उसने वह फिल्स नीचे गिरा दिये। मैं ने उठा लिये।

मैंने सिपाही से पूछा "क्यों साहब ! इसको क्या देना चाहिये ?" उसने कहा "चार पौंड से कम न देना चाहिये।" (छै पौंड लगभग भारत के अस्सी रुपये हो गये) मैं ने कहा "क्या लूटने की इच्छा है ! यह तो काशी के पण्डों से अधिक बढ़ गया ? मैं तो अधिक से अचिक पचास फिल्स दूंगा।" (जो लगभग दस आने के बराबर होंगे) उसने न लिया वह सिपाही और सब पण्डे मिल कर शोर शार करने लगे। मैं चुपचाप मोटर के पास आ गया और मैं ने कहा "जाओ मैं एक फिल्स भी न दूंगा।" अब उन्होंने देखा कि यह पचास फिल्स भी जा रहे हैं। फिर शर्मा जी ने मेरे हाथ से पचास फिल्स लेकर पण्डा जी को दे दिये इस समय उसने चुपचाप ले लिये। मैं मोटर में बैठ आगे चल पड़ा। मार्ग में वही सब दृश्य देखते हुये चल पड़ा जो जाते समय देखता गया था इस प्रकार करकुक पहुँच कर ट्रेन पर बैठ बगदाद आ पहुँचा।

सुमेर और सुवर्ण

पं० चन्द्रगुप्त वेदालङ्कार गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी ने "बृहत्तर भारत" नामक पुस्तक के पृष्ठ ४६८ पर "सुमेरु और सुवर्ण" नामक लेख भी बहुत खोजकर इस प्रकार लिखा है:—

प्राचीन समय में यूफ्रटीज और टाईग्रिस नदियों की घाटियों में एक जाति राज करती थी जिसे 'सुमेर' कहा जाता है। सुमेर साहित्य में सर्वत्र पाया जाता है कि सुमेर लोग ईरान की खाड़ी

में से होकर मैसो पोटामिया में पहुँचे और 'इरीद' नामक बन्दरगाह को सुमेरों के सर्व प्रथम राजा 'उक्कुसि' ने अपनी राजधानी बनाया। अब देखना यह है कि यह सुमेर लोग कौन थे ? यदि ये कहीं बाहर से आये तो कहाँ से और यह 'उक्कुसि' कौन था ?
(The Fountain Head of Religion page 139)
(,, ,, ,, ,, ,, ,, 140)

महाभारत को पढ़ने से ज्ञात होता हैं कि भारत में 'सुवर्ण' नाम की कोई जाति रहती थी, और उनसे अवासित प्रदेश का नाम सुवर्ण प्रदेश था। यह सुवर्ण जाति कौन थी ? (विस्तृत ज्ञान के लिये 'विशाल भारत नवम्बर १९३६ तथा जनवरी १९३७ देखिये) सुवर्ण का अर्थ है—सु + उत्तम। वर्ण = जाति अर्थात् उत्तम लोग। इन्हीं के नामसे भारत के एक प्रान्त का नाम प्राचीन समय में 'सुराष्ट्र' था। सुराष्ट्र का अर्थ भी—सु = उत्तम, राष्ट्र = प्रदेश अर्थात् उत्तम लोगों का देश था। जिस प्रकार गुर्जरों के नाम से गुजरात, भोटों के नाम से भूटान, मँगोलों के नाम से मँगोलिया और तुर्कों के नाम से टर्की आदि देशों के नाम पड़े, ऐसे ही सुवर्ण लोगोंके नाम से सुराष्ट्र पड़ा था। इस प्रकार सुवर्ण लोग सुराष्ट्र के निवासी थे और सुवर्ण प्रदेश यही सुराष्ट्र था।

अब 'सुमेर' शब्द को देखिये। सुमेर का अर्थ है—सु = उत्तम मेर = जाति। अर्थात् उत्तम लोग। अतः सुमेर और सुवर्ण एक हुये। सुमेर सभ्यता के संस्थापक ये सुवर्ण लोग ही थे, जो सुराष्ट्र से आकर मैसोपोटामियां, यूफ्रेटीज़ और टाईग्रिस नदियों की

अर्द्ध चन्द्राकार घाटी में बसे थे। यह बात दोनों की वंशावलियों से भीं सिद्ध होती है। निथुर, इसिन और किश आदि नगरों से मिट्टी की बहुत-सी ईंटें उपलब्ध हुई हैं। इनमें सुमेर राजाओं की वंशावलियां दी हुई हैं। इनमें से किश वंशावली सबसे प्रचीन है। इसमें प्रथम राजवंश पाँचवें राजवंश तक के सब नाम तथा उन का काल भी दिया हुआ है। इसके अनुसार इरीदु के प्रथम राजवंश का वर्णन इस प्रकार है:—

उक्कुसि ने ३० वर्ष राज्य किया।

उक्कुस ने ४२ वर्ष राज्य किया।

पुन पुन ने ६ वर्ष राज्य किया।

नत्त अनेनु ने ३७ वर्ष राज्य किया।

अब इनकी तुलना भारत के सूर्यवंशी राजाओं से कीजिये।

सुमेरिया की किश वंशाबली	भारत की सूर्य वंशाबली
१.	१. वैवस्वत मनु,
२. उक्कुसि	२. इक्ष्वाकु
३. बक्कुस	३. विकुक्षि
४. पुन पुन	४. पुरजय
५. (नत्त) अनेनु	५. अनेना

इन दोनों वंशावलियों में एक ही भेद है और वह यह कि सुमेरिया का प्रथम राजा इक्ष्वाकु था और भारत का वैवस्तु मनु। इस भेद से यह बात और भी पुष्ट हो जाती है कि सुमेर का प्रथम राजा इक्ष्वाकु भारतीय मनु का पुत्र था, वह भारत से ही मैसो

पोटामिया गया और वहाँ का प्रथम राजा बना। यह इक्ष्वाकु ही था जो सुवर्ण लोगों को लेकर वहाँ गया, वहाँ सुमेर सभ्यता की स्थापना की और स्वयं वहाँ का प्रथम राजा हुआ।

जब सुवर्ण लोग 'इरीदु' बन्दरगाह को राजधानी बनाकर शासन कर रहे थे, उस समय एक ऐसी घटना घटित हुई, जिस से न केवल मैसोपोटामियां के इतिहास में ही अपितु भारत के इतिहास में भी भयङ्कर परिवर्तन कर दिया। वह थी 'जल प्रलय' की जिन नदियों की घाटियों में सुवर्ण लोग बसे हुये थे उनमें बहुधा बाढ़ें आया करती थीं। एक बार ऐसी भयङ्कर बाढ़ आई कि आर्यों (सुवर्ण लोगों) की समस्त बस्तियाँ बह गईं। बहुत सा जन-धन का ह्रास हुआ। इस प्रलय के चिह्न 'किश' और 'उर' की खुदाइयों में प्राप्त हो चुके हैं। यह जल प्रलय ही सुमेर और भारतीय साहित्य को एक महान ऐतिहासिक घटना बन गई। इस जल प्रलय में आर्यों के नाश का प्रधान कारण यह था कि उन्हें नौका-निर्माण का अच्छा ज्ञान न था। परिणामतः आर्य लोग मैसोपोटामिया छोड़कर भारत चले आये। इस समय भारत में 'मनु' राज्य कर रहा था। 'शतपथ' ब्राह्मण भी इसी समय तय्यार हो रहा था। मनु के समय यह घटना होने से शतपथ के रचयिता ने इसे उसी में अंकित कर दिया।

सुवर्ण लोगों की नौका का निर्माण ज्ञान न था इस विषय का एक प्रमाण यह भी है कि शतपथ ब्राह्मणों में एक मछली आकर

मनु से नौका बनाने कहती है। यह बात वहाँ बड़े अलंकारिक ढंग से कही गई है। साथ ही विविध प्रकार की नौकाएँ बनाने की विधियाँ शतपथ ब्राह्मण में बताई गई हैं। इन सबका अभिप्राय यही है कि इस जल प्रलय के पश्चात् आर्यों ने नौकानयन में दक्षता प्राप्त की। सुराष्ट्र के किनारे एक बन्दरगाह भी इसी उद्देश्य से बनाया गया था जहाँ सुवर्ण लोग नौकानयन में निपुणता प्राप्त कर सकें। जब सुवर्ण लोगों ने इसमें पूर्ण चतुरता प्राप्त कर ली तो वे पुनः मैसोपोटामिया गये। परन्तु इस बार इक्ष्वाकु इरीद में नहीं बसा। क्योंकि उसने देखा कि तब भी नदियों में बाढ़ें आ रही थीं। अतः वह सीधा एशिया माईनर (मैसौपोटामिया के उत्तत में) गया और वहाँ 'तलहलफ़' के निकट अपनी नई राजधानी बनाई। इक्ष्वाकु (उक्कुसी) के पश्चात् विकुक्षि (वक्कुसी) ने भी यहीं राज्य किया। परन्तु अपने राज्यकाल के १२वें वर्ष में वह यूफ्रेटीज और टाईग्रिस नदियों की घाटियों में उतर गया। क्योंकि अब बाढ़ें आनी कम हो गई थीं। यहाँ (उत्तरी मैसोपोटामिया में) उसने 'किश' नामक नगर बसाया और इसी को अपनी राजधानी बनाया। यह किश नगर सुमेर जाति का प्राचीनतम नगर माना जाता है। जब बाढ़ें और कम हुईं तो उन्होंने फरात नदी के किनारे मिट्टी का बाँध बना कर स्थान को ऊँचा कर 'उर' नामक एक नए नगर की स्थापना की।

इस प्रकार इक्ष्वाकु की अध्यक्षता में आए सुवर्ण लोग ही सुमेर थे जिन्होंने सुमेरियन सभ्यता को विकसित किया। मैसो-

पोटामिया की नदियों में बाढ़ें आने के कारण प्रारम्भ में तो यह एशिया माईनर में बसे। इक्ष्वाकु ने अपना राज्य काल वहीं समाप्त किया। किन्तु ज्यों ज्यों बाढ़ें कम होती गईं सुवर्ण लोग नीचे उतरते गये। पहिले उन्होंने 'किश' को अपनी राजधानी बनाया और पीछे 'उर' को। इन सुवर्ण लोगों ने ही पहिले पहिल सुमेरिया और एशिता माईनर में सूर्य पूजा तथा कृषि को प्रचलित किया था। इसकी पुष्टि में एशिया माईनर से प्राप्त इक्ष्वाकु की वे मुद्रायें हैं जिन पर उसके एक हाथ में सूर्य और साथ में गरुड़ बना हुआ है। गरुड़ सूर्य का बाहन माना जाता था। मिश्र में गरुड़ को पृथ्वी पर सूर्य का प्रतिनिधि समझा जाता था। सूर्य आर्यों की पूजा का प्रधान पात्र था। इसलिये सुमेरिया में गये आर्य लोग भी इसके उपासक थे। 'निप्पुर' सुमेर लोगों की सूर्य पूजा का केन्द्र बना हुआ था। सूर्य पूजा के साथ साथ आर्य लोग कृषि के भी प्रचारक थे। 'बोगज्जकोई' नामक स्थान पर 'वक्कुस' (विकुत्ति) की एक विशाल मूर्ति चट्टान पर खुदी हुई है। इसके एक हाथ में गेहूँ की बालें और दूसरे में 'हल' है। इससे स्पष्ट है कि आर्य लोग किस उद्देश्य को लेकर बाहर गये थे? उनके एक हाथ में तलवार और दूसरे में कलम न थी। आर्य्य जाति कृषि की प्रचारक थी। कृषी सभ्यता का आधार मानीं जाती है। आर्य्य लोग इसके प्रचारक थे। दूसरे शब्दों में आर्य लोग सभ्यता के प्रचारक थे! जिस प्रकार भारतीय आर्य्य लोग रथ का उपयोग करते थे। वैसे ही सुमेर लोग भी। 'उर' की

खुदाई में अनेक रथ भी प्राप्त हुए हैं। जिस प्रकार आर्य लोग मृतकों का दाह संस्कार करते थे। वैसे ही सुमेर लोग भी। इस प्रकार स्पष्ट है कि सुमेर सभ्यता के संस्थापक वे लोग ही थे जो सुराष्ट्र से इक्ष्वाकु की अध्यक्षता में मैसोपोटामिया पहुँचे थे।

पं० चन्द्रगुप्त वेदालंकार जी इसी पुस्तक के पृष्ठ २६५ पर लिखते हैं:—

अरब में भारतीय साहित्य

अब्बासी ख़लीफ़ाओं के समय बरामका मंत्रियों की प्रेरणा पर भारत के बहुत से पण्डित बग़दाद पहुँचे। जिस प्रकार बौद्ध प्रचारकों ने सुदूरस्थ प्रदेशों में पहुँचकर वहाँ की भाषाओं में संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद किया, उसी प्रकार हिन्दू पण्डितों ने राजाज्ञा से प्रेरित होकर संस्कृत ग्रन्थ अरबी में अनुवाद करना आरम्भ किये। जिन पण्डितों ने इस कार्य में हाथ बटाया उनके नाम अरबी में जाकर इतने बिगड़ चुके हैं कि उनके वास्तविक रूपों को ढूँढ़ना कठिन हो गया है। लेकिन जो कार्य उन्होंने किया वह आज भी विद्यमान है और उनकी स्मृति सुरक्षित बनाये हुए है। पेरिस के पुस्तकालय में 'मुजम्मिल उत्तवारीख' नाम की एक महाभारत ईरानी भाषा की पुस्तक है। इसमें महाभारत की बहुत सी कथाएँ संग्रहीत हैं। इसकी भूमिका में लिखा है "अब-सालह-बिन-शुएब ने संस्कृत से अरबी में इसका अनुवाद किया था।"

इब्ननदीम अपनी पुस्तक 'किताबुल फेहरिस्त' के पृष्ठ ३१५ पर लिखता है, "शानक और बाफ़र इन पण्डितों की राजनीति विषयक पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया गया था।" इससे पृष्ठ ३१२ पर लिखा गया है, "भारत वासी जादू और मन्त्र पर बहुत विश्वास रखते हैं। वे इस विद्या के बड़े जानकार होते हैं! इस विषय में उनकी बहुत सी पुस्तकें हैं, जिनमें से कुछ का अरबी में अनुवाद हुआ है।" इससे पता चलता है कि इस समय तक अनेक तन्त्र ग्रन्थों का अरबी में अनुवाद किया जा चुका था।

ईरानी और अरबी में एक पुस्तक बड़ी विख्यात रही है। इसका नाम 'कलेला दमना' है। बैरूनी लिखता है, यह ग्रन्थ संस्कृत का पंच तन्त्र है।" ईरान के सासानी सम्राटों के समय इसका ईरानी में अनुवाद हुआ। फिर अब्दुल्लाह बिन मुकफ्फा ने नवीं शताब्दी में इसका अरबी में अनुवाद किया। इस पुस्तक ने इतनी प्रसिद्धि पाई कि गद्य से पद्य और पद्य से गद्य में इसके बहुत से अनुबाद हुए, और अनुवादों पर बादशाहों ने बड़े बड़े पुरस्कार दिये। नवीं शताब्दी में अरबी के 'अब्बान' नामक महा कवि ने इसे पद्य में लिख कर खलीफा हारूँरशीद से एक लाख दरहम पुरस्कार स्वरूप प्राप्त किये। अरबों के प्रयत्न से यह पुस्तक योरोप के कोने कोने में पहुँचाई गई और इसके अनेक अनुवाद हुए। (देखिये अरब और भारत के सम्बन्ध में, पृष्ठ १३६)।

बोज़ा सफ़ नाम से एक अन्य पुस्तक अरबी में है। पुरानी फारसी में ज़ाल के स्थान पर दाल प्रयुक्त होता है और जखाऊ के कथनानुसार सफ=सत्व के। इस प्रककार बोज़ासफ़, बोद्-सत्व बना। वास्तव में यह संस्कृत शब्द बोधिसत्व है। इस पुस्तक में वद्ध के जन्म, शिक्षा आदि का वर्णन है और बताया गया है कि किस प्रकार एक घटना के कारण बुद्ध ने संसार त्याग दिया। इस्लाम के एक सम्प्रदाय के लोग इसे अपना धर्म ग्रन्थ मानते हैं। इसके कई अध्याय 'इख़वानुस सफ़ा' पुस्तक में मिला लिये गये हैं।

गणित विद्या

संस्कृत के साहित्य के अतिरिक्त गणित का प्रचार भी अरबों में भारतीयों द्वारा हुआ था। अब तक अरब वाले यह मानते हैं कि हमने एक से नौ तक के अङ्क लिखने की विधि भारतयर्ष से सीखी है। इसी लिये वे इन अङ्कों को 'हिन्दसा' कहते हैं। आगे चल कर जब अरबों ने अपना विशाल साम्राज्य स्थापित किया तो इन्हीं के द्वारा योरोप भर में इन अङ्कों का प्रचार हुआ। योरोप में इन्हें अरबी अङ्क कहा जाता है। भारतीय अङ्कों का अरब में बहुत पहिले ही प्रचार हो गया था। इस बात का प्रमाण यह है कि प्रसिद्ध मुसल्मान हकीम 'बूअली सैना' ने इन अङ्कों का ज्ञान एक कुंजड़े से प्राप्त किया था। इससे ज्ञात होता है कि सर्वसाधारण तक में भारतीय अङ्क बड़ी शीघ्रता से प्रचलित हो चुके थे।

ज्योतिष विद्या

७७१ ई० में जो पण्डित मण्डली बगदाद पहुँची थी वह अपने साथ ज्योतिष की एक किताब ले गई थी। इसका नाम "बृहस्पति सिद्धाँत' था। इसका अरबी में अनुवाद किया गया। इस अनुवाद का नाम 'अस्सिन्द हिन्द' है। इसके अनन्तर 'आर्य भट्ट' नामक ग्रन्थ 'अरजबन्द' नाम से और 'खण्डनखाद्यक' 'अरकन्द' नाम से अरबी में अनूदित किये गये। आर्य भट्ट ने कल्प के कई भाग करके उसे युग और महायुग में बाँटा था। अरबों के एतद्विषयक ग्रन्थ का नाम 'अरजबहर' है। ब्रह्म गुप्त ने वर्ष को ३६५ दिन, छः घण्टे, बारह मिनट और नौ सेकेण्ड में बाँटा है। वर्ष का यही विभाग अरबी ग्रन्थों में पाया जाता है। आर्य्य भट्ट ने लिखा है कि पृथ्वी घूमती है। अरब लोग भी पृथ्वी के घूमने को स्वीकार करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य भट्ट और ब्रह्म गुप्त के ग्रन्थ भी भाषान्तरित किये गये थे। अरबों ने भारत की इस ज्योतिष विद्या को बगदाद से लेकर स्पेन तक फैलाया, और स्पेन द्वारा यह सम्पूर्ण योरोप में फैल गई। स्पेन निवासी अबुल-क़ासिम-असबग ने बृहस्पति सिद्धांत पर बहुत बड़ी टीका की। भारतीय ज्योतिष का अरबों पर इतना असर हुआ था कि जहाँ पहिले खलीफाओं के दरबार में ईरानी ज्योतिषी रहा करते थे वहां खलीफा मन्सूर के समय उन के स्थान पर हिन्दू ज्योतिषी रखे गये।

चिकित्सा शास्त्र

साहित्य गणित और ज्योतिषी के अतिरिक्त भारतीय चिकित्सा पद्धति का भी अरबों में प्रचार हुआ था। इसके प्रचार की कथा इस प्रकार है—एक बार खलीफा हारूँ रशीद रोगी हुये। बड़े बड़े हकीमों से चिकित्सा कराई गई, परन्तु रोग शान्त न हुआ जब बगदाद के सब हकीम हाथ पैर पटक कर रह गये और खलीफा को अच्छा न कर सके तो एक व्यक्ति ने कहा कि भारत में 'मनका' (सम्भवतः माणिक्य) नामक एक प्रसिद्ध वैद्य रहता है। आप उससे चिकित्सा करायें। खलीफ़ा ने मार्ग व्यय आदि देकर मनका को भारत से बुलाया। इसकी चिकित्सा से खलीफा अच्छे हो गये। एक दिन ऐसा हुआ कि खलीफा हारूँ रशीद के भाई मूर्छित हो गये और उसके सब वैद्यों ने कह दिया कि यह बच नहीं सकते। तब एक भारतीय वैद्य जिसका नाम 'बहला' था, और जो उस समय बगदाद में रहता था उसे सचेत कर दिया (देखिये तारीखुल अतब्बिया, पृष्ठ ३३)

इन दो घटनाओं से राज्य का ध्यान भारतीय चिकित्सा की की ओर आकृष्ट हुआ, और बरामका लोगों ने इसके प्रचार में बहुत सहायता की। इन्होंने अपने चिकित्सालय का प्रधान चिकित्सक एक भारतीय वैद्य को बनाया। इतना ही नहीं, प्रत्युत एक व्यक्ति जड़ी बूटियाँ लाने के लिये भारत भेजा गया, और मनका तथा इब्न दहन (यह भारतीय पण्डितों के अरबी नाम हैं)

को चिकित्सा विषयक संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद कार्य में लगाया गया। (देखिये किताबुल फहरिस्त, पृष्ठ २४५) खलीफ़ा मवफ्फिक बिल्लाह अब्बासी ने नवीं शताब्दी में कुछ व्यक्ति जड़ी बूटियों का निरीक्षण कराने के लिये भारत भेजे थे। (देखिये जख़ाऊ कृत "इण्डिया" नामक पुस्तक का पृष्ठ ३०) धीरे धीरे भारतीय चिकित्सा ग्रन्थों का अनुवाद आरम्भ हुआ। प्रधान मन्त्री खालिद बरामका की आज्ञा से मनका ने 'सुश्रुत' का अरबी में अनुवाद किया, जिससे बरामका लोगों के चिकित्सालय में उसी के अनुसार चिकित्सा की जा सके। अरब लोग सुश्रुत को 'ससरो' कहते हैं। सुश्रुत के अनन्तर चरक का अनुवाद हुआ यह सीधा अरबी में अनूदित नहीं हुआ, परन्तु पहिले ईरानी में और फिर ईरानी से अरबी में अनूदित किया गया।

'रूसा' नामक एक हिन्दू विदुषी कृत पुस्तक का भी अनुवाद हुआ। इसमें स्त्री रोगों पर अच्छा प्रकाश डाला गया था। पशु चिकित्सा के सम्बन्ध में 'शानाक' पण्डित की पुस्तक का अरबी में उल्था हुआ। सर्प विद्या पर 'राय' नामक भारतीय पंडित की पुस्तक का अनुवाद किया गया। (देखिये किताबुल फेहरिस्त, पृष्ठ २४५)

अन्य भी अनेक चिकित्सा विषयक ग्रन्थों का अरबी में अनुवाद हुआ। (इनके वर्णन प्राचीन लेखकों की पुस्तकों में मिलते हैं) पर इन ग्रन्थों के संस्कृत नाम ज्ञात नहीं होते। यथाः- नशे की चीज़ों के सम्बन्ध में, जड़ी बूटियों के विषय में, गर्भवती

स्त्रियों के विषय में, कहने का अभिप्राय यह है कि इस समय, भारतीय चिकित्सा शास्त्र के बहुत बड़े भाग का अरबी में अनुवाद किया गया। अब तक भी सोंठ, त्रिफला आदि दवाइयों का प्रयोग अरबी चिकित्सा में होता है। मोहम्मद ख्वारिजी लिखता है, "एक औषध तिरीफल है (यह संस्कृत त्रिफला है) यह तीन फल अर्थात् हरड़, बहेड़े और आंवले से बनता है।" आगे चल कर वह फिर लिखता है, "भारत में आम नाम एक फल होता है। इसको शहद, नीबू और हरड़ में मिला कर अंबजात बनाते हैं।" (सम्भवतः यह 'गुड़म्बे' जैसी कोई वस्तु होगी) एक अन्य स्थान पर वह पुनः लिखता है, "बहतः रोगियों का भोजन है।" इसे दूध और घी में चावल डालकर बनाया जाता है। (यह 'खीर' जान पड़ती है)।

संगीत

भारतीय संगीत से अरब लोगों का बहुत प्रेम था। जाहिज़ ने भारतीय संगीत की अपने लेख में बड़ी प्रशंसा की है। स्पेन के काज़ी साईद—अन्दलासी ने 'तबकातुल्-उत्तम' नामक पुस्तक के बीसवें पृष्ठ पर लिखा है कि भारयीय संगीत की नाफर (यह एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है—बुद्धिमत्ता के फल) नामक पुस्तक हमें प्राप्त हुई है। इसमें रोगों और स्वरों का वर्णन है। इससे स्पष्ट है कि संगीत की पुस्तकों का भी अरबी में अनुवाद हुआ था।

भारतीय धर्म्म

भारतीय साहित्य के अतिरिक्त भारतीय धर्म से भी अरब लोग परिचित थे। प्रधान मन्त्री 'यहिया बरमकी' ने एक व्यक्ति को विशेष रूप से इसलिये भारत भेजा था कि वह यहाँ की औषधियों और धर्मों का वृतान्त लिख कर लाये। उस समय बग़दाद विविध धर्मों का केन्द्र स्थान बना हुआ था। अब्बासी वंश के ख़लीफ़ा शास्त्रार्थ के बहुत प्रेमी थे। विशेष दिनों में धार्मिक उत्सव और शास्त्रार्थ हुआ करते थे। उनमें प्रत्येक को बोलने का अवसर दिया जाता था। अरबों को हिन्दुओं के मन्दिरों, मूर्तियों और सम्प्रदायों का भली प्रकार ज्ञान था। योरोशलम के अरब वक्ता मुतहरिर ने, 'किताबुल बिदअ वत्तारीख' में इस प्रकार वर्णन किया है—"भारत में ६०० साम्प्रदाय हैं। इन में से केवल ६६ का वृत्तान्त ज्ञात है, ये सब पैंतालिस धर्मों के अन्तर्गत हैं, और यह भी चार सिद्धान्तों में ही परिमित हैं। इनके मोटे विभाग दो ही हैं, समनी (बौद्ध, समनी श्रवण शब्द का अपभ्रन्श है) और बरहमनी (ब्राह्मण, बरहमनी, ब्राह्मण शब्द का अपभ्रंश है)। मुसल्मानों को यह अपवित्र मानते हैं। मुसल्मान जिस वस्तु को छू लें, उसे ये फिर नहीं छूते। गौ को मातृ तुल्य मानते हैं। जिसकी स्त्री न हो वह किसी दूसरे आदमी की स्त्री से सम्भोग कर सकता है, (यह नियोग प्रथा है। नियोग के स्वरूप को ठीक न समझने से ऐसा लिख दिया है) जिससे वंश चलता

रहे। व्यभिचारी को प्राण दण्ड दिया जाता है। जब कोई मुसल्मान का हाथ पकड़ कर पुनः लौट कर आता है तो उसे मारते नहीं, प्रत्युत उसके सारे सिर को मूंड कर प्रायश्चित्त कराते हैं। यह लोग पास के सम्बन्धी से विवाह नहीं करते। ब्राह्मण लोग शराब और मांस को हराम समझते हैं।" (देखिये, अरब और भारत के सन्बन्ध, पृष्ठ १७१-१७२)।

इसके आगे हिन्दू देवताओं और उनके उपासकों का वर्णन करते हुए महादेव, काली, लिङ्ग पूजा आदि का वर्णन है। 'जल भक्तियः और अग्निहोतरियः' नाम से दो अन्य सम्प्रदाय भी बताये हैं। ये वस्तुतः जल भक्त और अग्निहोत्री हैं।

अबूजैद सैराफी लिखता है "हिन्दू पुनर्जन्म में इतना विश्वास रखते हैं कि लोग जीते जल जाते हैं। जो जलना चाहता है वह राजा से आज्ञा प्राप्त करता है और फिर बाजारों में घूमता है। दूसरी ओर खूब आग जलाई जाती है और झाँझ बजाई जाती है। उसके सम्बन्धी उसके चारों ओर इकट्ठे हो जाते हैं। फिर फूलों का एक मुकुट बनाकर, जिसमें जलती हुई आग रखी जाती है, उसके सिर पर रख देते हैं, जिससे शिर की खाल जलने लगती है। वह उसी तरह शान्त खड़ा रहता है और धीरे धीरे बढ़ता हुआ चिता में कूद पड़ता है।"

भारत में अरब यात्री

जिस प्रकार अनेक चीनी यात्री भारत की ज्ञान चर्चा सुनकर

विद्याध्ययन के उद्देश्य से भारत आये थे उसी प्रकार कई अरब यात्री भी विद्याध्ययन के लिए यहाँ आये थे। इनमें से एक 'बैरुनी' था। यह चालीस वर्ष तक भारतवर्ष में रहा। इस दीर्घकाल में इसने संस्कृत सीखी। अनेक संस्कृत ग्रन्थ पढ़े। विविध धर्मों और रीति रिवाजों का अनुशीलन किया। स्वदेश लौटकर इसने 'किताबुलहिन्द' और 'क़ानून मसऊदी' आदि ग्रन्थ लिखे। इन ग्रन्थों में भारत का तात्कालिक यथार्थ चित्र खींचा गया है।

भारतीयों के प्रति अरबों के उद्गार

भारतीय साहित्य के अरबी में अनूदित होते ही अरबों के हृदय भारतीयों के प्रति श्रद्धा से उमड़ पड़े। वे केवल अरबी अनुवादों को पढ़कर ही सन्तुष्ट न रहे, प्रत्युत अनेक यात्रियों ने भारत की यात्रा की, और यहाँ के स्थानों को अपनी आँखों से देखकर आनन्द प्राप्त किया। जिस प्रकार चीनी लोग भारत को शाक्य मुनि का देश समझते थे वैसे ही अरब लोग इसे आदम की भूमि और विद्या तथा साहित्य का निकेतन मानते थे। उनके हृदयों में भारत के प्रति महान आदर के भाव भरे हुए थे, जिन्हें वे अपने लेखों में प्रकट भी किया करते थे। सुप्रसिद्ध दार्शनिक जाहिज़ (यह बसरा का निवासी था बड़ा दार्शनिक और तारकिक था। इसकी मृत्यु ८७२ ई० में हुई थी)। इसने एक निबन्ध लिखा था। इसका शीर्षक था "गोरी और काली जातियों में से कौन बढ़कर हैं।" जाहिज़ अपना निर्णय काली जातियों के पक्ष में

देता हुआ भारतीयों के प्रति लिखता है) अपने एक लेख में लिखता है, "हम देखते हैं कि भारतवर्ष के निवासी यद्यपि काले हैं पर ज्योतिष और गणित में बढ़े हुए हैं। चिकित्सा में भी वे आगे हैं। उनके पास असाध्य रोगों की भी अचूक औषधियाँ हैं। मूर्तियाँ, चित्र और भवन बनाने में भी वे बहुत योग्यता रखते हैं। शतरंज का खेल उन्हीं का निकाला हुआ है, जो बुद्धि का सबसे अच्छा खेल है। वे लोग विष उतारने और दर्द दूर करने के मंत्र जानते हैं। उनका संगीत बड़ा मनोरम होता है। उनके यहाँ सब प्रकार का नाच भी है। कविता का भण्डार है। भाषणों की भरमार है। दर्शन, साहित्य और नीति भी उनके पास है। उनमें विचार और वीरता भीं है और भी कई ऐसे गुण उनमें हैं जो चीनियों में भी नहीं हैं। स्वच्छता और पवित्रता उनमें बहुत है। उनकी स्त्रियों को गाना और पुरुषों को भोजन बनाना बहुत अच्छा आता है। वे ईमानदार और स्वामिनिष्ठ हैं। सर्राफ़ और रुपये पैसे का कारोबार करने वाले लोग अपनी थैलियाँ उनके सिवाय और किसी को नहीं सौंपते। गणित और ज्योतिष उन्हीं ने निकाली है। वे ऐसे मंत्र जानते हैं जिनके उच्चारण से विष निरर्थक हो जाता है।"

प्रसिद्ध अरब ऐतिहासिक याकूबी लिखता है "भारतवर्ष के लोग बड़े बुद्धिमान और ईमानदार हैं। इस विचार से यह सब जातियों से बढ़कर हैं। गणित और फलित ज्योतिष में इनकी

बातें सबसे ठीक निकलती हैं। 'सिद्धांत' इन्हीं की विचारशीलता का परिणाम है, जिससे यूनानियों तक ने लाभ उठाया है। चिकित्सा शास्त्र में इनके निर्णय सबसे आगे हैं। इस विद्या पर इनकी पुस्तक चरक और निदान हैं।" (देखिये अरब और भारत के सन्बन्ध, पृष्ट १०३ से १०५ तक)

ऊपर जो कुछ दिखाया गया है उसका अभिप्राय केवल इतना है कि अरब व ईराक के मुसल्मानों ने भारयीय साहित्य, गणित, ज्योतिष, सङ्गीत, चिकित्सा शास्त्र और राजनीति तक का ज्ञान भारतीय पण्डितों से प्राप्त किया था। इस सब का उन पर इतना गहरा असर हुआ था कि उनके हृदयों में भारतीयों के प्रति अटूट श्रद्धा पैदा हो गई थी और वे भारत को विद्या गुरु मानने लग गये थे।

भवन निर्माण और उत्सव

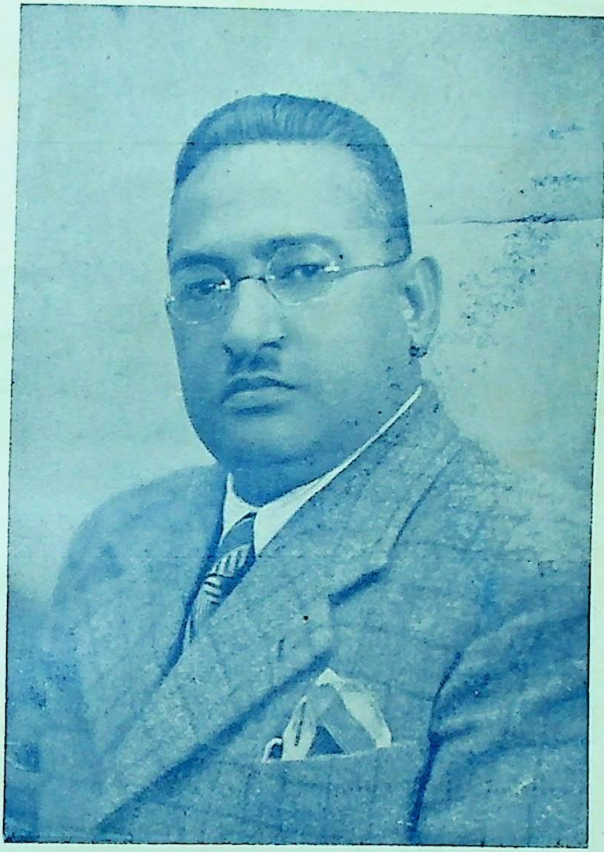
समस्त ईराक भ्रमण करने के पश्चात् जब मैं बगदाद से हब्बांनिया लाला सोहनलाल के भतीजे का नाम करण संस्कार कराने गया तब १३-१२-३६ को पं० दीननाथ मन्त्री आर्यसमाज बगदाद, पं० कृष्णदत्त शर्मा, पं० उमाशंकर शर्मा आदि अन्तरङ्ग सदस्य पं० हरिश्चन्द्र शर्मा के गृह पर जहाँ मैं ठहरा हुआ था मेरे पास आये और उन्होंने मुझसे कहा, "आर्य समाज भवन, हब्बानिया का निर्माण लगभग पूर्ण होने वाला है। इस कारण हम लोगों की प्रार्थना है कि आप आर्य समाज भवन का उद्घाटन

समारम्भ करावें और कम से कम चार वेदों में से एक ही वेद द्वारा यज्ञ पूर्ण करावें। तब आप ईराक से भारत को प्रस्थान करें। जब आप काशी की एक प्रतिष्ठित आर्य विद्या सभा के उपदेशक हैं और संयोगवश आपका आगमन ऐसे अवसर पर ईराक में हुआ है तब हम आग्रह पूर्वक आपको रोककर आप से लाभ क्यों न उठावें" मुझे आर्य भ्राताओं की आज्ञा माननी पड़ी और मैं ठहर गया। तत्पश्चात् अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार पवित्र यजुर्वेद द्वारा १४-१-४० से २१-१-४० तक नवीन भवन में मुझे यज्ञ कराना पड़ा। १४-१-४० को प्रथम उद्घाटन संस्कार महाशय के. एस. बेरी द्वारा कराया, पश्चात् सेठ जगन्नाथ गुलहटी उपप्रधान आर्यसमाज बगदाद द्वारा ओम् की पताका लहराई गई, फिर यजुर्वेद द्वारा यज्ञ प्रारम्भ हुआ जो नित्य प्रातःकाल १० बजे से १२ बजे दिन तक फिर ३ बजे से ५ बजे सन्ध्या तक हुआ करता था।

विशेष दक्षिणा

यजुर्वेद द्वारा यज्ञ होते समय पं० हरिश्चन्द्र शर्मा स्थाई यजमान थे जो यज्ञ होने पर प्रत्येक समय उपस्थित रह आहुति डाला करते थे। अन्य आर्य सदस्य जब जिसको समय होता था तब वे लोग उपस्थित हो यज्ञ में भाग लिया करते थे। ला० मुन्शी राम गुप्ता एक उत्साही और पुराने आर्य पुरुष हैं वे भी सन्ध्या समय सपरिवार नित्य यज्ञमें भाग लिया करते थे। १५-१-४० को जब लाला मुन्शीराम गुप्ता यज्ञ कराके अपने गृह पर गये, तब मैं

ने गुप्ताजी से कहा, "आज आपने पं० हरिश्चन्द्र शर्मा के साथ यज्ञ कराया और यजमान बने थे इस कारण मुझे आपसे इसी समय दक्षिणा लेनी है सो दीजिये" गुप्ताजी ने घबराहट के साथ कहा, "मैं बहुत धनी नहीं हूँ इस कारण मेरी शक्ति अनुसार जो आप दक्षिणा मांगेगे मैं देने को तैयार हूँ" मैंने कहा, "मुझे आप से दक्षिणा स्वरूप में आज ऐसी वस्तु लेनी है जिसके देने में आप की एक पाई भी व्यय न होगी। किन्तु आपको सदा यह स्मरण रहेगा कि मैंने किसी उपदेशक को एक ऐसी विशेष वस्तु दक्षिणा स्वरूप में दी थी जो उपदेशक जी के पास सर्वदा रहेगी।" गुप्ता जी जन्म के वैश्य हैं, वे धन बचाने के तत्व को भली प्रकार समझते हैं। इस कारण उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से उत्तर दिया—"यदि आप मुझ से कोई वस्तु व्यय होने वाली नहीं चाहते तो आप आज्ञा कीजिये जो कुछ आप चाहेंगे मैं वह आपको अवश्य दूँगा।" उस समय पं० कृष्णदत्त शर्मा भी उपस्थित थे। जो मेरी ओर अत्यन्त आश्चर्य की दृष्टिसे देख रहे थे कि मैं दक्षिणा स्वरूप में क्या मांगना चाहता हूँ। मैंने कहा, "आज की दक्षिणा में केवल यह प्रतिज्ञा कीजिये कि आज से आप मांस, मछली और अण्डा आदि कोई भी अभक्ष पदार्थ आजन्म किसी भी अवस्था में न खायेंगे।" मेरी इस बात को सुनकर पं० कृष्णदत्त शर्मा तो कमरे से बाहर की ओर ऐसे भागे जैसे उनको कोई हिंसक जन्तु खदेड़ रहा हो। लाला मुन्शीराम जी गुप्त अवाक् रहकर मेरे मुँह की ओर ताकने लगे, क्योंकि उनको यह आशा न थी कि मैं उन



महाशय एम० सी० गुलशन
इण्डियन एसोशियेशन बग़दाद के प्रधान और आर्य समाज बग़दाद के भूतपूर्व प्रधान। (पृष्ठ २५१)

से कोई ऐसी वस्तु माँग बैठूँगा जो उनकी मित्र मण्डली की एक प्रिय वस्तु थी। मैंने गुप्तजी से कहा, "आप देने का वचन दे चुके हैं अब आपको दक्षिणा देने में इधर उधर न करना चाहिये।" ला० मुन्शीराम बोले, "अच्छा। मैं अब आज से आपकी आज्ञानुसार प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपके रोके हुये पदार्थों को भविष्य में कभी भी न खाऊँगा" गुप्ताजी की धर्मपत्नी जी ने गुप्ता जी के इन वाक्यों को सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रगट की और मुझे धन्यवाद दिया। इस प्रकार २१-१-४० को पूर्णाहुति का दिन आया, उस दिन सारे ईराक के हिन्दू इस उत्सव में हब्बानिया में एकत्रित होगये थे, जिस कारण आर्यसमाज भवन खचाखच भरा था। पूर्णाहुति के पीछे लाला अमरनाथ मोहन्द्र की अध्यक्षतामें महाशय एम. सी. गुलशन तथा कई सज्जनों के भाषण हुये, पं० गगाप्रशादजी झा का विद्वतापूर्ण भाषण "मनुष्य क्या है" विषयपर हुआ जनता को इतना रुचिकर हुआ कि १५ मिनटके स्थान पर जनताके आग्रहसे झाजी को एक घटा बोलना पड़ा। फिर बच्चों ने अपने अपने कर्तव्य दिखलाये, जिसमें उनको पारितोषिक दिये गये। पश्चात् पं० दीनानाथ मन्त्री आर्यसमाज ने श्रीमती कैलाश देवी सर्राफसे प्रार्थना की कि वे उस मान-पत्र को पढ़कर जनताको सुनाकर मुझे भेंट करें, जिस मानपत्र को आर्यसमाज ने छपाकर रखा था। इस प्रकार मानपत्र का कार्य समाप्त हुआ और मैंने भी उस मानपत्र का उत्तर देते हुए लगभग १ घण्टे तक भाषण दिया। पश्चात् एक प्रीतिभोज दिया गया, जिसमें सर्व

प्रकार के हिन्दू सम्मिलित थे । इस प्रकार यज्ञकी पूर्णाहुति, उत्सव का कार्य, प्रीतिभोज समारम्भ समाप्त हुआ । इस उत्सव में विशेष महत्वपूर्ण यह काय हुआ कि श्रीयुत रायसाहब जे. एस. वर्मा, पं० गंगाप्रसाद झा, लाला श्यामलाल कोहली तथा लाला केशवराम सेठ आदि सज्जन जो परस्पर मतभेद होनेके कारण आर्यसमाज बगदाद से कई वर्षों से पृथक हो चुके थे इस उत्सवमें प्रेमपूर्वक सम्मिलित हुये और ऐसा जान पड़ता था कि दोनों दलोंने परस्पर के भेदभावों को समूल नष्ट कर दिया । जब में ६-२-४० को बगदाद स्टेशन पर भारत आनेके लिये बिदा हो रहा था, तब बगदाद और हब्बानिया के बहुत से आर्यभ्राता स्टेशन पर आये थे । उस समय लाला श्यामलाल कोहली ने आर्यसमाज के दोनों दलों के गत उत्सव पर मिल जाने के उपलक्ष में स्टेशन पर जी स्वरचित पद्य पढ़ कर सुनाया था, उसमें छै पंक्तियाँ थीं, जिसमें चौथी और पाँचवी पंक्ति इस प्रकार थीं :—

आपके अनथक परिश्रम प्रेम के प्रसाद से ।
गंगा जमुना मिल गईं यहाँ फिर कन्हैयालालजी ॥
प्रेम से मिलना मिलाना फिर न हमसे तर्क हो ।
ऐसा दो आशीर्वाद हमको कन्हैयालाल जी ॥

इस प्रकार मैं ईराक के आर्यभाइयों से विदा होकर बसरा आया । बसरे में लाला देवीदयाल ठेकेदार के सुपुत्र का नामकरण संस्कार करा १५-२-४० को एस० एस० वारेला नामक जहाज से भारत की ओर चल पड़ा । १७-२-४० को जब जहाज



बग़दाद के लाला श्यामलाल कोहली का चित्र और उनकी कविता का एक नमूना। [पृष्ठ २५२]

आलमुलग़ैब है इतना तो बता दे यारब।
उरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा ?
ज़माना था सबक़ देता था हिन्दुस्तान ग़ैरों को।
गुमा हरगिज न था बरबाद अपना आशियाँ होगा ?
मगर दिल तो गवाही दे रहा है आप भी सुनलो।
उरूजे कामयाबी पर ज़रूर हिन्दोस्तां होगा॥

ईरानी बन्दर बूशहर में रात को ६ बजे पहुँचा तब जहाज के खलासियों से पता चला कि इस बन्दर पर ईरानी कुली रात को सोते समय यात्रियों का सामान चोरी कर ले जाते हैं। इस कारण मुझे रात को सचेत रहना चाहिए क्योंकि इस बन्दर पर जहाज सारी रात ठहरेगा और दूसरे दिन माल लेकर चलेगा। रात को १० बजे लगभग ५० ईरानी कुली जहाज पर आ पहुंचे, इस समय जहाज के अग्रभाग के डेक पर मेरे अतिरिक्त और कोई भी यात्री न था। वे कुली लगभग सारी रात सारे जहाज में इधर-उधर घूमते फिरे और मैं भी सारी रात जागरण करता रहा। दूसरे दिन जहाज बूशहर से चल पड़ा।

२२-२-४०को जहाज ८ बजे रातको मसकत पहुँचा। सेठ विश्राम भाई पटेल, सेठ मेगजी सुन्दरदास नैनसी तथा और कई सज्जन जहाजपर पधारे थे, जो मुझे मसकत उतार लेगये। मैंने मसकत में श्री युत विश्राम जी पटेल के गृह पर पुन्सवन संस्कार और सेठ मेगजी सुन्दरदास के सुपुत्रों का चूड़ा कर्म संस्कार कराया। इस प्रकार मैंने २-३-४० को एस० एस० बामोरा नामक जहाज से मसकत से बम्बई की ओर प्रस्थान किया और मैं १०-३-४० को ठीक एक वर्ष के पीछे बम्बई पहुँचा।

बम्बई से बसरा जाने और आने वाले जिन जिन जहाजों पर मैं बैठा उन-उन जहाजों में हिन्दू तथा मुसलमानों के लिये भोजन के लिये पृथक् पृथक् भोजनालय हैं जिनको वी.सी. कहते हैं हिंदू भोजनालय में जिसका मुझ को अनुभव है भोजन के साथ आलू छोड़

कर और शाक भाजी का कोई उचित प्रबन्ध मुझे नही मिला और भोजन का मूल्य भी बहुत अधिक होता है। मैंने सुना है कि बी.सी. के ठेकेदार महोदयने बी.सी. के मैनेजरों को आदेश दे रखा है कि जो यात्री माँस आदि नही खाते हैं उनके लिये शाक भाजी का प्रबन्ध उचित रूप से रखा करें परन्तु शोक है कि जहाजमें वी.सी.के मैनेजर महाशय अपने मालिक की आज्ञा-पालन करने के लिये थोड़ा भी कष्ट नहीं उठाते। वी० सी० के नोटिस में छपा है कि घी की चीजें बनाई जायेंगी। परन्तु बहुधा भोजन बनाने वाला महाराज यात्रियों को तेल का ही सामान पका कर खिलाया करता है। आशा है कि ठेकेदार महोदय वी० सी० के मैनेजरों को पुनः आदेश देंगे जिस से यात्रियों को उक्त कष्ट न उठाना पड़े। क्योंकि यात्रीगण जहाज के भीतर अपने खाने आदि का प्रबन्ध वी० सी० के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते क्योंकि उनको विश्वास रहता है कि जहाज में वी० सी० द्वारा भोजन का प्रबन्ध उचित रूप से उपस्थित है।

समाप्त

आर्य जीवन की प्राप्ति के लिये अमूल्य नियम

—अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाकर अपनी सारी शक्ति उसकी प्राप्ति में लगा देना, क्योंकि बिना लक्ष्य के मनुष्य का उत्थान असम्भव है।

—समय का सदुपयोग करना, समय को व्यर्थ न खोना।

—तप का जीवन व्यतीत करना, आलस्य और प्रमाद को निकट न आने देना।

—आत्म-विश्वासी होना, अपनी आत्मा पर ही भरोसा करना

—सदैव आशा वादी बने रहना, भूलकर भी आशा देवी का त्याग न करना।

—स्वाध्याय कभी त्याग न करना, सर्वदा शास्त्रादिक को पढ़ना और अपने जीवन का पाठ करना अति आवश्यक है।

—नित्य प्रति दोनों समय सन्ध्या तथा अग्नि होत्र के पश्चात् ईश्वर से बल, बुद्धि और भक्ति की याचना करना।

—स्वदेशाभिमान रखना, सदा देश की बनी हुई वस्तु ... करना और देश की उन्नति के निमित्त सर्वदा ... करते रहना।

—झूठा जाति अभिमान त्याग, ऊंच नीच ... विनष्ट करना चाहिये। क्योंकि ऊंच ... कलह और समाज कलह का मूल ...

—ब्रह्मचर्य की महिमा को सम... जीवन को सुखमय बना... समूलोच्छेदन में लगे...

हिन्दुत्वदीपक पं० कन्हैयालाल मिश्र

कृत पुस्तकें

१—"हमारी जापान यात्रा" जिस में सुमात्रा, जावा, बाली, हाङ्गकाङ्ग, अमोई, क्लाङ्गशो, शङ्घाई और जापान के प्राचीन तथा अर्वाचीन के ऐतिहासिक समाचार और उक्त स्थानों में हिन्दू सभ्यता के चिन्ह जो अब तक मिलते हैं, उन पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है। मूल्य केवल १॥), इसमें ३२ चित्र भी हैं।

२—"मेरी अबीसीनिया यात्रा" जिस में अदन, फ्रेंच शुमाली कोस्ट, ब्रिटिश शुमाली लैंड और अबीसीनिया के प्राचीन तथा अर्वाचीन के ऐतिहासिक समाचार और उक्त स्थानों में हिन्दू सभ्यता के चिह्न जो अब तक मिलते हैं, उन पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है। मूल्य केवल ॥)

३—"वीर रस गायन" भाग प्रथम जिसमें महाराणा प्रताप की वीरता का पूर्ण गायन है। मूल्य केवल ।)

४—"वीर रस गायन भाग दूसरा" जिसमें महारानी पद्मावती के सती होने के दृश्यों को गायन में लिखा गया है। मूल्य केवल ।)

मिलने का पताः—

श्रीयुत बाबूलाल जी आर्य मारफत श्रीयुत महावीर प्रसाद ठेकेदार, अर्दली बाज़ार बाँदा, यू० पी०, भारतवर्ष।
